



अथ विषयानुक्रमिका.

| विषय. | पृष्ठ. | विषय. | पृष्ठ. | विषय. | पृष्ठ. |
|-------------------------------------|--------|----------------------------------|--------|----------------------|--------|
| पुण्याहवाचनमंत्राः | ... | गर्भाधानोक्तमंत्राः... | २४ | अर्कविवाहमंत्राः... | ३७ |
| स्थालीपाकमंत्राः... | ... | पुंसवनादिमंत्राः | २६ | अग्निहव्यमंगमंत्राः | ३७ |
| ग्रहयज्ञमंत्राः पूर्णाहुतिमंत्राश्च | ... | जातकर्ममंत्राः | २६ | सायंमातर्होममंत्राः | ३८ |
| उत्सर्जनमंत्राः ऋषिपूजनमंत्राश्च | ... | नामकरणादिचौलांतमंत्राः... | २६ | आपत्कालहोममंत्राः | ३८ |
| पर्जन्यसूक्तानि | ... | उपनयनादिभयश्चित्तहोमांतमंत्राः | २७ | अग्निममारोपमंत्राः | ३८ |
| अकारहकारादिमंत्राः | ... | समावर्तनमंत्राः | ३१ | पुनःसंधानमंत्राः... | ३९ |
| उपाकरणमंत्राः | ... | आयुष्यसूक्तं दशसमिद्धिः सूक्तं च | ३१ | श्रवणाकर्ममंत्राः... | ३९ |
| सुवनेश्वरीअग्न्युत्तारणजदकपूरण | ... | विवाहमंत्राः | ३२ | सर्पचलिमंत्राः | ३९ |
| श्रीसूक्तमंत्राः | ... | मधुपर्कमंत्राः | ३३ | आ त्रुजिकर्ममंत्राः | ३९ |
| रुद्रसूक्तानिमंत्राश्च | ... | कन्यादानमंत्राः | ३३ | आग्रयणमंत्राः | ३९ |

| विषय. | पृष्ठ. | विषय. | पृष्ठ. | विषय. | पृष्ठ. |
|------------------------|--------|-------------------|--------|-------------------------------|--------|
| प्रत्यवरोहणमंत्राः | ... | पवमानसूक्तं अ० २ | ... | ब्रह्मणस्पतिसूक्तं | ... |
| सभार्यस्यप्र० अ० स० | ... | पवमानसूक्तं अ० ३ | ... | देवीसूक्तं | ... |
| अश्वपुषातादिप्रा० | ... | पवमानसूक्तं अ० ४ | ... | त्रिंशद्देवाः | ... |
| मंडलदेवतामंत्राः... | ... | वैश्वदेवसूक्तं | ... | मन्युसूक्तं | ... |
| अथशान्तिपाठः | ... | इन्द्रस्तवसूक्तं | ... | सरस्वतीसूक्तं | ... |
| अथ भार्तःसंध्यामंत्राः | ... | ज्ञानमोक्षसूक्तं | ... | वि० सर० सू० | ... |
| माध्यान्हसंध्यामंत्रः | ... | आत्मस्तवसूक्तं | ... | तृ० सर० सू० | ... |
| सार्यसंध्यामंत्राः | ... | विष्णुसूक्तं | ... | बृहस्पतिसूक्तं | ... |
| स्वाध्यायमंत्राः | ... | हरिसूक्तं | ... | गोसूक्तं | ... |
| गणपतिसूक्तं | ... | द्वितीयंहरिसूक्तं | ... | प्रसवप्रतिबंधनिर्मुक्तिसूक्तं | ... |
| गुरुषूक्तं | ... | हिरण्यगर्भसूक्तं | ... | दुःस्वप्ननाशनमंत्राः | ... |
| पवमानसूक्तंअध्याय १ | ... | सौरसूक्तं | ... | रिपुरोगघ्नसूक्तं | ... |

| विषय. | पृष्ठ. |
|-------------------------------|--------|
| ब्रह्मणस्पतिसूक्तं | ... |
| देवीसूक्तं | ... |
| त्रिंशद्देवाः | ... |
| मन्युसूक्तं | ... |
| सरस्वतीसूक्तं | ... |
| वि० सर० सू० | ... |
| तृ० सर० सू० | ... |
| बृहस्पतिसूक्तं | ... |
| गोसूक्तं | ... |
| प्रसवप्रतिबंधनिर्मुक्तिसूक्तं | ... |
| दुःस्वप्ननाशनमंत्राः | ... |
| रिपुरोगघ्नसूक्तं | ... |

| विषय. | पृष्ठ. | विषय. | पृष्ठ. | विषय. | पृष्ठ. |
|-------------------------|--------|-------------------------------|--------|--------------------|--------|
| विषय. | ५८ | विषय. | १०८ | विषय. | ११२ |
| शंतातीयसूक्तानि | ... | वामदेव्य(ब्राह्मस्यसूक्तं)... | १०६ | विष्वदेवसूक्तं | ११२ |
| शंतातीयद्वितीयतृ०सूक्तं | ... | ध्रुवस्तुतिसूक्तं | १०७ | " द्वितीयसूक्तं | ११२ |
| वाह्यश्वसूक्तं | ... | अलक्ष्मीघ्नसूक्तं | १०७ | " तृतीयसूक्तं... | ११२ |
| कपोतसूक्तं | ... | सप्तनघ्नसूक्तं | १०७ | " चतुर्थसूक्तं | ११३ |
| वरुणसूक्तं | ... | बृहस्पतिसूक्तं | १०७ | " पंचमसूक्तं | ११४ |
| द्वितीयवरुणसूक्तं... | ... | गोसूक्तं२ | १०८ | द्रविणोदसूक्तं | ११४ |
| तृ०वरुणसूक्तं | ... | अद्विगसूक्तं | १०८ | इन्द्रावरुणसूक्तं | ११४ |
| च०वरुणसूक्तं | ... | अर्थचर्यासूक्तं | १०८ | वायुसूक्तं | ११५ |
| दुःस्वप्नसूक्तं | ... | नटायिमसूक्तं | १०८ | क्षेत्रपालसूक्तं | ११५ |
| भगसूक्तं | ... | पंथासूक्तं | १०९ | इन्द्रसूक्तं | ११५ |
| नदीस्तुतिसूक्तं | ... | मृत्युनाशनसूक्तं | १०९ | द्यावापृथिवीसूक्तं | ११५ |
| वामदेव्यसूक्तं | ... | आशीर्वादमंत्राः | १०९ | अग्न्यादिसूक्तं | ११६ |

| विषय. | पृष्ठ. | विषय. | पृष्ठ. | विषय. | पृष्ठ. |
|--------------------------|--------|------------------------|--------|---------------------|--------|
| सोमारुद्रसूक्तं | ... | स्फुटमंत्रप्रकरणं | ... | १ त्वंसोमप्रचि०... | १४५ |
| संग्रामसूक्तं | ... | श्रीसूक्तशेषःपरिशिष्टं | ... | २ स्वादिष्ठयाम० | १४६ |
| मित्रावरुणसूक्तं | ... | श्राद्धमंत्राः | ... | ३ स्वादोरक्षभिवयसः | १४६ |
| पृषसूक्तं | ... | अन्नस्नुतिसूक्तं | ... | ४ इंद्रासोमातपतन्० | १४७ |
| मरुतसूक्तं | ... | पिंडपितृयज्ञादिमंत्राः | ... | ५ सोमएकेभ्यः पवते० | १४८ |
| ग्रहणजप्यसूक्तं | ... | अभिश्रवणसूक्तानि | ... | श्रद्धासूक्तं | १४८ |
| औषधिसूक्तं | ... | आदौदेवसूक्तानि | ... | हविरधानसूक्तं | १४९ |
| श्राद्धविघ्नहरसूक्तं | ... | राक्षोघ्नसूक्तेषु | ... | पितृसूक्तं | १४९ |
| यम (मनआवर्तन) सूक्तं | ... | १ कृणुष्वपाजः | ... | देवसूक्तं | १५० |
| विश्वकर्मसूक्तं | ... | २ अग्नेहंसिन्य०... | ... | अथ यत्याराधनमंत्राः | १५० |
| उषा (प्रातःस्मरण) सूक्तं | ... | ३ रक्षोहणंवा० | ... | उपनिषन्मंत्राः | १५२ |
| संज्ञानसूक्तं | ... | ४ ब्रह्मणाग्निःसंविदा० | ... | अंत्येष्टिमंत्राः | १५३ |

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ अथपुष्पाहवाचनमंत्राः ॥ ॐ ग
 णानां त्वागुणपतिं हवामहे कुविकेश्वरीनामुपमश्रवस्तमं ॥ जग्रेष्ठराजं ब्रह्म गां ब्रह्म गस्पतऽआनः शृण्वन्न
 तिभिः सीदसादनं ॥ निषुसीदगणपते गणे पुत्वा माहुर्विप्रतमं कवीनां ॥ नऽक्नुते त्वक्रियते किंच नारे महा
 मर्कमघवन्वित्रमर्च ॥ महोद्यौः पृथिवी च नऽहमं यज्ञं भिमिक्षतां ॥ पिपृतां नो मरीमभिः ॥ ओयधयः सं
 वंदते सोमै न सहाराज्ञां ॥ यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तराजन्पारयामसि ॥ आकलशेषु धावति पवित्रे परिपि-
 च्यते ॥ उक्थैर्यज्ञेषु वर्धते ॥ इमं मे गंगयमुने सरस्वति युनुद्विस्तोमं सचता पुरुष्या ॥ असिक्न्यामं रु
 हधे वि तस्तु यार्जीकीये शृणु ह्या सुषोमया ॥ गंधर्वा रां दुराधर्षी नित्यपुष्पां करीपिणीं ॥ ईश्वरी सर्वसु-
 तानां तामिहोपह्वये श्रियं ॥ याऽओपधीः पूर्वाजा ता देवेभ्यस्त्रियुगंपुरा ॥ मनूनुवभ्रूणामहं शतधा मां
 नित्तसच ॥ कांडात्कांडात्प्ररोहं तीपरुषः परुषः परि ॥ एवानो दुर्वप्रतनुसहस्रेण शतेन च ॥ अश्वत्थे वो-
 निपदं नपण्ये वो वसति ष्कृता ॥ गोसाजऽइत्किलासथत्स नवथपुरुषं ॥ स्योनापृथिवि सवानृक्षरानि

८ शनी ॥ यच्छानः शर्मसप्रथः ॥ याः फलिनीर्याऽअं फलाऽअं पुष्पायाश्च पुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्ता
 नोमुंचत्वंहसः ॥ सहिरत्नोनिदाशुषेसुवानिसविताभगः ॥ तं भागं चित्रमीमहे ॥ हिरण्यरूपः सहिरण्यसं
 दृगपांनपात्सेदुहिरण्यवर्णः ॥ हिरण्ययात्परियोनेनिषद्याहिरण्यदादंत्यन्नमस्मै ॥ युवांसुवासाः प
 रिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान्भवतिजायमानः ॥ तंधीरांसः कवयुत्तन्नयंतिस्वाध्वो ॥ मनसदेवयंतः ॥ पूर्णा
 दर्विपरापतसुपर्णपुनरापत ॥ वस्त्रेवविक्रीणावहाऽइषमूर्जशतक्रतो ॥ तत्स्वायामिब्रह्मणावंदमानस्त
 दाशास्तेयजमानोहविभिः ॥ अहेळमानोवरुणेहबोध्युरुशंसमानऽआयुः प्रमोषीः ॥ १ ॥ मद्रं कर्णेभिः शृ
 णुयामदेवाभद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥ द्रविणोदाद्र
 विणसस्तुरस्यद्रविणोदाः सनैरस्यप्रयंसत् ॥ द्रविणोदावीरवतीमिषं नोद्रविणोदारोसते दीर्घमायुः ॥ सवि
 तापश्चानां सविता पुरस्तात्सवितोत्तरात्तां सविताधरात्तां ॥ सवितानः सुवतु सर्वतांति सवितानोरासतां
 दी ० ॥ नवोनवोभवति जायमानो ह्यकिंतुरुपसमित्यग्रं ॥ भार्गवेभ्योविदधात्यायन्प्रचंद्रमास्तिरतेदी ०

उच्चादिविदक्षिणावंतोऽअस्थुर्येऽअश्वदाःसहवेसूर्येण ॥ हिरण्यदाऽअमृतत्वंभजंतेवासोदाःसौमप्रति
 रंतऽआयुः ॥ २ ॥ पुनःपुनर्जायमानापुराणीसंमानंवरणमभिशुभमाना ॥ श्वघ्नीवंकृतुर्विजंऽआमिना
 नामर्तस्येदेवीजरयंत्यायुः॥उदीर्ध्वजीवोऽअसुनऽआगादप्रागात्तमऽआज्योतिरेति ॥औरैक्पथाया
 तवेसूर्यायागेन्मयत्रप्रतिरंतऽआयुः ॥ दक्षिणावतामिदिमानिचित्रादक्षिणावतांदिविसूर्यार्सः ॥ दक्षि
 णावंतोऽअमृतंभजंतेदक्षिणावंतःप्रतिरंतऽआयुः ॥ इमेभोजाऽअंगिरसोविरूपादिवस्पुत्रासोऽअसु
 रस्यवीराः ॥ विश्वामित्रायददतोमथानिसहस्रमावेप्रतिरंतऽआयुः ॥ यथाहृत्यद्वसवोगैर्ध्वचित्यदिपि
 तार्ममुचतायजत्राः ॥ एवोष्वऽस्मन्मुचताव्यंहःप्रतार्येप्रतरंतऽआयुः ॥यशस्करंवल्वंतंप्रभुत्वंतमेव
 राजाधिपतिर्वभूव ॥ संकीर्णनागाश्वपतिर्नराणांसुमंगल्यंसतंतद्दी० ॥ गोमायुरदादजमायुरदात्सृश्चि
 रदाद्धरितोनोवर्सूनि ॥ गवामिंदुकाददतःशतानिसहस्रसुविप्रतिरंतऽआयुः ॥ ऋदुदैरणसख्यांसचेय
 योमानरिष्यैद्वयश्वपीतः॥अयंयःसोमोन्यथाय्यस्मेतस्माऽइंद्रप्रतिरंमेम्यायुः ॥ अपत्याऽअस्थुरानिरा

अमीवा॒निर॑त्र॒सन्त॑मिषी॒चीर॑भैषुः॥आसोमोऽअस्मौऽअरु॒ह॒दि॒हायाऽअ॒र्गन्म॒यत्र॑प्रति॒रन्तुऽआयुः ॥ इ
द्रा॒वरु॒णासौम॒न॒सम॑दृ॒सं रा॒यस्पोषं॑य॒जमाने॑षुध॒तं ॥ प्र॒जां पु॒ष्टिं भू॒तिम॒स्मा सु॒ध॒तं दी॒र्घायु॒त्वाय॑प्रति॒र
तंन्तुऽआयुः ॥ वृ॒ष्टि॒दिवः॒शत॑धा॒रः प॒वस्व॒सह॒स्रसा॑वा॒ज्युर्दे॒ववी॒तौ ॥ सं॒सिं धु॒मिः क॒लशे॑वाव॒शानः॒स
मृ॒खिया॑मिः॒प्रति॑रन्तुऽआयुः ॥ वि॒द्युच्च॒याप॑त॒तीद॒विद्यो॒द्भर॑तीमिऽअ॒प्याका॒म्यानि॑॥जनि॑द्योऽअ॒पो न॒र्यः
सुजा॑तः प्रो॒र्वशी॑ति॒रत॒दीर्घ॑मायुः ॥ ३ ॥ आप॑ऽउ॒दंतु॒जीव॑से॒दीर्घायु॒त्वाय॑व॒र्चसे ॥ यस्त्वा॑हृ॒दा क्री॒रि-
णा॒मन्य॑मानो॒मर्त्य॑म॒र्त्यो जो॑ह्वीमि ॥ जा॒तवे॒दो यशोऽअ॒स्मा सु॒धेहि॒प्रजा॑भि॒रग्नेऽअ॒मृत॑त्वम॒श्वां ॥ य
स्मै॒त्वं सु॒कृते॑ जा॒तवे॒दऽउ॒लोक॑म॒ग्ने कृ॒णवः॒स्यो नं ॥ अ॒श्विनं॑ स॒पुत्रि॑णं॒वीर॑वंतं गो॒मं त॒रधि॑न॒श्नते॑स्त्र॒स्ति ॥
सं॒त्वा सि॒चा मि॒य जु॒पा प्र॒जा मा॒युर्धन॑च ॥ ४ ॥ उ॒द्गाते॑वं॒शकु॒ने सा॒मगा॑य॒सि ब॒ह्म पु॒त्रऽइ॒व स॒र्वने॑षु॒शंसि॑
॥ वृ॒षे तो॒लो व॒वा जी॒शि शु॒मती॒रपी॒त्या स॒र्वतो॑नः॒शकु॒ने स॒द्रमा॑व॒दवि॒श्वतो॑नः॒शकु॒ने पु॒ण्यमा॑व॒द ॥ या॒ज्यया॑
य॒जति॑प्र॒तिर्वि॒था ज्यो॑पु॒ण्यै व॒लक्ष्मीः॑ पु॒ण्या मे॒व त॒लक्ष्मीः॑ सं॒भाव॒यति॑ पु॒ण्यां ल॒क्ष्मीं सं॒स्करु॑ने ॥ यत्पु॒ण्यं

नक्षत्रं ॥ तद्वत्कुर्वीतोपव्युषं। यदावैसूर्योऽउदेति ॥ अथ नक्षत्रं नैति ॥ यावत्तितत्र सूर्यो गच्छेत् ॥ यत्र जघ्र
नक्षत्रं ॥ तावत्तिकुर्वीतयत्करीस्यात् ॥ पुण्याहल्लवकुंरुते ॥ तानिवा एतानियमनक्षत्राणि ॥ यान्येवे
न्यंपश्येत् ॥ तावत्तिकुर्वीतयत्करीस्यात् ॥ पुण्याहल्लवकुंरुते ॥ ५ ॥ स्वस्तये वायुमुपब्रवामहे सोमं स्वस्ति-
वनक्षत्राणि ॥ तेषु कुर्वीतयत्करीस्यात् ॥ पुण्याहल्लवकुंरुते ॥ आदित्या सोमवंतुनः ॥ आदित्य उदयनीयः पृथग्
सुवनस्य स्पर्शः ॥ बहस्पर्तिसर्वगं स्वस्तये स्वस्तये ॥ आदित्या सोमवंतुनः ॥ स्वस्तिनो बहुस्पर्तिर्दधानु ॥
धैवतः स्वस्त्या प्रयति पृथ्वा स्वस्ति मभ्युद्यंति स्वस्तये वेतः प्रयंति स्वस्त्युद्यंति स्वस्त्युद्यंति ॥ स्वस्तिनो बहुस्पर्तिर्दधानु ॥
द्रौढश्च श्रवाः ॥ स्वस्ति नः पूषा विश्वे देवाः ॥ स्वस्ति नस्ताक्षर्योऽअरिष्टनेभिः ॥ संवत्सरीणं मृतं
अष्टौ देवा वसंवः सोमयासः ॥ चतस्रो देवी रजराः श्रविष्ठाः ॥ ते यज्ञं पातुरजंसः परस्तात् ॥ संवत्सरीणं मृतं
स्वस्ति ॥ ६ ॥ ऋच्यामस्तोमं सनुयामवाजमानोमंत्रं सरथे होषयातां ॥ यशोनपक्वं मधुगोष्णं तरामुतां शोऽअ
श्विनोः कामं मगाः ॥ सर्वा मृद्धि मृद्भुया भित्तं वै ते जसैव पुरस्तात् पर्यभवच्छंदो निर्मध्यतोऽशेरुपरि द्वादहा-
यच्या सर्वतो द्वादशाहं परिमूयं सर्वा मृद्धि माघ्नोत्सर्वा मृद्धि मन्त्रो नियऽएवं वेदं ॥ ऋच्यास्मंहं न्यैनमे सोपसर्थ

॥ मित्रं देवं मित्रधेयं नोऽअस्तु ॥ अनुराधान् हविषां वर्धयतः ॥ शतं जीविमशरदः सर्पराः ॥ त्रीणि त्रीणि वेदे-
वानां मृद्धानि ॥ त्रीणि छंदार्त्सि ॥ त्रीणि सवनानि ॥ त्रयऽइमे लोकाः ऋध्यामेव तद्द्वीर्यऽएषु लोकेषु प्रति-
तिष्ठति ॥ ७ ॥ श्रिये जातः श्रियऽआनिरियायुः श्रियं वयोजरितृभ्यो दधाति ॥ श्रियं वसानाऽअमृ-
तत्वमायुन्मवन्ति सत्यासमिथामिन्द्रौ ॥ श्रिय एवैनं तच्छ्रियामादधाति सततमृचावषट्कृत्य सतत्यै सं-
धीयेते प्रजयापशुभिर्यऽएवं वेद ॥ यस्मिन् ब्रह्माभ्यजयत्सर्वमेतत् ॥ अमुं च लोकां मिदमुच सर्व ॥ त-
त्रो न क्षत्रमग्निजिद्विजित्य ॥ श्रियं दधात्वह्णीयमानं ॥ अहेबुध्नियुमंत्रमै गोपाय ॥ यमृषयश्च यिवि-
दा विदुः ॥ ऋचः सामानियजूंषि ॥ साहि श्रीरमृतां सतां ॥ ८ ॥ शुक्रे भिरगैरजऽआतत न्वान्कर्तु-
पुनानः कविभिः पृवित्रैः ॥ शोचिर्वसानः पर्यार्युपां श्रियो मिमीते बह्वनीरनूनाः ॥ तदप्येष श्लोको भिगीतो
मरुतः परिविद्यारोमरुतस्यावसन्गृहे ॥ आविक्षितस्य कामप्रैर्विश्वे देवाः सभासदऽइति ॥ वास्तोष्पते
प्रतिजानीह्यस्मान्स्वविशोऽअनमीवो भवानः ॥ यत्वेमहे प्रतितत्रो जुषस्व शनौ भवद्विपदेशं चतुष्पदे ॥

वास्तौष्पतेप्रतरणेनऽए धिगभ्रस्फानोगोमिश्रवोमिरिदो ॥ अजरासस्तेसख्येस्यामपितेवपुत्रान्प्राप्तं
 नोजुषस्व ॥ वास्तौष्पतेशुभयासंसदातेसक्षीमहिरेणत्रयागतुमत्या ॥ प्राद्विक्षेमऽउतयोगेवरनोयूयं
 पोतस्वस्तिमिःसदानः ॥ अमीवृद्धावास्तोष्पतेविश्वारूपाण्याविशन् ॥ सखासुशेर्वऽएधिनः ॥ ९ ॥
 समुद्रज्यैश्चाःसलिलस्यमध्यात्पुनानायंत्यनिविशमानाः ॥ इंद्रोयावृज्रीवृषमोरारादताऽआपोदेवीरिद्व
 मामर्बन्तु ॥ याऽआपोदिव्याऽउतवास्तवनिखनित्रिमाऽउतवायास्वयंजाः ॥ समद्रार्थायाःशूच्यःपा
 वकास्ताऽआपो ॥ यासांराजावरुणोयातिमध्यैसत्यानृतेऽअवपश्यन्जनानाम् ॥ मधुश्चतःशूच्यो
 याःपावकास्ताऽआपो ॥ यासुराजावरुणोयासुसोमोविश्वेदेवायामूर्जमदति ॥ वैश्वानरोयास्वग्निःप्र
 विष्टस्ताऽआपो ॥ त्रार्यतामिहदेवास्त्रार्यतांमरुतांगणः ॥ त्रार्यतांविश्वामृतानियथायमर्पाऽअ
 संत् ॥ आपऽइहऽउभेषुजीरापोऽअमीवचातनीः ॥ आपःसर्वस्यभेषुजीस्तास्तेकृण्वन्तुभेषजं ॥
 हस्ताभ्यांदशशाखाम्यांजिह्वावाचःपुरोगवी ॥ अनामयितुभ्यांत्वाताभ्यांत्वोपस्पृशामसि ॥ इमाऽ

आपःशिवतमाऽइमाःसर्वस्यभेषजीः ॥ इमाराष्ट्रस्यवर्धनीरिमाराष्ट्रभूनोमृताः ॥ याभिरिंद्रमभ्यर्षि
 चत्प्रजापतिःसोमंराजनंवरुणंयमंमनुं ॥ ताभिरद्भिरभिषिंचामित्वामहंराज्ञांत्वमधिराजोभवेह ॥ म
 हांतत्वामहीनांसम्राजंचर्षणीनांदिवीजनिच्यजोनद्भद्राजनित्रयजीजनत् ॥ देवस्यत्वासवितुःप्रसवे
 श्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्यामग्नेस्तेजसासूर्यस्यवर्चसेंद्रस्येन्द्रियेणामिषिंचामि ॥ बलायश्रियैयश
 सेन्नादाय ॥ १० ॥ आमूरजप्रत्यावर्तयेमाःकेतुमहुंदुभिर्वावदीति ॥ समश्वपर्णाश्वरंतिनोनरोस्मा
 कंभिद्रथिनोजयंतु ॥ तदंस्तुमित्रावरुणातदग्नेशंयोरस्मभ्यमिदमंस्तुशस्तं ॥ अशीमहिगाधमुंतप्र
 तिष्ठानमोदिवेबृहतेसादनाय ॥ गृहवैप्रतिष्ठासूक्तंतत्प्रतिष्ठिततमयावाचाशंस्तव्यंतस्माद्यद्यपिदूर
 ऽइवंपशून्तमतेगृहनैवैनानाजिगमिषतिगृहाहिपशूनांप्रतिष्ठाप्रतिष्ठा ॥ गौरीभिमायसल्लितानितक्ष
 त्येकंपदीद्विपदीसाचतुंषदी ॥ अद्यापदीनवंपदीबभूवुषीसहस्राक्षरापरमेव्योमन् ॥ १२ ॥ उपा
 स्मैगायतानरःपर्वमानार्येदेवे ॥ अग्निदेवाऽइयक्षते ॥ अग्नितेमधुनापयोर्थवर्णोऽअशिश्रयुः ॥ देवं

देवायैवयु ॥ सनःपवस्वशंगवेशंजनायशमर्धने ॥ शंगंजुचोपश्रीभ्यःवृश्रेनेनुस्ननंसेदुगार्यदिविस्मृ
 शै ॥ सोमायगाथमर्चत ॥ त्वस्च्युनेमिरादिमिःमुनंसोमपुनीनन ॥ मध्वावाधावनामधु ॥ १३ ॥ प्र
 जापतेनत्वदेतान्यन्योविशंजातानिपरितार्चसूव ॥ अर्कामास्तेजुहूमस्नत्रोऽअस्तुवयस्यामपतयो
 रयीणां ॥ इवामयेपुरुदंसंमनिगोःशश्वत्तमंहवमानायमाध ॥ स्यान्नःमनुस्ननश्रोविजावाग्रेसातेसु
 मतिर्भूत्वस्मे ॥ १४ ॥ कनिकदज्जनुपंप्रब्रुवाणऽइयन्निचार्चमग्निवनाधं ॥ मुमंगलश्चशकुनेमवांसि
 मात्वाकाचिदसिभाविश्व्याविदत् ॥ मात्वाश्वेनऽउद्धृष्टीन्मामुपणोमात्वाविदुद्विपुमान्वीरोऽअस्ता ॥
 पित्र्यामर्नुमृदिशकनिकदन्मुमंगलोमद्रवादीवदेह ॥ अवर्कंददक्षिणतोपुह्वाणामुमंगलोमद्रवादीशं
 कुंते ॥ मानःस्तेनऽईशतुमाघशंसोवृहदेमन्निदथैमवीराः ॥ १५ ॥ प्रदक्षिणिद्रुमिगुणंतिकारवोव
 योवदन्ऽऋतुशकुनंयः ॥ उमेवाचौवदतिसामुगाऽदंवागायत्रंत्रैपुमंचानुराजति ॥ उद्वातेवश
 कुनेसामगायसिब्रह्मपुत्रऽईवसर्वनेपुशंससि ॥ द्येवववाजीशिभुमेतीरपीत्यामूर्वतोःशकुनेमद्रमावद

विश्वतोऽनःशकुनेपुण्यमावद ॥ आवदंस्त्वंशकुनेभद्रमावदतूष्णीमासीनःसुमतिचिकिद्भिनः ॥ यदु-
 त्पत्तन्वदसिकर्करिथबाबुहदंमविदथैसुवीराः ॥ १६ ॥ भद्रं वददक्षिणतोभद्रमुत्तरतोवद ॥ भद्रं पु-
 रस्तांनोवदभद्रं पश्चात्कर्पिजल ॥ भद्रं वदपुनैर्भद्रं वदगृहेषु च ॥ भद्रमस्माकं वदभद्रं नोऽअभयं वद ॥
 भद्रमधस्तांनोवदभद्रमुपरिष्ठांनोवद ॥ भद्रं भद्रं नोऽआवदभद्रं नः सर्वतो वद ॥ असपत्नं पुरस्तांन्ना-
 शिवंदक्षिणतस्कंधि ॥ अमयंसतंतं पश्चाद्भद्रमुत्तरतो गृहे ॥ यौवनानिमहायसिजिग्युषामिव दुंदुभिः ॥
 शकुंतकंपदक्षिणं शतपत्राभिनोवद ॥ १७ ॥ अर्चत प्रार्चत प्रियं मे धासोऽअर्चत ॥ अर्चतु पुत्रकाऽउ-
 तपुरं न धृण्वर्चत ॥ युवं वत्स्वाणि पीवसावसाथेयुवोरच्छिद्रा मंतवो हसर्गाः ॥ अवातिरतमनृता निवि-
 श्वं ऽकृते न मित्रावरुणा सचेथे ॥ अभिवत्स्वांसुवसनान्यर्षामि धेनुः सुदुधाः पूयमानः ॥ अमिचंद्रा भर्तवो नो-
 हिरण्याभ्यश्वांश्चाथिनो देव सोम ॥ भद्रावत्स्वासमन्या देवसानो महाक्कविनिवर्चनानि शंसन् ॥ आव-
 द्यस्व च म्वोः पूयमानो विचक्षणो जागृवि देववीतौ ॥ सतु वत्स्वाण्यधेशेनानिवसानोऽअग्निर्नामा पृथि-

व्याः ॥ अस्यो ज्ञानः पृष्ठः उच्छ्रयाः पुरोहितो राजन्यसोऽनृतेयान् ॥ त्रिष्टपैश्चित्रिथो मायमनुने धामि
 भिवप्रसंगयो निमृष्टये ॥ वरयेणैव वासया मन्धनाशु चिंत्येति गंधं भुक्ता णितमो हन ॥ प्रमेनानीः शुभेऽ
 अष्टैरथानां गृह्यन्तेति हर्षनेऽअस्य मेना ॥ मृदाः कृण्वन्ति दृष्टवान् मयि भ्युः आसो मोमसा गतमान् दि
 ते ॥ उमाऽऽर्चनं तद्विदधये धेवि न नाशु धिये वसुपमेन ॥ मृश्रो नो नायाने वेधमं जोग मृदिने मुपुञ्जः
 आर्तसवेथे ॥ वामिनादिभिरेभ्युपयानं नृजपते ॥ सेमनोऽअचरं येन ॥ पुनतः कृत्तुगेष्यावसाण्य
 रूपो हर्षिः ॥ पग्निन्योन्यन ॥ दिनश्चिदापूज्या जायमाना विजगृवि मुदिदे गन्धमाना ॥ मृदा
 मृणयर्जुना वसानो भेयमस्मे स नृजापि न्याधीः ॥ उतस्मै नं रगमं शिनता युमनुं कोशं निक्षिप्यो मेरेषु ॥
 नीचायमानं जगृगिनः येनं श्रुश्चाच्छोषा मज्जं भूयं ॥ निर्वन्ने धियोऽअस्माऽअर्पां निवसा पुत्राय
 मातरो वयंति ॥ उपप्रक्षेपणे मोदमाना दिवस्पथावज्जो यंत्यच्छे ॥ १८ ॥ उतिपुण्याहमाचनमंत्राः ॥

अथ स्थालीपाकः ॥ जुष्टोदमं नानाभिर्निधुर्गुणेणऽऽमं नो यज्ञमुपयाहि विद्वान् ॥ विश्वाऽअग्नेऽ

अभियुजोविहत्याशत्रूयतामभराभोजनानि ॥ एक्ष्मऽइहहोतानिपीदादब्धःसुपुऽएताभवानः ॥
 अवन्तात्वारोदसीविश्वमिन्वेयजामहेसौमनसाथदेवान् ॥ चत्वारिंशृगात्रयोऽअस्यपादाद्वेशीर्षिसप्तह
 स्तासोऽअस्य ॥ त्रिधाबुद्धोवृषमोरैरवीतिमहोदेवोमर्त्योऽआर्विवेश ॥ एषहिदेवःप्रदिशोनुसर्वाः
 पूर्वोहिजातःसुगर्भोऽअंतः ॥ सविजार्यमानःसजनिष्यमाणःप्रत्यङ्मुखंस्तिष्ठतिविश्वतोमुखः ॥ १ ॥
 बृहस्पतिर्ब्रह्माब्रह्मसदनऽआशिष्यतेबृहस्पतेयज्ञगोपार्यसयज्ञंपाहिसयज्ञपतिपाहिसमांपाहिभूर्भुवः
 स्वर्बृहस्पतिप्रसूतः ॥ सवितुष्ट्वाप्रसवउत्पुनाम्यच्छिद्रेणपवित्रेणवसोःसूर्यस्यरश्मिभिः ॥ विश्वानि
 नोदुर्गहाजातवेदः ॥ सिंधुननावादुरितातिपर्षि ॥ अग्नेऽअत्रिवज्रमसांगुणानः ॥ अस्माकंबोध्यवि
 तातनूनां ॥ यस्त्वाह्मदाकीरिणामन्यमानः ॥ अमर्त्यमर्त्योजोहवीमि ॥ जातवेदोयशोऽअस्मासु
 धेहि ॥ प्रजार्भिरग्नेऽअमृतत्वमश्नां ॥ यस्मैत्वंसुकृतेजातवेदऽउलोकमग्नेरुणवःस्योनं ॥ अश्विनंस
 पुत्रिणवीरवंतंगोमंतर्यिर्नशतेस्वस्ति ॥ २ ॥ अयंतऽइध्मऽआत्माजातवेदस्तेनैध्यस्ववर्धस्वचेद्धव

धयचास्मान्प्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसे नान्नाद्येन स मेधयस्मां ॥ यदस्य कर्मणोत्परीरिचैयद्दान्यूनमि
 हाकरं ॥ अग्निष्टत्स्विष्टकृद्दिद्वात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे ॥ अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ता
 हुतीनां कामानां समर्धयित्री सर्वान्नः कामान्त समर्धयस्वा ॥ ३ ॥ अग्न्याश्वाग्नेस्य नेमिशस्तीर्थसत्यमि
 त्वमयाऽअसि ॥ अयासावयसाकृतोयासं न्हव्यमूहिर्वेद्यानो धिहिमेपुजं ॥ अनाज्ञानं यदाज्ञानं युज्ञ
 स्य क्रियते मिथु ॥ अग्ने तदस्य कल्पयुत्वह्वित्वेयथा तथस्वा ॥ पुरुषं मितोयुजोयुज्ञः पुरुषं मि
 तः ॥ अग्नेन ॥ यत्पाकत्रामने सादीनदं सानयुज्ञस्य मन्त्रे मर्तासि ॥ अग्निष्टद्धेतोऽक्रतुविद्विजान
 न्यजिष्ठो देवाऽऽकृतुशोयजाति ॥ यद्वो देवाऽअतिपातया निवाचा च प्रयुनीदेव देवैर्लनां अरायोऽअस्मौऽ
 अमिदुच्छुनायेत्यत्रा स्मन्मरुतस्तन्निधेतन ॥ ४ ॥ यन्मऽआत्मनो मिंदाभूदग्निस्तत्पनराहार्ज
 तवेदाविचर्षिणिः ॥ पुनरग्निश्चक्षुरदात्पुनरिद्रो बृहस्पतिः ॥ पुनर्मिऽअश्विनायुवं चक्षु राधतमक्षयोः ॥
 तंतु तन्वन्नजसोमानुमन्त्रिहिज्योतिष्मतः पथोरक्षभिर्याकृतात् ॥ अनुत्त्रणं वयतु जोगुवा मपो मनुर्मव

जंनयादैव्यजनं ॥ उद्धृष्यस्वाग्नेप्रतिजागृह्येनमिष्टापूर्तैः सस्त्वृजिथामयंच ॥ पुनः कृण्वत्स्त्वापितर्यु
 वानमन्वातांस्तीस्त्वयितंतुमेतं ॥ त्रयस्त्रिंशत्तंतवोयेवितत्तिरेयऽङ्गमंयज्ञस्त्वधयाददतेतेषांछिन्नंप्रत्ये
 तद्वधामिस्वाहाघुमेदिवाऽअप्येतु ॥ आभिर्गीर्भिर्यदतोऽनऽकुनमाप्याययहरिवोवर्धमानः ॥ यदा
 स्तोतृभ्योमहिगोत्रारुजासिभूयिष्ठमाजोऽअर्धतस्याम ॥ ५ ॥ पूर्णमंसिपूर्णमेभूयाः सुपूर्णमंसिसुपू
 र्णमेभूयाः सदासिसन्मैः भूयाः सर्वमसि सर्वमेभूया अक्षितिरसि मा मेक्षेष्टाः ॥ प्राच्यांदिशि देवाऽऽकृत्वि
 जोमार्जयन्तां ॥ दक्षिणस्यांदिशि मासाः पितरोमार्जयन्तां ॥ प्रतीच्यांदिशि गृहाः पशवोमार्जयन्तां ॥
 उदीच्यांदिश्यापऽओषधयोवनस्पतयोमार्जयन्तां ॥ ऊर्ध्वायांदिशि यज्ञः संवत्सरः प्रजापतिमार्जयन्तां ॥
 आपोऽअस्मान्मातरः शुंध्यंतु घृतेन नो घृतप्वः पुनंतु ॥ विश्वंहिरिप्रं प्रवहंति देवी रुदिदाभ्यः शुचिराप्
 तऽसि ॥ इदमापः प्रव० ॥ सुमित्र्यानाऽआपऽओषधयः संतु दुर्मित्र्यास्तस्मै संतु योऽस्मान् ॥ द्वेष्टियं
 च वयं द्विष्म स्तंहन्मि ॥ माहं प्रजापरांसि च यानः सयावरीस्थन ॥ समुद्रे वो निनया निस्वपाथोऽअपीथ

॥ ६ ॥ अ॒ग्निस्तुवि॒श्रवस्तमंतुवि॒व्रह्माणमु॒त्तमं ॥ अ॒तूर्त॑श्रावय॒त्पति॑पुत्रं॒ददाति॑दा॒शुपे ॥ अ॒ग्निर्द॒दा
 ति॒सर्प॑नि॒सासा॑ह॒योयु॒धानृ॒भिः ॥ अ॒ग्निर॒त्यैर॑घु॒प्यदु॑जे॒ता॒र॒म॒परा॑जितं ॥ अ॒ग्ने॒त्वंनोऽ॒अंत॑म॒ऽउत॑त्रा॒ता
 शि॒वोभ॑वाव॒रू॒थ्यः ॥ व॒सु॒र॒ग्निर्व॑सु॒श्रवाऽ॒अच्छा॑न॒क्षिद्यु॑म॒त्तमं॑शि॒वे॒दाः ॥ स॒नो॒बोधि॑श्रु॒धीहृ॒वम॑रु॒ण्याणो
 ऽअ॒घाय॑तः॒सम॑स्मात् ॥ तं॒त्वा॒शोचि॑ष्ठ॒दी॒दिवः॑सु॒म्ना॒र्य॒न॒मी॒महे॑स॒खिभ्यः ॥ मा॒न॒स्तोके॒तन॑ये॒मान॑ऽ
 आ॒यैमा॒नो॒गोषु॑मा॒नोऽअ॒श्वे॒पुरी॑रिषः ॥ वी॒रा॒न्मा॒नो॒रु॒द्रभा॑मि॒तोव॑धी॒र्हवि॑ष्मंतः॒स॒द॒मि॒त्त्वा॒ह॒वाम॑हे ॥
 अ॒नृ॒णाऽअ॒स्मिन्॒नृणाः॑ प॒र॒स्मिन्॒स्तृती॑ये॒लोके॑ऽअ॒नृ॒णा॒स्याम॑ ॥ ये॒दे॒व॒याना॑ऽउ॒न॒पि॒तृ॒याणाः॑स॒र्वान्य॑
 थोऽअ॒नृ॒णाऽआ॒क्षि॑येम ॥ ७ ॥ ॥ इ॒ति॒स्था॒ली॒पाक॑मंत्राः॒समा॑साः ॥ अथ॒ ग्र॒ह॒यज्ञ॑मंत्राः ॥ ॥
 अ॒आ॒कृ॒ष्णे॒न॒र॒ज॒सा॒वर्त॑मा॒नो॒नि॒वेश॑र्य॒ज्ञम॑तुंम॒र्त्यं च ॥ हि॒र॒ण्य॒ये॒न॒स॒वित॑र॒थेना॑दे॒वोया॑ति॒सु॒व॒नानि॑प
 श्य॑न् ॥ आ॒प्यो॒यस्व॑स॒मे॒तुने॑वि॒श्वतः॑सो॒म॒हृ॒ण्यं ॥ भ॒वा॒वा॒ज॑स्यसंग॒थे ॥ अ॒ग्नि॒र्म॒र्धा॒दिवः॑क॒कु॒त्पतिः॑पृ
 थि॒त्यऽअ॒यं ॥ अ॒प॒रे॒तांता॑सिजि॒न्वति ॥ उ॒द्व॒ध्य॒ध्वंस॑म॒न॒सः॒स॒वा॒युः॒स॒मु॒ग्नि॒र्भि॒ध्वं॒ब॒हवः॑स॒नी॒ळाः ॥ दृ

धिक्कामयिमुषसंचदेवीमिद्रावतोवसेनिह्वयेवः ॥ बहस्पतेऽअत्रियदर्योऽअर्हाद्युमद्विमातिक्रतुमञ्जने
 बु ॥ यद्दीदयच्छर्वसऽक्तप्रजाततदस्मासुद्रविणं धेहिचित्रं ॥ शुक्रःशुश्रुकोऽउषोनजारःप्रासमी
 चीदिवोनज्योतिः ॥ शमगिरिमिःकरच्छनस्तपतुसूर्यः ॥ शंवातोवात्वरपाऽअपस्त्रिधः ॥ कयान
 श्विनऽआभुवदूतीसदाह्वयःसखा ॥ कयाशचिष्ठयावृता ॥ केतुकृणवन्नकेतवपेशोऽमर्याऽअपेशसे ॥
 ममुषर्द्धिरजायथाः ॥ ९ ॥ त्र्यंबकंयजामहेसुगंधिपुष्टिवर्धनं ॥ उर्वारुकमिवबध्नानन्मृत्योर्मुक्षीयमा
 मृतात् ॥ गौरीमि० ॥ यदकंदःप्रथमंजायमानऽउद्यन्तसंमुद्रादुतवापुरीषात् ॥ श्येनस्यपक्षाहरिण
 स्यबाहूऽउपस्तुत्यंमहिजातैऽअर्वेन ॥ विष्णोर्नु० ॥ सहस्रशी० ॥ ब्रह्मणस्पतेत्वमस्यग्रं तासुक्त
 स्यबोधितनयंचजिन्व ॥ विश्वंतद्भद्रंयदवतिदेवाबृहद्देमविदथेसुवीराः ॥ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमं पुरस्ता
 द्विसीमतःसुरुचोविनऽआवः ॥ सुबुध्याउपमाऽअस्यविद्याःसतश्चयोनिसंतश्चविबः ॥ इंद्रवोविश्वं
 तस्यरिह्वामहेजनेभ्यः ॥ अस्माकमस्तुकेवलः ॥ इंद्रश्रेष्ठानिद्रविणानिधेहिचिन्तिदक्षस्यसुमग

त्वमुस्मे ॥ पोषंर्याणामरिद्धितनूनां स्वाद्यानं वाचः सुदिनत्वमह्नां ॥ इन्द्रत्वाद्यप्यभयं सुते सोमे हवामहे
 सपाहिमध्वोऽअंघसः ॥ यमाय सोमं सुनुत यमार्य जुहुताहविः ॥ यमंहयज्ञो गच्छत्यग्निर्दूतोऽअरुक्तः ॥
 मोषुणः परापरानिर्द्धीतिर्दुर्हणावधीतः ॥ पदीद्यतृष्णं गसह ॥ उपोवाजं हि वंस्त्रयश्चित्रोमानुपेजने ॥
 तेनावेहसुकृतोऽअध्वरोऽउपयेत्वांगुणंतिवह्नयः ॥ २ ॥ अग्निर्दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं ॥ अस्य
 यज्ञस्य सुकृतुं ॥ अप्सु मे सोमोऽअबवीदंतर्विश्वां निमेषजा ॥ अग्निं च विश्वशं सुवमोपश्च विश्वभेष
 जीः ॥ स्योनाय ॥ इदं वि० इन्द्रमिहेवतातयऽइन्द्रं ययत्यध्वरे ॥ इन्द्रं समीक्य निनो हवामहऽइन्द्रं धनं
 स्यमातये ॥ इन्द्रं विश्वाअवीवृधन्तसमुद्रव्यं च संगिरः ॥ रथीतं मरथीनां वाजानां सत्पतिपतिं ॥ इन्द्राणीमा
 नारिषु समगामुहर्मश्रवं ॥ नह्यस्याऽअपरं च न जसामस्ते पतिर्विश्वस्मादिन्द्रऽउत्तरः ॥ प्रजाप० आ
 यंगीः० ब्रह्म० ॥ ३ ॥ गुणा० ॥ जातवेदसे सुनवामसो ममरातीयतो निदं हातिवेदः ॥ स न पर्षदतिदुर्गणि
 विश्वानावेव सिधुर्दुरितात्यग्निः ॥ वायो शतं हरीणां युवस्वपोष्याणां ॥ उत वानि सहस्रिणो रथऽआया

तुपाजसा ॥ वायोयेतसहस्रिणोरथासस्तेभिरागहि ॥ नियुत्वान्तसोमपीतये ॥ तववायवतस्पतेत्वहु
 र्जीमातरद्भुत ॥ अवास्यावणीमहे ॥ वायोशुक्रोऽअयामितेमध्वोऽअग्रं दिविष्टिषु ॥ आयाहि
 सोमपीतयेस्पाहेदिवनियुवता ॥ आदित्यलस्यरेतसो ज्योतिष्यश्यंतिवासुरं ॥ परोयद्विध्यतेदिवा ॥
 एषोऽउषाऽअपूर्याव्युच्छतिप्रियादिवः ॥ स्तुषेवामश्विनावृहत् ॥ वास्तो० ऋक् ॥ क्षेत्रस्यपति
 नावयंहितेनैवजयामसि ॥ गामश्वपोषयित्वासनोमृच्छातीदृशे ॥ सोमधिनुंसोमोऽअवतमाशुंसोमो
 वीरं कर्मण्यददाति ॥ सादन्यविदुथ्यसमेयंपितृश्रवणं योददशदस्मै ॥ ४ ॥ समुद्रादूमिर्मधुमोऽउदार
 दुपांशुनासममृतत्वमानद् ॥ घृतस्यनामगुह्यं यदस्ति जिहोदेवानांममृतस्यनाभिः ॥ वयंनामप्रब्रवा
 माघृतस्यास्मिन्यज्ञेधारयामानमोभिः ॥ उपब्रह्माशृणवच्छस्यमानंचतुःशृंगोवमीद्वारऽएतत् ॥ च
 त्वा० ॥ त्रिधाहितं पणिभिर्गुह्यमानंगविदेवांसो घृतमन्वाविदन् ॥ इंद्रऽएकंसूर्य एकं जजानवेनादेकं
 स्वधयानिष्टतक्षुः ॥ एताऽअर्षीतिहृद्यात्समुद्राच्छतत्रंजारिपुणानावचक्षे ॥ घृतस्यधाराऽअभिचाक

शीमिहिरुण्योवेतसोमध्यऽआसां ॥ ५ ॥ सम्यक्स्ववृत्तिसरितोनेनाऽअंतर्हृदामनसापूयमानाः ॥
 एतेऽअर्षिर्यमथौघृतस्यमृगाइवक्षिपणोरीरपमाणाः ॥ सिधोरिवप्राध्वनेधूवनासोवानप्रमियःपतयंति
 युद्धाः ॥ घृतस्यधारांअरुपोनवाजीकाष्ठासिंदन्मिभिःपिन्वमानः ॥ अभिप्रवंतुसमेनेवयोपाःक
 ल्याण्यःस्मर्यमानसोऽअग्नि ॥ घृतस्यधाराःसुमिधोनसंतताजुपाणोहृयंतिजातवैदाः ॥ कन्या
 ऽइववहृतुमेतवाऽऽंज्यैजानाऽअभिचोकशीमि ॥ यन्नसोमःसूयतेयन्नयुज्ञोघृतस्यधाराऽअभित
 त्ववते ॥ अभ्यर्षतसुष्टुतिगव्यमाजिमस्मासुभद्राद्रविणानिधत्त ॥ इमंयुज्ञंनयतेदेवतानोघृतस्यधा
 रामधुमत्पवन्ते ॥ धामते० ॥ ६ ॥ मूर्धानं० ॥ पुनस्त्वादित्यारुद्रावसेवुःसभिधतांपुनर्ब्रह्माणोवसुनी
 थयुज्ञैः ॥ घृतेनृत्वंतनुवोवर्धयस्वसत्याःसंतुयजमानस्यकामाः ॥ ससतेऽअग्रेसुमिधःससजिह्वाःससऽ
 र्षयः सप्तधामप्रियाणि ॥ सप्तहोत्राःसप्तधात्वायजंतिस्सयोनीरापृणस्वाघृतेन ॥ ७ ॥ यऽएकऽइ
 द्विदयतेवसमर्तायदाशुषे ॥ ईशानोऽअप्रतिष्कृतऽइन्द्रोऽअंग ॥ उभयंशृणवंचनऽइन्द्रोऽअर्वागिदंवचः॥

सत्राच्यामघवासोमपीतयेधियाशाविष्टऽआगमत् ॥ स्वस्तिदाविशस्पतिर्दृत्रहाविमृधोवशी ॥ दृषेद्रः
पुरऽइतुनःसोमपाऽअमयंकरः ॥ देवस्यत्वासवितुःप्रसवे ॥ अश्विनोर्बाहुभ्यां ॥ पूष्णोहस्ताभ्यां ॥
अश्विनोर्भेषज्येन ॥ तेजसेब्रह्मवर्चसायामिषिंचामि ॥ देवस्यत्वा० ॥ सरस्वत्यैर्भेषज्येन ॥ वीर्या
यात्रायायामिषिंचा० ॥ देव० ॥ हस्ताभ्यां ॥ इन्द्रस्येंद्रियेण ॥ अथैयशसेबलायामिषिंचा० देव
स्यत्वासवितुःप्रसवेअश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्या ५ सरस्वत्यैवाचोयंतुर्यज्ञेणामेस्त्वासास्त्राज्येनाभि
षिंचामिन्द्रस्यबृहस्पतेस्त्वासास्त्राज्येनामिषिं०॥८॥ तमीशानं० ॥ त्वमग्रेरुद्रोअसुरोमहोदिवः ॥ त्व
शर्धोमारुतंपृक्षईशिषे॥ त्वंवातैररुणैर्यासिशंगयः॥ त्वंपूषाविधतःपांसिनुत्मनां ॥९॥ तमृष्टुह्रियःस्विषुः०
क्र० ॥ भुवनस्यपितरंगीभिर्आमीरुद्रंदिवावर्धयारुद्रमक्तौ ॥ बृंहंतमृष्वमजरसुषुम्नमृधंघुवेमकविनेषि
तासः ॥ १० ॥ यज्जाग्रतोदूरमुदैतिदैवंतदुसप्तस्यतथैवैति ॥ दूरंगमंज्योतिषांज्योतिरेकंतन्मेमनः
शिवसंकल्पमस्तु ॥ येनकर्माण्यपसोमनीषिणोयज्ञेकृण्वन्तिविदथेषुधीराः ॥ यदंपूर्वयक्षमंतःप्रजानां

तन्मे० ॥ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधातिश्चयज्ज्योतिरंतरमृतं प्रजासु ॥ यस्मान्नऽकृते किंचन कर्म क्रियते तन्मे० ॥ येनेदं भूतं सर्वं न भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वं ॥ येन युज्ञस्तयते सप्त होतान्मे० ॥ यस्मिन्मृतः सामयजूंश्चियस्मिन्प्रतिष्ठितारशनाभा विवाराः ॥ यस्मिन्श्चित्तं सर्वमोलं प्रजानां तं सुपा रथिरश्वा निवयं मनुष्यांन्नेनीयते सीधुभिर्वाजिनऽइव ॥ ह्यप्रतिष्ठं यदंजिरं यविंष्ठं तन्मे० ॥ ११ ॥ इंद्रं त्वावृषं वयं सुते सोमे हवामहे ॥ सर्पाहिमध्वोऽअंधसः ॥ इंद्रं क्रतुविदं सुतं सोमं हर्यपुरुषुत ॥ पितृवामहं पस्वतावृषिं ॥ इंद्रं प्रणोधि तावानं यज्ञं विश्वेभिर्देविभिः ॥ तिरस्तवानविशते ॥ इंद्र सोमः सुताऽइमे तव प्रयं निसत्पते ॥ क्षयं चंद्रामऽइंदवः ॥ दुधिष्वजठरे सुतं सोमं मिंद्रवरेण्यं ॥ तव द्युक्षासऽइंदवः ॥ १२ ॥ ह्रुपं ह्रुपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य ह्रुपं प्रतिचक्षणाय ॥ इंद्रो मायाभिः पुरु रूपं इत्येते युक्ता ह्यस्य हरयः शतादश ॥ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयंतस्त्वमेहे ॥ उपप्रयंतु मरुतः सुदानवऽइंद्रं प्राशू भवा सचा ॥ अभ्यारमिदं द्रयोनिर्षिक्तं पुष्करे मधुं ॥ अवतस्य विसर्जने ॥ १३ ॥ अथोत्सर्जनमंत्राः ॥ ॥ अग्नि

मीळिपुरोहितंयज्ञस्यदेवमृत्विजं ॥ होतारंरत्नधातमं ॥ कृषंभकस्तदंब्रवीद्द्विरेःप्रवर्तमानकः ॥ दृश्वि
 कस्यारसंविषमरसंष्टश्चिकतेविषं ॥ त्वमग्नेद्युभिस्त्वमांशुशुक्षणिस्त्वमद्भ्यस्त्वमभमनुस्परि ॥ त्वंवेने
 भ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्वनृणानृपतेजायसेशुचिः ॥ आवदंस्त्वंशकुनेभद्रमावदतुष्णीमासीनःसुमतिंवि
 किन्दिनः ॥ यदुत्पतन्वदसिकर्करिर्यथाबृहद्वदेमविदथैसुवीराः ॥ सोमस्यमातुवसंवक्ष्येश्वेवह्विचकथ
 विदथेयजधै ॥ देवाँऽअच्छादीद्यद्युजेऽअद्रिंशमायेऽअग्नेतन्वजुषस्व ॥ १ ॥ गृणानाजमदग्नि
 नायोनावृतस्यसीदतं ॥ पातंसोममृताद्यथा ॥ त्वांह्यग्नेसदमित्समन्यवोदेवासोदेवमरतिन्यैरिरिऽइति
 कृत्वान्येरिरे ॥ अमर्त्ययजतमत्येष्वादेवमादेवंजनतप्रचेतसंविश्वमादेवंजनतप्रचेतसं ॥ धामतेवि
 श्वंभुवन्मधिश्चित्तमंतः समुद्रेदृद्यं१तरायुषि ॥ अपामनीकेसमिथेयऽआभंतस्तमश्याममधुमंतंऽमि ॥
 अबोध्यमिःसमिधाजनानांप्रतिधेनुमिवायतीमुपासं ॥ यद्वाऽइवप्रवयामुज्जिह्वानाःप्रभानवःसिखते
 नाकमच्छं ॥ गंतानोयज्ञयंज्ञियाःसुशमिश्रोताहवमरक्षऽएवंयामरुत॥ ज्येष्ठांसोनपर्वतासोऽव्योमनियु

यंतस्य प्रचेतसः स्यात्तदुर्ध्वतर्वा निदः ॥ २ ॥ त्वं ह्यं मे प्रथमो मनोता स्यादधियोऽअभवोदस्महोता ॥
 त्वं सीदृषन्नहणोदुहरीतुसहोविश्वस्मैसहसेसहृद्वै ॥ योनःस्वोऽअरणोयश्चनिष्ठयोजिघांसति ॥
 देवास्तंसर्वे धूर्वतुब्रह्मवर्मममांतरं ॥ अग्निनरोदीर्धितिभिरणयोर्हस्तच्युतीजनयंतप्रशस्तं ॥ दूरे
 दृशंगृहपतिमथ्यु ॥ मतिचक्षुर्विचक्ष्वेद्रश्चसोमजागृतं ॥ रक्षोभ्योवधमस्यतमशानियातुमद्भ्यः ॥
 माचिदन्यद्विशंसतुसखायोमारिषण्यत ॥ इन्द्रमिस्तोतादृपणंसचासुतेमुहुरुक्थाचक्षंसत ॥
 ॥ ३ ॥ आग्नेयाहिमरुत्संखारुद्रेमिःसोमपीतये ॥ सोमर्याऽउपसुष्टुतिमादयस्वस्वर्णरे ॥
 स्वादिष्ठयामदिष्ठयापवस्वसोमधारया ॥ इन्द्रायपातवेसुतः ॥ यत्तैराजन्तुनंहविस्तेनसोमाभिर
 क्षनः ॥ अरातीवामानस्तारीन्मोचनः किंचनाममर्दिद्रायेदोपरिखव ॥ अग्नेब्रह्मपसामूर्ध्वोऽअ
 स्थाभिर्जगन्वान्तमसोज्योतिषागात् ॥ अग्निमानुशलास्वंगुऽआजातोविश्वासद्वान्यप्राः ॥
 समानीव आकूतिः समानाहृदयानिवः ॥ समानमस्तुवोमनोयथावः सुसहासति ॥ ४ ॥ बळित्था

पर्वतानां खिद्रं बिभर्षि पृथिवि ॥ प्रयाभूमिं प्रवत्वति मृत्ताजिनोषिमहिनि ॥ मावोरिषत्वनिताय
स्मै चाहं वनामिवः द्विपच्चतुर्ष्वदस्माकंसर्वमस्त्वनातुरं ॥ आर्येनेते परार्थणे दूर्वा रोहंतु पुष्पिणीः ॥
हृदाश्च पुंडरीकाणिसमुद्रस्य गृहाऽऽमे ॥ आतारमिंद्रमवितारमिंद्रहवेहवे मुहवंशूरमिंद्रं ॥ ह्वया
मिश्रं कर्पुरुहूतमिंद्रस्वस्तिनो मधवाधा त्विंद्रः ॥ वयंसो मज्जते तव मनस्तनूषु बिभ्रंतः ॥ प्रजावतः संचे
महि ॥ तत्सूर्यरोदसीऽउभे दोषावस्तोरुपब्रुवे ॥ भोजे स्वस्माँऽअभ्युच्चरासदा ॥ अयः पश्य स्वमो
परिसंतरां पादकौहरे ॥ माते कशकुकौहं शं न्द्वीहि ब्रह्माब्रूमवैथ ॥ ५ ॥ अक्षीभ्यं निनासिकाभ्यां
कर्णाभ्यां छुबुकादधि ॥ यक्षं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया विहृतामिति ॥ ग्रीवाभ्यस्तऽउष्णिहाभ्यः
कीर्कसाभ्योऽअनूक्यात् ॥ यक्षं दोषण्यं मंसाभ्यां बाहुभ्यां विहृ० ॥ आंत्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठो हृ
दयादधि ॥ यक्षं मन्तस्त्राभ्यां यक्रःभ्यो विहृ० ॥ नाभानाभि नऽआदो देचक्षुश्चित्सूर्यसचा ॥ कवेर
पत्यमादुहे ॥ त्वमिंद्रसजोषसमर्कं बिभर्षि बाह्वोः ॥ वज्रं शिशानुऽओजसा ॥ सोमानं स्वरं कणुहि

ब्रह्मणस्पते ॥ कक्षीर्वंतं यऽऔशिजः ॥ यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्रऽहं विन्वते ॥ उर्वीरापो न का कदः ॥
 बह्वीनां पिता बृहदस्य युत्र श्चिश्चार्कणो तिसर्मनावगत्य ॥ इषुधिः संकाः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धे जयति
 प्रमनः ॥ कुरुभ्यतिऽअधीवद्ध्यां पाणिभ्यां प्रपदाभ्यां ॥ यक्षं श्रोणिभ्यां मांसदाहं संसो विट्हा मिते ॥
 मेहनाह्नं करं णालोमं भ्यस्ते न खेभ्यः ॥ यक्षं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं विनं ॥ यस्य विश्वानि हस्तयोः
 पंचसितीनां वसु ॥ स्याशयं स्वयोऽअस्मद्भुगिदव्ये वाशनं जिहि ॥ अंगादंगालोमो लोमो जातं पर्वणि पर्व
 णि ॥ यक्षं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं विट्हा मिते ॥ सहस्रं ० ऋक् १ ॥ ३ ॥ यस्य विश्वानि हस्तयोः रूचुर्वसू
 नि निहिता ॥ वीरस्य पृतना षट् ॥ अवतिहेल्लोवरुणमोभिरव्यज्ञेभिरिमहेह विभिः ॥ क्षयं च स्मभ्यमसु
 रप्रचेताराजन्नेनांसि शिश्रयः कृतानि ॥ उदुत्तमं वरुणपाशं मस्मदवाधुमं विमध्युमं श्रथाय ॥ अथाव
 यमादित्यं जनेतवानागमोऽअदितये स्याम ॥ हिरण्यशृंगं वरुणं प्रपद्ये तोर्थं मे देहि याचितः ॥ यन्मया
 मुक्तमसाधूनां पापेभ्यश्च प्रतिग्रहः ॥ यन्मे मनसा वाचा कर्मणा वा दुष्कृतकृतम् ॥ तन्मऽइन्द्रो वरुणो बृह

स्पतिःसविताचपुनंतुपुनःपुनः ॥ याःप्रवतोनिवतंतउद्धतंतउद्धन्वतीरनुदकाश्रयाः ॥ ताऽअस्मभ्यंप
 यंसपिन्वमानाःशिवादेवीरशिपदामंतुसर्वानद्योऽअशिमिदामंतु ॥ सुमि०इममे०समु० ॥ शुची
 वोहव्यामस्तुः शुचीनांशुचिंहिनोम्यध्वरंशुचिभ्यः॥ऋतेनसत्यमृतसांपऽआयन्धुचिजन्मानःशुचयः
 पावकाः ॥ अग्निःशुचिब्रततमःशुचिर्विप्रःशुचिः कविः ॥ शुचीरोचतऽआहुतः ॥ उदग्नेशुचयस्तव
 शुक्राभ्राजंतऽईरते ॥ तवज्योतीष्यर्चयः ॥ एतोर्विद्रंस्तवामशुद्धशुद्धेनसाम्ना ॥ शुद्धैरुक्थैर्वाव
 ध्वांसंशुद्धऽआशीर्वान्ममत्तु ॥ इंद्रशुद्धेनऽआर्गहिशुद्धःशुद्धाभिरुतिभिः ॥ शुद्धोरयिनिधारयशु
 द्धोममद्विसोम्यः ॥ इंद्रशुद्धोहिनोरयिशुद्धोरत्तानिदाशुषे ॥ शुद्धोवृत्राणिजिघ्रसेशुद्धोवाजंसिषा
 ससि ॥ १४ ॥ तरत्समंदीधावनिधारासुतस्यांधसः तरत्समंदीधावति ॥ उसावेदवसूनामर्तस्यदेव्य
 वसः ॥ तर० ॥ ध्वस्वयोःपुरुषंत्योरासहस्राणिदद्महे ॥ तर० ॥ आययोस्त्रिशंततनासहस्राणिचद
 द्महे ॥ तर० ॥ १५ ॥ त्रिमिष्वेदवसवितुर्वर्षिष्टैःसोमधामभिः ॥ अग्नेदक्षैःपुनीहिनः ॥ पुनंतुमांदे

वज्रनाः पुनंतुवसवोधि॒या ॥ विश्वेदे॒वाः पु॒नीत॒माजा॒तवे॒दः पु॒नीहि॒मा ॥ प्र॒प्याथ॒स्वप्र॒स्यं द॒स्वसोम॒वि
 श्वे॒भिर्गंधु॒भिः दे॒वेभ्य॑ऽउ॒त्तमं॒ह॒विः ॥ उ॒पप्रि॒यं प॒निमंत॑यु॒वानमा॒हुती॒ष्टधं ॥ अ॒ग॒न्म॒वि॒श्रतो॒नमः ॥ अ॒
 ला॒च्यं स्य॒पर॒शुर्न॒नाश॒तमा॒प॒वस्व॒दे॒वसो॒म ॥ आ॒खुं चि॒दे॒वदे॒वसो॒म ॥ यः पा॒वमा॒नीरु॒ध्येत्यृ॒षिभिः॑ संभू॒तं
 रसं ॥ सर्व॑स॒प॒तमं॒श्नाति॒स्वदि॒तं मा॒त॒रि॒श्व॒ना ॥ पा॒वमा॒नीर्योऽअ॒ध्येत्यृ॒षिभिः॑ संभू॒तं रसं ॥ तस्मै॒सर॑स्व
 ती॒दुहे॒क्षीरं॑ स॒र्विर्मधू॒दकं ॥ पा॒वमा॒नीः स्व॒स्त्यय॑नीः सु॒दुघा॒हिघृ॑त॒श्रुतः ॥ ऋ॒षिभिः॑ संभू॒तो रसो॒बाह्य॑णे
 ष्व॒मृते॑ हितं ॥ पा॒वमा॒नीर्दि॒शंतु॑ नऽइ॒मं लो॒कम॒थोऽअ॒मुं ॥ का॒मा॒न्त्सम॑र्धं य॒तु नो॒दे॒वदे॒वीः स॒माहि॒ताः ॥ ये
 न॒दे॒वाः प॒वित्रे॑णा॒त्मानं॑ पु॒न॒ते॒सदा ॥ ते॒न स॒हस्रं॑ धो॒रेण॒पाव॒मान्यः पु॑नंतु॒मां ॥ प्रा॒जाप॒त्यं प॒वित्रं॑ श॒तोद्या
 मं॒हि॒र॒ण्ययं ॥ ते॒न ब॒ह्मवि॒दो व॒यं प॑तं ब्र॒ह्म पु॒नीम॒हे ॥ इ॒ंद्रः सु॒नीती॒ स॒ह मा॑ पु॒नातु॑ सोमः स्व॒स्त्याव॑रु॒णः
 स॒मी॒च्या ॥ य॒मो रा॒ज॒प्र॒मृणा॑भिः पु॒नातु॑ मा॒जात॑वै॒दाम॒र्जय॑त्या पु॒नातु ॥ १६ ॥ अ॒ंबयो॑यं॒त्यध्व॑र्वा॒भिर्जा
 मयो॑ऽअ॒ध्वरी॒यतां ॥ पृ॒च॒तीर्मधु॑ना॒पयः ॥ अ॒मूर्याऽउ॒पसृ॑थ्यै॒याभि॒र्वासूर्यः॑ स॒ह ॥ ता॒नोहि॒न्वंत्व॒ध्वरो॑ऽअ॒

पोदेवीरुपह्वयेयत्रगावःपिबंतिनः ॥ सिंधुभ्यःकर्त्तव्यहविः ॥ अप्सर्वं१तरुतमप्सुभेषजमपामुतप्रशस्त
 ये ॥ देवाभवतवाजिनः ॥ अप्सुमे० इमं० कृतंच० ॥ १७ ॥ ऋषेमंत्रकृतांस्तौमैःकश्यपोद्गृथयन्नि
 रः ॥ सोमंनमस्युराजानंयोजज्ञेवीरुधांपतिरिद्राधिदोपरिस्त्रव ॥ अत्रिर्यद्दामवरोहंनृवीसमजोहवीचा
 धमानेवयोषां ॥ श्येनस्यचिज्जर्वसानुतेनानागच्छतमश्विनाशंतमेन ॥ एवानःस्पृधःसमंजासमस्त्विद्रे
 रांधिभिथतीरेदेवीः ॥ विद्यामवस्तोरवसागुणंतोभ्ररद्वाजाऽउततऽइंद्रनूनं ॥ प्रसूतोभक्षमकरंचरावपि
 स्तोमंचेमंप्रथमःसूरिरुन्मृजे ॥ सुतेसातेनयद्यागंमंवांप्रतिविश्वामित्रजमदग्नीदमे ॥ एवातेवयमिंद्र
 मंजतीनांविद्यामंसुमतीनानवानां ॥ विद्यामवस्तोरवसागुणंतोविश्वामित्राऽउततऽइंद्रनूनं ॥ अग्नि
 त्वागोतमागिराजातवेदोविचर्वणे ॥ द्युमैरभिप्रणोनुमः ॥ गृणानाजमदं० ॥ उतासिमैत्रावरुणोव
 सिष्टोर्वश्याब्रह्मन्मनसोधिजातः ॥ द्रप्संस्कृन्नंब्रह्मणादैव्येनविश्वेदेवाःपुष्करेत्वाददंत ॥ अत्रैर्यथानु
 सूयांस्याद्दसिष्टस्याप्यरुंधती ॥ कौशिकस्ययथासतीतथात्वमपिभर्तारि ॥ देवाएतस्यामवदंतपूवस

मऽऋषयस्त्वर्षसेयेनिषेदुः ॥ श्रीमाजायाब्राह्मणस्योपनीतादुर्धादधातिपरमेव्योमन् ॥ सहस्त्रोमाः
 सहस्रैदसऽआद्यतः सहस्रमाऽऋषयः सप्तैद्व्याः ॥ पूर्वेषांपथामनुदृश्यधीराऽअन्वालेभिरेरुथ्योऽेनर
 श्मीन् ॥ अहान्यश्रेष्ठविरास्येतिसुचीवपृतंचम्बीवसोमः ॥ वाजसनिर्ऋयिमस्मेसुवीरप्रशस्तं धेहियशसंबु
 हतं ॥ नूसद्धानैदिव्यं न शिदेवाभारद्वाजः सुमतिरिति होता आसानेभिर्यजमानोभिर्यैर्धेवानां जन्मव
 स्युर्ववद ॥ १८ ॥ ॥ अथपर्जन्यसूक्तानि ॥ ॥ तिस्रोवाचः प्रवदज्ज्योतिरग्रायाऽएतद्गृहेमधुदोष
 मूधः ॥ सवत्सं कृण्वनाममोषधीनांसद्योजातो हृषमोरोरवीति ॥ योवर्धनऽओषधीनां योऽअपां योवि
 श्वस्य जगतो देवऽईशे ॥ सन्निधानुशरणं शर्मयंसन्निवर्तुज्योतिः स्वमिष्ट्यस्मे ॥ स्तरीरुत्तुर्भवति सु
 तऽऽउत्तवद्यथावृशंतुर्वचक्रऽएषः ॥ पितुः पयः प्रतितृग्णातिमातातेन पितावर्धते तेन पुत्रः ॥ यस्मिन्वि
 श्वानि सुर्वनानि तस्युस्ति त्र्योद्यावस्त्रेधासुत्तरापः ॥ त्रयः कोशांसऽउपसेचनासोमध्वः श्वोतंत्यमिनोवि
 रुषां ॥ इदं वर्चः पर्जन्यायस्वराजैर्हृदोऽअस्त्वतं रंतज्जुजोषत् ॥ मयोमवो हृष्टयः संतस्मेषु पिप्पला

ऽओषधीर्देवगोपाः ॥ सरैतोधाहृषभः शश्वतीनांतस्मिन्नात्माजगतस्तस्थुषश्च ॥ तन्मेऽञ्जतंपातुश
 तशारदाययूयंपातस्वस्तिमिः सदानः ॥ १ ॥ पर्जन्यायप्रगायलदिवस्पुत्रायमीळुषे ॥ सनोयवस
 मिच्छतु ॥ योगर्म्मोषधीनांगवाँकुणोत्यवतां ॥ पर्जन्यः पुरुषीणां ॥ तस्माऽइदास्येहविर्जुहोताम
 धुमत्तमं ॥ इळांनः संयतैकरत् ॥ २ ॥ संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा ज्ञतचारिणः ॥ वाचैर्पर्जन्यजिन्वि
 तांप्रमंडूकाऽअवादिषुः ॥ दिव्या आपोऽअभियदेनमायन्दतिनशुक्कसरसीशयानं ॥ गवामहनमायु
 र्वत्सिनीनामंडूकानां वभ्रुत्रासमैति ॥ यदीमेनौऽउशतोऽअभ्यवर्षेत्तृष्यावतः प्रावृष्यागतायां ॥
 अक्खलीकृत्यापितरं नपुत्रोऽअन्योऽअन्यमुपवदंतमेति ॥ अन्योऽअन्यमनुगृभ्णात्येनोरपांप्रसर्गेय
 दमं दिषातां ॥ मंडूकोयदमिष्टंष्टः कनिष्कन्पृश्निः संपृङ्क्लहरितेनुवाचं ॥ यदेषामन्योऽअन्यस्यवाचैशा
 कस्यैववदति शिक्षमाणः ॥ सर्वतदेषांसमृधेवपर्वयत्सुवाचोवदथनाध्यप्सु ॥ ३ ॥ गोमाथुरेकोऽअजमा
 थुरेकः प्रश्निरेकोहरितऽएकऽएषां ॥ समानं नामविभ्रंतोविरूपाः पुरुत्रावाचं पिपिशुर्वदंतः ॥ ब्राह्मणा

सोऽअतिरात्रेनसोमेसरोनपूर्णमभितोवदंतः ॥ संवत्सरस्यतदहःपरिष्ठयन्मंडूकाःप्राचृषीणंबभूव॥ ब्राह्म
 णासःसोमिनोवाचमकतब्रह्मकृण्वंतःपरिवत्सरीणां॥ अध्वर्यवोघर्मिणःसिष्विदानाऽआचिर्मवंतिगुह्या
 नकेचित्॥ देवहितंजुगुप्सुर्द्वादशस्यऽऽकृतनरोनप्रमिनंयेते॥ संवत्सरेप्राचृष्यागतायांतसाधर्माऽअंश्रुवते
 विसर्गं॥ गोमायुरदादजर्मायुरदात्स्थीश्ररदाद्धरितोनोवर्सूनि ॥ गवांमंडूकाददंतः शतानिसहस्रसावेप्रति
 रंतऽआयुः॥ ४॥ उपप्लवदमंडूकिवर्षमावेदतादुरि॥ मध्येन्हदस्यप्लवस्वनिगृह्यचतुरःपुरः॥ इतिप्रथमसूक्तं
 ॥ १॥ अच्छावदतवसंगीर्भिराभिःस्तुहिपुर्जन्युनमसाविवासा॥ कर्त्तुमिच्छददृषुभोजीरदानेरेतोदधात्योषधी
 षुगमी॥ विवृक्षान्हृत्युतहैतिरक्षसोविश्वंविभायुमुर्वनमहावधात्॥ उतानागाऽईषतेवृष्यावतोयत्पुर्जन्यः
 स्तनयुर्हतिदुष्कृतः ॥ रथीवकश्याश्वौऽअमिक्षिपन्नाविर्दतान्कणुतेवृष्यौऽअहं ॥ दुरास्तिहस्यस्त
 नथाऽउदीरेतेयत्पुर्जन्यःकृणुतेवृष्यऽनभः ॥ प्रवातावांतिपुतयंतिविद्युतऽउदोषधीजिहतेपिन्वतेस्वः॥
 इराविश्वस्मैमुर्वनायजायतेयत्पुर्जन्यःपृथिवीरतुसावति ॥ यस्यव्रतेपृथिवीनर्त्तमीतियस्यव्रतेशफव

जार्भुरीति ॥ यस्यव्रतऽओषधीर्विश्वरूपाःसर्नः पर्जन्यमहिर्शर्मयच्छ ॥ १ ॥ दिवोर्नोवृष्टिमरुतोर
रीध्वंप्रपिन्वतृष्णोऽषअश्वस्यधाराः ॥ अर्वाङ्तेर्नस्तनयितुनेह्यपोर्निषिचन्नसुरःपितानः ॥ अग्नि
कंदस्तनयगर्भमार्धाऽउदुन्वतापरिदीयारथेन ॥ ह्यतिसुकर्षविषितुन्धंचंसमामंवतूदतोनियादाः ॥
महांतंकोशमुदंचानिषिचस्यदंतांकुल्याविषिताःपुरस्तात् ॥ घृतेनद्यावापृथिवीव्युधिमुप्रपाणंसंवत्
इयाम्यः ॥ यत्पर्जन्यकर्निकदस्तनयन्हंसिदुक्ततः ॥ प्रतीदंविश्वमोदतेयत्किचपृथिव्यामधि ॥
अवर्षवर्षमुदुषूभायाकर्धन्वान्यत्येतवाऽड ॥ अर्जीजनऽओषधीर्भौर्जनायकमुतप्रजाभ्योविदोम
नीषां ॥ २ ॥ द्वि० सूक्तं ॥ बळित्था० ऋ० १॥ स्तोमांसस्त्वाविचारिणिप्रतिष्ठोभंत्यक्तुभिः ॥
प्रयावाजंनेहर्षतंपेरुमस्यंस्यर्जुनि ॥ इळ्हाचिद्यावनस्पतीन्धमुयादध्वर्योर्जसा ॥ यत्तेऽअस्यविद्यु
तोदिवोवर्षतिवृष्टयः ॥ वर्षतुतेविमावरिदिवोऽअभ्रस्यविद्युतः ॥ रोहंतुसर्वबीजान्यवब्रह्मद्विषोर्जहि
॥ १ ॥ ॥ प्रदेवत्राब्रह्मणैगानुरैत्वपोऽअच्छामनंसोनप्रयुक्ति ॥ महीमित्रस्यवरुणस्यधासिंपृथुज

यंसेरीरथासुवृत्ति ॥ अध्वर्यवोहविष्मन्तोहिंसुताच्छापइतोशतीरुशंतः ॥ अत्रयाश्वेऽअरुणःसुपर्ण
 स्तमास्यध्वमर्भिमद्यासुहस्ताः ॥ अध्वर्यवोपइतासमुद्रमुपानपातंहविपायजध्वं ॥ सर्वोदददु
 र्भिमद्यासुपूतंतस्मैसोमंमधुमंतसुनोत ॥ योऽअनिध्मोदीदयदृप्स्वं १ तयर्विप्रासऽइळतेऽअध्व
 रेभु ॥ अपानपान्मधुमतीरपोदायाभिरिद्रोवावृधेवीर्याय ॥ याभिःसोमोमोदतेहर्षतेचकल्याणीभि
 र्युवतिभिर्नमर्यः ॥ ताऽअध्वर्योअपोऽअच्छापैरिहियदांसिचाऽओपधीभिःपुनीतात् ॥ १ ॥ एवेद्यु
 नेयुवतयोनमंतयदीमुशन्नुशतीरित्यच्छ ॥ संजानतेमनसांसंचिकित्रेध्वर्यवोधिषणापंश्वदेवीः ॥ यो
 वोद्युताभ्योऽअकृणोदुलोकंयोवोमह्याऽअमिशस्तेरमुंचत् ॥ तस्माऽइंद्रायमधुमंतमूर्भिमिदेवमादंनंप्रहि
 णोतनापः ॥ प्रास्मैहिनोतमधुमंतमूर्भिमगीयोवःसिधवोमध्वउत्सः ॥ घृतपृष्ठमीड्यमध्वरेणवापरिवतीःश्र
 णुताहवमे ॥ तंसिधवोमत्सरभिद्रूपानमर्भिमप्रेहतयऽउभेऽइयंति ॥ मदच्युतंमौशानंनमोजांपरिञ्जितंनु
 विचरंतमुत्सं ॥ आवर्हततीरधनुद्विधारागोषुयुधोननियवंचरंतीः ॥ ऋषेजनित्रीभुर्वनस्यपत्नीरपोवंदस्व

सहधःसयोनी ॥ २ ॥ हिनोतानोऽअध्वरैदेवयज्याहिनोतब्रह्मसनेधनानां ॥ ऋतस्ययोगेविष्यं
ध्वमूर्धःश्रुष्टीवरीमूतनास्मभ्यमापः ॥ आपोरेवतीःक्षयथाहिवस्वःऋतुंचमद्राबिभूथामृतंच ॥ राय
श्चस्थस्वपत्यस्यपत्नीःसरस्वतीतद्गृणतेवयोधात् ॥ प्रतियदापोऽअदृश्रमायतीघृतंपयांसिबिभ्रतीर्म
धूनि ॥ अध्वर्युभिर्मनसांसंविदानाऽइंद्रायसोमंसुषुतंसरंतीः ॥ एमाऽअंगमन्नेवतीर्जीवधन्याऽअध्वर्य
वःसादयतासखायः ॥ निबर्हिषिधत्तनसोम्यासोपांनपत्रासंविदानासंऽएनाः ॥ आगमन्त्रार्पऽउशतीर्ब
हिरेदन्यध्वरेऽअसदन्देवयंतीः ॥ अध्वर्यवःसुनुतेंद्रायसोममभूदुवःसुशकादेवयज्या ॥ ३ ॥ तु.सू. ॥
॥ बृहस्पतेप्रतिमेदेवतामिहिमित्रोवायद्वरुणोवासिपूषा ॥ आदित्यैर्वायद्वसुभिर्मरुत्वान्सपर्जन्यंशं
तनवेवृषाय ॥ आदेवोदूतोऽअंजिरश्चिकित्वान्त्वदैवापेऽअभिमामंगच्छत् ॥ प्रतीचीतःप्रतिमामावे
हस्त्वदधामितेद्युमतीवाचमासन् ॥ अस्मैधैहिद्युमतीवाचमासन्बृहस्पतेऽअनमीवामिषिरां ॥ यया
द्याँष्टिशंतनवेवनावदिवोद्रप्सोमधुमाँऽआविवेश ॥ आनोद्रप्सामधुमंतोविशंत्विद्रेद्याधिरथंसहस्रं ॥ नि

षीदहोत्रमृतुथायजस्वदेवान्देवापेहविषासपर्य ॥ आर्ष्टेपेणोहोत्रमृपिर्निपीदन्देवापिदेवसुमर्तिचिक्कि
 त्वान् ॥ सऽउत्तरस्मादधरसमुद्रमुपोदिव्याऽअंस्तजह्वर्याऽअभि ॥ अस्मिन्समुद्रेऽअध्युत्तरस्मिन्नापेदि
 वेसिर्निवृताऽअतिष्ठन् ॥ ताऽअद्रवन्नाधिपेणेनसृष्टादेवापिनम्रेपितामृक्षिणीपु ॥ १ ॥ यदेवापिःशंतनवे
 पुरोहितोहोत्रायवृतःकृपयन्नदीधेत ॥ देवश्रुतंष्टष्टिवनिराणोवृहस्पतिर्वाचमस्माऽअयच्छत् ॥ यन्वा
 देवापिःशुशुचानोऽअग्राऽआधिपेणोमनुष्यःसमीधे ॥ विश्वेसिद्धेरेनुमुद्यमानःप्रजर्जन्यमीयाद्यष्टि
 मंत ॥ त्वांपूर्वऽअपर्ययोगीभिरायन्त्वामध्वरेधुपुरुहूतविश्वे ॥ सहस्राण्यधिरथान्यस्मेऽआनोयज्ञरो
 हिदश्वोपयाहि ॥ एतान्यग्नेनवर्तिनवृत्वेऽआहुतान्यधिरथासहस्रा ॥ तेभिर्वधस्वतन्वःशूरपुर्वीदिवो
 नोवृष्टिभिषितोरिरीहि ॥ एतान्यग्नेनवर्तिसहस्रासंपर्यच्छृण्वऽइंद्रायभागं ॥ विद्वान्मृथऽकंतुशोदेव
 यानानप्यौलानंदिविदेवेषुधेहि ॥ अग्नेवाधस्वविमृधोविदुर्गहापामपरक्षासिसेय ॥ अस्मात्समू
 द्राद्वृहतोदिवोनोपांभूमानमुपनःसृजेह ॥ २ ॥ अकारहकारादिमंत्राः ॥ आयाऽअग्रइहावसेहोत्रां

यविष्टभारती ॥ वरूत्रीधिषणां वह ॥ अधीवासं परिमातूरिह न हतु वित्रेभिः सत्त्वभिर्याति विज्यः ॥
 वयोदधत्पुद्गलेरिह त्सदा नुशेनी स च ते वर्तनी रह ॥ अयं यज्ञो देवयाऽ अयं मिथेयऽ इमा ब्रह्माण्ययभि
 द्रसोमः ॥ स्तीर्णबर्हि रातु शं क्रमयाहि पिवा निषद्य विमुचा हरीऽ इह ॥ अनीयाम निदस्तिरः स्वस्तिभि
 र्हित्वा वद्यमरातीः ॥ वृष्वीशं योरापऽ उखि मे षजं स्याम मरुतः सह ॥ अग्ने रक्षाणेऽ अंहसः प्रतिष्म देवरी
 षतः ॥ तपिष्ठैरुजरोदह ॥ १ ॥ अग्ने सवसुष मिधासमिद्धऽ उत बर्हिर्ह विया विस्तृणीतां ॥ उत द्वा रं उश
 तीर्विश्रयं तामुत देवौऽ उशतऽ आवहेह ॥ अद्या मुरीयय दियतु धानोऽ अस्मि यद्विवायुस्तनपुंरुषस्य
 अधा सवीरैर्दशमिर्वियूया यो मा मोषं धानु धानेत्याह ॥ अर्ध्वर्यो द्रावया त्वं सोम मिद्रः पिपासति उपननं
 युयुजे चर्षणा हरीऽ आर्चजगाम वज्रहा ॥ अग्निदूतं पुरो देह यवा ह मुपब्रुवे ॥ देवौऽ असादया द्रिह ॥
 अये बाधस्व विमृधो विदुर्गहा पामीवाम परक्षां सिसेव ॥ अस्मात्सं मुद्रा द्रुह नो दिवो नो पां सुमान मुपनः स
 जेह ॥ २ ॥ विश्वे ताने सवनेषु प्रवाच्या याच कथं मघवन्भिद्रमुन्वते ॥ पारावतं यत्पुंरुसं मुतं वस्व गच्छ

णोःशस्त्रायऽक्राविबंधवे ॥ ३ ॥ उपाकरणभंवाः ॥ यज्ञोपवीतंपरमंपवित्रंप्रजापतेर्यत्सहजंपुरस्ता
 त् ॥ आयुष्यमध्यप्रतिमुच्यशुभ्रंयज्ञोपवीतंवृद्धमस्ततेजः ॥ १ ॥ हिरण्यवर्णाः शुचयः पावकाया
 सुजातःकश्यपोयास्विद्रेः अग्निंयागभेदधिरविरूपास्तान्ऽआपःशस्त्रोनाभवंतु ॥ यामाऽराजा
 करुणोयातिमध्यैसत्यानृतोऽभवपश्यन्जनानां ॥ मधुश्चतुःशुचंग्रयोयाः पावकास्तान्ऽआपःशस्त्रो
 ना ॥ यामादेवादिविकृण्वीतमक्षंयाऽअंतरिक्षेवहृद्यामवति ॥ याः पृथिवी पर्यमोदतिशुक्रास्तान्
 आपःशस्त्रो ॥ शिवेनमाचक्षुपापशयनापःशिवयानुवोपस्पृशतत्वचमे ॥ सर्वाऽअग्नीऽरूपसुयदो
 हुवेवोमधिवर्चोबलमोजोनिधत्त ॥ पर्वमानुःसुवर्जनः ॥ पवित्रेणविचर्षिणिः ॥ यःपोतासपुनातुमा ॥
 पुनंतुमादेवजनाः ॥ पुनंतुमनवोधिष्या ॥ पुनंतुविश्वऽआयवः ॥ जातंवदःपवित्रवत् ॥ पवित्रेणपुनाहिमा ॥
 शुक्लेणदेवदीद्यत् ॥ अश्लेकत्वाकृतुःशु ॥ यत्तेपवित्रमर्चापि ॥ अग्नेवितंतमंतरा ॥ ब्रह्मतेनपुनीमहे ॥
 उसाभ्यदिवसवितः ॥ पवित्रेणमवेनेच ॥ इदंब्रह्मपुनीमहे ॥ वैश्वदेवोपुनतीर्धव्यागात् ॥ यस्यैव

ह्रीस्तुवोवीतपुष्पाः ॥ तयामदतःसधमाद्येषु ॥ वयस्स्यामपतयोर्योणां ॥ वैश्वानरोरश्मिभिर्मानु
 नातु ॥ वातःप्राणेनेषिरोमयोमः ॥ द्यावापृथिवीपयसापयोमिः ॥ कृतावरीयज्ञियैमापुनीतां ॥
 बृहद्भिःसवितस्तृभिः ॥ वषिष्ठदेवमन्मभिः ॥ अग्नेदक्षैःपुनाहिमा ॥ येनदेवाऽअपुनत ॥ येनावो
 दिव्यंकशः ॥ तेनदिव्येनब्रह्मणा ॥ इदंब्रह्मपुनीमहे ॥ यःपावमानीरुध्येति ॥ कषिभिःसंभृतैरसं ॥
 सर्वैःसपुतमंश्रानि ॥ स्वदितंमातरिश्वना ॥ पावमानीर्योऽअध्येति ॥ कषिभिःसंभृतैरसं ॥ तस्मै
 सरस्वतीदुहे ॥ क्षीरसर्पिर्भूदकं ॥ पावमानीःस्वस्त्ययनीः ॥ सुदुग्धाहिपयस्वतीः ॥ कषिभिःसं
 भृतैरसः ॥ ब्राह्मणेष्वामृतंश्रुतं ॥ पावमानीर्दिशतुनः ॥ इमंलोकमर्थोऽअमुं ॥ कामान्तसमर्थय
 तुनः ॥ देवीर्देवैःसमामृताः ॥ पावमानीःस्वस्त्ययनीः ॥ सुदुग्धाहिर्यतश्चुतः ॥ कषिभिःसंभृतैर
 सः ॥ ब्राह्मणेष्वामृतंश्रुतं ॥ येनदेवाःपवित्रेण ॥ आत्मानंपुनतेसदा ॥ तेनसहस्रधारेण ॥ पाव
 मान्यःपुनंतुमा ॥ प्राजापत्यंपवित्रं ॥ शतोद्यामंश्चिरमयं ॥ तेनब्रह्मविदोवयं ॥ पुतंब्रह्मपुनीम

हे ॥ इन्द्रः सुनीती सह मा पुनातु ॥ सोमः स्वस्त्यावरुणः सुमीच्यां ॥ यमो राजा प्रमृणाभिः पुनातु मा ॥
 जातवै दामजू र्येत्या पुनातु ॥ १ ॥ भूरग्निं च पृथिवीं च मां च ॥ त्रींश्च लोकान्सर्वसं च ॥ प्रजाप
 तिस्त्वासा दयतु ॥ तया देवतयां गिरस्वद्धुवासी द ॥ भुवो वायुं चातरिक्षं च मां च ॥ त्रीं प्र० त० ॥ स्वरा
 दित्यं च दिवं च मां च ॥ त्रीं प्र० त० ॥ सूर्यवुः स्वश्चंद्रमसं च दिशंश्च मां च ॥ त्रीं प्र० त० ॥ २ ॥ सद्यो
 जातं प्रपद्यामि सद्यो जातायै व नमो नमः ॥ भवे भवे नार्ति भवे भवे स्वस्व मां भवोद्धवाय नमः ॥ वामदेवाय
 नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय मोरुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो
 बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥ अघोरैरभ्योथघोरैरभ्योघोरघोरैरेभ्यः ॥ स
 र्वेभ्यः सर्वशैवेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ तत्पुरुषाय विद्महे महोदेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्र
 चोदयात् ॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्माग्निवो मेऽस्तु
 सदा शिर्वो ॥ ३ ॥ इ.उ.प्र.स० ॥ ॥ अथ भुवनेश्वरी मंत्राः ॥ तत्सर्वितुर्वरेण्यं भगो देवस्य धी

महि ॥ धियो योनः प्रचोदयात् ॥ गंध० आप्या० दधि० ॥ शुक्रमसिज्योतिरसितेजोसि ॥ देव०
 आपो० ॥ शुची० स्वस्त्य० ॥ १ ॥ ससिवाजं भरंददातिवीरं श्रुत्य कर्मनिष्ठां ॥ रोदसी विचरत्समं
 जन्मारीवीरकुक्षिपुरंधि ॥ अमसः समिदंस्तु भद्रामहीरोदसीऽआविवेश ॥ एकंचोदयत्समत्सु वृत्राणि
 दयते पुरुणि ॥ हत्यंजरतः कर्णमावाद्भयो निरंदहज्जरुथं ॥ अत्रिघर्मऽउरुष्यदंतनुभं प्रजया स्तजत्सं ॥
 दाहविणवीरपेशाऽऽकर्षियः सहस्रासनोत् ॥ द्विविहव्यमार्ततानधामानि विभृता पुरुत्रा ॥ उक्थैर्ऋष
 यो विह्वयते नरो यांमनिवाधितासः ॥ वयोऽअंतरिक्षे पततः सहस्रापरियातिगोनां ॥ विशेऽईळनेमानु
 षीर्यामनुषो नहुषो विजाताः ॥ गांधर्वी पथ्यां भृतस्य गव्यूतिर्धृतऽआनिषत्ता ॥ ब्रह्मऽऋभवस्तत्क्षुमं
 हामवोचामासु वृत्तिं ॥ प्रावजरितारय विष्टमहिद्रविणमार्यजस्वं ॥ २ ॥ अग्निः ससिवाजं भरंददात्य
 ग्निवीरं श्रुत्य कर्मनिष्ठां ॥ अग्रीरोदसी विचरत्समं जन्मारीवीरकुक्षिपुरंधि ॥ अग्रेरमसः समिदंस्तु
 द्राघिर्महीरोदसीऽआविवेश ॥ अग्निरैकंचोदयत्समत्सु वृत्राणि दयते पुरुणि ॥ अग्निहृत्यंजरतः

कर्णभावाग्रिद्व्योनिरेदहज्जरुहं ॥ अग्रिर्गन्धिघर्मऽडेरुण्यदंतरग्रिर्नमधप्रजयोसज्जत्सं ॥ अग्रिद्रो
द्वीणंवीर्येषाऽअग्रिर्कपियःसहस्रांसिनोति ॥ अग्रिर्दिविहव्यमाततातानाग्रैर्धामानिविभृतापुरुषा ॥
अग्रिमुक्थैर्कपयोविह्वयन्तेग्रिनरोयामनिवाधितासः ॥ अग्रिवयोऽअंतरिक्षेपततोभिःसहस्रापरियाति
गोनी ॥ अग्रिविशोऽईकतेमानुपीर्याऽअग्रिमनुपोनहुपोविजाताः ॥ अग्रिर्गंधीर्ध्वोपध्रामतस्यभ्रमेग
व्यतिष्ठतऽआनिपता ॥ अग्र्येब्रह्मकृमवस्ततक्षुराग्रमहामवोचामासुवृत्किं ॥ अग्रैर्प्रावज्रितारंयवि
द्युमहिर्द्रविणमायजस्व ॥ ३ ॥ असुनीतेपुनरस्मासुचक्षुः पुनःप्राणभिहनोधिहिमोगं ॥ ज्यो
त्स्नयेमहिर्द्रविणमायजस्व ॥ ३ ॥ अस्तुर्वाक्परिमितापदानितानि विदुर्ब्राह्मणायैम-
त्पश्येमसूर्यमुच्चरंतमनुमतेमृळग्रानःस्वस्ति ॥ चत्वारिवाक्परिमितापदानितानि विदुर्ब्राह्मणायैम-
नीषिणः ॥ गुहात्रीणिनिर्दितार्नैर्गयंतितुरीयवाचोमनुष्यावदन्ति ॥ ४ ॥ प्रसुवऽआपोमहिमानमनु-
मंकारुर्वोचातिसदनेविवस्वतः ॥ प्रसप्तसंज्ञेधाहिचक्रमुःप्रसृत्तरीणामलिसिधुरोजसा ॥ प्रतैरद्व-
रुणोयातवेपथुः सिधोयहाजौऽअभ्यद्रवस्त्वं ॥ भूम्याऽअधिप्रवतायासिसानुनायेदेषामग्रंजगता-

मिरज्यसि ॥ दिविस्वनोर्यततेभूम्योपर्यनंतशुष्ममुदियतिमानुना ॥ अत्रादिवप्रस्तनयंतिवृष्टयुः
 सिंधुर्यदेतिवृषभोनरोरुवत् ॥ अमित्रासिंधोशिशुमित्रमातरोवाश्राऽअर्षतिपयसेवधेनवःराजेवयु
 ध्वानयसित्वमित्सिचौयदांसामग्रप्रवतामिनक्षसि ॥ इमंमैंगेयमुनेसर० ञ्कक् १ ॥ ५ ॥ तृष्टामं
 याप्रथमंयातवेसजूःसुसत्वारसयाश्वेत्याया ॥ त्वंसिंधोकुभयागोमर्ताक्रुमेमेहतन्वासरथंयात्रिरीयसे ॥
 ऋजीत्येनीरुशतीमहित्वापरिचर्यासिसरतेरजांसि ॥ अदब्धासिंधुरपसांमपस्तमाश्वानचित्रावपुषी
 वदर्शता ॥ स्वश्वसिंधुःसुरथांसुवासांहिरण्ययीसुहृतावाजिनीवती ॥ ऊर्णावतीयुवतिःसील
 मांवत्युताधिवस्तेसुभगांमधुवर्धं ॥ सुखंरथयुयुजेसिंधुरश्विनंतेनवाजंसनिषदस्मिन्नाजौमहान्यस्य
 महिमापनुस्यतेदब्धस्यस्वयंशसोविरप्शिनः ॥ ६ ॥ याः प्र० ॥ हिरण्यवर्णाहरिणीसुवर्णरज
 तस्रजां ॥ चंद्रांहिरण्मयीलक्ष्मीजातवेदोममावह ॥ तांमऽआवहजातवेदोलक्ष्मीमलंपगामिनीं ॥
 यस्यांहिरण्यंविदेयंगामश्वंपुरुषानहं ॥ अश्वपूणीर्यमध्याहस्तिनांदप्रमोदिनीं ॥ श्रियंदेवीमुप

ह्वये श्रीमदेवीर्जुपतां ॥ कांसोस्मितांहिरण्यप्राकारांमाद्राज्वलन्तानुतातर्पयन्ती ॥ पद्मेस्थितांपद्म
 वर्णानामिहोपह्वये श्रियं ॥ चंद्रांप्रसासांयशसाज्वलन्तीश्रियंलोकैकदेवजुष्टामुदारां ॥ तांपद्मनेमि
 शरणमुहंप्रपद्येअलक्ष्मीमनश्यतांत्वाहंणोमि ॥ १ ॥ आदित्यवर्णेतपसोर्धिजातोवनस्पतिस्तवंवृक्षो
 थंबिल्वः ॥ तस्यफलांनितपसानुंदनुमायांतरायाश्चवाद्याऽअलक्ष्मीः ॥ उपेतुमादिवसखकीर्तिश्च
 मणिनासह ॥ प्रादुर्भूतोसुराद्रेस्मिन्कीर्तिद्यद्विददातुमे ॥ क्षुत्पिपासामंलाज्येष्ठाऽअलक्ष्मीर्नाशया
 म्यहं ॥ अभूतिमसंमृद्धिचसर्वानिर्णुदमेगृहात् ॥ गंधर्वांदुराधर्पानित्यपुष्टांकरीपिणीं ॥ ईश्वरीं
 सर्वभूतानांतामिहोपह्वये श्रियं ॥ मनसःकाममाकूतिंवाचःसत्यमंशीमहि ॥ पशूनांरूपमन्यस्यम
 धिःश्रीःश्रयतांयशः ॥ २ ॥ कंदमेनप्रजामतामधिसंभ्रमकर्दम ॥ श्रियंवासयमेकुलेमातरंपद्ममालि
 नीं ॥ आपःस्रजंनुस्निग्धानिचिक्लीतवसेभृगुह ॥ नीचदेवीमातरंश्रियंवासयमकुले ॥ आर्द्रांपु-
 ष्करिणींपार्धसुवर्णांहिममालिनीं ॥ सूर्याहिरण्यलीलक्ष्मींजानवेदोममावहं ॥ आर्द्रांपुष्करिणींपुष्टि-

पिङ्गलोपक्षमालिनी ॥ चंद्राहिरण्यमर्धोलक्ष्मीजातवेदोममावह ॥ तांमऽआवहजानेवेदोलक्ष्मीमं-
 लपगामिनी ॥ यस्याहिरण्यं प्रभूतिर्गावोदास्योश्वांन्विदेयं पुरुषानहम् ॥ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहु-
 यो दाज्यमन्वहं ॥ सक्तं पंचदशर्चि च श्रीकामः सततं जपित ॥ ३ ॥ इ० श्रीसूक्तं ॥ अथ रुद्रसूक्तानि ॥ क-
 द्द्राय प्रचेनसेमीकहुष्टं मायतन्यसे ॥ वोचेमशंतमंहूदे ॥ यथानोऽदितिः कर्त्तृष्वे नृभ्यो यथाग-
 वे ॥ यथानो कार्पण्यरुद्रियं ॥ यथानो मित्रोवरुणो यथारुद्रश्चिकेतति ॥ यथा विश्वे सजोषसः ॥ गाथ-
 पतिमेधपतिरुद्रं जलाषभेवजं ॥ तच्छंयोः सुप्रमीमहे ॥ यः शुक्रऽइव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते ॥ श्रे-
 ष्ठादिवानां वसुः ॥ १ ॥ शनः कर्त्तृवते सुगं मेवायमिष्ये ॥ नृभ्यो नारिभ्यो गवे ॥ अस्मे सोम श्रियम-
 धिनिर्धेहि शतस्य नृणां ॥ महि श्रवस्तु विनुष्मं ॥ मानः सोम परिबाधो मारुतयो जुहु रंत ॥ आनं ददो-
 वाजैः भज ॥ यास्ते प्रजाऽअमृतस्य परस्मिन् धर्मचतस्य ॥ मर्धानां सोमवेनऽआभूवतीः सोमवे-
 दः ॥ २ ॥ १ ॥ ॥ इमारुद्राय तव सेक्यर्दिने क्षयद्वाराय प्रमं रा महे मतीः ॥ यथाशमसं द्विपदे चतुष्प-

देविश्वं पुष्टं ग्रामैऽमुस्मिन्ननातुरं ॥ मूळानोरुद्रो नो मयस्कृधिश्रयर्ह्यगयनमंसाविश्रमते ॥ यच्छं च योश्च
 मनुरायेजे पिता तदश्यामतवरुद्रप्रणीतिपु ॥ अश्यामते सुमतिदेवयज्ययाक्षयर्ह्यरस्यतवरुद्रमीद्वः ॥
 सुम्नायन्निद्विशोऽमुस्माकुमाचरारिष्टवीराजुहवामते हविः ॥ त्वेपंवयं रुद्रयज्ञासाध्वंकुंकविमवसेनि
 ह्वयामहे ॥ अरिऽअस्मदैव्यं हेळोऽअस्यतु सुमतिमिद्वयमस्याष्टणीमहे ॥ द्विवोर्वराहमरुपंकपर्दिनं
 त्वेपरूपं नमसा निह्वयामहे ॥ हस्ते विभ्रं ज्ञेपुजावार्याणि शर्मवर्मच्छर्दिस्मभ्यं यंसत् ॥ १ ॥ इदं पित्रे
 मरुतामुच्यते वचः स्वादोः स्वादीयोरुद्रायवर्धनं ॥ रास्वाचनोऽअमृतमर्तमोजनं तमनेतोकायुतनं
 यायमृळ ॥ मानोमहान्तं मृतमानोऽअर्मकमानोऽउक्षैतमुनमानोऽउक्षितं ॥ मानोवधीः पितरुमोत
 मातरं मानः प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिपः ॥ मानं स्तोक्वितनयेमानोऽआर्योमानो गोपुमानोऽअश्वेपुरीरिपः ॥
 वीरान्मानोरुद्रसामितोवधीर्हविर्भंतः सद्रमित्राह्वामहे ॥ उपतेस्तोमान्पशुपाड्वाकरं रास्वापितमरु
 तांसुममस्मे ॥ मद्राहिते सुमतिमृळयत्तमाथ विवयमवऽइत्तं वृणीमहे ॥ आरैते गोघ्रमुनपूरुपग्रंक्षयर्ह्यर

सु॒भ्रम॒स्मेतैऽअ॒स्तु ॥ म॒ळार्च॑नोऽअ॒र्धिव॒ज्रहि॒देवा॑था॒चनः॒ शर्म॑यच्छ॒द्विब॑र्हाः ॥ अ॒र्वो॒चा॒म॒न॒मोऽअ॒स्मा
 ऽअ॒व॒स्य॑वःशृ॒णोतु॑नो॒हर्व॑रु॒द्रोम॑रु॒त्वा॒न् ॥ त॒न्नोमि॒त्रोव॑रु॒णोमा॑म॒हंता॑मा॒दि॒तिःसि॑धुःप्र॒थि॒वीऽउ॒त-
 द्यौः ॥ २ ॥ इ. सू॒क्तं ॥ ॥ आ॒ने॒पि॒त॒र्म॒रुता॑सु॒भ्रमे॑तु॒मानः॒ सूर्य॑स्य॒सं॒दृशो॑यु॒योथाःअ॒ग्नि॒नो
 वी॒रोऽअ॒र्व॒ति॒क्ष॒मे॒त॒प्र॒जा॒येम॑हि॒रु॒द्र॒प्र॒जाभिः॑ ॥ त्वा॒द॒त्तेभी॑रु॒द्र॒शं॒त॒मेभिः॑शृ॒तं॒हि॒माऽअ॒शी॒य॒मे॒ष॒जेभिः॑ ॥
 न्य॑१स्म॒द्वेषो॑वि॒तरं॑व्य॒हो॒व्यभी॑वांश्चा॒तय॑स्वा॒विषू॑चीः ॥ श्रे॒ष्ठो॒जा॒त॒स्य॑रु॒द्रश्रि॒यासि॑त॒व॒स्त॒म॒स्त॒व॒सा॑व॒ज्र
 बा॒हो ॥ प॒र्वि॒णःपा॒र॒मं॒ह॒सःस्व॒स्ति॒वि॒श्वाऽअ॒म॒ती॒र॒प॒सो॒यु॒योधि ॥ मा॒त्वा॒रु॒द्रच॑कु॒थामा॑न॒मोभि॑र्मा॒टुः
 धृ॒ती॒वृष॑भ॒मास॑हू॒ती ॥ उ॒न्नो॒वी॒रोऽअ॒र्प॑य॒मे॒ष॒जेभि॑मि॒ष॒क्तं॒म॒त्वाभि॑ष॒जांशृ॒णोमि ॥ ह॒र्वो॒म॒भि॒ह॒व॒ते॒यो
 ह॒वि॒र्भिर॑व॒स्तोमे॑भीरु॒द्रदि॑षी॒य ॥ ऋ॒द्र॒द॒रःसु॑ष॒वो॒मानोऽअ॒स्यै॒व॒भ्रुःसु॑शि॒घ्रोरी॑र॒यन्म॒नायै ॥ १ ॥ उ-
 न्मा॑म॒मं॒द॒वृष॑भो॒मरु॑त्वा॒न्त्व॒क्षी॒यमा॑व॒य॒साना॑र्ध॒मानं ॥ घृ॒णी॒व॒च्छा॒याम॑र॒पाऽअ॒शी॒या॒वि॒वासे॑यंरु॒द्र
 स्य॑सु॒भ्रं ॥ कं॑१स्य॒तेरु॒द्रमृ॒ळया॑कु॒ह॒स्तो॒योऽअ॒स्ति॒भेष॑जो॒जला॑षः ॥ अ॒प॒म॒ता॒र॒प॒सो॒दैव्य॑स्या॒मी

नमो वृषमचक्षमीयाः ॥ प्रवभ्रवैवृषभार्यश्विनीचिमहोमहोस्तुष्टिमीरयामि ॥ नमस्याकल्मली
 किन्नमोमिर्गणीमसित्वेपरुद्रस्यनाम ॥ स्थिरेभिर्गैःपुरुषपुष्टोब्रभ्रुःशुकेभिः पिपिशे
 हिरण्यैः ॥ ईशानादस्यभुवनस्यभूरेर्नवाऽयं पट्टद्रादमुषं ॥ अहन्विमर्षितार्थकानिधन्वाहन्त्रिष्कं
 यजुतं विश्वरूपं ॥ अहन्निदंदयसेविश्वमभ्वनवाऽओजीयोरुद्रत्वदस्ति ॥ २ ॥ स्तुद्धिश्रुतं गतिसदयुवां
 नमंगानमीममपहन्तुमग्रं ॥ मृळार्जरित्रेहं द्रुतस्तवानोन्यतेऽअस्मच्चिवंपतसेनाः ॥ कुमारश्चित्पितरं
 बंदमानं प्रतिनानामरुद्रोपयंतं ॥ भूरेर्दातारं सत्यतिगुणीपेस्तुतस्त्वमेषपुजारास्यस्मे ॥ यावोमेषपुजा
 मरुतःशुचींनयाशंतमावृणोयामयोभु ॥ यानिमनुष्यणीतापितानुस्ताशंचयोश्चरुद्रस्यवस्मिपरि
 णोहेतीरुद्रस्यवृज्याःपरित्वेपस्यदुर्मतिर्महोगात्र ॥ अवस्थिरामघवन्द्यस्तनुष्वमीदृस्नोकायतनया
 यमृळ ॥ एवावभ्रोवृषमचेकितानयथादेवनहृणीवेनहंसि ॥ हवनश्रुभोरुद्रेहवोधिबृहदेमविदथे
 सुवीराः ॥ ३ ॥ इ. सु. ॥ इमारुद्रार्यस्थिरधन्वनेगिरःक्षिप्रपेवेदेवायस्ववात्रे ॥ अपाळ्हायस

हमानायेवेधेसेतिगमार्युधायभरताशूणोतुनः ॥ सहस्रयेणक्षम्यस्यजन्धनःसाम्राज्येनदिग्मस्यचे
तति ॥ अवन्धवतीरुपनोदुरश्वरानमीवोरुद्रजासुनोभव ॥ यानेदिद्युदवंसृष्टादिवस्परिक्षमयाचरति
परिसावणकुनः ॥ सहस्रंतेस्वपिवातभेषजामानस्तोकेषुतनयेषुरीरिषः ॥ मानोवधीरुद्रमापरादामा-
तेभूमप्रसितौहीळितस्य ॥ आनोभजबहिर्षिजीवशेसयूयपां०॥१॥आवोराजानमध्वरस्यरुद्रंहो-
तारिसत्ययजरोदस्योः ॥ अग्निपुरातनयितोरचित्ताद्विरण्यरूपमवसेकृणुध्वं ॥ तमुष्टुहियःस्विषुः
सुधन्वायोविश्वस्यक्षयतिभेषजस्य ॥ यक्ष्वामेहेसौमनसायरुद्रंनमोमिन्द्रवमसुरदुवस्य ॥ भुव०
व्यं० शनं० शांताय० ॥ अथगर्भाधानोक्तमंत्राः ॥ देवोवाचमजनयंतदेवास्तांवि-
श्वरूपाःपशवोवदन्ति ॥ सानोमंद्रेषमजुंदुहानाधेनुवर्गिस्मानुपसुष्टुनैतु ॥ प्रत्यवरोहजातवेदःपुनस्त्वं
देवभ्योहव्यंवहनःप्रजापृष्टिरयिमस्मासुधेस्यथामवयजसानायशंयोः ॥ अयंतेयोनिर्ऋत्वियोऽथतो-
जातोऽअरोचथाः ॥ तजानन्नमऽआसीदार्थानोवर्धयागिरः ॥ १ ॥ विष्णुर्योनिंकल्पयतुत्वष्टा

॥ आसिं वनुजार्पयतिर्वातागमैदवानुने ॥ गर्भे हि सिनीवालिगर्भे हि सस्वति ॥
 रूपगिर्विरातु ॥ आसिं वनुजार्पयतिर्वातागमैदवानुने ॥ गर्भे हि सिनीवालिगर्भे हि सस्वति ॥
 गमतेऽअश्विनौ दिवा चार्त्तापुं ऋतजा ॥ हिरण्यवर्षा अरणीर्धनिर्मथेनोऽअश्विनां ॥ तंते गर्भे हवाम
 हेदशमेमासिस्तवैव ॥ २ ॥ नेजभेपुपरापतुपुत्रः पुनरापत ॥ अस्रवैर्मेपुत्रकां मायैर्गर्भमात्रे हि यः पुमान् ॥
 यथेयं पृथिवीमष्टुत्तानागमैमादधे ॥ एवं न गर्भमाधे हि दशमेमासिस्तवैव ॥ विष्णोः श्रेष्ठेन हृषेणास्याना
 यथेयं पृथिवीमष्टुत्तानागमैमादधे ॥ ३ ॥ प्रजापते ० ॥ अपनः शोशुं च द्रवमम्रेयु राग्दया
 र्यीगवीन्यां ॥ पुर्मांसपुत्रानाधे हि दशमेमासिस्तवैव ॥ अपनः ॥ प्रयच्छंदिठऽएषां प्रा
 रधि ॥ अपनः शोशुं च द्रव ॥ मुञ्जे त्रियाष्टुंगातुयात्रं स्याच यजामहे ॥ अपनः ॥ प्रयच्छंदिठऽएषां प्रा
 र्माकोसश्चसूरयः ॥ अपनः ॥ प्रयत्तेऽअनेसूरयो जायेम हि प्रतेवयं ॥ अर्धं ॥ प्रयच्छे स हस्वतो वि
 श्वतो यंतिमानवः ॥ अपनः शोशुं ॥ त्वं हि विष्वनो मुव विष्वतः परिसुरसि ॥ अर्धं ॥ द्विषे नो विष्व
 तो मुखानि नावेव पारय ॥ अपनः ॥ सतः सिधुमिव नावयाति पर्पास्त्रुस्वये ॥ अपनः ॥ ४ ॥ याः क
 लिनीर्या ० ॥ वेधेन दस्युं प्रहिचातयस्त्रुवयः कृण्वानस्तु न्नेऽस्वाधै ॥ विषे विष्ये तत्तहस्पुत्रदेवान्सोऽअर्धे

पाहि नूतमवाजैऽअस्मान् ॥ वयंतेऽअग्रऽएकथैर्विधेमवयंहव्यैःपावकमद्रशोचे ॥ अस्मेरायैविश्ववारं
सार्भन्वास्मेविश्वानिद्रविणानिधेहि ॥ अस्माकमग्रेऽअध्वरंजुषस्वसहसःसूनोत्रिषधस्थहव्यं ॥ वयंदेवेषु
सुकृतःस्यामशर्मणानखिवरूथेनपाहि ॥ विश्वानिनोदुर्गहाजातवेदःसिंधुननावदुरितातिपार्षि ॥ अग्रेऽअ
त्रिवचमसागुणानोऽस्माकंबोधयवितातनूना ॥ यस्त्वाहदाकीरिणामन्यमानोर्मर्त्यमर्त्योजोहवीमि ॥
जातवेदोयशोऽअस्मासुधेहिप्रजाभिरग्रेऽमृतत्वमश्यां ॥ यस्मैत्वं० ऋक् ॥ अथिस्तु० क०२ सूर्यो
नोदि० वर्ग ॥ १ ॥ ॥ उदीर्ष्वान्तःपतिवतीह्येऽषाविश्ववसुनमसागीभिरीळे ॥ अन्यामिच्छपि
तुषदंयत्कांसतेभागोजनुषातस्यविद्धि ॥ उदीर्ष्वान्तोविश्ववसोनमसेकामहेत्वा ॥ अन्यामिच्छप्र
फुर्व्यऽसंजायांपत्यांसुज ॥ तांपूषन्छिवर्तमामेयस्वयस्याबीजंमनुष्याऽवपति ॥ यानंऽऊरुऽउ
शतीविश्रयतियस्यामुशंतःप्रहरामशेषं ॥ योगममो० ऋ० ॥ अहंगममदधामोषधीष्वहंविश्वेषुभवने
ष्वंतः ॥ अहंप्रजाऽअजनयंपृथिव्यामहंजनिभ्योऽअपरीषुपुत्रान् ॥ ६ ॥ इन्द्रोऽअंगमहद्भयमभीषद

पंचुच्यवत् ॥ सहिस्थिरोविचर्षिणः ॥ इन्द्रश्चमृक्यतिनोनः पश्चाद्वर्चनशत् ॥ मद्रं भवातिनः पुरः ॥ इन्द्र
 आशाभ्यस्परि सर्वाभ्योऽअसंयंकरत् ॥ जेताशत्रून्विचर्षिणः ॥ १ ॥ इति गर्भीधानमंत्राः ॥ अथ पुंसवनान
 वल्लोभनसीमंतोन्नयनमंत्राः ॥ अतिगर्भीधोनिमैतुपुमान्वाणइवेपुधि ॥ आवीरोजायतां पुत्रस्तेदशमा
 स्यः ॥ अग्निरैतुप्रथमो देवतानां सोम्यै प्रजां मुंचतु मृत्युपाशात् ॥ तदयं राजावरुणो नुमन्यतां येयं स्त्री पौत्र
 मधनरोदात् ॥ धाता ददातु दाधुपे प्राचीं जीवातु मक्षिता ॥ वयं देवस्य श्रीमहि सुमतिं वाजिनीवतः ॥ धा
 ता प्रजानां मृतं रायऽइशे धाते दं विश्वं मुंचनं जजानं ॥ धाता कृष्टीरे निमिपाभिचष्टे धात्रऽइद्वयं धृतव
 ज्जुहोत ॥ राकामहं सहर्वां सुष्टुनीं देवेशुणोतुनः सुभगावोधंतुमनां ॥ सीत्यत्त्वर्पः सूच्याच्छिद्यमानया
 ददातु वीरं शतदायमुक्थ्य ॥ यास्ते राके सुमतयः सुपेशो या मिर्ददांसि दाधुपेवर्मनि ॥ तामिनींऽअद्य सु
 मनोऽउपागं हि सहस्रपोपं सुभगेराणां ॥ १ ॥ नेजं ३ ॥ प्रजां ० ॥ यत्ने सुशीमे हृदये हितमंतः प्रज
 पतौ ॥ मन्येहं मांतं हि द्वांसं माहं पौत्रमधं निधां ॥ सोमं राजानं संगायतां ॥ सोमो नो राजा वतुमानुपी

प्रजानिविष्टचक्रसौ ॥ २ ॥ इतिपुंसव०समा० ॥ अथजातकर्ममंत्राः ॥ प्रतैददामिमधुनोघृ
तस्यवेदंसवित्राप्रसूतंमधोनां ॥ आथुष्मान्गुप्तोदेवताभिःशतंजीवशरदोलोकैऽअस्मिन् ॥ मेधांते
देवःसं०स्वजा ॥ अश्माभवपरशुर्मवहिरण्यमस्तृतंभव ॥ वेदोवैपुत्रनामासिसजीवशरदःशतं ॥ इंद्र
श्रे०क० ॥ अस्मेप्रवैधिमभवन्भूजीविन्निद्रायोविश्ववारस्यमूरेः ॥ अस्मेशतंशरदाजीवसैधाऽअ
स्मेवीरान्छश्चतऽइंद्रशिप्रिन् ॥ अंगादंगात्संभवसिद्धदयादधिजायसे ॥ आत्मावैपुत्रनामासिसजीव
शरदःशतं ॥ इमांकुमारोजरांधयतुदीर्घमायुःप्रजीवसे ॥ अस्यैस्तनौप्रयुंजानांआयुर्वचोयशोबलं
॥ तमर्वतुं० ॥ १ ॥ इतिजातक० ॥ ८ ॥ नामकरणनिष्क्रमणान्मप्राशनचौलमंत्राः ॥ गौरीमै० ॥
तदस्तु० गृहवै० ॥ अन्नपतेन्नस्यनेधेह्यनमीवस्यशुष्मिणः ॥ प्रप्रदातारैतारिषुऽऊर्जनोबेहिहिपदेच
तुष्पदे ॥ अग्नऽआयूविपवसऽआसुवोर्जमिर्वचनः ॥ अरेबांधस्वदुच्छुनां ॥ अग्निकृषिःपर्वमानः
पांचजन्यःपुरोहितः ॥ तमीमहेमहागयं ॥ अग्नेपर्वस्वस्वपांऽअस्मेवर्चःसुवोदै ॥ दधंद्रयिमयिपोषं ॥

प्रजा० ॥ अदितिः केशान्वपत्वापऽउदंतुवर्चस ॥ औपधेत्रायसैनं ॥ स्वधितैर्भैर्नहिंसीः ॥ १ ॥ येनावप
 त्सविताक्षुरेणसोमस्यराज्ञोर्वरुणस्यविद्वान् ॥ तेनब्रह्माणोवपतेदमुस्यायुःमान्जुर्दधिर्यथासत् ॥ येन
 धाताबृहस्पतेरश्रैर्दिदस्युचार्युपेवत् ॥ तेनतऽआयुपेवपामिसुश्लोकप्रप्रस्वस्तये ॥ येनसूर्यश्चरा
 त्यांज्योक्चंपशयातिसूर्य ॥ तेनतऽआयुपेवपामिसुश्लो० ॥ प्रच्छिद्यप्रच्छिद्यं प्रागग्रान्छमीवर्णैः सहमा
 त्रेपयच्छतितानानडुहेगोमयेनिदधानि ॥ यत्सुरेणमर्चयेतामुपेशंसावसावपसिकेशान् ॥ शुंधिशिरो
 मास्यायुःप्रमोषीः ॥ ८ ॥ इतिनामक० सहचौलमंत्राः समासाः ॥ ॥ अथोपनयनमंत्राः ॥
 येयुज्ञेनदक्षिणग्राममंक्ताऽइंद्रस्यसख्यममृतत्वमानुश ॥ तेभ्योभद्रमंगिरसोवोऽअस्तुप्रतिगृणीत
 मानवंसुमेधसः ॥ यऽउदार्जन्पितरोगोमयंवस्वतेनाभिंदनपरिवत्सेवुलं ॥ दीर्घायुत्वमंगिरसोवोऽअ
 स्तुप्रतिगृ० ॥ यऽक्तेनसूर्यमारोह्यन्दिव्यमथयन्पृथिवीमातरंवि ॥ सुप्रजास्त्वमंगिरसोवोऽअस्तु
 प्र० ॥ अयंनामावदनिबुलुवोर्गुहेदेवंपुत्राऽऽक्षपयेस्तच्छृणोतन ॥ सुब्रह्मण्यमंगिरसोवोऽअस्तुप्र० ॥

विरूपासऽइदृषयस्तऽइद्वंभीरवेषसः ॥ तेऽअंगिरसःसूनवस्तेऽअग्नेःपरिजज्ञिरे ॥ १ ॥ येऽअग्नेःपरि
जज्ञिरेविरूपासोदिवस्परि ॥ नवग्वोनदशग्वोऽअंगिरस्तमःसचदिवेषुमंहते ॥ इंद्रेणयुजानिःसृजंतवा
घतोऽजंगोमंतमश्विनं ॥ सहस्रैमेददतोऽअष्टकर्ष्यः१श्रवोदिवेष्वंकृत ॥ प्रनूनंजायतामयंमनुस्तोकमे
वरोहतु ॥ यःसहस्रंशताश्वंसचोदानायमंहते ॥ नतमश्रोतिकश्चनदिवऽइवसान्वारभं ॥ सावर्ण्यस्य
दक्षिणाविसिंधुरिवपप्रथे ॥ उतदासापरिविवेष्वस्मद्विष्टीगोपरीणसा ॥ यदुस्तुर्वश्रमामहे ॥ सहस्रदा
ग्रामणीमार्षिषन्मनुःसूर्यणास्ययतमनैतुदक्षिणा ॥ सार्वर्णेर्देवाःप्रतिरंत्वायुर्यस्मिन्नश्रान्ताऽअसनाम
वाजं ॥ २ ॥ परावतोयेदिधिषंतुऽआप्यमनुंप्रीतासोजनिमाविवस्वतः ॥ ययातेर्येनहुष्यस्यबर्हिषि
देवाऽआसतेतेऽअधिबुवंतुनः ॥ विश्वाहिवोनमस्यानिवंचानामनिदेवाऽउतयज्ञियानिवः ॥ येस्थजा
ताऽअदिनेरज्यस्परियेपृथिव्यास्तेमऽइहश्रुताहवं ॥ येभ्योमातामधुमत्पिन्वतेपयःप्रीयूषंध्यौरादि
तिरद्विबर्हाः ॥ उक्थशुष्मान्वृषभरान्स्वमंसस्ताँऽआदित्याँऽअनुमदास्वस्तये ॥ नृचक्षसो

ऽअनिमिपंतोऽअर्हणावृद्धेवासोऽअमृतत्वमानशुः ॥ ज्योतीरथाऽअहिमायाऽअनागसोदि
 वोवृष्मर्णवसतेस्वस्तये ॥ सम्राजोयेसुवृधोयज्ञमाययुरपरिहृतादधिरदिविषयं ॥ तौऽआ
 विवासनमसासुवृक्तिभिर्महोऽआदित्यौऽआदितस्व० ॥ ३ ॥ कोवस्तोमंराधतियंजुजोपथविश्वे
 देवासोमनुषोयतिष्ठनं ॥ कोवोऽध्वरं तुविजाताऽअरंकरुधोनःपर्यदत्यंहःस्वस्तये ॥ येभ्योहोत्रां
 प्रथमामयिजेमनुःसामिद्धाग्रिमनंसासमहोतृभिः ॥ तऽआदित्याऽअभयंशर्मयच्छतसृगानःकर्त
 सुपथाःस्वस्तये ॥ यऽईशिरेभुवनस्यप्रचेतसोविश्वस्यस्थानुर्जंगतश्चमंतवः ॥ तेनःकृतादकृता
 देनस्यपर्यद्यादेवासःपिपृतास्वस्तये ॥ मरोऽध्वद्रसुहवंहवामहेहोमुचंसुक्तदैव्यंजनं ॥ अग्निमित्रंवरु
 णंसातयेमंगंद्यावापृथिवीमृतःस्वस्तये ॥ सूत्रामाणंपृथिवीद्यामनेहसंसुशर्मणमदितिसुमणीति ॥
 देवीनावस्वरित्रामनागसमसंवतीमारुहेमास्व० ॥ ४ ॥ विश्वेयजत्राऽअधिवोचतोतयेत्रायध्वनोदुरे
 वायाऽअभिन्दुनः ॥ सत्ययावोदिवहृत्याहुवेमशृण्वतोदेवाऽअवसेस्व० ॥ अपामावाभपविश्वामनाहु

निमपारातिदुर्विदत्रामवायतः ॥ अरेदेवाद्देवोऽअस्मद्युयेतनोरुणःशर्मयच्छतास्त्रस्नये ॥ अरि
 छःसमतोर्विश्वेऽएधतेप्रमृजामिर्जायनेवर्मगृह्यरि ॥ यमादित्याप्तोनयानुनोतिभिरतिविश्वानिदुरि
 तास्व ॥ यदेवाप्तोर्वथवाजसातौयश्रूसातामरुनोहितेधने ॥ प्रातर्थावाणरथमिद्रसानसिमरिष्यन्तमा
 र्हिमास्व ॥ स्वस्तिनःपथप्रामुधन्वसुस्वस्त्यःपुसुवृजनेस्वर्वति ॥ स्वस्तिनःपुत्रकुथेषुयोनिषुस्वस्ति
 रायेमरुतोदधातन ॥ स्वस्तिरिद्विप्रपथेऽश्रेष्ठारेवर्णस्वत्यभियावाममेति ॥ सानोऽअमासोऽअरणेनि
 पातुस्वावेशामनदुर्वगोपा ॥ एवाकृतेः मनुर्वीहवद्भोविश्वंऽअदित्याऽअदिनेमनीषी ॥ इशाना
 सोनरोऽअमर्त्येनास्तविजनोदिव्योगयेन ॥ ५ ॥ बृहस्पतेप्रथमंवाचोऽअप्रयत्नैरतनामधेयंदधानाः ॥
 यदेवांश्रेष्ठयदरिप्रमासीत्प्रेणातदेवांनिहितंगुहाविः ॥ सक्तुमिवतितंडनापुनंतोयत्रधीरामनसावाचम
 कंत ॥ अत्रासखायःसख्यानिजाननेमदैर्बालुक्ष्मीर्निहिताधिवाचि ॥ यज्ञेनवाचःपदवीर्यमायुन्ताम
 न्वविद्वन्मृषिषुप्रविष्टां ॥ तामाभूत्याव्यंदधुःपुरुत्रातांसमेरमाऽअभिसनंवंते ॥ उतत्वःपश्यन्नददर्शवाच

मुतत्वंः शृण्वन्नशृणोत्येनां ॥ उतोत्वंस्मै नन्वं १ विसंखेजयेवपत्वंऽउरातीमुवासाः ॥ उतत्वंसख्येस्थि
 रपीतेमाहुर्नैहिवृत्त्यपिवाजिनेषु ॥ अर्धेन्वाचरतिमायैपवाचैशुश्रुवौऽअफलाभंपुष्पां ॥ १ ॥
 यस्तित्याजसंचिविदंसखायंनतस्यवाच्यपिमागोऽअस्ति ॥ यदींशृणोत्येत्तं कंशृणोति नृहिप्रवेदमुकु
 तस्युपंधां ॥ असुप्वंतःकर्णवंतःसखायोमनोजवेष्वासमावसूनुः ॥ आदद्यासंऽउपकुक्षीसं
 ऽउत्वेहृदाऽइवृक्षात्वाऽउत्वेददृश्रे ॥ हृदातृष्टेपुमनसोजेवेषुग्रद्धाह्यणाःसंयजतेसखायः ॥ अ
 त्राहृत्वंविजह्वैर्ध्याभिरोहंब्रह्माणोविचरंत्युत्वे ॥ इमेयेनावर्वाङ्मनपरश्वरंतिनब्राह्मणसो नसुतेकरासः ॥
 तऽएतेवाचमभिमपद्यपापयासिरीस्त्रंतन्वतेऽअप्रजज्ञयः ॥ सर्वेनंदंतिपुशासो गतेनसमासाहेनसख्या
 सखायः ॥ किल्बिषस्पृष्टिपितुपणिर्क्षेयामरंहितोमवतिवाजिनाय ॥ कृत्रांतुःपोपमास्तेपुपुष्वाङ्गाय
 त्रंतवोगायतिशक्तीषु ॥ ब्रह्मात्वोवदंतिजातविद्यांयज्ञस्यमात्रांविभिमीतऽउत्तवः ॥ २ ॥ ध्रुवाद्यौध्रु
 वापृथिवीध्रुवासःपर्वताऽइमे ॥ ध्रुवंविश्वमिदंजगद्ध्रुवोराजविशामयं ॥ ध्रुवंतेराजावरुणोऽध्रुवंदेवोवृ

हस्पतिः ॥ ध्रुवंतऽहं द्रष्टुमिच्छामि ॥ ध्रुवं ध्रुवेण हविषा मिसोमं नृशामसि ॥ अथोतऽहं
द्रः केवलीविशोबलिहृतस्करत् ॥ ध्रुवं व० मित्रस्य च क्षुधं रुणं बलीयस्तेजो यशस्विस्थ विरंसमिद्धं ॥ अ
नाहनस्यं वसनं जरिणुपरीदं वाज्यं निनंदधेहं ॥ यज्ञोप० अग्न्या० प्रजा० ॥ तत्संविनुर्दृणीमहेवयं
देवस्य भोजनं ॥ श्रेष्ठं सर्वधातं मंत्रं भगस्य धीमहि ॥ देवस्यं० हस्ताभ्यां हस्तं गृह्णामि ॥ सविता ते ह
स्तमग्रभीत् ॥ अग्निराचार्यस्तवं ॥ देवसवितरेषु ते ब्रह्मचारी तं गोपायसमामृतेति ॥ मित्रस्य त्वाच
क्षुषाप्रतीक्षे ॥ कस्य ब्रह्मचार्यसि । प्राणस्य ब्रह्मचार्यसि । कस्त्वाकमुपनयते ॥ कायत्वापरिददा
मि ॥ ध्रुवांसु० ॥ अग्नये स मिधमाहोर्षिबृहते जातवेदसे ॥ तया त्वमग्नेवर्धस्वसमिधा ब्रह्मणा वयं स्वा० ॥
तेजसामासमनजिमि ॥ मयि मेधां मयि प्रजाम् मयि प्रजोदधातु ॥ मयि मेधां मयि प्रजामयीं द्रं
द्वियं दधातु ॥ मयि मेधां मयि प्रजामयि सुर्वी भ्राजोदधातु ॥ यत्ते अग्ने तेजस्तेनाहं तेजस्वी भूयासं ॥
यत्ते अग्ने वर्चस्तेनाहं वर्चस्वी भूयासं ॥ यत्ते अग्ने हरस्तेनाहं हरस्वी भूयासं ॥ मानस्तोके० तत्सं० ॥ मम

ब्रतेहृदयैतदधामिममचित्तमनुचित्तनेअस्तु ॥ ममवाचमेकवतो जुषस्वबृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तुमह्यं ॥
 इयंदुरुक्तात्प्रिवाधमानाच्छर्मवरूथंपुनतीनआगात् ॥ प्राणापानाभ्यांबलेमाभरंतीप्रियादेवानांसुम
 गमिखलेयं ॥ ऋतस्यगोप्त्रीतपसःपरस्पीघ्नीतीरक्षःसहमानाअरंतीः ॥ सानुःसमंतमनुपरीहिमद्रयांम
 तीरस्तेमेखलेमारिषाम ॥ स्वस्तिनो ॥ १ ॥ तैवदन्मथमाब्रह्मकिल्बिषेकूपारःसलिलोमोतारिश्वा ॥
 वीळुहंरास्नपंडग्रोमयोमूरापोदेवीःप्रथमजाऽऋतेन ॥ सोमोराजाप्रथमोब्रह्मजायांपुनःप्रायच्छद
 हृणीयमानः ॥ अन्वर्तितावरुणोमित्रऽआसीदुग्रिहोताहस्त्नंगृह्यानिनाय ॥ हस्तेनैवग्राह्यंआधिरे
 स्याब्रह्मजायेयमितिचेदवोचन् ॥ नदुतार्यप्रह्येतस्थएषातथाराष्ट्रगुपितंक्षत्रियस्य ॥ देवाऽएतस्या
 मवदंतपूर्वससऽऋषयस्तपसेर्यनिषेदुः ॥ श्रीमाजायाब्राह्मणस्योपनीतादुर्धादधातिपरमेव्योमन् ॥
 ब्रह्मचारीचर ॥ पुनर्वदेवाऽअददुःपुनर्मनुष्याऽउत ॥ राजानःसत्यंरुणवानाब्रह्मजायांपुनर्ददुः ॥
 पुनर्दायब्रजायांकृत्वीदेवीर्निकिल्बपं ॥ ऊर्जप्रधिव्यामृत्कार्योरुगायमुपांसेते ॥ २ ॥ सदसस्पतिम

द्रुतं प्रियमिद्रस्य काम्यं ॥ सन्ति मे धामयासिषं ॥ सुश्रवः सुश्रवा असिषयात्वं सुश्रवः सुश्रवाऽअस्यैवं
 मां सुश्रवः सौश्रवसंकुरु ॥ यथा त्वं देवानां यज्ञस्य निधिपोऽस्यैव महं मनुष्याणां विदस्य निधिपो भूयासं ॥
 ३ ॥ मेधां मत्स्रमंगिरसो मेधां सप्तर्षयो ददुः ॥ मेधामिद्रश्चाग्निश्च मेधां धाता ददातुते ॥ मेधां मेवरुणो
 राजा मेधां देवी सरस्ती ॥ मेधां तेऽअश्विनौ देवा वारधत्तां पुष्करखा ॥ यामेयाऽअप्सरः सुगंधर्वेषु च य
 न्मनः ॥ देवीयामानुषी मेधा सामाया विशतादुमां ॥ यन्मे नोक्तं तद्रमतां शक्यं यदनुब्रुवे ॥ निशामन्ति निशा
 मयमयि व्रतं सहव्रते न भूयांसं ब्रह्मणा संगमे महि ॥ शरीरे मे विचक्षणं वाङ्मे मधुमद्बुद्धिः ॥ अहं ह म ह म सौसू
 र्यो ब्रह्मण आणी स्थं श्रुतं मे मा प्रहांसी ॥ मेधां देवी मनसो रेजमानां गंधर्वजुष्टां प्रतिनोजुषस्व ॥ मह्यं
 मेधां वद मत्स्रं श्रियं वद मेधावी भूयास मजरां जरिणुः ॥ सदसं स्पतिं चक्र ॥ यामेधां देवगणाः पितर
 श्रोपासते ॥ तयामामेधया मे मेधाविनंकुरु ॥ मेधाव्यहं सुभनाः सुप्रतीकः श्रद्धामनाः सत्यमतिः सु
 शैवः ॥ महायशाधारयिष्णुः प्रयुक्तं भूयासमर्थं स्वधया प्रयोगे ॥ ४ ॥ सूः स्वा० भुवः स्वा० स्वः स्वा०

नाषादसंभासाहंनंजयं ॥ सर्वाःसमग्राःकृद्दयोहिरण्येस्मिन्समाहिताः ॥ शूनमहंदिरेण्यस्यपितु
मनिवजग्रभं ॥ तेनेमांसुर्यत्वचमर्करंपुरुषुप्रियं ॥ सम्राजंचविराजंचाभिष्टियाचमेभुवा ॥ लक्ष्मी
राष्ट्रस्ययामुखेतयामभिद्रसंसृज ॥ १ ॥ अग्नेःप्रजातंपरियद्विरेण्यममृतंजज्ञेअधिमर्त्येषु ॥ यए
नेद्वदसइदेनमहंतिजराभृत्युर्भवतियोबिभर्तियेद्वदराजावरुणोयदुदेवीसरस्वती ॥ इन्द्रोयद्वृत्रहावेद
तन्मेवर्चसआयुषे ॥ नतद्रक्षांसिनपिशाचाश्चरंतिदेवानामोजःप्रथमजं ह्येतेतत् ॥ योबिभर्तदाक्षा
युणंहिरण्यंसदेवेषुकुण्तेदीर्घमायुःसमनुष्येषुकुण्तेदीर्घमायुः ॥ यदाबभ्रन्दाक्षायुणाहिरण्यंशतानी
कायसुमनस्यमाना ॥ तन्नऽआबभ्रामिशतशोरदायायुष्मान्जरदृष्टिर्यथासत् ॥ घृतादुर्लुक्तंमधुमत्सु
वर्णीधनंजयंधरुणंधारयिष्णु ॥ वृणक्सपत्नानधरांश्चकृण्वदारोहमामहतेसोभगाय ॥ प्रियंमाकुरुदेवे
षुप्रियंरार्जसुमाकुरु ॥ प्रियंविश्वेषुगोप्त्रेषुपुर्मथिधेहिुरुचारुचैअग्रियेनविराजतिसूर्योयेनविराजति ॥
विराड्येनविराजतितेनास्मान्ब्रह्मणस्पतेविराजसमर्दकुरु ॥ २ ॥ स्मृतंनिंदाचविद्याचश्रद्धाप्रज्ञाच

पंचमी ॥ इष्टदत्तमधीतंचकृतंसत्यंश्रुतव्रतं ॥ १ ॥ स्मृतंचमेऽअस्मृतंचमेतन्मउभयव्रतं ॥ निंदा
 चमेअनिंदाचमेत० ॥ विद्याचमेअविद्याचमेत० ॥ श्रद्धाचमेअश्रद्धाचमेत० ॥ प्रज्ञाचमेअप्रज्ञा
 चमेअकृतंचमेतन्मउभयव्रतं ॥ दत्तंचमेअदत्तंचमेत० ॥ अधीतंचमेअनधीतंचमेत० ॥ कृतं
 मे० ॥ यदग्रेसेंद्रस्यंप्रजापतिकस्यंसऽकृषिकस्यंसऽकृपिराजन्यस्यंसपितृकस्यंसपितृराजन्यस्यंसम
 धर्वाप्सरस्कस्यंसहारण्यैश्वर्यपशुभिर्ग्राम्यैश्चयन्मआत्मनआत्मनिव्रतंतमेसर्वव्रतमिदमहमेसर्वव्रतो
 भवामिस्वाहा ॥ २ ॥ ममाग्नेवर्चोविह्रवेष्वस्तुवयंत्वेधानास्त्वन्वंपुषेभ्यः ॥ मर्ह्यंनमंतांप्रदिशश्चतस्रस्त्व
 याध्यक्षेणपुतनाजयेम ॥ ममदेवाविह्रवेस्तुसर्वइंद्रवंतोमरुतोविष्णुरग्निः ॥ ममांतरिक्षमुरुलोक
 मस्तुमह्यंवातःपवतांकामेऽअस्मिन् ॥ मयिदेवाद्रविणमायंजंतांमद्याशीरस्तुमयिदेवहूतिः ॥ दे

व्याहोतारोवनुषंतूर्परिष्ठास्यामनुन्वासुवीराः॥मह्यंयजंतुममयानिहव्यकृतिःसत्यामनसोमेअस्तु ॥
 एनोमानिगौकनमच्चनाहंविश्वेदेवासोऽअधिबोचतान् ॥ देवीःषकुर्वीरुहर्नःकृणोतविश्वेदेवासऽइहवी
 र्यध्वं ॥ माहास्महिप्रजयामातनुमिर्मरधामद्विषनेसोमराजन् ॥ १ ॥ अग्नेमन्युर्मतिनुदन्परेषामद
 न्योगोपाःपरिपाहिनुस्त्वं ॥ प्रत्यं योयंनुनिगुतःपुनस्तेइमैषांचित्तंप्रब्रुधांविनेशत् ॥ धाताधातृणांभुव
 नस्ययस्पर्तिदेवंजातारममिमातिषाहं ॥ इमंयज्ञमश्विनोभांबृहदारतिर्देवाःपांतुयजमानंन्ययथात् ॥
 उरुव्यचानोमहिषःशर्मयंसदस्मिन्हवैपुरुहूतःपुरुशुः ॥ सनःप्रजायैह्यैश्वमृद्धेद्रमानोरीरिषोमाप
 रादाः ॥ येनःसपत्न्याऽअपतेसंवत्विद्राग्निभ्यामववाधामहेतान् ॥ वसंवोरुद्राऽअदित्याउपरिस्पृशं
 मोग्रंचेतारमधिराजमकन् ॥ अर्वाचमिद्रममतोहवामहेयोगोजिद्धेनुजिदंश्वजिद्यः ॥ इमंनोयज्ञं
 विद्वेजुषस्वास्यकुलमोहरिवोमेदिनैत्वा ॥ २ ॥ उदुत्तमंव० ॥ अथविवाहमंत्राः ॥
 अनुसरा० ॥ अर्वाचीसुभगेसवसीतेवंदामहेत्वा ॥ यथानःसुभगासंसियथानःसुफलासंसि ॥ प्रसु

गर्मताधियमानस्यसक्षणिवरोभिर्वरौऽअमिषुप्रसीदतः ॥ अस्माकमिन्द्रं उभयैजुजोषतियत्सोभ्य
 स्यार्धसोबुबोधति ॥ १ ॥ हिङ्कणवतीवसुपत्नीवसूनांवत्समिच्छंतीमनसाभ्यागात् ॥ दुहामश्विभ्यां
 पर्यौऽअष्टयेयंसावर्धतामहतेसौमगाय ॥ समिद्धस्यश्रयमाणःपुरस्ताद्ब्रह्मवन्वानोऽअजरसुवीर
 आरेऽअस्मदमतिवार्धमानोऽउच्छ्रयस्वमहतेसौमगाय ॥ वनस्पतेशतवंलशोविरोहसहस्रंलशोवि
 वयंरुहेम ॥ यंत्वामयंस्वधितिस्तेजमानःप्रणिनायमहतेसौमगाय ॥ इंदुदेवानामुपसख्यमाय
 न्तसहस्रधारःपवतेमदाय ॥ नृभिःस्नवानोऽअनुधामपूर्वमगन्निद्रमहनेसौ ॥ अस्यपिबधुमत्
 प्रस्थितस्यैद्रसोमस्यवरमासुतस्य ॥ स्वस्तिदामनसामादयस्वार्वाचीनोरेवतेसौमं ॥ घृतादुद्धुसंम
 धुमत्सुवर्णधनंजयंघृणधारयिष्णु ॥ वृणक्तपत्नानधरांश्चकृण्वदारोहमामहनेसौ ॥ २ ॥ इतिवा
 ग्दानमंत्राः ॥ अथमधुपर्कमंत्राः ॥ अहं इर्भमं ज्ञातानां विद्युतमिव सूर्यः ॥ इदं तमाधितिष्ठाभियो
 माकश्वाभिदासति ॥ अस्मिन्नाष्ट्रे श्रियमावेशायाम्यतो देवीः प्रतिपश्याम्यापः ॥ दक्षिणं पादमवने

निजेस्मिन्नाष्ट्रद्विदं धामि ॥ सव्यं पादमवने निजेस्मिन्नाष्ट्रद्विदं वर्धयामि ॥ पूर्वमन्यमपरमन्यं पा
दाववने निजे ॥ देवाराष्ट्रस्य गुह्या अभयस्याव रुध्ये ॥ आप. पादावने जनी द्विषंतं निर्दहंतु मे ॥ १ ॥
देवस्य त्वास ० ॥ हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि ॥ मधुवाताऽऽकृता येने मधुक्षरं ति सिंधवः ॥ माध्वीर्नः संत्वोषधीः ॥
मधुनक्तं मुतोषसो मधुमत्पाथिर्व्रजः ॥ मधुद्यौरस्तुनः पिता ॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमौऽअस्तु सूर्यः ॥
माध्वीर्गवो भवंतु नः ॥ वसवस्त्वागायत्रेण छंदसा भक्षयंतु ॥ रुद्रास्त्वात्रैष्टुभेन छंदः ॥ आदित्यास्त्वा
जागतेन छंदसा भक्षयंतु ॥ विश्वेत्वा देवा आनुष्टुभेन छंदसा भक्षयंतु ॥ भूतेभ्यस्त्वा ० ॥ विराजो दोहोसि ० ॥
विराजो दोहो मशीया ॥ मयि दोहः पद्यायै विराजः ॥ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां ॥ २ ॥ मातारुद्राणां दु
ह्निता वसुनां स्वसादित्यानां समृतस्य नाभिः ॥ प्रनुवौ च चिकितुषे जनाय मागामनां गामां दितिवधिष्ठा ॥ ३ ॥
इति मधुपर्कः ॥ अथ कन्यादानमंत्राः ॥ अभ्रातृघ्नी वरुणापतिघ्नी बृहस्पते ॥ इंद्रा पुत्रघ्नी लक्ष्म्यं
तामस्यै सवितः सव ॥ सत्ये नोत्तं भिता भूमिः सूर्ये नोत्तं भिता द्यौः ॥ कृतेनादित्यास्तिष्ठंति दिवि सोमोऽ

अधिश्रुतः ॥ सोमेनादित्याबल्लिनः सोमेनपृथिवीमही ॥ अथोनक्षत्राणामेषामुपस्थे सोमोऽआहितः ॥
 सोममन्यतेपिवान्यत्सोऽपिषत्योषधिं ॥ सोमयंब्रह्माणोविदुर्नतस्याश्रातिकश्चन ॥ आच्छद्विधाने
 गुपितोबाह्वैः सोमरक्षितः ॥ ग्राव्णामिच्छुण्वान्तिष्ठसिनेतेऽश्रातिपार्थिवः ॥ यत्स्वदिवप्रपिबन्ति
 तऽआप्यायसेपुनः ॥ वायुः सोमस्यरक्षितासमानां मासऽआकृतिः ॥ १ ॥ रेभ्यांसीदनुदेयीनाराशं
 सीन्योचनी ॥ सूर्यायामद्रमिहामोगाथयैतिपरिष्कृतं ॥ चित्तिराऽउपबर्हणंचक्षुराऽअभ्यर्जनं ॥
 द्यौर्भूमिः कोशऽआसीद्यदयात्सूर्यापतिं ॥ स्तोमाऽआसन्प्रतिथयः कुरीरंछंदऽओपशः ॥ सूर्या
 योऽअश्विनोवराशिरासीत्युरोगवः ॥ सोमोवधूयुरभवदश्विनोस्तामूमावरा ॥ सूर्यायत्पत्येशंसतीमने
 सासवितार्ददात् ॥ मनोअस्याऽअनऽआसीद्यौरासीदुतच्छदिः ॥ शुक्रावर्नद्वाहावास्तांयदयात्सूर्यागृहं
 ॥ २ ॥ ऋक्सामाभ्यामग्निहितागवौतेसामनावितः ॥ श्रोत्रैतेचक्रेऽआस्तांदिविपंथाश्चराचरः ॥
 शुचीतेचक्रेयात्यान्यानोऽअक्षऽआहतः ॥ आनोमनस्मयंसूर्योरोहत्प्रयतीपतिं ॥ सूर्यायावहतुः

प्रागात्सवितायमवासृजत् ॥ अथासृहन्त्येते गवोर्जुन्योः पर्युद्यते ॥ यदंशिवनापृच्छमाना वयानं त्रिच
 केणवहन्तुं सूर्याः ॥ विश्वेदेवाऽऽनु न द्वां म जानतु पुत्रः पितरो वरुणीतपुषा ॥ यदयानं शुभसस्तीवरे
 यं सूर्यामुप ॥ कैकचक्रं वा मासीत्क्रेदृष्टार्यनस्ययुः ॥ ३ ॥ हेतैव केसूर्ये ब्रह्माण्डं चतुर्था विदुः ॥
 अथैकं चक्रं यदुह्यत दद्वातयऽइदं दुःसूर्या यैदेवेभ्यो मित्राय वरुणा यच ॥ यस्मै तस्य प्रचेतसऽइदं तेभ्यो
 करं नमः ॥ पूर्वापरं चरतो मायै तौ शिशू क्रीकृतौ परियातोऽअवरं ॥ विश्वान्यन्यो मुवंनाभि च ह्रुऽक
 तूरन्यो विदधं ज्ञायते पुनः ॥ नवो न वो म० क० ॥ सुकिंशुकं शलमलिं विश्वरूपं हिरण्यं वर्गं सुवृत्तं सु
 चक्रं ॥ आरोहसूर्येऽअमृतस्य लोके स्यो नं तस्यैव इतुं कृणुष्व ॥ ४ ॥ उदीर्ष्वीतः पतिवती खेऽषा विश्वा
 वंसु नमसागीभिरीळे ॥ अन्याभि च्छपितृषु ब्रह्मणं सते सा गो जनु धातसं विद्धि ॥ उदीर्ष्वीतो विश्वाव
 सो नमसेष्ठा महेत्वा ॥ अन्याभि च्छप रुदर्यं संजायां पत्या सुज ॥ अनुभ्रा० कृक् ॥ प्रत्वां मुंचा मि व
 रुणस्य पाशाद्ये न त्वा ब्रह्मा तस विना सुशेवः ॥ अतस्य योनौ सुकृतस्य लोके रैष्टां त्वा सह प्रत्या दधामि ॥ प्रेतो मुं

चाभिनामुतः सुवद्धाममुतस्करं ॥ यथे रमिद्रमीढः सुपुत्रामुभगासति ॥ ५ ॥ पुषात्वेतो नयनुहस्नग
 ह्याश्विनात्वा प्रवदतारथेन ॥ गृहान्गाच्छगृहपत्नीययासोवशिनीत्वं विदथमावदासि ॥ इह प्रियं प्रजया
 ते समृद्धयतामस्मिन्गृहे गार्हपत्याय जागृहि ॥ एनापत्यातुन्वै संहज स्वाधाजिबी विदथ मावदाथः ॥
 नीललोहितं संवति कृत्यासक्तिर्व्यज्यते ॥ एवैतेऽअस्थाज्ञातयः पतिर्बैषु वष्यते ॥ परादेहि शामुल्य
 ब्रह्मभ्यो विर्मजावसु ॥ कृत्येषा पृहती मूढया जाया विशनेपतिं ॥ अश्रीरात नूर्मवतिरुहो नीपापयामु
 या ॥ पतिर्यद्बुधोऽवाप्तं सास्वमंगममिधित्सते ॥ ६ ॥ येवर्ध्वं द्रवं हतुं यक्षमार्यं तिजनादनु ॥ पुन
 स्तान्यद्विषादेवानयं तु यतऽआगताः ॥ माविदन्गरिपंथिनो यऽआसीदंतिदं पती ॥ सुगमिर्दुर्गमती
 तामपेद्रां त्वरातयः ॥ सुमंगली रिपं वधू रिमांसमेतपश्येत ॥ सौभाग्यमस्यैदृत्वायाथास्त्वं विपरेतन ॥
 वृष्टमेतत्कदुक्कमेतदपाह्ववद्विषन्नेतदत्तवे ॥ सूर्यायो ब्रह्मा विद्यात्सऽइदं धूमर्हति ॥ आशसं न वि
 शसं न मर्योऽअधिविकर्तनं ॥ सूर्यायाः पश्यरूपाणि तानि ब्रह्मा तु धुंयति ॥ ७ ॥ गुण्याभिनेसौ ० कृ० ॥

तांपूषच्छिवतमाभरेयस्वयस्यांबीजमनुष्यांश्चपति ॥ यानऽऊरुऽउशतीविश्रयातियस्यामुशतःप्र
हरामशेषं ॥ तुभ्यमग्नेपर्यवहन्त्सूर्यावहन्तुनासह ॥ पुनःपार्तिभ्योजायांदाऽअग्नेप्रजयांसह ॥ पुनः
पत्नीमग्निरेदायुषासहवर्चसा ॥ दीर्घायुरस्यायःपतिर्जीवातिशरदःशतं ॥ ८ ॥ सोमःप्रथमोर्विवि
देगंधर्वोर्विविदऽउत्तरः॥तृतीयोऽअग्निष्टेपार्तिस्तुरीयस्तेमनुष्यजाः॥सोमोददद्वंधर्वायंगंधर्वोददद्वयै॥
रयिंचपुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथोऽइमां ॥ इहैवस्त्वंमाविष्यौष्टंविश्वमायुर्व्यश्रुतं॥क्रीळंतौपुत्रैर्नसृभिर्मोदं
मानौस्वेगृहे॥आनःप्रजांजनयतुप्रजापतिराजरसायसमनत्कर्तुमा॥अर्दुर्मगलीःपतिलोकमाविशशनौ
भवद्विपदेशंचतुष्पदे ॥ अघोरचक्षुरपतिद्वयेधिशिवापशुभ्यःसुमनाःसुवर्चाः ॥ वीरसूदेवकामास्योना
शनौम० ॥ इमांत्वमिंद्रमीदृःसुपुत्रांसुभगांक्वणु ॥ दशास्यांपुत्रानार्धेहिपतिमेकादशंक्वधि ॥ सम्रा
ज्ञीश्वशुरेभवसम्राज्ञीश्वश्रवांभव ॥ ननादरिसम्राज्ञीभवसम्राज्ञीऽअधिदेष्टु ॥ समंजंतुविश्वेदेवाःस
मापोहृदयानिनौ ॥ संमातरिश्वासंधातासमुदेष्टादधातुनौ ॥ ९ ॥ अविधवाभंववर्षाणिशतंसांग्रंतु

सुव्रता ॥ तेजस्वीचयशस्वीचधर्मपत्नीपतिव्रता ॥ जनयद्बहुपुत्राणिमाचदुःखंलभेत्कचित् ॥ मर्ता
तेसोमपानित्यंभवेद्धर्मपरायणः ॥ अष्टपुत्राभवंत्वंचसुमगाचपतिव्रता ॥ मर्तुश्चैवपितुर्भ्रातुर्हृदयानं
दिनीसदा ॥ इन्द्रस्यतुयथेन्द्राणीश्रीधरस्ययथाश्रिया ॥ शंकरस्ययथागौरीतद्भर्तुरपिभर्तारि ॥ अत्रे
र्थथानु० ॥ भ्रुवैधिपोण्यामयिमह्यैत्वादाद्बहस्पतिः ॥ मयापत्याप्रजावतीसंजीवशरदःशतं ॥ अत्रे
प्रसुग्मंताधियमानस्यसक्षणिर्वैभिरौऽअभिषुप्रसीदतः ॥ अस्माकमिन्द्रऽउभयैज्जोषतियत्सोम्य
स्यांधसोबुबोधति ॥ वीक्ष्यासिदिव्यानिरोचनाविपार्थिवानिर्जसापुरुषुत ॥ यत्वावर्हेतिमुद्गुरध्वरौऽ
उपतेसुर्वन्तुवग्वनौऽअंराधसः ॥ तदिन्मेच्छत्सद्दपुषोवपुंघ्रंपुत्रोयज्जानंषिजोरधीर्यति ॥ जाया
पतिवहतिवृशुनासुमत्पुंसऽइन्द्रद्रोवहंतुःपरिष्कृतः ॥ तदित्सधस्थमभिचारुदीधयगावोयच्छासन्वहतुं
नधेनवः ॥ मातायन्मर्तुर्युथस्यपुर्व्यामिवाणस्यससधातुरिज्जनः ॥ प्रवोच्छारिरिचेदेवयुष्पदमेकोरु
द्रेभिर्यानिर्तुर्वणिः ॥ जरावायेष्वमृतेषुदावनेपरिवऽऊर्मेभ्यःसिचतामधु ॥ १ ॥ निधीयमानमपगू

क्वमप्सु प्रमेदेवानां वतपाऽउवाच ॥ इन्द्रो विद्वोऽनुहित्वा च क्षतेनाहमेष्टेऽनुशिष्टऽआगां ॥ अक्षे
 त्रवित्सेत्रविदेद्यप्रादुस्रैतिक्षेत्रविदानुशिष्टः ॥ एतद्वै सद्रमन्नुशासनस्योतस्तुतिर्विदयं जसीनां ॥
 अचेदुप्राणीदममन्त्रिमाहापर्वितोऽअधयन्मातुरुधः ॥ एमेनमापजरिमायुवानमहेळन्वसुः सुमना बभू
 व ॥ एतानि सद्राकंलशक्रियामकुहं श्रवणददतो मुधानि ॥ दानश्चोमषवानः सोऽअस्त्वयंच सोमो
 हृदियं बिभर्षि ॥ २ ॥ अनुभू० क० ॥ कऽइदं कस्माददामः कामायादात्कामो दाता कामः प्र
 नियतीत कामं समुद्रमाविश कामेन त्वाप्रतिपुण्ड्रामि कामेन ते दृष्टिरसि द्यौस्त्वाददातु प्रथिवी प्रतिपृह्यातु
 ॥ १ ॥ यत्कक्षीवांसंवननं पुत्रोऽअंगिरसामवेत् ॥ तेन नोद्य विश्वे देवाः संप्रियांसमजीजनन् ॥ अनाद्य
 ह्यमस्य नानाद्युष्यं देवानामोजोऽअग्निशस्तिपाः ॥ अनग्निशस्यं जसासत्यमुपगेषां स्विते माधाः ॥ २ ॥
 परित्वा गिर्वणो गिरऽइमामं वन्तु विश्वतः ॥ वृद्धायुमनुवृद्धयो जुह्वामं वन्तु जुष्टयः ॥ तान्वो महो मरुत
 एव यात्वो विष्णोरेषस्य प्रभुथेह वामहे ॥ हिरण्यवर्गान्ककुहान्नुनस्तु वो ब्रह्मण्यं नः शंस्यं शार्धऽइमहे ॥

दशावनिभ्योदशकक्षेभ्योदशयोक्रेभ्योदशयोजनेभ्यः ॥ दशाभीशुभ्योऽअर्चिताजरेभ्योदशधुरोद
 शयुक्तावहेभ्यः ॥ तेऽअर्द्रयोदशयंत्रासऽआशवस्तेषामाधानुपर्येतिहृतं ॥ तऽऊंसुतस्यसोम्यस्यां
 धसोशोःपीयूषप्रथमस्यमेजिरे ॥ तेसोमादोहरीऽइंद्रस्यनिसेतेशुद्धंतोऽअध्यासतेगवि ॥ तेभिर्दुग्धं
 पपिवान्तोम्यमध्विद्रोवर्धतेप्रथनेष्टपायते ॥ दृषावोऽअंशुर्नकिळारिषाथनेळावंतःसदमित्स्थना
 शिताः ॥ रेवत्येवमहसाचारवःस्थनयस्यग्रावाणोअर्जुषध्वमध्वरं ॥ १ ॥ अग्नेविश्वेभिःस्वनीकद्वं
 वैरूणावंतंप्रथमःसीदयोनिं ॥ कुलायिनैपूतवर्तंसवित्रेयुज्ञंनययजमानायसाधु ॥ भगोमेकामःस
 सृष्टयतां ॥ यज्ञोमेकामःसमू ॥ अश्रियोमेकामःस ॥ धर्मोमेकामःस ॥ प्रजामेकामःस ॥
 यशोमेका ॥ १ ॥ त्वमर्यमाभवसियत्कुनीनांनारमस्वधावन्गुह्यविषां ॥ अंजंतिमित्रंसुधितंन
 गोभिर्यदंपतीसमनसाकृणोषि ॥ अर्यमणंनुदेवंकन्याऽअग्रिमयक्षत ॥ सइमादेवोअर्यमाप्रेतोमुंचा
 तुनामुतःस्वा ॥ वरुणंनुदेवंकन्या ॥ सइमादेवोवरुणःप्रे ॥ पूषणंनुदेवंक ॥ सइमादेवःपूषाप्रे ॥

अमोहमस्मिन्सात्वमस्यमोहं द्यौरहं पृथिवीत्वंसामाहृत्स्वंतावेहविवहावहे ॥ प्रजाप्रजनयाव
हैसंप्रियैरोचिष्णुसुमनस्यमानौजीवेवशरदःशतं ॥ इममश्मानमारोहोश्मेवत्वंस्थिराभव ॥ सहस्व
पृतनायतोमितिष्ठपृतन्यतः ॥ २ ॥ इषऽएकपदीभवसामामनुव्रताभव ॥ पुत्रान्विदावहैबहूस्ते
संतुजरददृष्टयः॥ ऊर्जद्विपदीभवसा०॥रायस्पोषायत्रिपदीभवसा०॥मायोभव्यायचतुष्पदीभवसा०॥
प्रजाभ्यःपंचपदीभवसामा०॥ ऋतुभ्यःषट्पदीभवसा०॥ सखासप्तपदीभवसा० ॥३॥ मांगल्यतंतु
नानेनसर्वजीवनहेतुना ॥ कंठेवधामिसुभगेसाजीवशरदःशतं ॥ इतिविवाहमंत्राःसमासाः ॥
अथार्कविवाहमंत्राः ॥ ॥ संगोमिरांगिरसोनक्षमाणोऽग्नौऽइवेदंयुमर्णनिनार्य ॥ जनेमित्रो नदं
पतीअनाक्तिबृहस्पतेवाजयाशूरैर्वाजौ ॥ यस्मैत्वंकामकामायव्यंसम्राड्यजामहे ॥ तमस्मभ्यं
कामंदत्वाथेदंत्वंधृतंपिब ॥ १ ॥ अभिद्वयसंसर्गमंत्राः ॥ अग्निमीळे० वर्ग २ ॥ अयंतेयो
निर्ऋत्वियोयतोजातोअरोचथाः ॥ तंजानन्मृगऽआसीदाथानोवर्धयंगिरः ॥ प्रत्यवरो० ॥ अ

ग्रावशिथरतिप्रविष्टऽक्षणीणांपुत्रोअधिराजऽएषः ॥ तस्मैजुहोमिहविपाघनेनमदिवानांमोमुहद्भाग
 धेयंमोऽअस्माकंमोमुहद्भागधेयं ॥ अग्निनाग्निःसमिध्यतेकविर्गृहपरित्युवा ॥ हव्यवाइजुहोस्यः ॥
 अस्तीदमग्निमर्थनमस्तिप्रजनेनकृतंएतांविश्वलोमाभराग्निमथामपूर्वथा ॥ अरण्योनिहितोजातेवै
 दागर्भऽइवसुधितोगार्भिणीषु ॥ दिवेदिवइद्व्योजागृवद्भिर्विष्मद्भिर्मनुष्यैःशिरग्निः ॥ उत्तानायाम
 वमराचिकित्वात्सद्यःप्रवीतावर्षंजंजान ॥ अरुपस्तपोरुशंसस्यपाजुऽइळांयास्पृत्रोव्युनेजनिष्टा ॥
 पाहिर्नोऽअमुऽएकंयापाह्युऽतद्वितीयया ॥ पाहिर्गीर्भस्तिस्त्रभिस्त्रर्जापतेपाहिचतुस्त्रभिर्वसो ॥ पा
 हिविश्वस्माद्रक्षसोऽअरण्यःप्रस्मवाजेपुनोव ॥ त्वामिद्धिनेदिह्मदेवतांतयऽआपिनक्षामहेवृधे ॥
 आर्नोऽअग्नेवयोवृधंरयंपवकशंस्यं ॥ रास्वाचनऽउपमातेपुरुस्पृहंसुनीनीस्वयंशस्तरं ॥ २ ॥ वृ
 हत्सामक्षत्रमहृद्धह्मिण्यांजिष्टुभोजःशुभितमुग्रवीरं ॥ इन्द्रस्नोमेनपंचदशेनुमध्यमिदंवातेनसगरेण
 रक्ष ॥ १ ॥ अथसायंप्रातर्होममंत्राः ॥ तंतुंनुचजसोमोमानुमन्विहिज्योतिष्मतःपथोरंसाधि

याकृतान् ॥ अनुत्खण्वयतजोगुवामपोमनुर्भवजनयादिव्यजनं ॥ हिरण्यगर्भःसमवर्तताग्नेभूतस्य
जातःपतिरेकऽआसीत् ॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमांस्कस्मैदेवायहविषाविधेम ॥ १ ॥ अथाप
त्कालहोममंत्राः ॥ हविष्यांतमजरस्वविदिविस्पृश्याहुतंजुष्टमग्नौ ॥ तस्यभर्मणेभुवनायदे
वाधर्मणेकंस्वययापप्रथत ॥ गीर्णभुवनंतमसापंगूळहमाविःस्वर्भवज्जातेऽअग्नौ ॥ तस्यदेवाःपुं
थिवीचौरुतापोरण्यन्मोषधीःसख्येऽअस्य ॥ देवेभिर्निषितोयज्ञियेभिरग्निस्तोषाण्यजरंबृहते ॥
योभानुनापृथिवीद्यामुतेमामातनारोदसीऽअंतरिक्षं ॥ योहोतासीत्प्रथमोदेवर्जुष्टोयंसमांजन्नाज्ये
नाष्टणानाः ॥ सर्पतर्त्रीत्वरंस्थजगद्यच्छात्रमग्निरुक्णोज्जातवैदाः ॥ यज्जातवेदोभुवनस्यमूर्धन्
तिष्ठोऽअग्नेसहरोचनेन ॥ तत्वाहेममतिभिर्गीभिरुक्थैःसयज्ञियोऽअभवोरोदसिमाः ॥ १ ॥
अथामिसमारोपमंत्राः ॥ अयति० ॥ यातेऽअग्नेयज्ञियांतनूस्तयेह्यारोहात्मात्मानमच्छावसू
निकृण्वन्नस्मेनर्यापुरुणि । यज्ञोभूत्वायज्ञमार्सीदस्त्रांयोनिंजातवेदोभुवऽआजायमानःसक्षयऽएहि॥

पुनःसंधानं० ॥ इदंत्तुऽएकंपरऽकृतुतीयेनज्योतिपासंविशस्व ॥ संवेशेनेनन्व१श्चाहरेधिप्रियो
 देवानांपरमेजनित्रै ॥ १ ॥ त्वमेसेप्रयोऽसिजुष्टोहोतावरणयः ॥ त्वयायुज्ञंवितन्वते ॥ योऽअग्निं
 देववीतयेहविष्मोऽआविवासति ॥ तस्मैपावकमृळ्य ॥ त्वनोऽअग्नेतवदेवपायुभिर्मघोनोरक्षतन्व
 श्रवंद्य ॥ त्रातातोकस्यतनयिगवामस्यनिमेपरक्षमाणस्तवव्रते ॥ २ ॥ अथश्रवणाकर्ममंत्राः ॥
 ॥ अग्नेनयंसुपथारायेऽअस्मान्विश्वानिदेववयुनानिविद्वान् ॥ युयोध्य१स्मज्जुहुराणमेनोमूयिष्ठान्ते
 नमऽउक्तिविधेम ॥ अग्नेत्वंपारयानव्योऽअस्मान्स्वस्तिभिरतिदुर्गाणिविश्वा ॥ पूथ्वृथ्वीवहु
 लान्ऽउर्वीभवातोकायतनयाग्रशंयोः ॥ अग्नेत्वमस्मद्युयोध्यमीवाऽअनग्नित्राऽअभ्यमैतकृधीः ॥
 पुनरुस्मभ्यसुवितान्येदेवक्षांविश्वेभिरमृतैर्मर्यजत्र ॥ प्राहिनोऽअग्नेपायुभिरजलैरुतप्रियेसदनुऽआ
 शुशुक्वान् ॥ मातैस्यंजरितारंयविष्टननंविदन्मापुंसंहस्वः ॥ मानोऽअग्नेर्वसृजोऽअघायांविष्यवै
 रिपवैदुच्छुनायै ॥ मादत्वतेदशतिमादतैनोमारीपतेसहसावन्परादाः ॥ १ ॥ शनौसंवंतुवाजिनो

हवेषुदेवतातामितद्रवःस्वर्काः ॥ जंमयंतोहिंष्टकंरक्षांसिसनैम्यद्युयवन्नमीवाः ॥ २ ॥ सर्पवलिमंत्राः
 ॥ येसर्पाःपार्थिवायेअंतरिक्ष्यायेदिव्यायेदिश्यास्तेभ्यइमंबलिमाहर्षितेभ्यइमंबलिमुपाकरोमि ॥ स
 र्पोसिसर्पतांसर्पाणामधिपतिरस्यन्नेनमनुष्यांस्त्रायसेपूेनसर्पान्नयज्ञेनदेवांस्त्वयिमांसंतत्वयिसंतःसर्पा
 माहिंसिषुधुवांतेपरिददामिध्रुवामुतेपरिददामि ॥ ३ ॥ अथाश्वयुजीकर्ममंत्रः ॥ ऊनं
 मेपूर्यतांपूर्णमेमोपसदत्पृषातकाय ॥ अथाग्रयणमंत्राः ॥ सजूर्ऋतुभिःसजूर्वि
 धाभिःसजूर्ऋद्राग्निभ्यां ॥ सजूर्ऋतुभिःस० विश्वेभ्योदेवेभ्यः ॥ सजू० द्यावापृथिवीभ्यां
 ॥ १ ॥ प्रजापतयेत्वाग्रंहृगृह्णामिमह्यंश्रियैमह्यंशसेमह्यमन्नाद्याय ॥ भद्रानुःश्रेयःसमनैष्टदे
 वांस्त्वयावसेनसमंशीमहित्वा ॥ सनोमयोभूःपितृवाविशेहृशंनोभवद्विपदेशंचतुष्पदे ॥ १ ॥
 अमोसिप्राणतद्वतंब्रवीम्यमासिसर्वानसिप्रविष्टः ॥ समेजरांगमपनुद्यशरीरादमामलधिमामृथा
 मंइंद्र ॥ २ ॥ अथप्रत्यवरोहणमंत्राः ॥ अपश्चेतपदाजहिर्षूर्वेणचापरेणच ॥

सप्तचवारुणीरिमाःसर्वाश्चराजबांधवीः ॥ नवैश्वेतश्चाध्यागारेहिर्जघानकिंचन ॥ श्वेतायवैदा
वर्षयनमः ॥ अभयंनप्राजापत्येभ्योभूयात् ॥ १ ॥ ॥ समार्यस्यप्रवासेअग्निसमा० मंत्राः ॥
गृह्णामाविभीतोपवःस्वस्त्येवोस्मासुचप्रजायध्वंमाचवोगोपतीरिषत् ॥ गृह्णानहंसुमनसःप्रपद्येवी
रघ्नोवीरवंतःसुवीरान् ॥ इरावहंतोघृतमुक्षमाणतेष्वहंसुमनाःसंविशानि ॥ अंगादंगात्संभवसिद्धद
यादधिजायसे ॥ आत्मावैपुत्रनामासिसजीवशरदःशुक्लं ॥ असयंवोभयंमेस्तु ॥ १ ॥ आथाभ्यु
पघातादिप्रायश्चित्तमंत्राः ॥ पुनस्त्वादित्यैरुद्रावसंवःसमिधत्तांपुनर्ब्रह्माणोवसुनीथयज्ञैः ॥
घृतेनत्वंतनुवौवर्धयस्वसत्याःसंतुयजमानस्यकामाः ॥ १ ॥ ततंमऽआपुस्तदुनायतेपुनःस्वाद्विष्टायीति
रुचथावशस्यते ॥ अयंस्ममुद्रऽउतविश्वमेषजःस्वाहृकृतस्यसमुत्तुण्णमवः ॥ २ ॥ यन्मऽआ
त्मनोमिदामूदग्निस्तत्पुनराहर्जानवेदाविचर्षणिः ॥ ३ ॥ पुनरग्निश्चक्षुरदात्पुनरिद्रोबृहस्पतिः ॥ पुनर्मऽअ
श्विनयुवंचक्षुरार्धत्तमक्षयोः ॥ ४ ॥ त्वमग्नेअयास्ययासुन्मनसाहितः ॥ अयासंनहव्यमूहिषेयानोधे

हिमेषजं ॥५॥ इदंतुलकंपरुतलकंतृतीयेनज्योतिषासंविशस्व ॥ संवेशनस्तनुवैचारैरधिप्रियोदेवा
नीपरमेसधस्थे ॥ ६ ॥ आभिर्गीर्भिर्यदनोनकुनमाप्यायहरिवोवर्धमानः ॥ यदास्तोतृभ्योमहि
गोत्रारुजासिभूयिष्ठभाजोअधतेस्याम ॥ ७ ॥ मनोज्योतिर्जुयतोमाज्यंविच्छिन्नंयज्ञसमिमंदं
धातु ॥ याइष्टाउषसौनिश्रुचंश्चताःसंदधामिहविषाघृतेन ॥ आश्रावितमत्याश्रावितंवर्षदृक्त
मत्यनूकंचयुज्ञे ॥ अतिरिक्तकर्मणोयच्चहीनंयज्ञःकर्माणप्रतिरभैतिकल्पयन्स्वाहाकृताहुतिरेतुदे
वान् ॥ ९ ॥ स्वस्तिदाविशस्पतिर्हृत्रहाविमृधोवशो ॥ वर्षेद्रूपुरंतुनःस्वस्तिदाअमयंकुरः ॥ १० ॥
यत्रवेत्थवनस्पतेदेवानांगुह्यानामानि ॥ तत्रहव्यानिगामय ॥ ११ ॥ त्वनोअग्नेवरुणस्यविद्वान्देव
स्येहेढोर्वयासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठोवन्हितमःशोशुचानोविश्वाहेषांसिप्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥ १२ ॥ सत्वंनो
अग्नेवमोमंबोतीनेदिष्टोअस्याउषसोव्युष्टौ ॥ अवयक्षन्नोवरुणर्राणोवीहिमृडीकसुहवोनलधि
॥ १३ ॥ सत्वेपयांसिसमृतुवाजाःसंवृण्यान्यमिमातिषाहः ॥ आप्यायमानोअमृतायसोमदि

विश्रवा०स्युत्तमानिधिष्व ॥ १४ ॥ देवाञ्जनमगन्यज्ञस्तस्यमाशीस्वतुवर्धतां ॥ भूतिवृत्तेनमुंचतुय
 द्वायंज्ञपतिमंहसः ॥ १५ ॥ द्रुप्सश्चस्कंदपृथिवीमनुद्यामिमंचयोनिमनुयश्चपर्वः ॥ तृतीयंयोनिमनु
 संचरंतद्रप्संजुहोम्यनुससहोत्राः ॥ १६ ॥ उदीप्यस्वजातवेदोपुष्टंनिर्घर्तिममे ॥ पशू०श्चमह्यमाव
 हजीवंचदिशोदश ॥ १७ ॥ मानोहि०सीज्जातवेदोगामश्वंपुरुषंजगत् ॥ अबि०भ्रदग्नआर्गहिश्चि
 यामापरिपातय ॥ १८ ॥ इदंवि० ॥ १९ ॥ त्र्यंबकं० ॥ २० ॥ अथमंहलदेवतामंत्राः ॥ ब्रह्म
 जज्ञानं० ॥ आप्याय० ॥ अभित्वदिवसवितरीशानंवार्याणां ॥ सदावन्सागमीमहे ॥ इंद्रोवि०
 अग्निदू० यमाय० मोषुणः५० तत्त्वाया० वायोशुतं० ॥ ज्मयाअन्नवसेवोरंतदेवाउरावंतरिक्षेमज
 यंतशुभाः ॥ अर्वाक्पृथऽउरुज्ययः॥ ऋणुष्वंश्रोताद्वनस्यजग्मवो०नोऽअस्यआरुद्रासइंद्रवंतःसजोषसोहि
 रण्यरथाःसुवितार्यगंतन ॥ इयंवोऽअस्मत्प्रतिहृत्यतेमतिस्तृष्णजेनदिवउत्साउदन्यवे ॥ त्यांनुसन्नि
 यौऽअवऽआदित्यान्याचिषामहे ॥ सुमुखीकाँऽअसिहृये ॥ अश्विनानवतिरस्मदागोमहत्वाहिरण्य

वत् ॥ अ॒र्वाग्र॒थंस॒मन॒सानि॒र्यच्छ॒तं ॥ ओ॒मास॒श्रव॒र्षणी॒धृतो॒विश्वे॒देवा॒सऽआ॒गत ॥ दा॒शवांसो॒दाशु॒
 षःसू॒तं ॥ अ॒मि॒त्य॒दे॒वंस॒वित॒रंमो॒ण्योःक॒विक॒तुम॒र्चा॒मि॒स॒त्यसं॒वत्त्र॒धाम॒भिप्रि॒यम॒निक॒र्वि ॥ ऊ॒र्ध्वा
 य॒स्याम॒तिर्मा॒ऽअ॒दि॒द्युत॒सर्वा॒मनि॒हिर॑ण्यपा॒णिर॒मिमी॒तसु॒क्रतुः॒कृपा॒स्वः ॥ आ॒यंगोः० ॥ अ॒प्सर
 सां॒गंध॒र्वाणां॒मृगा॒णां॒च॒रणे॒चरे॒न् ॥ के॒शीके॒तस्य॒वि॒द्धान्त॒खास्वा॒दुर्म॒दि॒न्तमः ॥ कु॒मा॒रंमा॒तायु॒वतिः
 स॒म॒ब्धं॒गुह्य॒वि॒मर्ति॒नद॒दाति॒पित्रे ॥ अ॒नीक॒मस्य॒नमि॒नज्जना॒सःपु॒रःप॑थं॒तिनि॒हित॒मरु॒तौ ॥ ऋ॒षभं
 मा॒समा॒नानां॒सप॒त्नानां॒विषा॒सहि ॥ हं॒ता॒रंश॒त्रूणां॒क॒धिवि॒राज॑गो॒पति॒गवां ॥ अ॒दि॒ति॒ह्यज॑नि॒ष्टद॒क्ष
 या॒दुहि॒तात॒व ॥ ता॒दे॒वाऽअ॒र्न्वजा॒यंत॒भद्रा॒ऽअ॒मृत॑बंध॒वः ॥ ता॒म॒भ्रि॒वर्णां० ॥ इ॒दंवि० ॥ उ॒दी॒रता० ॥
 प॒र॒मृ॒त्योऽअ॒नु॒प॒रेहि॒पंथां॒यस्ते॒स्वऽइ॒तरो॒दे॒वया॒नात् ॥ च॒क्षु॒ष्मते॒शृण्व॒तेतै॒ब्रवी॒मि॒मानः॒प्र॒जांशी॒रिषो॒भोत
 वी॒रान् ॥ ग॒णानां० ॥ शं॒नोदे० ॥ म॒रुतो॒यस्य॒हि॒क्षये॒पाथा॒दिवो॒विम॒हसः ॥ स॒सु॒गोपा॒तमो॒जनः॥
 स्यो॒नाप॑र्त० ॥ इ॒मंमै॒ग० ॥ या॒मो॒या॒मोरा॒जन्नि॒तोव॒रु॒णोमु॒च ॥ यदा॒पो॒अ॒ध्याऽइ॒तिव॒रु॒णेति॒शपा॒महे

ततोवरुणनोमुंच ॥ मयिवापोमोषधीर्हिसीरतोविश्वव्यचाभूस्त्वेतोवरुणनोमुंच ॥३१॥ इतिमंडलदे
वतामंत्राः ॥ ॥ अथशांतिपाठः ॥ ॥ आनोभद्राःकृतवोयंतुविश्वतोदंब्यासोअपरीतासऽउ
द्भिदः ॥ देवानोयथासदमिद्वृधेऽअमन्त्रप्रायुवोरक्षितारोदिवेदिवे ॥ देवानांभद्रास्तुमतिर्चजूयतांदे
वानांशमिरभिनोनिर्वर्ततां ॥ देवानांसख्यमुपसेदिमावयंदेवानुऽआयुःप्रतिरंतुजीवसे ॥ तान्पूर्वया
निविदाहूमहेवयंसर्गमित्रमदिर्निदक्षमस्त्रिधं ॥ अयमणवरुणंसोममश्विनासरस्वतीनःसुभगाभय
स्करत् ॥ तन्नोवातोभयोभुवांतुमेषजंतन्मातापृथिवीतत्पिताधौः ॥ तद्वावाणःसोमसुतोभयो
भुवस्तदश्विनाशृणुतंधिष्ण्यायुवं ॥ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिंधियंजिन्वमवसेहूमहेवयं ॥
पूषानोयथावेदसामसंहृधेरक्षितापायुरदंब्यःस्वस्तये ॥ १ ॥ स्वस्तिनऽइंद्रोवृद्धश्रवाःस्वस्ति
नःपूषाविश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्ताक्षर्योऽअरिष्टनेमिःस्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥ पृषदश्वामरुतः
पृथ्नुश्चिमातरःशुभंयावानोविदेथेषुजग्मयः ॥ अग्निजिह्वाभनवःसूरचक्षसोविश्वेनोदेवाऽअवसागंम

न्निह ॥ सद्रं कर्णोमिः शृणुयाम देवाभद्रं पश्येमाक्षमि र्यजत्राः ॥ स्थिरैरैस्तुष्टुवांसस्तु नूभिर्व्यशो
 मदेव हितं यदार्थः ॥ शतमिन्नुशुरदोऽन्ति देवा यत्रानश्चक्राजसंतनूनां ॥ पुत्रासो यत्र पितरो म
 वंति मानो मध्यारीरिषतायुर्गतोः ॥ अदिति चैरदिति रितरिक्षमदिति माता सपिता सपुत्रः ॥ विश्वेदे
 वाऽअदितिः पंचजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वं ॥ २ ॥ स्वस्ति नो मिमीतामश्विनाभगः स्वस्ति देव्य
 दितिरनूर्वणः ॥ स्वस्ति पषाऽअसुरो दधातुनः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुनां ॥ स्वस्त्येवायुमुपब्रवामह सो
 मं स्वस्ति भुव नस्य स्पतिः ॥ बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्त्ये स्वस्त्येऽआदित्या सोमवंतुनः ॥ विश्वेदेवा
 नोऽअद्या स्वस्त्ये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्त्ये ॥ देवाऽअंतं भवः स्वस्त्ये स्वस्ति नो रुद्रः पातवंहसः ॥
 स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्यैरेवति ॥ स्वस्ति नऽइंद्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नोऽअदिते कृधि ॥ स्वस्ति पथ्याम
 नुचरे मसूर्या चंद्रमसा विव ॥ पुनर्ददताघ्नतानतासंगमि महि ॥ १ ॥ स्वस्त्ययं न ताक्ष्यं मरिष्टनेमि महद्व्रतं वा
 यमं देवतानां ॥ असुरघ्नमिंद्रं सखं सतुं बृहद्यशो नावमि वारुहेम ॥ अंहो मुचमां गिरं संगयं च स्वस्त्यां त्रे

यंमनसाचतार्क्ष्यं ॥ प्रयतपाणिःशरणंप्रपद्येस्वस्तिसंवाधेष्वमयनोअस्तु ॥ २ ॥ शंनऽइंद्राग्नीमंव
 तामवौशिःशंनऽइंद्रावरुणारानहंव्या ॥ शमिद्रासोमांसुवितायशंयोःशंनऽइंद्रापुपणावाजंसातो ॥
 शंनोभगःशमूनःशंसोऽअस्तुशंनःपुरेधिःशमुसंतुरायः ॥ शंनःसत्यस्यंसुयमस्यशंसःशंनोऽअयमपुरुजा
 तोऽअस्तु ॥ शंनोधाताशमुधुननोऽअस्तुशंनऽउरुचीभंवतुस्वधाभिः ॥ शंरोदसीदृढनीशंनोअद्विःशंनो
 देवानांसुहृवानिसंतु ॥ शंनोऽअग्निज्योतिरनीकोऽअस्तुशंनोमित्रावरुणावधिवनाशं ॥ शंनःसुहृतांसु
 क्तानिसंतुशंनऽइपिरोऽअभिवानुवातः ॥ शंनोद्यावापृथिवीपर्वहूतौशमंतारिसंद्रशयेनोअस्तु ॥
 शंनोपधीर्वनिनोभवंतुशंनोरजमस्पतिरस्तुजिष्णुः ॥ १ ॥ शंनऽइंद्रोवसुमिद्वेवोऽअस्तुशमादित्ये
 मिर्वरुणःसुशंसः ॥ शंनोरुद्रोरुद्रेमिर्जलापःशंनस्वष्ट्राग्रामिर्हिशृणोतु ॥ शंनःसोमोभवतुब्रह्मशं
 नःशंनोग्रावाणःशमुसंतुयज्ञाः ॥ शंनःस्वरुणांमितयोभवंतुशंनःप्रस्वशम्वस्तुवेदिः ॥ शंनःसूर्यऽउरुच
 क्षाऽउदैतुशंनश्चतस्रःप्रदिशोभवंतु ॥ शंनःपर्वताध्रुवयोभवंतुशंनःसिधवःशमुमन्त्रापः ॥ शंनोऽअदिति

भवतु ब्रतेभिः शनो भवतु मरुतः स्वर्काः ॥ शनो विष्णुः शमुपपानोऽस्तु शनो भवित्रं शम्बस्तु वायुः ॥ शनो
 देवः सविता त्रायमाणः शनो भवतु षसो विभातीः ॥ शनः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शनः क्षेत्रस्य पतिरस्तु
 भुः ॥ २ ॥ शनो देवा विश्वदैवा भवतु शं सरस्वती सहस्रधी भिरस्तु ॥ शमं भिषाचः शमुरातिषाचः शं नो दिव्याः पा
 र्थिवाः शनोऽअप्याः ॥ शनः सत्यस्य पतयो भवतु शनोऽअर्वितः शमु संतु गावः ॥ शनऽक्षमवः सुहृतः
 सुहस्ताः शनो भवतु पितरो हवेषु ॥ शनोऽअजऽएकपादेवोऽअस्तु शनो हि बृह्यः शं सं मुद्रः ॥ शनो अपां
 नपतिरुस्तु शनः पृथिर्भवतु देवगोपा ॥ आदित्यारुद्रावसवो जुषते दं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः ॥ शृण्वंतु नो
 दिव्याः पार्थिवा सो गो जाताऽउत ये यज्ञियासः ॥ यदेवानां यज्ञियां यज्ञियानां मनोर्यजत्राऽअमृतां कृत
 ज्ञाः ॥ ते नो रास्ता मरुगा यमद्य यूयं पां ॥ ३ ॥ शं वतीः पारयं त्येते तं पृच्छंति वचो युजां ॥ अभ्यारंतं यमाकेतु
 यऽएवेदमिति ब्रवंन् ॥ आसाकेतुं परिब्रुतं भारती ब्रह्मवर्धनीः ॥ संजानानामहीमातायऽएवेदमिति
 ब्रवंत् ॥ इन्द्रस्तं किं विभुं प्रभुं भानुनेयं सरस्वती ॥ येन सूर्यमरोचयद्येनेमरोदसीऽभे ॥ जुषस्वाग्ने अंगिरः का

प्वंमेध्यातिथिं ॥ मात्वासोमंयवर्बहसुतस्यमधुमत्तमः ॥ त्वमग्नेअंगिरःशोचस्वदेववीतमः॥ आशं
 तमशंतमासिरसिद्धिभिःशांतिंस्वस्तिमर्कुर्वत ॥ शंनःकनिक्रदेहवःपर्जन्योअभिवर्पतु ॥ शंनोद्यावापृ
 थिवीशंप्रजाभ्यःशंनंएधिद्विपदेशंचतुष्पदे ॥४॥ यतइंद्रमयांमहेततोऽअभयंकधि ॥ मधवन्छुग्धि
 तवतञ्जतिभिर्विद्विपोविमृधौजहि ॥ त्वंहिराधस्पतेराधसोमहःक्षयस्यासिबिधुतः ॥ तंत्वावयंमव
 वान्निद्रगिर्वणःसुतावैतोहवामहे इंद्रःस्पळुतवेत्रहापरस्यानोवैरेण्यः॥सनोरक्षिपच्चरुमंसमव्यमंसपश्चात्पा
 तुनःपुरः ॥ त्वनःपश्चादधरादुत्तरात्पुरइंद्रनिपाहिविश्वतः ॥ आरेऽअस्मत्कणुहिदिव्यंभयमारेहेतीर
 देवीः ॥ अद्याद्याश्वःश्वइंद्रत्रास्वपूरेचनः ॥ विश्वाचनोजरितन्तसंपतेऽअहोदिवानक्तंचरक्षिपः ॥
 प्रभंगीशूरौमघवातुवीमधुःसंमिश्रोवीर्यायुकं ॥ उभातैवाहूवृषणाशतक्तनोनियावज्जंमिमिक्षतुः ॥
 मद्रंनोऽअपिवातयुमनः ॥ १ ॥ आशुःशिशानोवृषभोनभीमोघनाघुनःक्षोभेणश्चर्पणीनां ॥ संक्र
 दंनोनिमिषऽएकवीरःशतंसेनाऽअजयत्साकमिद्रः ॥ संक्रदंनेनानिमिषेणजिष्णुनायुत्कारेणदुश्चयवने

नधृष्णुनां ॥ तदिद्रेणजयततत्सहध्वंयुधोनरइर्षुहस्तेनदृष्ट्वा ॥ सइपुहस्तेःसनिर्बिगिभिर्विशीसंखष्टास
युधइंद्रेणणेन ॥ संसृष्टजित्सोमपाबाहुशुर्ध्वं१ग्रधन्वाप्रतिहिताभिरस्ता ॥ बहस्पतेपरिदीयारथे
नरक्षोहामित्रौऽअपबार्धमानः॥ प्रभंजन्तेनाःप्रमृणोयुधाजयन्त्रस्माकमेध्यवितारथानां॥ बलविज्ञा
यःस्थविरःप्रवीरःसहस्वान्वाजीसहमानउग्रः ॥ अमिर्वीरोऽअभिसत्वासहो जैत्रमिद्रथमार्तैष्टगोवि
त ॥ गोत्रमिदंगोविदंवज्रबाहुंजयंतमजमप्रमृणंतमोजसा ॥ इमंसंजाताऽअनुवीरयध्वमिंद्रसत्वायो
ऽअनुसंरमध्वं ॥ १ ॥ अभिगोत्राणिसहसागाहमानोदयोवीरःशतमन्युरिंद्रः ॥ दुश्च्यवनः
पृतनाषाळयुध्योईस्माकंसेनाऽअवतुप्रयुत्सु ॥ इंद्रऽआसानेनाबृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञःपुरऽएतुसोमः ॥
देवसेनानामभिभंजतीनांजयंतीनांमरुतौयंत्वग्रं ॥ इंद्रस्यदृष्ट्वाणोवरुणस्वरज्ञऽआदित्यानंमरुतां
शर्षऽउग्रं ॥ महामनसांभुवनच्युवानांघोषोदेवानाजयंतामुदस्थात् ॥ उद्धर्षयमववन्नायुधा
न्युत्सत्वंनामामकानांमनांसि ॥ उद्धृत्रहन्वाजिनांवाजिनांन्युद्रथानांजयतांधंतुघोषाः ॥ अस्मा

कर्मिद्रः समृतेषु ष्वजे ष्वस्मा किंयाऽइषे वस्नाजयंतु ॥ अस्माकं वीराऽउत्तरे भवं त्वस्माऽउदेवाऽअव
 ताहवेषु ॥ अमीषी चित्तं प्रतिलोभयंति गृहाणां गान्येष्वेपरेहि ॥ अभिप्रेक्षिनिर्दहहस्तुशोकैरं
 धेनामित्रास्त्वमसासचंतौ ॥ प्रेताजयंतानरऽइंद्रोवः शर्मयच्छतु ॥ उग्रविः संतुबाहवो नाधृष्यायथा
 संथ ॥ असौ यासेनां मरुतः परेषामभैति नऽओजसा स्पर्धमाना ॥ तांगूह ततमुसापवते नयथा
 मीषां मन्योऽअन्यं न जानीत् ॥ अंधाऽअभिप्रांभवतारशीर्षाणाऽअहयऽइव ॥ तेषां वोऽअग्निदग्धा
 नामग्निर्मूढानां मिद्रोहंतु वरं ॥ २ ॥ रात्रीर्व्यख्यदायुती पुरुत्रादेव्यऽक्षभिः ॥ विश्वाऽअग्निश्चि
 यो धित ॥ ओर्विषाऽअमर्त्या निवते दिव्युऽद्वैतः ॥ ज्योतिषा बाधते तमः ॥ निरुस्वसारमस्कतो षसंदि
 व्यायती ॥ अपेदुहासते तमः ॥ सानोऽअर्च्यै स्यो वयं निनेयामुन विक्षमहि ॥ दृक्षेन वसति वयः ॥ निग्रामो
 सोऽअविक्षत निपद्वंतो निपक्षिणः ॥ निश्चेनासंश्चिदर्थिनः ॥ यावया दृक्वर्थऽदृक्कयवयस्तेन मूर्म्ये ॥ अथा
 नः सुतरां भव ॥ उर्पमापेपि शतमः कृष्णं व्यक्तमस्थित ॥ उर्षऽकृणे वयातय ॥ उपतेगाऽइवाकर्हणी ष्वदु

ह्रितर्दिवः ॥ रात्रिस्तोर्मनजिग्युषे ॥ १ ॥ आरात्रिर्पाथिव्रजः पितरः प्राग्रुधामग्निः ॥ दिवः सदासिद्धहृती
वितिष्ठसऽआत्वेपर्वतेतमः ॥ येतैरात्रीनुचक्षसोयुक्तासोनवतिर्नव ॥ अशीतिः संवष्टाउततेतसप्तसप्त
तीः ॥ रात्रीप्रपद्येजननीसर्वभूतनिवेशनी ॥ भद्रांभगवर्तकृष्णांविश्वस्यजगतोदिशां ॥ संवेशनसंयु
मिनीगृहनेक्षत्रमालिनी ॥ प्रपञ्चोद्देशिवांरात्रीभद्रेपारमशीमन्दीभद्रेपारमशीमद्योजमः ॥ स्तोष्या
भिप्रयतोदेवीशरण्यवह्वचप्रियां ॥ सहस्रसंमितांदुर्गाजानेवेदसेसुनवामुसोभं ॥ शांत्यर्थतद्विजातीनामु
पिभिः सोमपाश्रिताः ॥ ऋग्वेदेत्वंसमुपन्नामरातीयतोनिदंहातिवेदः ॥ देवांदेवांप्रपद्यंतिब्राह्मणा
हव्यवाहनीः ॥ अविद्यावह्विद्यावासनः पर्पदतिदुर्गाणिविश्वा ॥ येऽअश्रिवर्णाशुभांसौम्यांकीर्त
यिष्यंतियेहिजाः ॥ तांनारयतिदुर्गाणिनवेवासंधुदुरितायग्निः ॥ २ ॥ दुर्गेपुविपमेघोरसंग्रामेरि
पुसंकट ॥ अथिचोरानिपतेपुदुष्टग्रहनिवारणेदुष्टग्रहनिवारण्योनमः ॥ दुर्गेपुविपमेपुत्वंसंग्रामेषु
वनेपुच ॥ मोहयित्वाप्रपद्यंतेतेपामेऽअमयंकुरुतेपामेऽअमयंकुरुतेपामेऽअमयंकुरुतेपामेऽ ॥ केशिनीसर्वभूतानां

पंचमीति च नमंच ॥ सामांसमांनिशां दिवां सर्वतः परिरक्षतु सर्वतः परिरक्षत्वानमः ॥ तामग्रिवर्णाल
 पसाज्वलंती विरोचनी कर्मफलेषु जुष्टां दुर्गां दिवां शरणमहंप्रपद्ये सुतरं सितरसे नमः सुतरं सितरसे नमः ॥ दुर्गा
 दुर्गेषु स्थानेषु शनो दिवी रसिद्येय इमं दुर्गास्तवं पुण्यरात्रौ रात्रौ सदा पठेत् ॥ रात्रिः कुशिकसो भरो रात्रि
 स्तपो गायत्री ॥ रात्रिमुक्तं जपेन्नित्यं तत्कालं उपपद्यते ॥ ३ ॥ उलूकयातुं शुशुलूकं यातुं जहि
 श्वयातु मुतको कयातुं ॥ सुपुर्णयातु मुतगृध्रयातुं दृपदैव प्रमृणरक्ष ईद्र ॥ ४ ॥ पिशंगं भृष्टि मं भृण
 पिशाचि मिद्रसमृण ॥ सर्वरक्षो निर्वह्य ॥ ५ ॥ यमस्य त्वाजरायुणा शालेपरिव्ययामसी ॥
 उत्तहृदो हि नो भुवो भ्रिर्ददातु भेषजं ॥ शीतहृदो हि नो भुवो भ्रिर्ददातु भेषजं ॥ अंतिकामग्रिमं जर
 दूर्वादिः शिशुरागमत् ॥ अजानपुत्रपक्षया तृदयं मंहूयते ॥ विपुलं वनं ब्रह्माकांशं च रंजात वेदः का
 माय ॥ मां च रक्ष पुत्रांश्च शरणमस्तव ॥ पिंगाक्ष लोहितग्रीव कृष्णवर्ण नमोस्तुते ॥ अस्यां निबृह
 णस्यो नां सागरस्योर्म्यो यथा ॥ इन्द्रक्षत्रं ददातु वरुणमभिषिंचतु ॥ शत्रवो निधनं यांतु जयस्त्वं ब्रह्मते

जसौ ॥ कपिलजटोसर्वसंक्षचाग्निप्रत्यक्षदैवतं ॥ वरुणंचवशाम्यग्रेममपुत्रांश्चरक्षतुममपुत्रांश्चरक्ष
 त्वोनमः ॥ १ ॥ साग्रैवर्षशतंजीवपिबखादचमोदच ॥ दुःखितांश्चद्विजांश्चैवप्रजांचपशुपालय ॥
 योर्विदादित्यस्तपतियावद्भ्राजतिचंद्रमाः ॥ यावद्रामकंथालकेतावद्राज्यंविभीषणे॥यावच्चंद्रश्चसूर्य
 श्रतावत्तिष्ठतिभेदिनी ॥ यावद्वायुःपुंवायतीतांज्जीवजयांजय ॥ येनकेनप्रकारेणकोविनामनुजी
 वति ॥ परेषामुपकारार्थंयज्जीवतिसजीवति ॥ एतांविश्वानरींभूत्वासर्वदेवनमोस्तुते ॥ नचौरभयनंच
 सर्पभयनंचव्याघ्रभयनंचमृत्युभयं ॥ यस्यापमृत्युर्नचमृत्युः सर्वलभतेसर्वजयते ॥ २ ॥ रक्षाणो
 अग्नेतवरक्षणेमोरारक्षाणःसुंमखमीणानः ॥ प्रतिष्ठातुर्विरुजत्रीडूहोजहिरक्षोमहिचिद्वाहधानं॥ब्रह्मच
 तेजोतिवेदोनमश्चेयंचैगीःसदमिद्वर्धनीमूत ॥ रक्षाणोअग्नेतनयानितोकारक्षोतनस्तन्वोअप्रयुच्छन्
 ॥ ३ ॥ गुणानांत्वा० ऋक् ॥ जातवैदसेसुनवामसामंभरानीयतोनिदंहातिवेदः ॥ सनःषर्षदतिदुर्गा
 णिविश्वानावेवसिंधुंदुरितात्यग्निः ॥ क्षेत्रस्यपतिनावयार्वाहतेनैवजयोमसि ॥ गामश्वंपोषयित्वासनो

मृळातीदृशे ॥ २ ॥ वास्तोष्पतेप्र० ऋक् ॥ ४ ॥ स्वमःस्वमोधिकरणेसर्वनिष्वापयार्जनं ॥ आसु
र्यमन्यान्त्स्वापयद्व्यूळ्हंजाग्निधादहं ॥ अजंगरोनामसर्पःसर्पिरविपोमहान् ॥ यस्मिन्निद्वसर्पःसुधि
तस्तेनत्वास्वापयामसि ॥ सर्पःसर्पोऽजगरःसर्पिरविपोमहान् ॥ यस्यसर्पात्सिधवस्तस्यगंधिमशो
महि ॥ कालिकोनामसर्पोनवनगसहस्रबलः ॥ यमुनहृदेहंसोजातोऽद्योनारायणवाहनः ॥ यदिका
लिकंदूतस्ययदिकाः कालिकाद्भयात् ॥ जन्मसमिमतिक्रान्तोनिर्विपोयातिकालिकः ॥ आयाद्दिन्द्र
पृथिविरीळितेभिर्यज्ञमिमनोभागधेयंजुपस्व ॥ तृसांजहुमर्तुलस्येवयोपाभागस्तपैतृष्वसेयीवपामि
व ॥ यशस्कंरुवत्वंतंप्रभुत्वंतमेवराजाधिपतिर्वभूव ॥ संकीर्णनागाश्चपतिर्नराणांसुमंगलधंसततंदी
र्षमायुः ॥ कर्कोटकोनामसर्पोद्योदृष्टीविषुऽउच्यते ॥ तस्यसर्पस्यसर्पत्वंतस्मैसर्पनमोस्तुते ॥ नमो
ऽअस्तुसर्पभ्योयेकैवपृथिवीमनु ॥ येअंतरिक्षेद्येदिवितेभ्यःसर्पेभ्योनमः ॥ १ ॥ मार्गसेनमरिष्यसि
परित्वाणामिसर्वतः ॥ घनेनहन्मिहश्चिक्रमहंदेहेनागतं ॥ आदित्यरथवेगेनविष्णोर्बाहुबलेनच ॥

गरुडपक्षनिपातेन भूमिर्गच्छमहायशाः ॥ गरुडस्य जातमात्रेण त्रयो लोकाः प्रकंपिताः ॥ प्रकंपिता मही सर्वा सशैलवनकानना ॥ गगनं नष्टं च द्रार्कज्योतिर्बनप्रकाशते ॥ देवताभयमीताश्चमारुतो नष्टु वार्यति मारुतौ नष्टु वायुत्यौ नमः ॥ २ ॥ सोऽसर्पमद्रमद्रं ते दुरंगच्छमहायशाः ॥ जन्मेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकं वचनं स्मर ॥ आस्तीकवचनं श्रुत्वा यः सर्पो निवर्तते ॥ शतधा भिद्यते मूर्ध्नि शिशुक्षफलं यंथा ॥ नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि ॥ नमोऽस्तु नर्मदेतुभ्यं त्र्याहिर्मा विषसर्पतः ॥ योजरत्कारुणा ज्ञानोजरत्कन्यामहायशाः ॥ तस्य सर्पापंभद्रं ते दुरंगच्छमहायशाः ॥ ३ ॥ आरुष्णेनेत्यादि नवमं त्राः ॥ १ ॥ मुंचामित्वा हविषा जीवं नायकमज्ञातयुक्षमादुतराजयुक्षमात् ॥ ग्राहिर्जग्राहयदिवैते देनं तस्यां द्वाग्नीप्रमुक्तमेनं ॥ यदि क्षितायुर्दिवोऽपरे तोयदिमृत्योरैतिकर्नीतऽएव ॥ तमाहं रामि निरुक्ते रूपं स्यादस्पर्षिमेनं शतशारदाय ॥ ४ ॥ सहस्राक्षेण शतशारे देनशनायुषा हविषा हार्षिमेनं ॥ शतं यथे मंशरदो नयातीन्द्रो विश्वस्य दुरितस्य पारं ॥ शतं जीवशरदो वर्धमानः शतं हेमं तान्छतमुं वसंतान् ॥ शतमिन्द्राग्नी

सविताबृहस्पतिः शतायुषाहविषेभंपुनर्दुः ॥ आहर्षित्वाविंदत्वापुनरागाः पुनर्नव ॥ सर्वागसर्वते-
 वक्षुः सर्वमार्युश्चतेविंद ॥ ५ ॥ त्वमुपवानिनेदेवजंतसहावानंतकृतांरथांनां ॥ अरिष्टनेमिपृतनाजं
 माशुंस्वस्तयेतार्क्ष्यमिहाहुवेम ॥ इंद्रस्येवरातिमाजोहुवानाः स्वस्तयेनावमिवाह्वेम ॥ उर्वीनपृथ्वी
 बहुल्लेगभीरेमावामेतौमापेतौरिपाम ॥ सद्यश्चिद्यः शवसापंचकृष्टीः सूर्येऽइवज्योतिपापस्तनान ॥
 सहस्रसाः शतसाऽअस्यरंद्धिनस्मावर्तयेवृवर्तिनशयी ॥ ६ ॥ महित्रीणामवोस्तुद्युक्षंमित्रस्यार्यम्णः ॥
 दुराघर्षवरुणस्य ॥ नहिर्तेषाममाचननाध्वंसुवारणेपु ॥ ईशेरिपुरघर्षसः ॥ यस्मैपुत्रासोऽअदि-
 तेः प्रजीवसेमर्त्याय ॥ ज्योतिर्यच्छत्यजं ॥ ६ ॥ तच्छंयोराष्टणीमहेगानुंयज्ञायगानुंयज्ञपतये-
 देवस्वस्तिरस्तुनः स्वस्तिमानुषेभ्यः ॥ ऊर्ध्वजिगानुमेपुजंशर्नोऽअसुद्विपदेशंचतुष्पदे ॥ नमोब्रह्म-
 णेनमोऽअस्त्वग्रेनमः पृथिव्यैनमऽओपधीभ्यः ॥ नमोवाचेनमोवाचस्पतयेनमोविष्णवेमहते
 करोमि ॥ ७ ॥ शांतापृथिवीशिवमंतरेभ्योनेदिव्यमयनोऽअस्तु ॥ शिवादिशः प्रदिशऽउद्दिशो

नऽआपोविद्युतः परिपातुसर्वतः ॥ शान्तिः ॥ ३ ॥ ८ ॥ तमर्वतं नसान्तिमरुषं नदिवः शिशुं ॥
 मर्मज्यन्ते दिवो दिवे ॥ बोधद्यन्माहर्भ्यां कुमारः साहदेव्यः ॥ अच्छानहुतऽउदरं ॥ उतत्यायं जता
 हरीकुमारात्साहदेव्यात् ॥ प्रयतासद्यऽआददे ॥ एषवीदेवावश्विनाकुमारः साहदेव्यः ॥ दीर्घा
 युरस्तुसोमकः ॥ तंयुवंदेवावश्विनाकुमारंसाहदेव्यं ॥ दीर्घायुंपरुणोत्तन ॥ १ ॥ सहस्राक्षेणशत० ॥
 सर्वस्यास्यैसर्वस्यजित्यैसर्वमेवतेनामोतिसर्वजयति ॥ श्रीर्वचस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवंमा
 नमह्वीयेते ॥ धान्यधनंपशुंवहुपुत्रलाभंशतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ १० ॥ इति शान्तिपाठः ॥
 अथ प्रातःसंध्यामंत्राः ॥ आपोहिष्ठास्योभुवस्तानऽऊर्जेदयातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥ योवः
 शिवर्तमोरसस्तस्यमाजयतेह्रनः ॥ उशतीरिवभारः ॥ तस्माअरंगमामवाधिस्यक्षयायजिन्वथ ॥
 आपोजनयथाचनः ॥ शनोदेवीरुभिर्द्युऽआपोभवंतुपीतये ॥ शंयोरुभिस्त्वंतुनः ॥ ईशानावा
 यीणांक्षयंतीश्वर्यणीनां ॥ अपोयांचामिभेपुजं ॥ अप्सुमेसोमोऽअबवीदंतर्विश्वांनिभेषुजा ॥

अग्निचविश्वशंभुं ॥ आपःपृणीतमेवजंवरुथन्वेहमं ॥ उग्रोक्चसूर्यदृशे ॥ इदमापःप्रवहत्
 यत्किंचदुरितंमयि ॥ यद्वाहममिदुद्रोहयदशिगुतानृतं ॥ आपोऽअद्यान्वचारिपंरसेनसमंगस्महि ॥
 पर्यस्वानग्रऽआगहितंमांसंमृजुवर्चसा ॥ सखुपीस्तदपसोदिवानक्तंचसखुपीः ॥ वरेण्यक्रनूरुह
 मादेवीरवसेह्वने ॥ १ ॥ प्रातर्देवीमर्दिर्तेजोहवीमिमुष्यर्दिनउदैतासूर्यस्य ॥ रायेभिन्नावरुणास
 र्वतालेल्लोकायुतनयायशंयोः ॥ उतायातंसंगवेप्रातरह्णैमुष्यर्दिनउदैतासूर्यस्य ॥ दिवानक्तमव
 साशंतमेननेदानींपीतिरुश्विनातंतान ॥ मोष्व१द्यदुर्दृणावान्सायंकंदारेऽअस्मत् ॥ अश्रीरइवजा
 मता ॥ २ ॥ मित्रोजनान्यातयतिब्रुवाणोमित्रोदाधारपृथिवीमुतद्यां ॥ मित्रःकृद्दीर्गनिमिषाभि
 र्वहेमित्रायह्वयंवृतवज्रुहोत ॥ प्रसार्मित्रमर्नोऽअस्तुप्रथस्वान्यस्तेऽआदित्यशिक्षंतिवृतेन ॥ नह
 न्यतेनजीयतेत्वोत्तेनैनुमहोऽअश्रोत्यंतितोनदूरात् ॥ अनमीवासइळ्यामदंतोमितंज्ञावोर्वारिमुन्ना
 पृथिव्याः ॥ आदित्यस्यव्रतमुपक्षियंतोवयंमित्रस्यसुमतौस्याम ॥ अयंमित्रो नमस्यःसुशेवोराजा

सुक्षत्रोऽअजनिष्ठेधाः ॥ तस्यवयसुंमतोयज्ञियस्यापिमद्रेसौमनसेस्याम ॥ महौऽआदित्योनम
 सोपसद्योयानयज्जनोगुणतेसुशेवः ॥ तस्मांतुतपन्यतमायुजुष्टमशौमित्रायहविराजुहोत ॥ १ ॥
 मित्रस्यचर्षणीधृतोवोदेवस्यसानसि ॥ द्युमंत्रचित्रश्रवस्तमं ॥ अभियोमहिनादिवमित्रोबभूवसप्र
 थाः ॥ अभिश्रवोमिःपृथिवी ॥ मित्रायपंचयेमिरेजनाऽअमिष्टिशवसे ॥ सदेवान्विशोन्वि
 मर्ति ॥ मित्रोदेवेष्वायुषुजनायवृक्तवर्हिषे ॥ इषडुष्टव्रताऽअकः॥२॥ तद्वोदिवोदुहितरोविष्मातीरुप
 नुवउषसोयुज्ञकेतुः॥ वयस्यामयशसोजनेषुतद्यौश्रधत्तांपृथिवीचदेवी॥३॥ अथ माध्याह्नसंध्या
 मंत्रः॥ आपःपुनंतुपृथिवीपृथिवीपूतापुनातुमां ॥ पुनंतुब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपुनापुनातुमां ॥ यदुच्छिष्टं
 ममोज्यंयद्वादुश्चरितंममं ॥ सर्वपुनातुमामापोसनांचप्रतिग्रहस्वाहा॥१॥ अथ सायंसंध्यामंत्राः॥
 यच्चिद्वितेविशोयथाग्नेदेववरुणव्रतं ॥ मिनीमसिद्यविद्यवि ॥ मानोवुधायहृतनर्वेजिहीकानस्यरीरयः॥
 मातृणानस्यमन्यवे ॥ विमृळीकायतेमनोरथीरश्वंनसंदितं ॥ गीर्भिरुणसीमहि ॥ पराहिमेविमन्यवः

पततिवस्यइष्टये ॥ वयोनर्वसतीरुपं ॥ कदाक्षेत्रश्रियंनरमावरुणकरामहे॥मूलीकायोरुचक्षसं ॥१॥
 तदित्समानमाशातेवैतानप्रयुच्छतः ॥ धृतवतायदाशुपे ॥ वेदाद्योवीनांपदमंतरिक्षेणपततां ॥
 वेदनावःसमुद्रियः ॥ वेदमासोधृतव्रतोद्वादशप्रजावतः ॥ वेदायलंप्रजायते ॥ वेदवार्तस्यवर्तनिमुरो
 कृष्वस्यबृहत् ॥ वेदायेअध्यासते ॥ निपसादधृतव्रतोवरुणःप्रस्त्याइस्वा ॥ साम्राज्यायसुकृतुः ॥२॥
 ॥ इति सायंसंध्यामंत्राः ॥ अथस्वाध्यायमंत्राः ॥ ॐअग्निमीळे ॥ अग्निःपूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो
 नूतनैरुत ॥ सदेवाँऽऽह्वंक्षति ॥ अग्निराग्नियमेश्रवत्पोपमेवदिवेदिवे ॥ यशसंवीरवत्तमं ॥ अग्नेयंयज्ञ
 मध्वरंविश्वतःपरिमूरसि ॥ सइद्वेषुगच्छति ॥ अग्निर्होताकविकृतुःसत्याश्चित्रश्रवस्तमः ॥ देवोदेवे
 मिरागेमत् ॥ १ ॥ यदंगदाशुपेत्वमग्नेमद्रंकरिष्यसि ॥ तवेत्तत्सत्यमंगिरः ॥ उपत्वाग्नेदिवेदिवेदोपा
 वस्तार्धियावयं ॥ नमोभरंतऽऽर्मसि ॥ राजैतमध्वराणांगोपामृतस्यदीदिविं ॥ वर्धमानंस्वेदमे ॥ सनः
 पितेवसूनवेभ्येसुपायनोभव ॥ सचस्वानःस्वस्तये ॥ २ ॥ वायवायाहिदशतिमेसोमाअरुक्ताः ॥ ते

षांपाहिश्रुधीह्वं ॥ वायंउक्थेभिर्जरतेत्वामच्छांजरितारः ॥ सुतसोमाऽअहर्विदः ॥ वायोतवंपृच्वती
 धेनोजिगतिदाशुषे ॥ उरुचीसोमपीतये ॥ इंद्रवायूऽइमेसुताउपप्रयोभिरागतं ॥ इंद्रवोवामुशंतिहि ॥
 वायुर्विद्रश्चचेतथःसुतानांवाजिनीवसू ॥ तावायातुभुपद्रवत् ॥ ३ ॥ वायुर्विद्रश्चसुन्वतआयांतमुप
 निष्कृतं ॥ मर्द्धिर्व१त्याधियानरा ॥ मित्रंहुवेपुतदंसंवरुणंचरिशादसं ॥ धियधूतार्चोसाधैता ॥ कृते
 नमित्रावरुणाहताहृताहृतस्पृशा ॥ कर्तुंवृद्धंतमाशाथे ॥ कवीनोमित्रावरुणानुविजाताऽरुतक्षयां ॥
 दक्षंदधातेऽअपसं ॥ ४ ॥ अश्विनायजर्षीरिपोद्रवत्पाणीशुभस्पती ॥ पुरुमुजाचनस्यतं ॥ अ-
 श्विनापुरुंदंससानराशवीरयाधिया ॥ धिष्यावनंतंगिरः ॥ दत्तायुवाकवःसुतानासत्यावृक्तवर्हिषः ॥
 आयातंरुद्रवर्तनी ॥ इंद्रायाहिचित्रभानोसुताऽइमेत्वायवः ॥ अण्वीभिस्तनोपतासः ॥ इंद्रायाहि
 धियेषितोविप्रजूतःसुतावतः ॥ उपब्रह्माणिवाघतः ॥ इंद्रायाहितूतुजानऽउपब्रह्माणिहरिवः ॥ सुते
 दधिष्वनश्ननः ॥ ५ ॥ ओमांसश्चर्षणीघृतोविश्वेदेवासऽआगत ॥ द्वाश्वंसौद्राशुषःसुतं ॥

विश्वेदेवासोऽअसुरः सुतमार्गततर्णयः ॥ उखाऽईवस्वसंराणि ॥ विश्वेदेवासोऽअस्त्रिधएहिमायसोऽ
 अद्भुहः ॥ मेधं जुपंतवह्नयः ॥ पावकानः सरस्वतीवाजेभिर्वीजिनीवती ॥ यज्ञवंष्टुधियावसुः ॥
 चोदयित्रीसूनुतानांचेततीसुमतीनां ॥ यज्ञंधिसरस्वती ॥ महोऽअर्णः सरस्वती प्रचेतयतिकेतुनां ॥
 धियोविश्वाविराजति ॥ ६ ॥ सुखपकृन्तुमृतयेमुदधामिवगोदुहं ॥ जुहुमसिद्यविद्यवि ॥ उपनः
 सवनागहिसोमस्यसोमपाः पिब ॥ गोदाऽइद्रेवतोमदः ॥ अथातिऽअंतमानां विद्यामसुमतीनां ॥
 मानोऽअतिरव्यऽआगहि ॥ परेहिवियमस्तृतमिंद्रपृच्छाविपश्चितं ॥ यस्तेसखिभ्यऽआवरं ॥ उत
 ब्रुंवतुनोनिदोनिरन्यतश्चिदात ॥ दधानाऽइंद्रइदुवं ॥ ७ ॥ उतनःसुभगौअरिर्वीचेयुर्दस्मकृष्टयः ॥
 स्यामेदिंद्रस्यशर्मणि ॥ एमाशुमाशैवसरयज्ञाश्रियंनुमादनं ॥ पतयन्मंदयत्सखं ॥ अस्यपीत्वाशतक
 तोषुनोवृत्राणामभवः ॥ प्रावोवाजेपुत्राजिनं ॥ तंत्वावाजेपुत्राजिनंवाजयामः शतकतो ॥ धनाना
 मिंद्रसातये ॥ योरायो ३ वनिर्महान्सुपारः सुन्वतःसखा ॥ तस्माऽइंद्रायागायत ॥ ८ ॥ आत्वेता

निर्णीतैर्द्रुमभिप्रर्णायत ॥ सर्वायः स्तोमवाहसः ॥ पुरुतमपुरुणाभीशान्वार्याणां ॥ इन्द्रसोमेसचा
सुते ॥ सर्धानोयोगआभूत्सरायेसपुरंध्यां ॥ गमद्वाजेभिरासनः ॥ यस्यसंस्थेनवृणवतेहरीसमतु
शत्रवः ॥ तस्माऽइंद्रायगायत ॥ सुतपात्रेसुताडमेशुचंधोयंतिवीतये ॥ सोमासोदध्याशिरैः ॥ १ ॥
त्वंसुतस्यपीतयेसद्योवृद्धोऽअजायथाः ॥ इंद्रज्यैष्ठ्यायंसुकतो ॥ आत्वाविशंत्वाशवःसोमासइंद्र
गिवणः ॥ शतैस्तुप्रचेतसे ॥ त्वांस्तोमाऽअवीवृधन्त्वामुक्थाशतकतो ॥ त्वावर्धतुनोगिरः ॥ अक्षितोतिः
सनेदिमंवाजाभिद्रःसहस्रिणं ॥ यस्मिन्विश्वानिपैस्या ॥ मानोमर्ताऽअभिद्रुहन्तूनानाभिद्रगिवणः ॥
इशानोयवयावधं ॥ १० ॥ युंजंतिब्रह्मरूपचरंतं परितस्थुपः ॥ रोचतेरोचनोदिवि ॥ युंजंत्यस्य
काम्याहरीविषक्षसारथे ॥ शोणाधृणून्नुवाहसा ॥ केतुं कृण्व० कक् ॥ आदहस्वधामनुपुनर्गभत्व
मेरि ॥ दर्शनानामयद्विथं ॥ वीळुचिदारुजलुभिर्गुहाचिदिद्रवाक्षिभिः ॥ अविदडुल्लियाऽअनु ॥
॥ ११ ॥ देवयंतोयथामतिमच्छाविददंसुगिरः ॥ महामनूपतश्रुतं ॥ इंद्रेणसंहिदक्षसेसंजग्मानोअ

विभ्युपा ॥ मंदसमानवर्चसा ॥ अनुवद्यैरमिद्युभिर्मखः सहस्वदर्चति ॥ गुणैरिंद्रस्यैकाम्यैः ॥ अतः
परिज्मन्नागहिदिवोवारिचनादधि ॥ समस्मिन्नंजनेगिरः ॥ इतोवासातिमीमहेदिवोवापाधिवादधि ॥
इंद्रमहेवारजसः ॥ १२ ॥ इंद्रमिह्नाथिनोबृहदिंद्रमर्कभिरुकिणः ॥ इंद्रवाणीरनूपत ॥ इंद्रइद्धयोः
सचासंमिच्छः आर्वचोयुजां ॥ इंद्रोवज्रीर्हिरण्ययः ॥ इंद्रोदीर्घायचक्षसः आसूरीरोह्यद्विवि ॥
विगासिरादिमैरयत् ॥ इंद्रवाजेपुनोवसहस्रप्रधनेपुत्र ॥ उग्रउग्राभिरूतिभिः ॥ इंद्रवयंमहाधनइंद्रमर्क
हवामहे ॥ युजैष्टुत्रेपुवज्जिणं ॥ १३ ॥ सनोहृपन्नमुचरुसत्रादावन्नपाद्यधि ॥ अस्मभ्यमप्रति
ष्कृतः ॥ तुंजेतुंजेयउत्तरिस्तोमाइंद्रस्यवज्जिणः ॥ नविधेअस्यसुष्टुतिं ॥ हृपायुथेववंसगः कृष्टीरि
युर्योजसा ॥ ईशानोऽअप्रतिष्कृतः ॥ यत्कंश्चर्पणीनांवसूनामिरज्यति ॥ इंद्रः पंचक्षितीनां ॥
इंद्रवोविश्वतस्पारिह्वामहेजनेभ्यः ॥ अस्माकमस्तुकेवलः ॥ १४ ॥ इंद्रसानुसिरधि सजित्वानस
दासहं ॥ वर्षिष्ठमृतयेभ्यः ॥ नियेनमुष्टिहृत्ययानिष्टत्रा रुणधामहे ॥ त्वोतासोन्यर्वता ॥ इंद्रत्वोतास

५ आवधं वज्रघृणाददीमहि ॥ जयेमसंयुधिस्पृधः ॥ वयं शूरेभिरस्तृभिरिद्वत्तयायुजावयम् ॥ सासह्याम
 पृतन्यतः ॥ महौदं द्रः परश्चनुमहित्वमस्तुवज्जिणे ॥ द्यौर्नप्रथिनाशवः ॥ १५ ॥ समोहेवायऽआशं
 तनरं स्तोकास्यसर्गितौ ॥ विप्रसोवाधियायवः ॥ यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्रइवपिन्वते ॥ उर्वीरापोनं
 काकुदः ॥ एवाह्यस्यसूनुताविरुषीगोमतीमही ॥ पक्वाशाखानदाशुपे ॥ एवाहितेविभूतयजुतयं इंद्रमा
 वते ॥ सद्यश्चित्संतिदाशुपे ॥ एवाह्यस्यकाम्यास्नोमउक्थंचशंस्या ॥ इंद्रायसोमपीतये ॥ १६ ॥ इंद्रेहिम
 त्स्यंधसोविश्वेभिः सोमपर्वभिः ॥ महौऽअभिष्टिरोजसौ ॥ एमैनं सजतासु तेमंदिमिद्रायमंदिने ॥ चक्रिंवि
 श्वानिचक्रये ॥ मत्स्वांस्तुशिप्रमंदिभिः स्नोमैभिर्विश्वचर्षणे ॥ सचैषुसवनेष्व ॥ असृग्रमिद्रतेगिरः प्र
 तित्वामुदं हासत ॥ अजौषाहृषमंपतिं ॥ संचोदयचित्रमर्वाग्रार्थं इंद्रवैरण्यं ॥ असदिनैविभु
 प्रभु ॥ १७ ॥ अस्मान्स्तुतत्रचोदयेद्रायेरमंस्वतः ॥ तुर्विद्युन्मयशंस्वतः ॥ संगोमदिंद्रवाजवद
 स्मेपथुश्रवोबृहत् ॥ विश्वायुर्धैह्यक्षितं ॥ अस्मेर्धैहिश्रवोबृहद्द्युमं सहस्रसातमं ॥ इंद्रताएथिनी

रिषः ॥ वसोरिन्द्रवसुपतिर्गोभिर्गृणंतं ऋमिथं ॥ होमंगंतरमतये ॥ सुतेसुतेन्योक्तेष्वबृहद्वहत्त
दुरिः ॥ इंद्रायशूषमर्चति ॥ १८ ॥ गार्ग्यं तित्वागायत्रिणोर्चत्येकमर्कणः ॥ ब्रह्माणस्त्वाशतक्र
तऽउदृशमिवयेमिरे ॥ यत्सानोः सानुमारुहद्ब्रूयस्पष्टकल्पी ॥ तर्दिद्रोऽअर्थचेतनियूथेनष्टृष्णिरे
जति ॥ युक्ष्वाहिकेशिनाहरीद्वर्पणाकक्ष्यप्रा ॥ अथानइंद्रसोमपागिरामुपश्रुतिचर ॥ इन्द्रिस्तो
मोऽअग्निस्वराभिर्गुणीह्यारुव ॥ ब्रह्मचनोवसोसर्चेद्रयज्ञंचवर्धय ॥ उक्थमिंद्रायशंस्यंवर्धनंपुरु
निःषिथे ॥ शक्रोयथासुतेषुणोरारणत्सख्येषुच ॥ तमित्संखित्वईमहेतरयेतंसुवीर्ये ॥ सशक्र
उतनः शक्रदिद्रोवसुद्रयमानः ॥ १९ ॥ सुविद्यतंसुनिरजमिंद्रत्वादातमिद्यशः ॥ गवाम
पत्रजंष्टधिकृणुष्वरार्थोऽअद्रिवः ॥ नृहित्वारोदसीउभेऽर्कयायमाणमिन्वतः ॥ जेपःस्वर्वतीरुपः
संगाअस्मभ्यंधूनुहि ॥ आश्रुत्कर्णश्रुधीहवंनूचिदधिष्वमेगिरः ॥ इंद्रस्तोममिमममकृष्वायुजश्चि
दंतरं ॥ विद्मार्हित्वाद्यर्पन्तमंवाजेषुहवनश्रुतं ॥ वर्षन्तमस्यहूहऽऊर्तिसंहस्रसातंमां ॥ आतूनइ

द्रकौशिकमंदसानःसूतपिव ॥ नव्यमायुःप्रसूतिरकृधीसंहस्रसामृषिं ॥ परित्वागिर्वणोगिरि
 ऽडमाभवंतुविश्वतः ॥ बृद्धायुमनुवृद्धयोजुष्टाभवंतुजुष्टयः ॥ २० ॥ इंद्रविश्वाऽअवीवृधन्तसमुद्र
 व्यचसंगिरः ॥ रथीतमरथीनांवाजानांसपतिपतिं ॥ सख्येतइंद्रवाजिनोमाभेमशवसस्पते ॥
 त्वामभिप्रणोनोमेजेतांरुमपराजितं ॥ पूर्वीरिंद्रस्यरातयोनविदंस्यंत्यूतयः ॥ यदीवार्जस्यगोम
 तःस्तोतृभ्योमंहतेमधंपुराभिंदुर्युवाकविरमितौजाऽअजायत ॥ इंद्रोविश्वस्यकर्मणोधृतविज्री
 पुरुष्टुतः ॥ त्वंवृत्तस्यगोमतोपांवरद्विवोविलं ॥ त्वादेवाऽअर्विभ्युपस्तुज्यमानासऽआविपुः ॥
 तवाहंशूरानिभिःप्रत्यायंसिंधुमावदन् ॥ उपातिष्ठंतगिर्वणोविदुष्टेतस्यकार्वः ॥ मायाभिरि
 द्रमायिनंत्वंशुष्णमवातिरः ॥ विदुष्टेतस्यमेधिरास्तेपांश्रवांस्युत्तिर ॥ इंद्रमीशानमोजसाभि
 स्तोमाऽअनूपत ॥ सहस्रंयस्यरातयऽउतवासंतिभूयसीः ॥ २१ ॥ ॥ इतिस्वाध्यायमंत्राः ॥
 ॥ अथ गणपतिसूक्तं ॥ आतूनंइंद्रक्षुमंतंचित्रग्रामंसंगभाय ॥ महाहस्तीदक्षिणेन ॥ विद्याहित्वानु

विक्रमैतुविदेणानुवीमघं ॥ तुविमान्नमवोभिः ॥ नदित्वाशूरदेवानमतामोदित्सलं ॥ श्रीमनगांवार
 यंते ॥ एतोन्विदंस्तवामेशानं वस्वः स्वराजं ॥ नराधंसामधिपन्नः ॥ प्रस्तोपद्रुपंगासिपच्छवत्सामगी
 यमानं ॥ अमिराधंसाजुगुत् ॥ १ ॥ आनोमरुदक्षिणेनामिसव्येनप्रमृश ॥ इन्द्रमानोवसोर्निर्मा
 क् ॥ उपकमस्वामरधृषताधृष्णोजनानां ॥ अदाशूधरस्यवेदः ॥ इन्द्रयऽउनुतेऽअस्तिवाजोविभ्रेभिः
 सनित्वः ॥ अस्माभिः सुतंसनुदि ॥ सद्योजुवंस्तेवाजाऽअस्मभ्यं विश्वश्वं द्राः ॥ वैशैश्चमक्षूजंस्ते ॥ २ ॥
 ॥ अथपुरुषसूक्तं ॥ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ समूर्ध्वं विश्वतोदृत्वात्यतिष्ठद्दशंगुलं ॥
 पुरुषं वेदसर्वयद्भुतं यच्च भव्यं ॥ उतामृतं त्वस्येशानो यदन्नं नातिरोहति ॥ एतावानस्य महिमातो ज्यायां
 श्वपुरुषः ॥ पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहार्धमवत्पुनः ॥
 ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशानशनेऽअग्नि ॥ तस्माद्विराळजायत विराजोऽअधिपूरुषः ॥ सजानो
 ऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमतो पुरः ॥ १ ॥ यत्पुरुषेण हविषा देवायज्ञमतन्वत ॥ वसंतोऽअस्यासीदा

उ॒थ॒ग्री॒ष्म॒इ॒ष्मः॒श॒र॒द्ध॒विः॑ ॥ तं॒य॒ज्ञं॒व॒र्हि॒षि॒प्रौक्ष॒न्पु॒रु॒षं॒जा॒त॒म॒ग्र॒तः॑ ॥ ते॒न॒दे॒वाऽअ॒य॒जं॒त॒सा॒ध्याऽऽ॒कृ॒ष॒य॒
 श्र॒ये ॥ त॒स्माद्य॒ज्ञा॒त्सर्व॑हु॒तः॒संभू॑तं पृ॒दाज॑यं ॥ प॒शून्तां॒श्च॒कै॒वाय॒व्याना॑रु॒णान्या॒म्याश्र॑ये ॥ त॒स्मा॒
 द्य॒ज्ञा॒त्सर्व॑हु॒तऽऽ॒कृ॒चः॒सा॒मा॒नि॒ज॒ज्ञिरे॑ ॥ छंदांसि॒ज॒ज्ञिरे॑त॒स्माद्य॒जु॒स्त॒स्माद॑जायत ॥ त॒स्माद॑श्वाऽअ॒जा॒
 यं॒त॒ये॒के॒चो॒भ॒याद॑तः ॥ गा॒वो॒ह॒ज॒ज्ञिरे॑त॒स्मात्त॒स्माज्जा॑ताऽअ॒जा॒व॒यः॑ ॥ २ ॥ य॒त्पु॒रु॒षं॒व॒य॒द॒धुः॒क॒ति॒धा॒न्य॒क॒
 ल॒प॒य॒न् ॥ मु॒खं॒कि॒म॒स्य॒कौ॒बा॒हू॒का॒कू॒रू॒पा॒दा॒उ॒च्ये॒ते ॥ ब्रा॒ह्म॒णो॒स्य॒मु॒खं॒मा॒सी॒द्वा॒हू॒रा॒ज॒न्यः॒कृतः॑ ॥ ऊ॒रू॒त॒द॒
 स्य॒य॒द्वै॒श्वर्यः॒प॒द्भ्यां॒शू॒द्रोऽअ॑जायत ॥ च॒न्द्र॒मा॒म॒न॒सो॒जा॒त॒श्चक्षोः॒सूर्यो॑ऽअ॒जा॒य॒त ॥ मु॒खादि॑न्द्रश्चा॒ग्निश्च॒प्रा॒
 णा॒द्वायु॑र॒जाय॑ते ॥ ना॒भ्याऽअ॒सी॒दं॒तरि॑क्षं॒शी॒ष्णो॒द्यौः॒स॒म॒व॒र्त॒त ॥ प॒द्भ्यां॒भूमि॑दि॒शः॒श्रो॒त्रा॒न्त॒थालो॑काऽ
 अ॒क॒ल॒प॒य॒न् ॥ स॒प्ता॒स्या॒स॒न्प॒रि॒ध॒य॒स्त्रिः॒स॒प्त॒स॒मि॒धः॒कृ॒ताः ॥ दे॒वा॒य॒द्य॒ज्ञं॒तं॒न्वा॒नाऽअ॒व॒ध॒न्पु॒रु॒षं॒प॒शुं ॥ य॒ज्ञेन॑
 य॒ज्ञम॑य॒जं॒ते॒दे॒वा॒स्ता॒नि॒ध॒र्मा॒णि॒प्र॒थ॒मा॒न्या॑सन् ॥ ते॒ह॒ना॒कं॒म॒हि॒मा॒नः॒स॒च॒न्त॒य॒न्त्र॒पूर्व॑सा॒ध्याः॒संति॑दे॒वाः ॥ ३ ॥
 ॥ अथ॑ प॒व॒मा॒न॒सू॒क्तं ॥ ॐ स्वा॑दि॒ष्ट॒याम॑दि॒ष्ट॒याप॑र्व॒स्वसो॑म॒धार॑या ॥ इ॒न्द्रा॑य॒पा॒ते॒वे॒सु॒तः ॥ र॒क्षो॒द्वा

विश्वचर्पणिरुमियो निमयोदितं ॥ दुर्णामधस्थमासदत् ॥ वरिवोधातमोमत्रमंदिष्ठोवृत्रहन्तमः ॥
 पर्पिराधोभूयोनां ॥ अभ्यर्च्यमहानां देवानां वीनिमंश्रसा ॥ अभिवाजं मुनश्रवः ॥ त्वामच्छाचराम
 सितदिदर्थदिवोदिवे ॥ इंदोत्वेनऽआशसः ॥ १ ॥ पुनाति ते परितु संमूर्यस्य दुहिता ॥ वोरणश
 श्वतातना ॥ तमीमणवीः समूर्यऽआगृभ्णं तियोपणोदशं ॥ स्वसारः पार्थदिवि ॥ तमीहन्वत्युग्रुवोधम
 तिवाकुरंदतिं ॥ त्रिवातुवारणं मधु ॥ अमीऽममद्वयाउतश्रीणं तिधेनवः शिशुं ॥ सोमभिद्रां यपातवे ॥
 अस्येदिद्रोमदेष्वाविश्वानृत्राणि जिघ्रते ॥ शूरोमवाचं मंहते ॥ २ ॥ पर्वस्वेदेव वीरति पवित्रं सोमं
 ह्या ॥ इंद्रं भिद्रोहपाविश ॥ आवच्यस्व महिप्सरोहृन् दोद्युन्नवत्तमः ॥ आयोनिधर्णसिः सदः ॥
 अधुसतप्रियं मधुधारासुतस्येवेधसः ॥ अपोवसिष्ठसुक्रतुः ॥ महान्तं त्वामहोरन्वापो अर्पति संधवः ॥
 यद्गोभिर्वासिष्यसे ॥ समुद्रोऽअप्सु मां गेविष्टुं भोधरुणोदिवः ॥ सोमः पवित्रऽअस्म्युः ॥ ३ ॥
 अचिकददृहृपाहं रिमं हान्मित्रो न दर्शतः ॥ संसूर्येण रोचने ॥ गिरस्तदं दऽओजं साममृज्यतेऽअपु

स्युर्वः ॥ याभिर्मदायशुंमसे ॥ तंत्वामदायघृष्वयऽउलोककृत्तुमीमहे ॥ तवप्रशस्तयोमहीः ॥
 अस्मभ्यमिदंविद्रुमध्वःपवस्वधारया ॥ पर्जन्योद्वष्टिमौऽइव ॥ गोषाईदोनृषाऽअस्यश्वसावा
 जसाउत ॥ आत्मायज्ञस्यपूव्यः ॥ ४ ॥ एषदेवोऽअमर्त्यःपर्णवीरिवदीयति ॥ अभिद्रोणान्या
 सदै ॥ एषदेवोविपाकृतोतिद्वरासिधावति ॥ पवमानोऽअदाभ्यः ॥ एषदेवोविपन्युभिःपवमानऽक
 तापुभिः ॥ हरिर्वाजायमृज्यते ॥ एषविश्वोनिवार्यशूरोयन्निवसत्त्वभिः ॥ पवमानःसिषासति ॥
 एषदेवोरथर्यतिपवमानोदशस्यति ॥ आविष्कणोतिवग्वनु ॥ ५ ॥ एषविप्रैरभिष्टुतोपोदेवोवि
 गाहते ॥ दधद्रत्नोनिदाशुषे ॥ एषदिवंविधावतितिरोजासिधारया ॥ पवमानःकनिःकदत् ॥
 एषदिवंव्यासरतिरोरजांस्यस्पृतः ॥ पवमानःस्वध्वरः ॥ एषप्रत्नेनजन्मनादेवोदेवेभ्यःसुतः ॥
 हरिःपवित्रेऽअर्पति ॥ एषउस्यपुरुनृतोज्ञानोजनयन्निषः ॥ धारयापवतेसुतः ॥ ६ ॥ सना
 चसोमजोषिचपवमानमहिश्रवः ॥ अथानोवस्यसस्कधि ॥ सनाज्योतिःसनास्वर्गविश्वाचसोमसौ

भंगा ॥ अथानो० ॥ सनादक्षमृतकतुमर्पसोममृधोजहि ॥ अथानो० ॥ पर्वातारःपुनीतन
 सोममिद्रायपातवे ॥ अथा० ॥ त्वंसूर्यनऽआभजतवक्रत्वातवोतिभिः ॥ अथानो० ॥ ७ ॥
 तवक्रत्वातवोतिभिर्ज्योत्स्वपश्येयमसूर्य ॥ अथा० ॥ अभ्यर्पस्वायुसोमद्विवर्हसूर्यि ॥ अथा० ॥
 अभ्यर्षणं पच्युतोर्यिसमत्सुसांसहिः ॥ अथा० ॥ त्वांयज्ञैरवीचधन्पवंमानविधर्मणि ॥ अथा० ॥
 र्येनश्चित्रमश्विनमिदौविश्वायुमाभर ॥ अथा० ॥ समिद्धोविश्वतस्पतिःपवंमानोविराजति ॥
 प्रीणन्वृषाकर्निकदत् ॥ तनूनपात्पवंमानःशृगेशिशानोऽअर्पति॥अंतरिक्षेणरारजत् ॥ ईळेन्यःपर्वमा
 नोर्यिविराजतिद्युमान् ॥ मयोर्धाराभिंराजसा ॥ बर्हिःप्राचीनमोजसापर्वमानःस्तुणन्धरिः ॥ देवे
 षुदेवईयने ॥ उदातैर्जिह्वेतेबृहद्द्वारेदेवीर्हिरण्ययीः ॥ १ ॥ सुशित्पेवृहतीम्
 ह्रीपर्वमानोवृषण्यति॥ नक्तोषासानदर्शते ॥ उमादेवानूचक्षसाहोतारौदेव्याहुवे॥ पर्वमानुद्द्रोहषां ॥
 भारतीपर्वमानस्यसरस्वतीर्लामही ॥ इमनैर्युज्ञमार्गमन्तिस्तोदेवीःसुपेशसः ॥ त्वष्टारमयुजांगोपां

पुरोयावानमाहुवे ॥ इंदुरिंद्रोद्यष्टाहरिः पर्वमानः प्रजापतिः ॥ वनस्पतिं पवमानमध्वासमं गिधधारया ॥
 सहस्रं वल्गुं हरितं भ्राजमानं हिरण्ययं ॥ विश्वे देवाः स्वाहा कृतिं पर्वमानस्यागतं ॥ वायुर्बृहस्पतिः स्रु-
 योश्चिरिंद्रः स्रजोर्षसः ॥ १० ॥ मंद्रयांसो मधारयाद्यष्टा पवस्व देवयुः ॥ अव्योवोरैष्वस्मयुः ॥
 अमित्यं मद्यं मदमिदं विद्वद्भर्तिक्षर ॥ अभिवोजिनाऽअर्बतः ॥ अभित्यं पूठ्यं मदं सुवानोऽअर्ष-
 पवित्राऽआ ॥ अभिवाजं मुतश्रवः ॥ अनुद्रप्सास इंदवऽआपो न प्रवतासरन् ॥ पुनाना इंद्रमाशत ॥
 यमत्यं मि ववाजिनं मृजंति योषणो दश ॥ वने क्रीळंतमत्यं विं ॥ ११ ॥ तंगोभिर्दृपं रसं मदाय देववी-
 तये ॥ सुतं भराय संसृज ॥ देवो देवाय धारयेद्राय पवते सुतः ॥ पयो यदस्य पीपयत् ॥ आत्मा यज्ञस्य
 रंभ्या सुष्वाणः पवते सुतः ॥ प्रत्नं निपाति काव्यं ॥ एवा पुनानऽइंद्रयुर्मदं मदिष्ठवीतये ॥ गुहो चिद्विधिवे-
 गिरः ॥ १२ ॥ असूयमिंदवः पथा धर्मं नृतस्य सुश्रियः ॥ विद्वानाऽअस्य योजनं ॥ प्रधारा मध्वो
 ऽअग्रियो महीरपो विगाहते ॥ हविर्हविः पूर्वधः ॥ प्रयुजो वाचोऽअग्रियो दृषावचक्रद्वेन ॥ सद्भ्या

भिसत्योअध्वरः ॥ परियत्काव्याकविर्नृम्णावसानोऽअर्षति ॥ स्वर्वाजीसिपासति ॥ पर्वमानो
 ऽअभिसृष्टोविशोराजेवसीदति ॥ यदीमृष्वन्तिवेधसः ॥ १३ ॥ अव्योवारेपरिप्रियोहृर्विनेषुसी
 दति ॥ रेभोर्वनुष्यतेमती ॥ सवायुर्मिद्रमश्विनासाकमेदनगच्छति ॥ रणायोऽअस्यधर्मभिः ॥
 आमित्रावरुणाभगंमध्वःपवंतऊर्मयः ॥ विदानाऽअस्यशक्वर्मभिः ॥ अस्मभ्यरोदसीरयिमध्वोवा
 जंस्यसातये ॥ श्रवोवसूनिंसजितं ॥ १४ ॥ एतेसोमाऽअभिप्रियर्मिद्रस्यकाममक्षरन् ॥ वर्धतो
 ऽअस्यवीर्यं ॥ पुनानासंश्वमूषदोगच्छंतोवायुमश्विना ॥ तेनोधांतुसुवीर्यं ॥ इंद्रस्यसोमराथसेपुना
 नोहार्दिचोदय ॥ कृतस्ययोनिसदं ॥ मृजंतित्वादशक्षिपोहिन्वंतिससधीतयः ॥ अनुविभ्रा
 ऽअमादिषुः ॥ देवेभ्यस्त्वामदायकंसृजानमर्तिमेभ्यः ॥ संगोभिर्वासियामसि ॥ १५ ॥ पुनानःकलशे
 ष्वावस्त्राण्यरुवोहरिः ॥ परिगव्यान्यव्यतामधोनऽआपवस्त्रनोजहिविश्वाऽअपद्धिषः ॥ इंद्रोसर्वायुमा
 विशा ॥ वृष्टिदिवःपरिस्रवद्युम्रंष्टयिव्याऽअधि ॥ सहोनःसोमपुत्सुधाः ॥ नृचक्षंसंत्वावयमिद्रपीतंस्वविदं ॥

म॒हती॒माहि॒प्रजा॒मिषं ॥ १६ ॥ परि॒प्रिया॒दिवः॒क॒विर्व॒यांसि॒न॒स्योर्हि॒तः ॥ सु॒वानो॒या॒तिक॒विक्र॑तुः ॥
 प्र॒क्षया॒य॒प॒न्य॒से॒जना॒य॒जु॒धोऽअ॒द्रुह॑ ॥ वी॒त्य॒र्ष॒च॒नि॒ष्टया ॥ स॒स॒नु॒र्मा॒त॒रा॒शु॒चि॒र्जा॒तो॒जा॒तेऽअ॒रोच॑
 यत् ॥ म॒हान्म॒होऽ॒कृ॒ता॒व॒धा ॥ स॒स॒स॒धी॒ति॒भि॒हि॒तो॒न॒द्योऽअ॒जि॒न्व॒द॒द्रुहः॑ ॥ या॒ए॒क॒मा॒क्षि॒वा॒हृ॒धुः ॥
 ताऽअ॒भि॒स॒न्त॒म॒स्तृ॒तं॒म॒हे॒यु॒वा॒न॒मा॒द॒धुः ॥ इ॒न्द्रो॒र्मि॒द्र॒त॒व॒व्र॒ते ॥ १७ ॥ अ॒भि॒व॒ह्नि॒र॒मे॒त्यः॒स॒स॒प॒श्य॒ति॒वा॒व॒
 हिः ॥ कि॒र्वि॒र्दे॒वी॒र॒न्त॒र्प॒यत् ॥ अ॒वा॒क॒ल्पे॒षु॒नः॒पु॒म॒स्त॒र्मा॒सि॒सो॒म॒यो॒ढ्या ॥ ता॒नि॒पु॒ना॒न॒जं॒घनः॑ ॥ नू॒न॒व॒य॒
 से॒न॒वी॒य॒से॒सू॒क्ता॒य॒सा॒ध॒या॒प॒थः ॥ प्र॒त्न॒व॒द्रो॒च॒या॒रु॒चः ॥ प॒र्व॒मा॒न॒म॒हि॒श्र॒वो॒गा॒म॒श्व॑रा॒सि॒वी॒र॒व॒त् ॥ स॒ना॒
 मे॒धा॒स॒ना॒स्वः ॥ १८ ॥ प्र॒स्वा॒ना॒सो॒र॒थाऽइ॒वा॒र्वी॒तो॒न॒श्र॒व॒स्य॒वः ॥ सो॒मा॒सो॒रा॒ये॒अ॒ंक्र॒मुः ॥ हि॒न्वा॒ना॒सो॒
 र॒था॒इ॒व॒द॒ध॒न्वि॒रे॒ग॒भ॑स्त्योः॥भ॒रा॑सः॒का॒रि॒णा॒मि॒व ॥ रा॒जा॒नो॒न॒प्र॒श॒स्ति॒भिः॒सो॒मा॒सो॒गो॒भि॒र॒ज॒ते ॥ य॒ज्ञो
 न॒स॒स॒धा॒तृ॒भिः ॥ परि॒सु॒वा॒ना॒स॒इ॒द॒वो॒म॒दा॒य॒ब॒र्ह॒णा॒गि॒रा ॥ सु॒ताऽअ॒र्ष॒ति॒धा॒र॒या ॥ आ॒पा॒ना॒सो॒वि॒व
 स्वं॒तो॒ज॒न॑न्तऽउ॒ष॒सो॒भ॒गं ॥ सू॒राऽअ॒ण॒व॒वि॒त॒न्व॒ते ॥ १९ ॥ अ॒प॒द्वा॒रा॒म॒ती॒नां॒प्र॒त्नाऽ॒कृ॒ण्व॑न्ति॒का॒र॒वः ॥

दृष्णोहरसऽआयवं ॥ समीचीनासंऽआसतेहोतारःससजांमयः ॥ पदमेकस्युपिप्रतः ॥ नाभानाभिं
 नऽआदेचक्षुश्चि॒त्सूर्ये॒सचा ॥ क॒वेरप॑त्यमादुहे ॥ अ॒भिप्रिया॒दिव॒स्पद॑मध्वर्युभिर्गुह्यहितं ॥ सूरः
 प॒श्यन्नि॒चक्ष॑सा ॥ २० ॥ उपा॑स्मिगायतानरःपर्वमानार्थदेवे ॥ अ॒भिदे॒वाऽइ॒यक्ष॑ते ॥ अ॒भिने॒मधु॒नाप॑
 यो॒र्थवर्वा॑णोऽअ॒शि॒श्रयुः ॥ दे॒वंदे॒वाय॑दे॒वयुः ॥ सनः॑पवस्वशंगवेशंजनायशमवति ॥ शंरा॒ज॒न्नोप॑धी
 भ्यः ॥ ब॒भ्रवे॒नुस्व॑तवसेरुणायदिविस्पृशे ॥ सोमा॑यगाथमर्चत ॥ ह॒स्त॑च्युतेभिरद्रिभिःसुतंसोमंपु
 नीतन ॥ म॒थावा॑धांवातामधु ॥ २१ ॥ नम॑सेदुपसीदतदध्वेदमिश्रीणीतन ॥ इ॒दुभि॑द्रेदधातन ॥
 अ॒भि॒त्र॒हा॒वि॒चर्षि॑णःपर्वस्वसोमशंगवे ॥ दे॒वेभ्यो॑ऽअनुकामकृत् ॥ इ॒न्द्रा॑यसोमपातवेमदायपरिषिच्य
 से ॥ म॒न॒श्चि॒न्मन॑सस्पतिः ॥ पर्व॑मानसुवीर्यरयिसोमरिरीहिनः ॥ इ॒द्वि॒द्रेण॑नोयुजा ॥ २२ ॥ सोमा
 ऽअ॒रु॒ग्रा॒र्मि॒दवः॑सुताऽकृतस्यसादने ॥ इ॒न्द्रा॑यमधुमत्तमाः ॥ अ॒भि॒वि॒प्राऽअ॒नू॒ष॒त॒गावो॑वृत्संनमातरः ॥
 इ॒न्द्र॒सोम॑स्यपीतये ॥ म॒द॒च्यु॒क्षे॒त्तिसा॒दने॒र्षि॒र्षो॒रु॒र्मा॒वि॒प॒श्चित् ॥ सोमो॑गैरीऽअधिश्चितः ॥ दि॒वो॒ना

भाविचक्षणोव्योवोरमंहीयते ॥ सोमोयःसुक्रतुःकविः ॥ यःसोमःकलशेष्वौऽअंतःपेवित्रोऽऔहितः॥
 तमिदुःपरिषस्वजे ॥ २३ ॥ प्रवाचमिदुरिष्यतिसमृद्धस्थार्धिविष्टपि ॥ जिन्वन्कोशंमधुश्रुतं ॥ नि
 त्यस्तोत्रोवनस्पतिर्धनमंतःसंबुध्वं ॥ हिन्वानोमानुषायुगा ॥ अभिप्रियादिवस्पदासोमोहि
 न्वानोऽअर्षति ॥ विप्रस्यधारयाकविः ॥ आपवमानधारयर्थिसहस्रवर्चसं ॥ अस्मेऽइंदोस्वाभुवं॥
 ॥ २४ ॥ ॥ प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥ ॥ ॐ सोमःपुनानोऽअर्षतिसहस्रधारोऽअत्यविः॥
 वायोरिंद्रस्यनिष्कृतं॥ पवंमानमवस्यवोविप्रमभिप्रगांयत॥सुष्वाणंदेववीतये॥पवंतेवाजसातयेसोमाः
 सहस्रपाजसः॥गुणानादेववीतये॥उतनोवाजसातयेपवंस्वबृहतीरिषः॥द्युमदिंदोसुवीर्य॥तेनःसहस्रिणं
 रथिपवंतामामुवीर्य॥ सुवानादेवासइंदवः॥१॥ अत्याहियानानेत्रुमिरष्टग्रंवाजसातये ॥ विवारमव्य
 माशवः ॥ वाश्राऽअर्पुर्तीदंवोभिवत्संनधेनवं ॥ दधन्विरेभस्त्योः ॥ जुष्टइंद्रायमत्सरःपवंमानक
 निक्रदत् ॥ विश्वाऽअपहिषौजहि ॥ अपघ्नतोऽअराव्णःपवंमानाःस्वर्दृशः ॥ योनाष्टतस्यसीदत

॥ २ ॥ परिप्राप्तिं धत्तुः सिद्धौ रूमावधि श्रितः ॥ कारं विभ्रत पुरुस्पृहं ॥ गिरायदी सवंधवः पंचत्रो
 ता अपस्यवः ॥ पुरिष्कण्वर्ति धर्णसि ॥ आदस्य शुष्मिणो रसे विश्वे देवाऽअमत्सत ॥ यदी गोभिर्वसा
 भोनमामृजेयुवा ॥ गाः कृण्वानो न निर्णिजं ॥ ३ ॥ अति श्रितोति रश्चता गव्या जिगात्य णव्या ॥ वसु
 मृशदिश्वानि सोमपाथिवा ॥ वसुनिय ह्यस्मयुः ॥ ४ ॥ एष धिया यात्य णव्या शूरो रथे भिराशुभिः ॥
 गच्छन्निद्रस्य निष्कृतं ॥ एष पुरु धियायते बहने देवता तये ॥ यत्तु मृतासऽआसते ॥ एष हितो विनी
 यतेनः शुभ्रावता पथा ॥ यदितुं जंति मूर्णयः ॥ एष शृंगाणि दोधुव च्छितीत्यथ्योदृषा ॥
 नृम्णा दधानऽओजसा ॥ एष रुक्मिभिरीयेत वाजीशुभ्रैर्भिराशुभिः ॥ पतिः सिधूनां भवन् ॥
 एष वसूनि पिबेद नापरुषाय यिवाऽअति ॥ अवशदेवुगच्छति ॥ एतं मृजंति मर्ज्यमुपद्रोणे णव्या यवः ॥

प्रचक्राणमहरीरिषः ॥ एतमुत्पदंशक्षिपोमूर्जतिसप्तधीतयः ॥ स्वायुधंमदिन्तमं ॥ ५ ॥ प्रतेसोता
रंऽओण्योइरसंमदायधृष्वये ॥ सर्गेनतत्त्येतेशः ॥ क्रत्वादक्षस्यरुध्यमपोवसानमंधसा ॥ गोपा
मण्वेषुसश्विम ॥ अनेसमपुदुष्टुरंसोमंपवित्रऽआसृज ॥ पुनीहोद्राद्युपातवे ॥ प्रपुनानस्यचेतसा
सोमःपुवित्रेऽअर्षति ॥ क्रत्वासुधस्थमासदत् ॥ प्रत्वानमोभिरिदंवइद्रसोमाऽअसृक्षत ॥
महेभरायकारिणः ॥ पुनानोरूपेऽअव्ययेविश्वाऽअर्षन्नाभिश्चयः ॥ शूरोनगोषुतिष्ठति ॥ द्विवो
नसानुपिप्युषीधारासुतस्यविधसः ॥ हयांपुवित्रेऽअर्षति ॥ त्वंसोमविपश्चित्तनापुनानऽआयुषु ॥
अव्योवारुविधावसि ॥ ६ ॥ प्रनिम्नेनवासिध्वोघ्नतोवृत्राणिभूर्णयः ॥ सोमाअसृग्रमाशवः ॥ अभि
सुवानासइंदवोवृष्टयःपृथिवीमिव ॥ इंद्रसोमासोऽअक्षरन् ॥ अत्यूर्मिमत्सरोमदःसोमःपुवि
त्रेऽअर्षति ॥ विघ्नबक्षोसिदेवयुः ॥ आकलशेषुधावतिपुवित्रेपरिषिच्यते ॥ उक्थैर्यज्ञेषुवर्धते ॥
अतित्रीसोमरोचनारोहन्भ्राजसेदिवं ॥ इष्णन्सूर्यनचोदयः ॥ अभिविप्रोऽअनूपतमूर्धन्यज्ञ

स्येकारवः ॥ दधानाश्चक्षसिप्रियं ॥ तमुत्वावाजिननरोधीसिर्विप्राऽअवस्यवः ॥ मूर्जलिदेवता
 तये ॥ मथोर्धारामनुक्षरतीजःस्रधस्थमासंदः ॥ चारुर्क्ष्णार्थपीतये ॥ ७ ॥ परिसुवानोगी
 रिष्ठाःपवित्रेसोमोऽअक्षाः ॥ मर्देषुसर्वधाऽअसि ॥ त्वंविप्रस्त्वंकविर्मधुप्रजातमंधसः ॥ मर्दे
 षु ॥ तवविश्वेसजोषसेदेवांसःपीतिमाक्षत ॥ मर्देषु ॥ आयोविश्वानिवायार्थविसूनिहस्त
 योर्दधे ॥ मर्देषु ॥ यङ्मेरोदसीमहीसंमातरेवदोहते ॥ मर्देषु ॥ परियोरोदसीउभेसद्योवा
 जेमिरर्षति ॥ मर्देषु ॥ सशृष्मीकलशेष्वापुनानोऽअचिक्रदत् ॥ मर्देषु ॥ ८ ॥ यत्सोम
 चित्रमुक्थ्यदिव्यपार्थिवंसु ॥ तन्नःपुनानऽआमर ॥ युवंहिस्थःस्वर्पतीइंद्रश्चसोमगोप
 ती ॥ ईशानापिष्यतंधियः ॥ वृषापुनानऽआयुषुस्तनयन्नाधिब्रह्मिणि ॥ हरिःसन्धोनिमा
 संदत् ॥ अवावशंतधीतयोद्युषमस्याधिरतंसि ॥ सनोर्वत्सस्यमातरः ॥ कुविहूष
 ण्यंतंभ्यःपुनानोगर्ममादधत् ॥ याःशुक्रंदुहतेपयः ॥ उपशिक्षापत्स्थुषोभियसमार्धेहिशत्रुषु ॥

पर्वमानविदारयि ॥ निशत्रोः सोमवृण्यं निशुष्मं निवयंस्तिर ॥ दूरेवासतोऽअंतिवा ॥ ९ ॥ प्रकवि
 र्देववीतयेव्योवारेभिरर्षति ॥ साह्वान्विश्वाऽअभिस्पृधः ॥ सहिष्माजरितृभ्यऽआवाजंगोमंतामिन्व
 ति ॥ पर्वमानः सहस्रिणं ॥ परिविश्वानिचेतसां मुशसेपवसेमती ॥ सनः सोमश्रवोविदः ॥ अभ्यर्षष्ट
 ह्यशौमवर्द्धयोधुंवरयि ॥ इषं स्तोतृभ्य आभर ॥ त्वराजैव सुव्रतो गिरः सोमा विवो शिथ ॥ पुनानोवह्ने
 ऽअद्भुत ॥ सवह्निरप्सु दुष्टरो मज्यमानो गभस्त्योः ॥ सोमश्च मपुसीदति ॥ क्रीळुर्मखोनमंहयुः पवित्रं सो
 मगच्छसि ॥ दधं स्तोत्रेप्सु वीर्यं ॥ १० ॥ एते धावन्तीदं वः सोमाऽइन्द्राय धृष्वयः ॥ मत्सरासः स्वर्विदः ॥ प्रवृण्वं
 तो अभियुजः सुष्वये वरिवो विदः ॥ स्वयं स्तोत्रे वयं स्तुतः ॥ वृथा क्रीळंत इदं वः सुधस्य मभ्येकमिति ॥ सिं
 धोरूमाव्यक्षन् ॥ एते विश्वानि वार्या पर्वमानासऽआशत ॥ हितान ससंयोरथे ॥ आस्मिन्पिशंगमिद
 वो दधाना वेनमादिशे ॥ योऽअस्मभ्यमरावा ॥ ऋसुर्नरथ्यं न वंदधाना केतमादिशे ॥ शुक्राः पवध्व
 मर्णसा ॥ एत उत्येऽअवीवशन्काष्ठां वाजिनोऽअकत ॥ सतः प्रासां विषुर्मति ॥ ११ ॥ एते सोमां स आ

शवोरथाडवप्रवाजिनः ॥ सर्गाःसृष्टाऽअहेपत ॥ एतेवाताडवोरवःपर्जन्यस्येववृष्टयः ॥ अथेरेव
 अमाद्यथा ॥ एतेपूतार्विपश्चितःसोमसोदध्यशिरः ॥ विषाव्यानशूर्ध्विधः ॥ एतेमृष्टाऽअमर्त्याः
 समुवांसोनशश्रमुः ॥ इयंसंतःपथेरजः ॥ एतेपृष्टानिरोदसोर्विप्रयंतोव्यानशुः ॥ एतेदमुत्तमं
 रजः ॥ तंतुतन्वानमृत्तममर्नप्रवतऽआशत ॥ एतेदमुत्तमाय्यं ॥ तंसोमपुणिभ्यऽआवसुगव्या
 निधारयः ॥ तंतंतंतुमचिक्रदः ॥ १२ ॥ सोमाऽअसृष्टमाशवोमद्योर्मदस्यधारया ॥ अभिवि
 श्वानिकाव्या ॥ अर्नुप्रत्तासऽआयवःपदंनर्वीयोऽअक्रमुः ॥ रुचेर्जनंतसूयं ॥ आपवमाननोमरा
 योऽअदाशुपगेयं ॥ कृधिप्रजावंतीरिपः ॥ असिसोमासऽआयवःपर्वतेमद्यंमदं ॥ अमिकोशं
 मधुश्रुतं ॥ सोमोअर्पतिधर्णसिर्दधानंइन्द्रियंसं ॥ सुवीरोऽअमिशस्तिपाः॥इंद्रायसोमपवसेदेभ्यःस
 धमाद्यः॥इन्द्रेवार्जसिपाससि॥अस्यपीत्वामदानाभिर्दोवृत्राणममति॥जघानंजघनंचनु॥१३॥प्रसोमा
 सोऽअधन्विपुःपवंमानासइंदवः ॥ श्रीणानाऽअप्सुमृजत ॥ अभिगवोअधन्विपुरापोनप्रवताय

तीः ॥ पुनानां द्रमाशत ॥ प्रपवमानं धन्वसि सोमं द्रायुपातवे ॥ नृभिर्यतो विनीयसे ॥ त्वंसोमनूमा
 दन्तः पर्वस्वचर्षणीसहै ॥ सस्त्रियोऽनुमाद्यः ॥ इंद्रेण दद्रिभिः सुतः पुवित्रं परिधावसि ॥ अशमिद्रं
 स्युधास्रै ॥ पर्वस्ववृत्रहन्तमोक्थे भरनुमाद्यः ॥ शुचिः पावकोऽअद्भुतः ॥ शुचिः पावक उच्यते सोमः
 सुतस्युमव्वः ॥ देवावीरं घशंसहा ॥ १४ ॥ पर्वस्वदक्षसाधनो देवेभ्यः पीतयेहरे ॥ मरुभ्यो वायवे म
 दः ॥ पर्वमानधिया हितोऽभियो नि कर्त्तुः ॥ धर्मणा वायुमाविश ॥ संदेवैः शोमते वृषा कविर्योना
 वधिप्रियः ॥ वृत्रहा देववीरतमः ॥ विश्वांरूपाण्यां पिशन् पुनानोयाति हर्यतः ॥ यत्रा मृतांसोऽआसते ॥
 अरुषोजनयनिगिरः सोमः पवतऽआयुषक् ॥ इंद्रं गच्छन्कविक्रतुः ॥ आपवस्वमदिन्तं मपुवित्रंधारं
 याकवे ॥ अर्कस्य योनिमासदं ॥ १५ ॥ तममृक्षंत वाजिनं मुपस्थेऽअदि ते राधि ॥ विप्रांसोऽअण्व्या
 धिया ॥ तंगार्वोऽअभ्यन्पूषतसहस्रंधारमक्षिनं ॥ इंदुधतीरमादिवः ॥ तं वेधां मेधया ह्यन्यवमानमधि
 द्यावि ॥ धर्णसि भूरि धायसं ॥ तमस्यन्भुरिजोर्धिया संवसानं विवस्वतः ॥ पतिं वाचोऽअदाभ्यं ॥ तं

सानावधिजामयोहरिं हि न्वत्यद्रिभिः ॥ हृयंतं भूरिचक्षसं ॥ तं त्वा हि न्वन्ति वेधसः पवंमानगिरावृधं ॥
 इंद्रा विद्राय मत्सरं ॥ १६ ॥ एष कवि रमिष्ठुतः पवित्रेऽअधिनोशने ॥ पुनानो घ्नन्नपस्त्रिधः ॥ एष इंद्राय
 वायवे स्वजित्परे पिच्यते ॥ पवित्रे दक्षसाधनः ॥ एष नृभिर्विनीयते दिवो मूर्धा च पसुतः ॥ सोमो वने
 षु विश्ववित् ॥ एष गव्युरेचिक दत्तपवंमानो हिरण्ययुः ॥ इंद्रुः सत्राजिदस्तृतः ॥ एष सूर्येण हासते पवंमा
 नोऽअधिद्यवि ॥ पवित्रे मत्सरोमदः ॥ एष शुष्म्यसिष्यददंत रिक्षे च प्राहरिः ॥ पुनान इंद्रु रिद्रमा ॥ १७ ॥
 एष वाजी हितो नृभिर्विश्वविन्मनसस्पतिः ॥ अग्न्यो वारं विधावति ॥ एष पवित्रेऽअक्षरत्सोमो देवेभ्यः
 सुतः ॥ विश्वाधामान्या विशन् ॥ एष देवः शुभायुते धियो नावमर्त्यः ॥ वृत्रहो देववीतमः ॥ एष च पावर्कनिक्क
 ददृश भिर्जामिभिर्युतः ॥ अग्निद्रोणा निधावति ॥ एष सूर्यमरोचयत्पवंमानो विचर्पणिः ॥ विश्वाधामा निवि
 श्ववित् ॥ एष शुष्म्यदाभ्यः सोमः पुनानोऽअर्षति ॥ देवा वीरं वशं सहा ॥ १८ ॥ प्रास्य धाराऽअक्षरन्वृष्णः सुत
 स्यौजसा ॥ देवाऽअनुप्रभूषतः ॥ सार्धं मृजं निवेधसो गुणतः कारवोगिरा ॥ ज्योतिर्जज्ञानमुक्थं ॥

सुषट्हांसोमतानितिपुनानायप्रभूवसो ॥ वर्धासमुद्रमुक्थ्यं ॥ विश्वावसूनि संजयन्पर्वस्वसोमधारया ॥ इ
 नेद्वेषांसि सद्ध्यक् ॥ रक्षासुनोऽअरंरुषःस्वनात्समस्युकस्यचित् ॥ निदोयत्रमुमुच्चमहे ॥ इंदोपा
 थिवंरथिदिव्यपर्वस्वधारया ॥ द्युमंतंशुष्ममाभर ॥ १९ ॥ प्रधाराऽअस्यशुष्मिणोदृथापवित्रेऽ
 अक्षरत् ॥ पुनानोवाचमिष्यति ॥ इंदुर्हिद्यानःसोतृभिर्मृज्यमानःकनिकदत् ॥ इयतिवशुभिर्दि
 यं ॥ आनःशुष्मनृपाह्यवीरवंतंपुरुस्पृहं ॥ पर्वस्वसोमधारया ॥ प्रसोमोऽअतिधारयापर्वमानो
 असिष्यदत् ॥ अभिद्रोणान्यासदं ॥ अप्सुत्वामधुमत्तमंहरिंहिन्वत्याद्रिभिः ॥ इंदविद्रायपीतये ॥ मनो
 तामधुमत्तमंसोममिद्रायवज्रिणे ॥ चारुशर्धायमत्सरं ॥ २० ॥ प्रसोमासःस्वाध्यःपर्वमानासोअक्र
 मुः ॥ रयिकृण्वंतिचेतनं ॥ दिवस्पृथिव्याऽअधिमवेदोद्युम्नवर्धनः ॥ भवावाजानांपतिः ॥ तुभ्यंवाता
 अभिप्रियस्तुभ्यमर्षतिर्निधवः ॥ सोमवर्धतिर्निमहः ॥ आप्यायस्वसमेतुतेविश्वतःसोमदृण्यं ॥ स
 वावाजस्यसंगथे ॥ तुभ्यंगावोधूतंपयोवभ्रोदुदुहेऽअक्षितं ॥ वर्षिहेऽअधिसानवि ॥ स्वायुधस्य

ते सतो भुवन्स्यपतेव्यं ॥ इदो स खित्वमुंशमसि ॥ २१ ॥ प्रसोमा सोमदच्युतः श्रवसेनो मघोनः ॥ सु
 ताविदथैऽअक्रमुः ॥ आदीं त्रितस्य योषणो हरिर्हिन्वंत्यद्रिभिः ॥ इदुर्मिद्रायपीतये ॥ आदीं ह सो
 यथा गणं विश्वस्यावीवशन्मति ॥ अत्यो न गोमिरज्यते ॥ उमे सोमावचाकं शन्मुगोनतक्तोऽअर्षे
 सि ॥ सीदं भूतस्य योनिमा ॥ अभिगवोऽअनूषत योषां जारमिव प्रियं ॥ अगन्नाजियथाहिते ॥ अ
 स्मेधे हिद्युमद्यशौमघवंद्ध्यश्चमर्ह्यं च ॥ सनिमेयामुतश्रवः ॥ २२ ॥ प्रसोमा सोविपुश्चितोपां नयंत्यु
 र्मयः ॥ वनानि महिषा इव ॥ अभिद्रोणा निबुश्रवः शुक्राऽऽकृतस्य धारया ॥ वाजंगोर्मतमक्षरन् ॥
 सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय रुद्ध्यः ॥ सोमाऽर्षति विष्णवे ॥ तिस्रो वाच उदीरते गवोर्मिमंति धेनवः ॥
 हरिरेतिकर्निकदत्ते ॥ अभिब्रह्मीरनूषत यज्ञोऽर्कृतस्य मातरः ॥ मर्मज्यते दिवः शिशुं ॥ रायः समुद्रां
 श्रुतुरोस्मभ्यं सोमविश्रवतः ॥ आपवस्व स हस्त्रिणः ॥ २३ ॥ प्रमुवानो धारया तर्नेर्हिन्वानो अर्षति ॥
 रुजद्वृच्छान्योर्जसा ॥ सत इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्ध्यः ॥ सोमोऽअर्षति विष्णवे ॥ दृषाणं दृषमि र्य

तंसुन्वन्ति सोममाद्रिभिः ॥ दुहन्ति शक्मनापयः ॥ सुवञ्चितस्य मज्ज्यो भुवादिद्रायमत्सरः ॥ संरूपैरज्य
 ते हरिः ॥ अभीमूतस्य विष्टपदुहते पृथ्निमातरः ॥ चारुप्रियतमं हविः ॥ समैनमद्भुता इमा गिराऽअ
 र्धति सस्रुतः ॥ धेनूवांश्चोऽअवीवशत् ॥ २४ ॥ आनः पवस्व धारं स्या पवमान रयिपृथु ॥ ययाज्यो
 तिर्विदांसिनः ॥ इदोऽसमुद्रमोखय पवस्व विश्वमेजय ॥ रायो घर्तानिऽओजसा ॥ त्वया वीरेण वीखोभि
 ष्याम पृतन्युतः ॥ क्षराणोऽअमिवायै ॥ प्रवाज्जमिदुरिष्यति सिर्षा सन्वाजसाऽऽक्षपिः ॥ वृताविडा
 नऽआर्युधा ॥ तं गीभिर्वाचमोखय पुनानं वासयामसि ॥ सोमं जनस्य गोपति ॥ विश्वो यस्य व्रते जनो
 दाधार धर्मणस्पतेः ॥ पुनानस्य प्रभूवसोः ॥ २५ ॥ असंजिरथ्यो यथापवित्रे च म्वोः सुतः ॥
 कार्णमन्वाजीन्यकमीत् ॥ सवाक्षिः सोमजागृविः पवस्व देववीरति ॥ अभिकोशं मधुश्रुतं ॥ सनोज्यो
 तीपि पूव्यपर्वमानविरोचय ॥ कवेदक्षायनो हिनु ॥ शुभमानऽऽकृतायुभिर्मूज्यमानो गमंस्योः ॥ पवते
 वारोऽअव्ययै ॥ सविश्वादाशुपेव सुसोमो दिव्यानि पार्थिवा ॥ पवन्तामन्तरिक्ष्या ॥ आदिवस्पृष्ट

मश्वर्युर्गन्धयुःसोमरोहसि ॥ वीर्युःशंवसस्पते ॥ २६ ॥ ससुतःपीतयेष्टपासोमःपुवित्रेऽअर्पति ॥
विघ्नक्षीसिदेवयुः ॥ सपुवित्रेविचक्षुणोहरिर्पतिधर्षसिः ॥ अमियोनिर्कनिर्क्रदत् ॥ सवाजी
रोचुनादिवःपर्वमानोविधावति ॥ रक्षोहावामुष्यथं ॥ सत्रितस्याधिसानेविपर्वमानोऽअरोचयत् ॥
जामिभिःसूर्यसह ॥ सद्यत्रहावृषासुतोवरिवोविददाभ्यः ॥ सोमोवाजमिवासत् ॥ सदेवःक
विनेषितोऽभिद्रोणानिधावति ॥ इंदुरिद्रायमंहना ॥ २७ ॥ एषउस्यवृषारथोव्योवारेभिर
र्षति ॥ गच्छन्वाजसहस्रिणीं ॥ एतंत्रितस्ययोपणोहरिहिन्वंत्याद्रिभिः ॥ इंदुमिंद्रायपीतये ॥ एतं
त्यंहरितोदशममृज्यतेऽअपस्युवः ॥ याभिर्मदायशुंमते ॥ एषस्यमानुपीष्वाश्वेनोनविक्षुसीद
ति ॥ गच्छन्जरोनयोषितं ॥ एषस्यमद्योरसोवचष्टेदिवःशिशुः ॥ यइंदुर्वारुमाविशत् ॥
एषस्यपीतयेसुतोहरिर्षतिधर्षसिः ॥ कंदून्योनिमुमिप्रियं ॥ २८ ॥ आशुरर्षबृहन्मतेपरिप्रि
येणधाम्ना ॥ यत्रदेवाइतिवर्बन् ॥ परिष्कण्वन्ननिष्कृतंजनाययातयन्निषः ॥ वृद्धिदिवःपरिस्वव ॥

सुतएतिपवित्रऽआत्विषिदधानऽओजसा ॥ विचक्षाणोविरोचयन् ॥ अर्यसग्रोदिवस्पारिषुयामाप
 वित्रऽआ ॥ सिधोरूमान्वयक्षत् ॥ आविवासन्परावतोऽअर्थोऽअविवितःसुतः॥इन्द्रायसिच्यतेमधु॥स
 मीचीनाऽअनूपतुहरींहेन्वत्यद्रिभिः ॥ योनावृतस्यसीदत ॥ २९ ॥ पुनानोऽअंकमीदृप्तिविश्वामृ
 धोविचर्षणिः ॥ शृभंतिविप्रधीतिभिः ॥ आयोनिमरुगोरुहृद्गमदिद्रष्टृषासुतः ॥ ध्रुवेसदसिसीदति ॥
 ननोरयिमहाभिद्रोस्मभ्यसोमविश्वतः ॥ आपवस्वसहस्रिणी ॥ विश्वासोमपवमानद्युम्नानीदवाभर ॥
 विदाःसहस्रिणीरिषः ॥ सनःपुनानऽआमररयिस्तोत्रेसुवीर्य ॥ जरितुर्वर्धयागिरः ॥ पुनानइदवाभर
 सोमद्विबहसंरयि ॥ हर्षन्निदोनउक्थ्य ॥ ३० ॥ प्रयेगावोनभूर्णयस्त्वेषाऽअयाऽसोऽअकमः ॥
 घ्नतःकृष्णामपुत्वच ॥ सुवितस्यमनामहेतिसेतुंदुराव्य ॥ साह्वांसोदस्युमव्रतं ॥ शृण्वेष्टृष्टेरिवस्वनः
 पर्वमानस्यशुष्मिणः ॥ चरंतिविद्युनोदिवि ॥ आपवस्वमहोमिषंगोमदिदोहिरण्यवत् ॥ अश्वोवद्वा
 जवत्सुतः ॥ सर्पवस्वविचर्षणऽआमहोरोदसीपृण ॥ उषाःसूर्योनरशिभिः ॥ परिणःशर्मयंत्याधार

या सोम विश्वतः ॥ सारं सेव विष्टपं ॥ ३१ ॥ जनयं चोचना दिवोजनयं च प्सुसू ॥ वसानो गाऽअपोहरैः ॥
 एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि ॥ धारया पवते सुतः ॥ वाष्टधानाय तव ये पवते वाजं सातये ॥ सोमः सह
 स्वपाजसः ॥ दुहानः प्रत्न भित्तयः पवित्रे परिषिच्यते ॥ कंदं देवाँऽअजीजनत् ॥ अग्नि विश्वानि वा
 यं मिदेवाँऽकृतावधः ॥ सोमः पुनानोऽअर्षति ॥ गोमन्त्रः सोमवीरवदश्ववद्वाजं वसुतः ॥ पवंस्व
 बृहती रिषः ॥ ३२ ॥ योऽअत्यद्वमृज्यते गोभिर्मदाय हृतः ॥ तं गीर्भिर्वासयामसि ॥ तं नो विश्वा
 ऽअवस्युवो गिरः शुभं तिपुर्वथा ॥ इंदुर्मिद्राय पीतये ॥ पुनानो याति हर्यतः सोमो गीर्भिः परिष्कृतः ॥
 विप्रस्य मे ध्यानिये ॥ पवंमान विदारयि मस्मभ्य सोम सुश्रिय ॥ इंदो सहस्रवर्चसं ॥ इंदुरत्यो न वा
 जस्रत्कनिकं तिपवित्रा ॥ यदक्षारं ति देवयुः ॥ पवंस्व वाजं सातये विप्रस्य गृणो ह्यधे ॥
 सोमरास्व सुवीर्यं ॥ ३३ ॥ इति द्वितीयोऽध्यायः ॥ ॐ प्रणंदो महेत न ऊर्भिन
 बिभ्रद र्षसि ॥ अग्नि देवाँऽअयास्यः ॥ मतीष्टि जोधुया हिनः सोमो हि न्वे परावति ॥ वि

प्रस्यधारयाकविः ॥ अयं देवेषु जागृविः सुत एति पवित्रऽआ ॥ सोमो धातिविचर्षणिः ॥ सनः
 पवस्व वाजयुश्चक्राणश्चारुमध्वरं ॥ बर्हिष्मोऽआ विवासति ॥ सनो भगा यवाये विप्रवीरः सदा बृधः ॥
 सोमो देवेष्वार्यमत् ॥ सनोऽअद्य वसुतये कतुविद्रातुवित्तमः ॥ वाजजैषि श्रवो बृहत् ॥ १ ॥ सपवस्वम
 दायकं नृचक्ष दिववीतये ॥ इन्द्रविद्रायपीतये ॥ सनोऽअप्रीमिदुत्यं त्वमिद्रायतो शसे ॥ देवा
 न्सखिभ्यऽआवरं ॥ उत त्वामंरुणं वयंगोभिरज्जमोमदायकं ॥ विनोरायेदुरोवृधि ॥ अत्यूप
 विन्नमकमीद्वाजीधुरं नयामनि ॥ इन्द्रैर्वेषुपत्यते ॥ समीसखाघोऽअस्वन्वने कीळितमत्यविं ॥
 इन्द्रनावाऽअनूपत ॥ तया पवस्वधारया यापीनो विचक्षसे ॥ इदोस्तोत्रे सुवीर्यं ॥ २ ॥ असु
 ग्रन्देववीतये त्यासः कृत्वया इव ॥ क्षरंतः पर्वतादृधः ॥ परिष्कनास इन्द्रो योषेव पित्र्यावती ॥ वा
 युंसोमाऽअसृक्षत ॥ एते सोमा इन्द्रवः प्रयस्वन्तश्चमूसनाः ॥ इन्द्रवर्धनिकर्ममिः ॥ आधावतासुह
 स्तयः शुक्लागृभीतमंथिना ॥ गोभिः श्रीणीतमत्सरं ॥ सपवस्वधनं जयप्रयुतारार्थसोमहः ॥ अस्मभ्यं

सोमगानुवित् ॥ एतंमृजंतिमज्ज्यपर्वमानंदशक्षिपः ॥ इंद्रायमत्सरमदं ॥ ३ ॥ अयासोमःसुकृत्य
 यामहश्चिदभ्यवर्धत ॥ मुंदानउद्धृषायते ॥ कृतानीदस्यकत्वचित्तेतदस्युतर्हणा ॥ ऋणाचधृष्णश्च
 यते ॥ आत्सोमइंद्रियोरसोवज्रसहस्रसामुवत् ॥ उक्थयदस्यजायते ॥ स्वयंकविर्विधुर्नरिविप्राय
 रत्नमिच्छति ॥ यदीममृज्यतेधियः ॥ सिपासतूर्यीणांवाजेष्वर्वतामिव ॥ भरेपुजिग्युपांसि ॥ ४ ॥
 तंत्वानृम्यानिविभ्रंतंसधस्थेषुमहोदिवः ॥ चारुसुकृत्ययेमहे ॥ संवृक्तधृष्णमुक्थंममामहिव्रतमदं ॥
 शतंपुरोरुक्षणिं ॥ अतस्त्वारयिमभिराजनंसुक्तोदिवः ॥ सुपणोऽभव्यथिर्मरत् ॥ विश्वस्माइत्स्वदं
 शेसाधारणंरजस्तुरं ॥ गोपामृतस्यविर्मरत् ॥ अर्धाहिन्वानइंद्रियंजयायोमहित्वमानशे ॥ अमिष्टिक
 द्विचर्षणिः ॥ ५ ॥ पर्वस्वष्टिमासुनोपामूर्तिदिवस्परि ॥ अयुध्माबृहतीरिषः ॥ तयोपवस्वधार
 याययागावडहागमेन् ॥ जन्यासउर्पनोगृहं ॥ घृतंपवस्वधारंयायज्ञोपदेववीतमः ॥ अस्मभ्यंष्ट
 ष्टिमापेव ॥ सनकुर्जेव्यश्वयंपवित्रंधावधारया ॥ देवासःशृणवन्धिकं ॥ पर्वमानोऽसिष्यद

द्रक्षींस्थपुजंघनत् ॥ प्रत्नवद्भोचयुच्छ्रुचः ॥ ६ ॥ उत्तेशुष्मांसईरतेसिंधोर्हूर्भरिवस्वनः ॥ वाणस्यचोद
 यापुर्वि ॥ प्रसवेतउदीरतेतिस्त्रोवाचोमखस्युत्रः ॥ यदव्युगषिसानंवि ॥ अव्योवापेरिप्रियंहरिंहि
 न्वंत्याद्रिभिः ॥ पर्वमानंमधुश्रुतं ॥ आपर्वस्वमदिन्तमपुवित्रंधारंयाकत्रे ॥ अर्कस्ययोनिसासदं ॥ स
 पर्वस्वमदिन्तमगोभिरंजनोऽअक्तुभिः ॥ इंदर्विद्रायपीतये ॥ ७ ॥ अव्यर्थोऽअद्रिभिःसुतंसोमैपु
 वित्रऽआसृज ॥ पुनीर्होद्रायपातवे ॥ दिवःपीथूपमुत्तमंसोममिद्रायवज्जिणे ॥ सुनोतामधुमत्तमं ॥
 तवत्यईदोऽअंधसोदेवामधोन्यश्रुते ॥ पर्वमानस्यमरुतः ॥ त्वंहिसोभवर्थयन्सुतोमदायुर्मूर्णये ॥
 हृषन्स्तोतारंमूतये ॥ अभ्यर्षविचक्षणपुवित्रंधारंयासुतः ॥ अग्निवाजंमृतश्रवः ॥ ८ ॥ परिद्युक्षः
 सनद्रथिर्मरुद्वाजोऽअंधसा ॥ सुवानोऽअर्षपुवित्रऽआ ॥ तवप्रत्नेभिरस्वभिरव्योवोरेपरिप्रियः ॥
 सहसंधारोयात्तनां ॥ चरुनयस्तमिखियेदोनेदानंमीखय ॥ वृधैर्वधस्रवखिय ॥ निशुष्ममिंदवे
 प्रांपुरुहूतजनानां ॥ योऽअस्माँऽआदिदेशति ॥ शतनंददुक्तिभिःसहसंधाशुचीनां ॥ पर्वस्वमंह

यद्रयिः ॥ १ ॥ उत्तेशुष्मासोऽस्थरक्षोभिन्दतोऽअद्रिवः ॥ नुदस्वयाःपरिस्पृधः ॥ अयानिजिघ्रि
 रोजसारथसंगेधनेहिते ॥ स्तवाऽअविभ्युषाहृदा ॥ अस्यव्रतानिनाधेपवमानस्यदृढया ॥ रुजय
 स्वापृतन्यति ॥ तंहिन्वतिमदच्युतंहरिर्नदीर्षुवाजिनं ॥ इंदुमिद्रांयमत्सरं ॥ १० ॥ अस्यप्रत्नामनुद्यु
 तैशुकंदुंदुहेऽअह्नयः ॥ पर्यःसहस्रसामृषिं ॥ अयंसूर्यइवोपदृग्यंसरांसिधावति ॥ सप्तप्रवतऽआदि
 वम् ॥ अयंविश्वानितिष्ठतिपुनानोभुवर्नोपरि ॥ सोमोदेववीनयेवाजोऽअ
 र्षसिगोमतः ॥ पुनानंदैर्द्विद्रयुः ॥ ११ ॥ यवयवंनोऽअर्धसापुष्टंपुष्टंपरिस्त्रव ॥ सोमविश्वाचसौमगा ॥ इ
 द्यथातवस्तवोयथतेजानमंधसः ॥ निबृहर्षिप्रियेसदः ॥ उत्तनो गोविदश्ववित्पर्वस्वसोमार्धसा ॥ मक्षूत
 मेभिरहृभिः ॥ योजिनानिजनीयतेहृतिशत्रुर्भभीत्य ॥ सपर्वस्वसहस्रजित् ॥ १२ ॥ परिसोमऽक्कृतं
 बृहदाधुःपवित्रेऽअर्षति ॥ विघ्नक्षोसिदेवयुः ॥ यत्सोमोवाजमर्षतिशतंधाराअपस्युवः ॥ इंद्रस्य
 सख्यमाविशन् ॥ अमित्वायोषणोदर्शजारनकन्यानूषत ॥ मृज्यसेसोमसातये ॥ त्वमिद्रांयवि

ष्वविस्वादुरिदोपरिखव ॥ नृन्स्तोतृन्पाद्यहंसः ॥ १३ ॥ प्रतेधाराऽअसश्चतोदिवोनयतिवृष्टयः ॥
 अच्छावाजसहस्रिणी ॥ अमिप्रियाणिकाव्याविश्वाचक्षाणोऽअर्षति ॥ हरिस्तुंजानऽआयुधा ॥
 समर्मृजानआयुभिरिभोराजेवसुव्रतः ॥ श्येनोनवंसुषीदति ॥ सनोविश्वादिबोवसुतोपृथिव्याऽअ
 धि ॥ पुनानइदवाभर ॥ १४ ॥ तरत्समंदीधावतिधारासुनस्यांधसः ॥ तरत्समंदीधावति ॥ उसावे
 दवसूनांमर्तस्यदेव्यवसः ॥ तर० ॥ ध्वस्योःपुरुषंत्योरासहस्राणिदद्यहे ॥ तर० ॥ आययोस्त्रिशतं
 तनांसहस्राणिचदद्यहे ॥ तर० ॥ १५ ॥ पर्वस्वगोजिदंश्चजिद्विश्चजित्सोमरणयजित् ॥ प्रजावद्रत्नमाभर ॥
 पर्वस्वाभ्योऽअदाभ्यःपर्वस्वौषधीभ्यः ॥ पर्वस्वधिपणाभ्यः ॥ त्वंसोमपर्वमानोविश्वानिदुरिततर ॥
 कविःसौदनिबर्हिपि ॥ पर्वमानस्वर्विदोजायमानोमवोमहान् ॥ इंदोविश्वोऽअभीदसि ॥ १६ ॥
 प्रगायत्रेणगायतपर्वमानंविचर्वणि ॥ इंदुंसहस्रचक्षसं ॥ तंत्वांसहस्रचक्षसमथोसहस्रमर्णसं ॥ अ
 निवारमपाविषुः ॥ अतिवारान्पर्वमानोऽअसिष्यदत्कलशोऽअमिधावति ॥ इंद्रस्यहाद्याविशन् ॥

इन्द्रस्यसोमराधेशंपवस्वविचर्पणे ॥ प्रजावद्रेतऽआभर ॥ १७ ॥ अयावीनीपरिस्त्रवयस्तंइदोमदे
 ष्वा ॥ अवाहन्नावतीर्नव ॥ पुरःसद्यडत्थाधिमेदिवोदासायशंवरं ॥ अधत्यंतुर्वशंयदुं ॥ परिणोऽअ
 श्वमश्वविद्वोमर्दिदोहिरण्यवत् ॥ क्षरासहस्त्रिणीरिपः ॥ पर्वमानस्यतेवयंपवित्रमभ्युदतः ॥ सखि
 त्वमावृणीमहे ॥ येतेपवित्रमूर्मयोभिक्षरंतिधारया ॥ तेभिनःसोममळय ॥ १८ ॥ सनःपुनानऽ
 आभररयिवीरवतीमिषं ॥ ईशानःसोमविश्वतः ॥ एतमुत्यंदशक्षिपोमृजंलिसिंधुमातरं ॥ समादि
 त्येभिरख्यत ॥ समिद्रेणोतवायुनासुतएतिपवित्रऽआ ॥ संसूर्यस्यरश्मिभिः ॥ सनोभगायवायवे
 पूष्णेपदस्वमधुमान् ॥ चारुमित्रिवरुणेच ॥ उच्चार्तेजातमंधसोदिविपद्भूम्याददे ॥ उग्रशर्ममहि
 श्रवः ॥ १९ ॥ एनाविश्वान्यूर्यऽआद्युम्नानिमानुपाणां ॥ सिषांसंतोवनामहे ॥ सनइंद्राय
 यज्यवेवरुणायमरुद्भयः ॥ वरिवोवितपरिस्त्रव ॥ उपोपुजातमसुरंगोभिर्मंगपरिष्कृतं ॥ इंदुं
 देवाऽअयासिषुः ॥ तमिद्वर्धनुनोगिरोवत्संसंशिश्वरीरिव ॥ यइंद्रस्यहृदंसनिः ॥ अर्पणःसो

मशंगवैधुक्षस्वपिप्युपीमिपं ॥ वर्धासमुद्रमुक्थ्यं ॥ २० ॥ पर्वमानोऽअजीजनदिवश्चि
न्ननतन्यतुं ॥ ज्योतिर्वैश्वानरंबृहत् ॥ पर्वमानस्यतेरसोमदोराजन्नदुच्छूनः ॥ विवारमव्यमर्पति ॥
पर्वमानरमस्तवक्षोविराजतिद्युमान् ॥ ज्योतिर्विश्वस्वर्द्धेशे ॥ यस्तेमदोवरेण्यस्तेनापवस्वांधसा ॥
देवावीरंधशंसहा ॥ जग्धिर्वृत्रममित्रियंसस्त्रिर्वाजं दिवेदिवे ॥ गोपाउंऽअश्वसाऽअसि ॥ २१ ॥ सं
मिश्रोऽअरुपोमंवसूपस्थामिर्नधेनुभिः ॥ सीदन्च्छेनोनयोनिमा ॥ सर्पवस्वयऽआविथेद्रष्ट्राय
हंतवे ॥ वत्रिवांसंमहोरपः ॥ सुवीरासोवयंधनाजयेमसोममीदृः ॥ पुनानोवर्धनोगिरः ॥ त्वोतासस्त
बावसास्यामंवन्वंतंऽआमुरः ॥ सोमं व्रतेपुजागृहि ॥ अपघ्नन्पवतेमृधोपसोमोऽअरावणः ॥ गच्छ
न्निद्रस्थनिष्कृतं ॥ २२ ॥ महोनोरायऽआमर्पवमानजहीमृधः ॥ रास्वैदोवीरवद्यशः ॥ नत्वाशतं
चह्नुनोराधोदिस्संतमामिनन् ॥ यत्पुनानोमंवस्यसे ॥ पर्वस्वैदेवृपांसुतः कृधीनोयशसोजने ॥
विश्वाऽअपह्निपौजहि ॥ अस्येतेसख्यवयंतवैदोद्युम्वतंत्तमे ॥ सासह्यामपृतन्यतः ॥ यातेभीमा

न्यायुधोनिगमानिसंतिधूर्वणे ॥ रक्षासमस्यनोनिदः ॥ २३ ॥ एतेऽअसृग्रभिंदवस्तिरःपवित्रमाश
वः ॥ विश्वान्यमिसौभगा ॥ विघ्नतोदुरितापुरुसगतोकार्यवाजिनः ॥ तनोऽकृण्वतोऽअवति ॥ कु
ण्वतोवरिवोगवेभ्यर्षेतिमुष्टुति ॥ इळांमस्मभ्यंसंयत ॥ असाव्यंशुर्भदायाप्सुदक्षोगिरिष्ठाः ॥
श्वेनोनयोनिमासदत् ॥ शुभ्रमंधेदेववातमप्सुधतोर्नृभिःसुतः ॥ स्वदेतिगावःपयोभिः ॥ २४ ॥
आदीमश्वंनहेतारोशशूभंनमृताय ॥ मध्वोरसंसधमादे ॥ यास्तेधारोमधुश्रुतोऽसृग्रभिंदकृतये ॥
ताभिःपवित्रमासदः ॥ सोऽअपद्राघपीतयेतिरोमाण्यव्यया ॥ सीदन्योनानावनेष्वा ॥ त्वमिदोप
रिस्रवस्वादिद्वोऽअंगिरोभ्यः ॥ वरिवोविह्वनंपयः ॥ अयंविचर्षेणिर्हितःपर्वमानःसर्चेतति ॥ हिन्या
नऽआप्यंबूहत् ॥ २५ ॥ एपदृषादृषंपत्रतःपर्वमानोऽअशस्तिहा ॥ कर्द्वसूनिदाशुर्भे ॥ आपवस्व-
सहस्त्रिणारिं गोमतमश्विनं ॥ पुरुश्चंद्रं पुरुस्पृहं ॥ एषस्यपरिपिच्यतेममृत्ययमानऽआयुभिः ॥
उरुगायःकविः ॥ सहस्रोतिःशतामघोविमानोरजसःकविः ॥ इंद्रायपवतेमदः ॥ गिराजान्तः

तमः ॥ तमीमृजंत्यायवोहरितदीर्घुवाजिनं ॥ इंदुर्मिद्रायमत्सरं ॥ आपवस्वहिरण्यवदशवावत्सो-
मवीरवत् ॥ वाजंगोभंतमाभरं ॥ परिवाजेनवाज्युमव्योवारैषुसिंचत ॥ इंद्रायमधुमत्तमं ॥ कर्विमृजं
तिमज्ज्यधीभिर्विप्राऽअवस्यवः ॥ वृषाकनिक्कदर्पति ॥ ३३ ॥ वृषणंधीभिरसुरसोममृतस्यधारया ॥
मतीविप्राःसमस्वरन् ॥ पर्वस्वदेवायुषर्षिर्द्रगच्छनुतेमदः ॥ वायुमारोहधर्मणा ॥ पर्वमाननितोशसेर-
यिसौमश्रवाय्यं ॥ प्रियःसमुद्रमाविश ॥ अपघ्नन्पर्वसेसृधःकतुवित्सोममत्सरः ॥ नूदस्वादवयुंजनं ॥
पर्वमानाऽअसृक्षतसोमाःशुक्रासइंदवः ॥ अभिविश्वानिकाव्या ॥ ३४ ॥ पर्वमानासऽआशवःशु-
क्राऽअंसृग्राभेदवः ॥ घ्नंतोविश्वाऽअपहृषः ॥ पर्वमानादिवस्पर्यंतरेिक्षादसृक्षत ॥ पृथिव्याऽअधि-
सानवि ॥ पुनानःसोमधार्येदोविश्वाऽअपसिधः ॥ जहिरक्षांसिसुक्रतो ॥ अपघ्नन्त्सोमरक्षसोभ्य-
र्षकनिक्कदत् ॥ द्युमंतंशुष्ममुत्तमं ॥ अस्मेवसूनिधारयसोमदिव्यानिपार्थिवा ॥ इंदोविश्वानि-
वार्या ॥ ३५ ॥ वृषांसोमद्युमाऽअसिवृषादिववृषव्रतः ॥ वृषाधर्माणिदधिपे ॥ वृष्णस्तेष्टृष्णयंशवो

वृषावनं वृषामदः ॥ सत्यं वृषं नृषे दसि ॥ अश्वेन च क्रदो वृषासंगा इदो समर्वतः ॥ विनोरायेदुरो वृ
 धि ॥ असृक्षत प्रवाजिनो गव्या सोमा सोऽअश्वया ॥ शुक्रा सोवीर्याशवः ॥ शुभ्रमानाऽऽकृता युभि
 र्भुज्यमाना गमस्स्योः ॥ पर्वते वारोऽअव्यये ॥ ३६ ॥ ते विश्वादाशु पेव सुसोमा दिव्या निपाथिवा ॥ पर्व
 तामांतरिंक्षया ॥ पर्वमानस्य विश्ववित्प्रतेसर्गीऽअसृक्षत ॥ सूर्यस्येव नरश्मयः ॥ केतुं कृण्वन् दिवस्प
 रि विश्वा रूपाभ्यर्षसि ॥ समुद्रः सोमपिन्वसे ॥ हिन्वानो वार्चमिष्यसि पर्वमानविधर्मणि ॥ अक्रा
 न्देवो न सूर्यः ॥ इंदुः पविष्टचेतनः प्रियः कवीनां मती ॥ सुजदश्वरथीरिव ॥ ३७ ॥ ऊर्मिर्धस्ते पवित्राऽआ
 देवावीः पर्यक्षरत् ॥ सीदं भ्रतस्य योनिमा ॥ सनोऽअर्षपवित्राऽआमदो यो देववीतमः ॥ इंदुर्विद्राय
 पीतये ॥ इषेपवस्वधारया मुज्यमानो मनीषिभिः ॥ इंदो रूचाभिगा इहि ॥ पुनानो वरिवस्कृष्यूर्जज
 नाय गिर्वणः ॥ हरैः सृजानऽआशिरं ॥ पुनानो देववीतय इंद्रस्य याहि निष्कृतं ॥ द्युतानो वाजिभिर्ध
 तः ॥ ३८ ॥ प्रहिन्वानास इंदवोच्छासमुद्रमारावः ॥ धिया जुताऽअसृक्षत ॥ मर्मृजानासऽआयवो वृ

थासमुद्रमिदं वः ॥ अगमन्नुतस्ययोनिमा ॥ परिणोयाह्यस्मयुर्विश्वावसून्योजसा ॥ पाहिनः
 शर्मवीरवत् ॥ मिमांतिवह्निरेतशःपदंयुजानऽक्कवधमिः ॥ प्रयत्समुद्रऽआहितः ॥ आयद्योनिं हिर
 ण्ययमाशुर्कृतस्यसीदति ॥ जहात्यप्रचेतसः ॥ ३९ ॥ अभिवेनाऽअनूपतेयक्षंतिप्रचेतसः ॥ मज्जंत्य-
 विचेतसः ॥ इंद्रायेदोमुरुत्वतेपर्वस्वमधुमत्तमः ॥ ऋतस्यग्रोनिमासदं ॥ तंत्वाविप्रोवचोविदःपरिष्क
 ण्वंनिवेधसः ॥ संत्वामृजंत्यायवः ॥ रसंतेमित्रोऽअर्यमापिधंतिवरुणःकवे ॥ पर्वमानस्यमरुतः ॥ त्वंसो
 मविपृथ्वितं पुनानोवाचमिष्यसि ॥ इंद्रोसहस्रंभर्णसं ॥ ४० ॥ उतोसहस्रंभर्णसंवाचंसोममखस्युवं ॥
 पुनानंइदवाभरं ॥ पुनानंइदवेपांपुरुहूतजनानां ॥ प्रियःसमुद्रमाविश ॥ दर्विद्युतत्यारुचापरिद्योमं
 त्याकृपा ॥ सोमाःशुक्रागवांशिरः ॥ हिन्वानोहेतुभिर्यतऽआवाजंवाज्यंक्रमीत् ॥ सीदंतोवनुषोय
 था ॥ ऋधक्सोमस्वस्तयेसंजगमानोदिवःकविः ॥ पर्वस्वसूर्योद्दृशे ॥ ४१ ॥ इतिपवमानेतृतीयो
 ध्यायः ॥ ३ ॥ ॐ हिन्वंतिसूरमुखयःस्वसारोजामयस्पतिं ॥ महामिदुमहीयुवः ॥ पर्वमानरुचारुचादे

वोदेवेभ्यस्परि ॥ विश्वावसून्याविंश ॥ आपवमानसुष्टुतिं द्वाद्वेभ्योदुवं ॥ इषेपवस्वमंयतम् ॥
 दृष्टात्वासिमानाद्युर्मतैत्वाह्वामहे ॥ पवमानस्वाध्यः ॥ आपवस्वसुवीर्यमंदमानः स्वायुध ॥ इहो
 ध्विदवागेहि ॥ १ ॥ यदद्भिः परिषिच्यसे मृज्यमानो गमस्योः ॥ इणामधस्यमश्रुषे ॥ प्रसोमाय
 व्यश्ववत्पवमानाय गायत ॥ महेसहस्रं चक्षसे ॥ यस्य वर्णमधुश्चतुर्हरिर्हिन्वंत्यद्रिभिः ॥ इंदुमिद्रो
 यपीतये ॥ तस्य ते वाजिनो वयं विश्वाधनो निजिग्युषः ॥ सखित्वमाहंणीमहे ॥ दृषोपवस्वधारंयाम
 रुतं ते च मत्सरः ॥ विश्वाद्धानोऽओजसा ॥ २ ॥ तं त्वाधत्तारि मोण्योऽपवमानस्वर्दृशं ॥ हिन्वेवाजे
 षुवाजिनं ॥ अयाचितो विपानया हरिः पवस्वधारंया ॥ युजंवाजेषु चोदय ॥ आनंदं दोमहीमिषं प
 वंस्व विश्वदर्शतः ॥ अस्मभ्यं सोमगानुवित् ॥ आकलशाऽअनूषते दोधारां भिरोजसा ॥ इंद्रस्य पीत
 भेविश ॥ यस्य ते मद्यं रसं तीव्रं दुहंत्यद्रिभिः ॥ स पवस्वामिमातिहा ॥ ३ ॥ राजमिधाभिरयते पवमा
 नो मनावधि ॥ अंतरिक्षेण यतवे ॥ आनंदं दोशतु ग्विनं गवां पोषंस्वश्वं ॥ बहामगत्तिमनूतये ॥

आनःसोमसहो जुवोरूपं नवर्चसेभर ॥ सुष्वाणो देववीतये ॥ अर्षासोममद्युत्तमो मिद्रोणो निरो
 रुवत् ॥ सीद्रेन्द्रे नोनयो निमा ॥ अप्सा इन्द्राय बायवे रुणा यमरुद्रयः ॥ सोमोऽर्षनि विष्णवे ॥ ४॥
 इषं नो कार्पनो दधस्मभ्यं सोम विश्वतः ॥ आपवस्व सहस्रिणीं ॥ ये सोमांसः परावति येऽर्वावति सुन्विरो
 ये वादः शर्यणावति ॥ यऽआर्जीकेषु कृत्वसु ये मध्ये पस्त्यानां ॥ ये वा जनेषु पंचसु ॥ ते नो वृष्टिदिव
 स्परिपवता मासु वीर्यं ॥ सुवाना देवास इंदवः ॥ पर्वते ह्यृतो हरिर्गुणानो जमदग्निना ॥ हिन्वानो गोर
 थित्वचि ॥ ५॥ प्रशुक्ता सोवयोजुवो हिन्वाना सोनससयः ॥ श्रीणानाऽअप्सु मृजत ॥ तं त्वांसुते ष्वा
 सुवो हिन्विरे देवता तये ॥ सर्पवस्वानया रुचा ॥ आते दक्षं मयो भुवं वह्निमद्यावृणीमहे ॥ पांत मापूरुस्पृ
 हं ॥ आमं द्रमावरेण्यमा विप्रमामनीषिणीं ॥ पांत मा ० ॥ आरयिमा सुचेतुन मा सुकतोत नूष्वा ॥ पांत मा ० ॥
 ॥ ६॥ पवस्व विश्वचर्षणे मि विश्वानिकाव्या ॥ सखासा विभ्य इंदयः ॥ ताभ्यां विश्वस्य राजसि ये पवमा
 न धामनी ॥ प्रतीची सोमतस्थतुः ॥ परिधामा निया निते त्वं सोमा सि विश्वतः ॥ पवमानऽक्तुमिः कवे ॥

पर्वस्वजनयन्निपोमिविश्वा॒निवार्या ॥ सखासा॒खिभ्य॒ऊतये ॥ तव॒शुक्रासोऽअ॒र्चयो॒दिवस्पृष्टे॒वित॒-
 न्वते ॥ पु॒वित्रं॒सोम॒धाम॒सिः ॥ ७ ॥ तवे॒मेस॒सिर्ध॒वः प्र॒शिप॑सोमसि॒स्त्रते ॥ तुभ्य॑धा॒वंति॒धेन॒वः ॥ प्र॒-
 मयः ॥ वि॒प्रमा॒जावि॒वस्व॑तः ॥ मृ॒जंति॒त्वा॒सम॒युवो॒व्येजी॒राव॒धिष्व॑णि ॥ रे॒भोय॑द॒ज्यसे॒वेने ॥ प॒वंमा॒-
 न॒स्यते॒कवे॒वाजि॒न्त॒सर्गाऽअ॒सृक्ष॑त ॥ अ॒र्वतो॑न॒श्रव॑स्य॒वः ॥ ८ ॥ अ॒च्छाको॑शं॒मधु॒श्रुत॑म॒सृयु॒वारोऽअ॒-
 इ॒दोम॑हे॒रण॒ऽआपोऽअ॒र्षति॑सि॒ध॒वः ॥ अ॒गम॑न्नु॒तस्य॑यो॒निमा ॥ प्र॒ण
 इ॒दो॒सखि॒त्वमु॑क्ष॒सि ॥ आ॒पव॑स्व॒गवि॒ष्टये॒महे॒सोम॑नृ॒क्षसे ॥ अ॒स्यते॒सखे॒वय॑मि॒यक्ष॑न्त॒स्त्वोत॑यः ॥
 ह॒उ॒ग्राणा॑मि॒दोऽओ॒जिष्ठः ॥ यु॒ध्वा॒सन्छ॑र्ष॒ज्जिगे॒था॒यउ॒ग्रेभ्य॑श्चि॒दोजी॒यान्छू॑रे॒भ्यश्चि॒छूर॑तः ॥ भू॒रि॒दा
 भ्य॑श्चि॒न्मही॑या॒न् ॥ त्वं॒सोम॑सू॒रए॒र्ष॒स्तो॒कस्य॑सा॒तात॒नूनां ॥ वृ॒णीम॑हे॒सखा॑य॒वृणी॑महे॒युज्या॑य ॥ अ

ब्र॒ह्म॒आ॒र्य॒वि॒प॒व॒स॒ऽआ॒सु॒वो॒र्ज॒मि॒प॒च॒नः ॥ अ॒रे॒वा॒ध॒स्व॒दु॒च्छु॒नो ॥ अ॒ग्नि॒र्च॒षिः॒प॒व॒मा॒नः॒पा॒ंच॒ज॒न्यः॒पु॒रो
 ह॒ितः ॥ त॒मी॒म॒हे॒म॒हा॒ग॒यं ॥ १० ॥ अ॒ग्ने॒प॒व॒स्व॒स्व॒पा॒ऽअ॒स्मे॒व॒र्चः॒सु॒वी॒र्यं ॥ द॒ध॒द्र॒यि॒म॒यि॒पोषं ॥ प
 व॒मा॒नो॒ऽअ॒ति॒सि॒धो॒भ्य॒र्प॒ति॒सु॒ष्टु॒तिं ॥ सू॒रो॒न॒वि॒श्व॒दर्श॒तः ॥ स॒र्म॒मृ॒जा॒नऽआ॒यु॒भिः॒प्र॒य॒स्वा॒न्प्र॒य॒से
 ह॒ितः ॥ इ॒ंदु॒र॒त्यो॒वि॒च॒क्ष॒णः ॥ प॒व॒मा॒नऽऋ॒तं॒बृ॒ह॒च्छु॒क्रं॒ज्यो॒ति॒र॒जी॒ज॒न॒त् ॥ कृ॒ष्णा॒त॒मां॒सि॒ज॒य॒न॒त् ॥
 प॒व॒मा॒न॒स्य॒ज॒घ्न॒तो॒हि॒रे॒श्वं॒द्रा॒ऽअ॒सृ॒क्ष॒त ॥ जी॒रा॒ऽअ॒जि॒र॒शो॒चि॒पः ॥ ११ ॥ प॒व॒मा॒नो॒र॒थी॒त॒मः॒शु॒श्रे॒भिः
 शु॒श्रू॒श॒स्त॒मः ॥ ह॒रि॒श्वं॒द्रो॒म॒रु॒द्र॒णः ॥ प॒व॒मा॒नो॒व्य॒श्र॒व॒द्र॒शि॒मि॒र्वा॒ज॒सा॒त॒मः ॥ द॒ध॒त्स्तो॒त्रे॒सु॒वी॒र्यं ॥
 प्र॒सृ॒वा॒न॒इ॒ंदु॒र॒क्षाः॒प॒वि॒त्र॒म॒त्य॒व्य॒यं ॥ पु॒ना॒न॒इ॒ंदु॒र॒द्र॒मा ॥ ए॒ष॒सो॒गो॒ऽअ॒र्ध॒त्वा॒चि॒ग॒वां॒क्री॒ळ॒त्य॒द्रि॒प्तिः ॥
 इ॒न्द्र॒म॒दा॒य॒जो॒हु॒व॒त् ॥ य॒स्य॒ते॒द्यु॒म्र॒व॒त्प॒यः॒प॒व॒मा॒ना॒भृ॒तं॒द्वि॒वः ॥ ते॒न॒नो॒मृ॒ळ॒जी॒व॒से ॥ १२ ॥ त्वं॒सो॒मा
 सि॒धा॒र॒यु॒र्म॒द्रा॒ऽओ॒जि॒ष्ठो॒अ॒ध्व॒रे ॥ प॒व॒स्व॒म॒ह॒य॒द्र॒यिः ॥ त्वं॒सु॒तो॒नृ॒मा॒द॒नो॒द॒ध॒न्वा॒न्म॒त्स॒रि॒न्त॒मः ॥ इ॒न्द्रो
 य॒सु॒रि॒रि॒ध॒सा ॥ त्वं॒सु॒ज्वा॒णो॒ऽअ॒र्द्रि॒मि॒र॒भ्य॒र्प॒क॒नि॒क्र॒द॒त् ॥ द्यु॒म॒न्तं॒शु॒ष्म॒मु॒त्त॒मम् ॥ इ॒ंदु॒हि॒न्वा॒नो॒ऽअ॒र्प

तित्तोवाराण्यन्या ॥ हरिर्वाजिमचिद्वत् ॥ इदोव्यव्यमर्पसि विश्रवांसि विमौभगा ॥ विवाजा
 न्सोमगोमतः ॥ १३ ॥ आर्नदं देशतु ग्विर्नर्यिगेभंतमश्विनं ॥ भरासोमसहस्रिणं ॥ पर्वमानास
 इंदवस्तिरःपवित्रमाश्वः ॥ इंद्रयामेभिराशत ॥ ककुहः सोम्यो रस इंदुरिंद्रायपूर्यः ॥ आयुः पवतः
 आयवे ॥ हिन्वंति सुरमुखेयः पर्वमानं मधुश्रुतं ॥ अमिगिरासर्मस्वरन् ॥ अविता नोऽअजाश्वः पूपा
 यामनियामनि आभक्षत्कन्यासुनः ॥ १४ ॥ अयंसोमः कपर्दिनं घृतं न पवते मधु ॥ आभं ० ॥ अयंतऽआ
 घणे सुतो घृतं न पवते शुचि ॥ आभं ० ॥ वाचोजंतुः कवीनां पर्वस्वसोमधारया ॥ देवे पुरल्लाथाऽअसि ॥
 आकलशेषुधावति श्येनो वर्मविगाहने ॥ अमिद्रोणा कर्नैकदत् ॥ परिप्रसोमते रसोसर्जिकलशेमुत ॥
 श्येनो न त्तो अर्पति ॥ १५ ॥ पर्वस्वसोममंदया चिंद्राय मधुमत्तमः ॥ असृग्रन्देववीतयेवाजयंतोरथा
 इवाते सुता सोमदिन्तमाः शुक्रावायुर्मसृक्षत ॥ प्राव्णानुन्नोऽअभिष्टुतः पवित्रं सोमगच्छसि ॥ दधंस्तोत्रे
 सुवीर्य ॥ एष तुन्नो अभिष्टुतः पवित्रममतिगाहने ॥ रक्षोहा वारमव्ययं ॥ १६ ॥ यदंति यच्च दूरैकमयं विदति

मामिह॥पर्वमानवितर्ज्जहि॥पर्वमानःसोऽअद्यनःपवित्रेणविचर्पणिः॥यःप्रोतासपुनातुनः॥ यत्तेपवि
 त्रमर्चिष्यग्रेवितंतमंतरा ॥ ब्रह्मतेनपुनीहिनः ॥ यत्तेपवित्रमर्चिवदभ्रतेनपुनीहिनः ॥ ब्रह्मसवैःपुनी
 हिनः ॥ उभाभ्यांदेवसवितःपवित्रेणसवेनच ॥ मांपुनीहि विश्वतः ॥ १७ ॥ त्रिभिर्द्वंद्वदेवसवितर्व
 षिष्ठैःसोमधामेभिः ॥ अग्नेदक्षैःपुनीहिनः ॥ पुनंतुमादेवजनाः ॥ पुनंतुवसवोऽधिया ॥ विश्वेदेवाः
 पुनीतमाजातवेदःपुनीहिमा ॥ प्रध्यायस्वप्रस्यदस्वसोमविश्वेभिरंशुभिः ॥ देवेभ्यउत्तमंहविः ॥
 उपप्रिथंपर्निमतंयुवानमाहुतीवृधं ॥ अगन्मविभ्रतो नमः ॥ अलाध्यस्यपरशुर्ननाशतमापवस्वदेव
 सोम ॥ आखुंचिदेवदेवसोम ॥ यःपावमानीरुध्येत्यृपिभिःसंभृतरसं ॥ सर्वसपतमंभ्रातिस्वदितंमा
 तरिर्श्वना ॥ पावमानीर्योऽअध्येत्यृपिभिःसंभृतरसं ॥ तस्मैसरस्वतीदुहेक्षीरंसर्पिर्मधूदकं ॥ १८ ॥
 पावमानीःस्वस्त्ययनीःसुदुवाहिर्धृतश्रुतः ॥ ऋपिभिःसंभृतोरसोब्राह्मणेष्वाभृतंहितं ॥ पावमानीर्द
 शंतुनङ्मंलोक्मथोऽअमुं ॥ कामान्तसमर्धंधंतुनोदेवदेवीःसमाहिताः ॥ येनदेवाःपवित्रेणात्मानंपुन

ते सदा ॥ तेन सहस्रधारेण पविमन्त्यः पुनर्तुमां ॥ प्राजापत्यं पवित्रं शतोद्योमं हिरण्यं ॥ तेन ब्रह्मवि
 दो वयं पुनर्ब्रह्मपुनीमहे ॥ इंद्रः सुनीती संहमा पुनातु सोमः स्वस्त्यो वरुणः समीच्या ॥ युमो राजा प्रमुणा
 भिः पुनातु माजाते वेदामर्जयैतया पुनातु ॥ १९ ॥ कर्षय स्तुते पस्ते पुः सर्वस्वर्गजिगीषवः ॥ तपस
 स्तस्य च यच्चापि च वर्धते मेतत्पावमानी भिरहं पुनामि ॥ यन्मे गर्भे वसतः प्रापे मुग्रं यज्जायमानस्य च किंचिदन्यत् ॥ जा
 ब्रूमू ॥ विश्वस्य तत्पद्विषितं वचो मेतत्पाव ॥ गोघ्रातस्करवात्स्वी वधाद्यच्च किल्बिषं ॥ प्रापकंच चर
 णेभ्यस्तत्पावमानी ॥ बालघ्नान्मोतृपितृवधाद्भूभितस्करात्सर्ववर्णगमनैश्चुनसंगमात् ॥ प्रापेभ्यश्च
 प्रतिग्रहात्सद्यः महर्त्तुसर्वदुष्कर्तृतां ॥ ब्रह्मवधात्सुरापातात्स्वर्णस्तेयाद्द्वेषच्छिगमनैः ॥ गुरो
 दीराद्धिगमनाच्च तत्पां ॥ कथं विक्रयाद्योनिदोषासद्भ्राज्ज्ञे ज्योतिप्रदातु ॥ असंभोजनाच्चापि
 नृशंसं तत्पाव ॥ २० ॥ दुर्यदुर्धर्तं पापं यच्चाज्ञानोक्तं ॥ अयाजिताश्चासंयाज्यास्तत्पाव ॥ अमं

नमन्त्रं यत्किञ्चिद्ध्यते चहुताशने । सर्वत्सरक्तं पापं तत्पाव ॥ कृतस्य यो न यो मृतस्य धाम विश्वे देवभ्यः
 पुण्यगंधाः ॥ तान् आपः प्रवहन्ति पापं शुद्धागच्छामि मुक्ता मुल्लोके तत्पाव ॥ पावमानीः स्वस्त्ययनी
 र्याभिर्गच्छति नादुनं ॥ पुण्यं श्वभक्षान्भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति ॥ पावमानीः पितृन्देवान्ध्यायेद्य
 श्वसरस्वतीं ॥ पितृस्तस्योपतिष्ठेत्क्षीरं सर्पिर्मधूदकं ॥ पावमानं परंब्रह्मशुक्रं ज्योतिः सनातनं ॥ क्र
 षिस्तस्योपतिष्ठेत्क्षीरं सर्पिर्मधूदकं ॥ पावमानं परंब्रह्मये पठंति मनीषिणः ॥ स सजन्म भवेद्विप्रो धनाढ
 यो वैदपारंगः ॥ दशोत्तराण्युवाचैव पावमानीः शतानि पद ॥ एतज्जुह्वन् जपेन्मंत्रं घोरमृत्युमयं हरित ॥ २ ॥
 चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ अथ वैश्वदेवसूक्तं ॥ न तमं ह्येन दुर्गितं देवांसोऽब्रुमत्य ॥ सजोपसो यमयमा
 मित्रो नयति वरुणो अतिद्विषः ॥ तद्विव्रयदृणी महैव रुण मित्रार्थमन् ॥ येनानिरंहसो ययं पाथनेथाचम
 त्यमतिद्विषः ॥ तेनूनो यमते वरुणो मित्रो अयमा ॥ नयिष्याउ नो नेपणी पयिष्याउ नः प्रपण्यति द्विषः ॥
 ययं विश्वं परिपाथ वरुणो मि ॥ युष्माकं शर्मणि प्रिये स्याम सुप्रणीत यो निद्विषः ॥ आदित्या सोऽति

स्त्रियोवरुणोमि० ॥ उग्रंमरुद्धीरुद्रंहुवेमद्रमग्निस्वस्तयेतिद्विपः ॥ नेतारुपुणंस्त्रिरोवरुणोमि० ॥ अ
 तिविश्वानिदुरिताराजानश्रपणीनामतिद्विपः ॥ शुनमस्मभ्यमृतयेवरुणोमि० ॥ शर्मयच्छंतुसप्रथं
 आदित्यासोयदीमहेऽअतिद्विपः ॥ यथाहृत्यहंसवोगैर्यचित्पदिपिताममुचतायजत्राः ॥ एवोष्व
 स्मन्मुचताव्यंहःप्रतार्यमेप्रतरंनुऽआयुः ॥ १ ॥ ३ ॥ अथैद्रस्तवसूक्तं ॥ इतिवाइतिमेमनोगा
 मश्वंसनुयामिति ॥ कुवित्सोमस्यापायामिति ॥ प्रवाताइवदोधतउन्मापीताऽअयंसत ॥ कुवित्सोमस्या० ॥
 उन्मापीताऽअयंसतरथमश्वाइवाश्वः ॥ कुवि० ॥ उपमामनिरस्थितवाश्रापुत्रमिवम्रियं ॥ कुवि० ॥
 अहंतैवबंधुरंपर्यचामित्वादामतिं ॥ कुवि० ॥ नहिमेअक्षिपच्चनाच्छान्तुःपंचकृष्टयः ॥ कुवि० १ ॥
 नहिमेरोदसीउमेऽअन्यंपक्षंचनप्रति ॥ कुवि० ॥ अमिद्यामहिनाभुवमसीइमांपृथिवीमर्ह ॥ कुवि० ॥
 हंताहंपृथिवीमिमानिदधानीहवेहवा ॥ कुवि० ॥ ओषमित्पृथिवीमहंजघनानीहवेहवा ॥ कुवि० ॥
 दिविमेऽअन्यःपक्षोइधोऽअन्यमचीकृषं ॥ कु० ॥ अहमस्मिमहामर्होभिन्नभ्यमुदीषितः ॥ कु० ॥

गृहोयाम्यरंक्तोदेवेभ्योहव्यवाहनः ॥ कुवि० ॥ २ ॥ अथज्ञानमोक्षसूक्तं ॥ अस्यवामस्यपलित
स्यहोतुस्तस्यभ्रातामध्यमोऽअस्त्यश्वः ॥ तृतीयोभ्रातावृत्तपृष्ठोअस्यात्रोपश्यंविशतिंसप्तपुत्रं ॥
सप्तपुत्रंतिरथमेकचक्रमेकोऽअश्वोवहतिंसप्तनामा ॥ त्रिनाभिचक्रमजरमनर्वयत्रेमाविशवाभुवना
धितुस्थुः ॥ इमंरथमधियेसप्ततस्थुःसप्तचक्रंसप्तवहंत्यशवाः ॥ सप्तस्वसारोऽअभिसंनवंतेयत्रगवांनिहिता
संसर्गाम् ॥ कोदंदर्शप्रथमंजायमानमस्यन्वंतंयदनुस्थविर्मति ॥ भूम्याऽअसुरसृगात्माकवस्वत्को
विद्वांसमुपगात्प्रदुमेतत् ॥ पाकःपृच्छामिमनुसाविजानन्देवानोमेनानिहितापदानि ॥ वत्सेबष्कये
धिसप्ततंतुन्विततिरेकवयऽओतुवाड ॥ १ ॥ अचिकित्वान्चिकितुर्पथिदत्रकवीन्पृच्छामिविद्वाने
नविद्वान् ॥ वियस्तुस्तंभषळिमारजांस्यजस्यरूपेकिमपिस्विदेकं ॥ इहब्रवीतुयईमंगवेदास्यवाम
स्यनिर्हितंपदेवे ॥ शीर्ष्णःक्षीरंदुहतेगावोऽअस्यवविंविंसानाउदकंपदापुः ॥ मातापितरमुतऽआब
भाजधीत्येग्रमनस्रांसंहिजग्मे ॥ सार्वभृत्सुर्गभरसा निर्विद्वानमस्वंतुइदुपवाकमीयुः ॥ युक्तामाता

सौकुंरिर्दक्षिणायाम् ॥ अर्निष्टद्वर्गो ह जनीष्वांतः ॥ अमीमेदुत्तोऽर्धेनुगामपश्यद्विथुस्तुत्र्यत्रिपुयोजनेषु ॥
 लिखोमातस्त्रीन्पितृन्विभ्रदेककुब्जस्तस्थौनेमवगल्पापयति ॥ मंत्रयते दिवोऽमुष्यं पृष्ठे विश्वविंदवाच
 मविश्वमिन्वा ॥ २ ॥ द्वादशारं न हितज्जरायुवर्षति चक्रं परिद्यामृतस्थं ॥ आपुत्राऽअग्नेमिथुनोसो
 ऽअत्रंससशतानि विंशतिश्चतस्रः ॥ पंचपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिवऽआहुः परेऽअर्धपुरीषिणं ॥ अ
 धेमेऽअन्येऽपरे विचक्षणं सप्तचक्रेष्वर्कऽआहुर्षितं ॥ पंचरिचक्रे परित्वर्तमाने तस्मिन्नातस्थुर्भुवना
 निविश्वा ॥ तस्य नाक्षस्तप्यते भारिभारः स न दिव न शीर्यते स नाभिः ॥ स नैमिचक्रमजरं विवाह त उता
 नायां दशयुक्तावहति ॥ सूर्यस्य च क्षुरजसैत्याहंत तस्मिन्नापितामव नानि विश्वा ॥ साकं जानांसस
 र्थमाहुरेकजं षड्विद्यामाऽऽर्चय्यो देव जाहति ॥ तेषां मिहो निविहति निधामशः स्थाने जने विहंतानि
 रूपशः ॥ ३ ॥ स्त्रियः सुतीस्तौ र्धमे पुंसुऽआहुः पश्यदक्षणा च विचेतदंधः ॥ कविर्यः पुत्रः सईमाचि
 केतुयस्ता र्विजाना त्सपितुष्पितासत ॥ अवः परेण परावरेण पुदावत्सं विम्रंती गौरुदं स्थात् ॥ साकद्रीची

कंस्विदर्थपरागात्क्वस्वित्सूतेनहियथेऽअंतः ॥ अवःपरेणपितरंयोऽअस्यानुवेदंपरएनावरेण ॥
 कवीयमानःकडहप्रवोचद्देवंमनःकुतोऽअधिप्रजातं ॥ येऽअवीचस्तौऽउपरांचऽआहुयैपरांचस्तौऽअ
 र्वाचऽआहुः ॥ इंद्रश्चयाचक्रथुःसोमतानिधुरानयुक्तारजसोवदंति ॥ द्वासुपर्णासुयुजासखायासमानं
 वृक्षंपरिपस्वजाते ॥ तयोरन्यःपिप्पलंस्वाहस्यनश्रन्नन्योअभिचाकशीति ॥ ४ ॥ यत्रासुपर्णाअमृ
 तंस्यभागमनिर्मेषंविदथाभिस्वरंति ॥ इनोविश्वस्यभुवनस्यगोपाःसमाधीरःपाकमन्त्राविवेशः ॥ यस्मि
 न्वृक्षेमध्वदःसुपर्णानिविशंतेसुवतेचाधिविश्वे ॥ तस्येदाहुःपिप्पलंस्वाहग्रेतन्नोन्नशद्यःपितरंनवेदः ॥ य
 द्वायत्रेऽअधिगायत्रमाहितंत्रैष्टुभाद्वात्रैष्टुभंनिरतक्षत ॥ यद्वाजगज्जगत्याहितंपदंयइत्तद्विदुस्तेऽअ
 मृतत्वमानशुः ॥ गायत्रेणप्रतिमिमीतेअर्कमूर्केणसामत्रैष्टुभेनवाकं ॥ वाकेनवाकंद्विपदाचतु
 ष्यदाक्षरेणमिमतेसप्तवार्णाः ॥ जगतांसंधुदिव्यस्तमायद्रथंतरेसूर्यपर्यपश्यत् ॥ गायत्रस्यसमिध
 स्तिस्रऽआहुस्ततोमह्यप्ररिरिचेमहित्वा ॥ ५ ॥ उपह्वयेसुदुर्वाधेनुमेतांसुहस्तौगोधुगुतदोहृदेनां ॥

श्रेष्ठं सवं वितासा विषत्रोभीद्धो घर्मस्तदुपुप्रबोचं ॥ हिङ्गुण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्स मिच्छंती मनसा
 भ्यागात् ॥ दुहामश्विभ्यां पयो अद्वयेयं सार्वधत्तां महते सौभगाय ॥ गौरमीमेदनुवत्सं मिपतं मर्धानि हि
 डुःरुणो न्मातुवाड ॥ रुक्माणं घर्ममभिवां वशानामिमांति मायुं पयते पयोभिः ॥ अयं सशिङ्गे येन गौरमी
 हतामिमांति मायुं ध्वसनावधि श्रिता ॥ साचित्तिभिर्निहिचकार मर्त्यं विद्युद्धवंती प्रतिवत्रिभौहत ॥
 अनच्छयेतुरगांतु जीवमेजच्छुवं मध्यऽ आपस्त्यानां ॥ जीवो मृतस्य चरति स्वधाभिरमर्त्यो मर्त्येनासयो
 निः ॥ ६ ॥ अपश्यं गोपामनिपद्यमानमाच पराचपुथि मिश्रतं ॥ ससमीचीः सविषूचीर्वसानऽ आवरीव
 तिं भुवनेष्वंतः ॥ यद्द्विचकार न सोऽ अस्य वेदयद्ददर्श हिरुगिन्नुतस्मात् ॥ समानुर्योना परिवीतोऽ
 अंतर्बहुप्रजानिर्कृतिमा विवेश ॥ द्यौर्मपिता जनिता नाभिरत्र बंधुर्भूमाता पृथिवीमहीयं ॥ उत्तानयो
 श्वम्बो र्यो निरंतरत्रा पिता दुहितुर्गर्भमाधात् ॥ पृच्छामित्वा परमंतं पृथिव्या पृच्छामियत्र भुवं न स्युना
 भिः ॥ पृच्छामित्वा हृणोऽ अश्वस्येतः पृच्छामित्वा चः परमं न्योम ॥ इयं वेदिः परोऽ अंतः पृथिव्याऽ अयं य

ज्ञोभुवनस्यनाभिः॥अयंसोमोदृष्णोऽअश्वस्यरेतोब्रह्मायवाचःपरमंव्योम॥७॥सप्तार्धगर्भाभुवनस्य
रेतोविष्णोस्तिष्ठन्तिप्रदिशविधर्मिणि॥तेधीनिभिर्मनसातेविपुश्चितःपरिभुवःपरिभवंतिविश्वतः॥
नविजानामि यदिवेदमस्मिन्निपयःसंनद्धोमनसाचरामि॥यदामागन्प्रथमजऽऽकृतस्यादिद्वाचो
अश्रुवेभागमस्याः॥अपाङ्ग्राडैतिस्वधयागृमीतोमर्त्योमर्त्येनासयोनः॥ताशश्वताविषूचीनावि
यंतान्य१न्यंचिक्युरन्यं॥ऋचोऽअक्षरेपरमेव्योमन्यस्मिन्देवाऽअधिविश्वेनिपेदुः॥यस्तन्नेवेद
किमुचाकर्षयति यइतद्विदुस्तदभेसमांसते॥सूयवसाद्धर्गवतीहिमयाऽअथोवयंभगवंतःस्याम॥
अद्वितृणमष्टयेविश्वदार्णेपिवशुद्धमृदेकमाचरंती॥८॥गौरोर्मिमायसल्लितानितक्षत्येकपदी
द्विपदीसाचतुष्पदी॥अष्टापदीनवपदीबभूवुपीसहस्राक्षरापरमेव्योमन्॥तस्याःसमुद्राअधिविक्षरं
नितेनजीवंतिप्रदिशश्चतस्रः॥ततःक्षरत्यसंनद्विश्वमुपजीवति॥शक्रमर्धधूममारादपश्यंविपुव
तापरएनावरेण॥उक्षाणंपृथ्विप्रपचनवीरास्रानिधर्मणिप्रथमान्यांसन्॥त्रयःकेशिनऽऽकृतुथावि

चक्षते संवत्सरे वपतु एकं लषां ॥ विश्वमेकोऽभिर्धृष्टशचीं मिध्राजिरेकस्य दहशेन रूपं ॥ चत्वारि वाक्प
 रिमितापदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः ॥ गुह्यत्रीणि निहितानि गयंति तुरीयैवाचोर्मनुष्यावदन्ति
 चिकेत ॥ इन्द्रमित्रं ० क्र. १ ॥ १ ॥ आत्मस्तवमूक्तं कृष्णं नि ० क्र. १ ॥ द्वादशप्रथमं क्रमेण त्रीणि नभ्यां निकुत
 विश्वापुष्यसि वार्याणि ॥ योरनुधावंसु विद्यः सुदनुः सरस्वति नमिह धातेवकः ॥ यज्ञेन युज ० ॥
 समानमेतदुदकमुच्चैत्यवचाहमिः ॥ भूमिपुर्जन्या जिन्वैति दिवं जित्वं त्यग्रयः ॥ दिव्यं संपूर्णं वायु
 संबुधं नमपांगभीदर्शतमोषधीनां ॥ असीपतो वृष्टिभिस्त्वर्यंतं सरस्वतु मवंसे जोहवीमि ॥ १० ॥
 अथ विष्णुसूक्त ॥ अतो देवाऽअवंतु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे ॥ पृथिव्याः ससधाममिभिः ॥ इदं वि
 णुर्विचक्रमेन्नेधानि दधेपदं ॥ समूच्छमस्य पांसुरे ॥ त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपाऽअदाभ्यः ॥
 अतो धर्माणि धारयन् ॥ विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो ब्रूतानि पश्यशे ॥ इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ तद्विष्णोः

परमपदं सदा पश्यति सूर्यः ॥ दिवीवचक्षुराततं ॥ तद्विप्रांसो विपन्यवो जागृवांसः समिधते ॥ विष्णो
र्यत्परमपदं ॥ १ ॥ विष्णो नु कं वीर्याणि प्रवोच्यः पार्थिवानि विममेरजांसि ॥ योऽअस्कं भायदुत्तरं
सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः ॥ प्रतद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः ॥ यस्योरुषु
त्रिषु विक्रमणेष्वाक्षियंति भुवनानि विश्वा ॥ प्रविष्णवैशुषमेतुमन्मगिरि क्षितं उरुगायाय चणौ ॥ यद्
दंदीर्यप्रयतंसधस्थमेको विममेत्त्रिभिरित्पदेभिः ॥ यस्य त्रीणूनामधुना पदान्यक्षीयमाणास्त्वधयामदे
ति ॥ यत्तन्निधानुपृथिवीमुतद्यामेको दाधार भुवनानि विश्वा ॥ तदस्य प्रियमभिपार्थोऽअश्यां नरो यत्र
देवयवो मदैति ॥ उरुक्रमस्य सहिबधुरित्था विष्णोः पदे परमेमध्वतस्तः ॥ तावां वास्तन्युश्मसि गमं ह्ये
यत्र गावो भूरिश्रृंगाऽअयासः ॥ अत्राहतं उरुगायस्य चणः परमं पदमवभाति भूरि ॥ २ ॥ प्रवः पातमं
धंसो धियायेते महेशूरा य विष्णवे चार्चत ॥ यासानुनि पर्वतानामदाभ्यामहस्तस्य तुरर्वते वसाधुना ॥
त्वेपमित्था समरणं शिर्मावतोरिद्रा विष्णुसुतपावां मुरुष्यति ॥ यामर्त्याय प्रतिधीयमानं मिच्छशानोरस्तु

रसनमु'रुष्यथः ॥ ताईवर्धतिमह्यस्यपौ'स्यंनिमातरानयतिरेतसेभुजे ॥ दधातिपुत्रोवरंपरंपितुर्नाम
 तृतीयमाधरोचनेदिवः ॥ तत्तदिदस्यपौ'स्यगृणीमसीनस्यत्रातुरहकस्यमी'ब्धुषः ॥ यःपार्थिवानिन्नि
 मिरिद्विगामभिरुरुक्रमि'ष्टोरुगायायजीवसे ॥ द्वेइदस्यक्रमणेस्वर्दृशो'भिरुयायमर्त्यो'भरणयति ॥ न
 तीयमस्यनकिराद'धर्षतिवयंश्चनपतयंतःपतन्निर्णः॥ चतुर्भिःसाकंनवतिचनार्मभिश्चक्रंनवतंतव्यतीरंवी
 विपत् ॥ बृहच्छरीरोविमिमानुऽच्छक्रंभिर्युवाकुमारःप्रत्येत्याहवं ॥ ३ ॥ भर्वाभिन्त्रोनशेव्यो'घतासु'ति
 वि'भूतद्युभ्राएवयाउंसप्रथाः ॥ अथातेविष्णोविदुषाचिद'र्धःस्तोमोयज्ञश्चराध्वो'हविष्मता ॥ यःपठ्यार्थ
 वेधसेनवीयसेसुमज्जानयेविष्णवेददाशति ॥ योजानतमस्यमह्नोमहिब्रवत्सेदुश्रवो'भिर्युज्य'चिद'भ्य
 सत् ॥ तमुस्तोतारःपूर्व्ययथाविदच्छतस्यगर्भजनुषापिपतन ॥ आस्यजानंतोनार्मचिद्विवक्तनमहस्ते
 विष्णोसुमर्तिर्मजामहे ॥ तमस्यराजावरुणस्तमश्विनाकर्तुंसचंतमारुतस्येवेधसं ॥ दाधारदक्षमुत्त
 ममहर्षिर्विदं'व्रजंचविष्णुःसखिवाँऽअपोर्नृते ॥ आयोविवायसचथार्थयदैव्यइंद्रांयविष्णुःसुकृतेसुकृ

त्तरः ॥ वेधाऽअजिन्वत्रिषधस्य आर्यमृतस्य सागे यजमानमाभजत् ॥ तव श्रिये मरुतो मर्जयन्तरुद्र
यत्ते जनिमचारुचित्रं ॥ पदं यद्विष्णो रुरुपमं निचायिते नपासि गुह्यं नामगोनां ॥ ४ ॥ संवां कर्मणा
समिषा हि नो मीद्रा विष्णुऽअपसस्पारेऽअस्य ॥ जुषेथां युद्वां द्रविणं च दत्तमरिष्टैर्नः पृथिमिः पारयता ॥
या विश्वासां जनिता रा मतीनामिन्द्रा विष्णू कलशा सोमधाना ॥ प्रवांगिरः शस्यमानाऽअवंतु प्रस्तोमा
सो गीयमाना सोऽअकैः ॥ इन्द्रा विष्णुमदपती मदानामा सोमयातुं द्रविणो दधाना ॥ संवां मंजत्वक्तुमिर्मती
नां संस्तोमासः शस्यमाना स उक्थैः ॥ आवा मर्श्वो सोऽअभिमातिषा ह इन्द्रा विष्णू सधमादो वहुन्तु ॥ जु
षेथां विश्वाहवना मतीनामुपब्रह्माणि शृणुतं गिरो मे ॥ इन्द्रा विष्णुतत्प नयात्थं वा सोमस्य मद उरुचक्रमा
थे ॥ अर्कणुतमंत रिक्ष्वरीयो प्रथतं जीवसे नो रजांसि ॥ इन्द्रा विष्णू हविषा वाद्यधाना ग्राहाना नमं सारा
तहन्या ॥ घृता सुती द्रविणं धत्तमस्मे समुद्रः स्थः कलशः सोमधानः ॥ इन्द्रा विष्णू पिबन्तं मध्वोऽअस्य सोमं
स्य दत्त्वा जठरं पृणेयां ॥ आवा मंधांसि मदिराण्यग्मन्नुपब्रह्माणि शृणुतं हवमे ॥ उमाजिग्यथुर्न पराजयेथे

नपराजिग्येकतरंश्चनैः ॥ इदंश्चविष्णोयदपस्पृधेयांत्रेधासहस्रंवितैरयेथां ॥५॥ परोमानंयातन्वा
वधाननतैमहित्वमन्वंश्रुवन्ति॥उमेनैविद्यारजसीपृथिव्याविष्णोदेवत्वंपरमस्यवित्से ॥ नतैविष्णोजाय
मानोनजातोदेवमहिम्नःपरमंतमाप ॥ उदस्तभ्रानाकमण्वंबुहंतदाधर्थप्राचींकुर्मपृथिव्याः ॥ इरा
वतीधेनुमतीहिमूतंसंयवसिनीमनुषेदरास्या ॥ वर्षस्तभ्रारोदसीविष्णवेतेदाधार्यपृथिवीमभितोमयू
खैः ॥ उरुयज्ञार्यचक्रयुरुरुलोकंजनयंतासूर्यमुपासंमग्नि ॥ दासस्यचिह्नपशिप्रस्यमायाजघ्नथुर्नराष्ट
तनाज्येषु ॥ इन्द्राविष्णुंहिनाःशंवरस्यनवपुरेनवर्तिचंभथिष्टं ॥ शतवर्चिनःसहस्रंचसाकंहथोऽर्धप्रत्य
सुरस्यवीरान् ॥ इयंमनीषाहृतीबुहंतोरुक्रमातवसावर्धयंती ॥ रेवांस्तोमंविदथैपुविष्णोपिन्वतमि
षोष्टुजनैष्विद्र ॥ वर्षदत्तेविष्णवाऽआकृणोमितनमैजुषस्वशिविष्टहव्यं ॥ वर्धतुत्वासुष्टुतयो गिरोमे
ययंपातस्वस्तिभिःसदानः ॥६॥ नूमतोदयतेसनिष्यन्योविष्णवउरुगायायदाशतं॥ प्रयःसत्राचामनंसा
यजातएतावंतनयमाविवासात् ॥ त्वंविष्णोसुमतिंविश्वजन्यामप्रयुताभेवयावोमतिदाः॥ पर्वोयथानः

सुवितस्य भूरे श्वावतः पुरुश्चंद्रस्य रायः ॥ त्रिदेवः पृथिवीमेष एतां विचक्रमे शतचक्रं समहित्वा ॥ प्रविष्णुर
स्तुतव सस्तवीयान्त्वेषं ह्यस्य स्थविंरस्य नाम ॥ विचक्रमे पृथिवीमेष एतां क्षेत्रां यविष्णुर्मनुषेदशस्य न् ॥
ध्रुवांसोऽस्य क्रीरयोजना स उरुक्षितिं सुजनिमाचकार ॥ प्रतत्तेऽअद्य शिपिविष्टनामार्यः शंसामिव
युनानि विद्वान् ॥ तं त्वां गुणामितव समर्तव्यान्क्षयं तमुस्य रजसः पराके ॥ किमिति विष्णो परिचक्ष्य
सूत्रयद्द्वं क्षेपि विष्टोऽअस्मि ॥ मावर्पोऽअस्मदपंगूह एतद्यदन्य रूपः समिथे बभूव ॥ वर्षदत्ते
क० ॥ ७ ॥ इति विष्णुसूक्तं ॥ अथ हरिसूक्तं ॥ आयां ह्यर्वाहुर्पबंधुरेष्टास्तवेदनुप्रदिवः सोम
पेयं ॥ प्रिया सखाया विमुचोपबहिंस्त्वामिमे हव्यवाहो हवन्ते ॥ आयां हि पूर्वो रतिचर्षणी रौऽअर्यऽआ
शिपु उपनो हरिभ्यां ॥ इमा हित्वा मतयः स्तोमं तष्टां इंद्रहवन्ति सख्यं जुषाणाः ॥ आनो यज्ञं न मोक्षधंस
जोषा इंद्रदेव हरिभिर्या हितूयं ॥ अहं हित्वा मतिभिर्जोहवीमिधुत प्रयाः सधमाद्रे मधूनां ॥ आचत्वा
मेनाक्षर्षणावहांतो हरी सखाया सुधुरास्वंगो ॥ धानावर्दिद्रः सर्वं नं जुषाणः सखा सख्युः शृणवद्दं नानि ॥

कुविन्मागोपांकरसेजनस्यकुविद्राजानंमधवचृजीपिन् ॥ कुविन्मऽकपिंपिवांसंसुतस्यकुविन्मेव
 स्वोऽअमृतस्यशिक्षाः ॥ आत्वाबृहंतोहरेययुजानाऽअर्वागिंद्रसधमादोवहंतु ॥ प्रथेद्विनाद्विवऽ
 चूंजंत्याताःसुसैमृष्टासोष्टृषमस्यभूराः ॥ इंद्रपिवृष्टधूतस्यचृणऽआर्यतैश्येनऽउशतेजमारं ॥ य
 स्यमदैच्यावयसिप्रेकुष्टीर्यस्यमदेऽअपगोत्राववर्थ ॥ शुनंहवेममधवानमिंद्रमस्मिन्भरेचृतंमंवाजं
 सातो ॥ शृणवंतंमुग्रमतथैसमस्तुग्रतंवृत्राणिंसंजितंधनानां ॥ ३ ॥ अयंतैऽअस्तुहृत्यतःसोम
 ऽआहरिंसिःसुतः ॥ ज्येष्ठोणइंद्रहरिंसिर्नआगह्यातिष्ठहरिंतिरथं ॥ हर्यन्ध्रषसमर्चयःसूर्यहर्यन्ध्रोच
 यः ॥ विद्वांश्चिक्त्वान्ह्यैश्ववर्धसइंद्रविश्वोऽअभिश्चियः ॥ द्यामिंद्रोहरिद्यायसंपृथिवीहरिवर्षसं ॥
 अधारयद्धरितोर्भूरिभोजनंययोरंतर्हरिश्चरत् ॥ जज्ञानोहरितोष्टृपाविश्वमासातिरोचनं ॥ हर्यश्वोह
 रितंधत्तुऽआर्यधुमावज्जंवाहोहरिं ॥ इंद्रोहर्यतंमर्जुनंवज्रंशुकैरमीहंतं ॥ अपोष्टृणोद्धरिंसिराद्रिभिःसु
 तमुद्गाहरिंसिराजत ॥ २ ॥ आर्भुद्रैरिंद्रहरिंसिर्याहिमयूरैरमभिः॥मात्वाकेचिन्मियमल्विनपाशिनोनिध

न्वेवताऽइहृन्नखादोवलंरुजःपुरादमोऽअपामजः ॥ स्यातारथस्यहयोरभिस्वरइंद्रोदृढ्वाचिदा
 रुजः॥ गंभीरौऽउदधीरिवकर्तृपुण्यसिगाइव॥ प्रसुगोपायवसंधेनवोयथाहृदंकुल्याइवाशत॥ आनस्तु
 जंर्यभरांशंनप्रतिजानते॥ वृक्षंपक्ष्मंमकीवधूनुहोद्रंसंपारणवसु॥ स्वयुरिंद्रस्वराळसिस्माद्विष्टिःस्व
 यशस्तरः॥ सवोदधानऽओजसापुरुष्टुतमवानःसुश्रवंस्तमः॥३॥ प्रतेमहेविदधेशंसिषंहरीप्रतेवन्वेव
 नुषोहृयंतमदं॥ घृतनयोहरिभिश्चाहुसेचतऽआत्वाविशंतुहरिवर्षसंगिरः॥ हरिंहियोनिमभियेसमस्व
 रन्हन्वतोहरीदिव्ययथासदः॥ आर्यपुणंतिहरिभिर्नधेनवइंद्रायशूषंहरेवंतमर्चत॥ सोऽअस्यवज्रो
 हरितोयऽआयुसोहरिर्निकामोहरिरागभस्त्योः॥ द्युम्नीसुशिश्रोहरिमन्युसायकइंद्रेनिरूपाहरितामि
 मिक्षिरे॥ दिविनेकेनुरधिधायिहृत्यतोविष्यच्चद्वज्रोहरितोनरंखा॥ तुददाहृहरिशिश्रोयऽआयुसः
 सहस्रंशोकाऽअमवद्धरिभरः॥ त्वंत्वमहर्गथाउपंस्तुतःपूर्वमिरिद्रहरिकेशयज्वमिः॥ त्वंहर्ग्यसि
 तवविश्वंमुक्त्थ्य१मसामिराधोहरिजातहृतं॥ १॥ तावज्जिणंमंदिनंस्तोम्यमदइंद्रंरथेवहतो

ह॒र्य॒ता॒हरी॒पु॒रु॒षस्य॑स्मै॒सर्व॑ना॒नि॒ह॒र्य॒त॒इ॒द्रा॒य॒सो॒मा॒ह॒र॒यो॒द॒ध॒न्वि॒रे ॥ अ॒रु॒का॒मा॒य॒ह॒र॒यो॒द॒ध॒न्वि॒रे॒स्थि॒रा॒य॒
 हि॒न्व॒न्ह॒र॒यो॒ह॒री॒त॒नू॒रा ॥ अ॒र्व॒द्भि॒र्यो॒ह॒रि॒भि॒र्जो॒ष॒मी॒य॒ते॒सो॒ऽअ॒स्य॒का॒मं॒ह॒रि॒वंत॑मा॒न॒शे ॥ ह॒रि॒श्म॒शा॒रु॒
 ह॒रि॒केश॑ऽआ॒य॒स॒स्तु॒र॒स्पे॒ये॒यो॒ह॒रि॒पा॑ऽअ॒व॒र्ध॒त ॥ अ॒र्व॒द्भि॒र्यो॒ह॒रि॒भि॒र्वा॒जि॒न॒व॒सु॒र॒ति॒वि॒श॒वा॒दु॒रि॒ता॒पा॒रि॒
 ष॒द्ध॒री ॥ सु॒वे॒व॒य॒स्य॒ह॒रि॒णी॒वि॒पे॒त॒तुः॒शि॒मे॒वा॒जा॒य॒ह॒रि॒णी॒द॒वि॒ध॒व॒तः ॥ प्र॒य॒त्न॒ते॒च॒म॒से॒म॒मृ॒ज॒द्ध॒री॒
 पी॒त्वा॒म॒द॒स्य॒ह॒र्य॒त॒स्या॑र्ध॒सः ॥ उ॒त॒स्म॒स॒द्म॒ह॒र्य॒त॒स्य॒प॒स्त्यो॒ऽर॒त्यो॒न॒वा॒जं॒ह॒रि॒वो॑ऽअ॒चि॒क्र॒द॒त् ॥ म॒ही॒चि॒
 द्वि॒धि॒ष॒णा॒ह॒र्य॒दो॒ज॒सा॒बु॒ह॒र्यो॒द॒धि॒बे॒ह॒र्य॒त॒श्चि॒दा ॥ २ ॥ आ॒रो॒द॒सी॒ह॒र्य॒मा॒णो॒म॒हि॒त्वा॒न॒व्य॒न॒व्य॒ह॒र्य॒सि॒
 म॒न्म॒नु॒प्रि॒यं ॥ प्र॒प॒स्त्य॑म॒सु॒र॒ह॒र्य॒तं॒गो॒रा॒वि॒ष्क॒धि॒ह॒र्ये॒सू॒र्या॒य ॥ आ॒त्वा॒ह॒र्य॒तं॒प्र॒यु॒जो॒ज॒न॒ना॒र॒थे॒व॒ह॒तु॒ह॒रि॒
 शि॒प्र॒मि॒द्रा॑॥ पि॒त्रा॒य॒था॒प्र॒ति॒भू॒त॒स्य॒म॒च्चो॒ह॒र्य॒न्य॒ज्ञं॒सं॒ध॒मा॒दे॒द॒शो॒णि ॥ अ॒पाः॒पूर्॒वां॒ह॒रि॒वः॒सु॒ता॒ना॒म॒थो॒ऽइ॒दं॒
 स॒र्व॒न॒के॒व॒ल॒ंते॑॥ म॒म॒द्भि॒सो॒मं॒म॒धु॒म॒न्त॑मि॒द्र॒स॒त्रा॒व॒ण॒ज्ज॒ठ॒र॑ऽआ॒व॒ष॒स्व॥ ३ ॥ इ॒ति॒द्वि॒ती॒यं॒ह॒रि॒सू॒क्तं॥ २ ॥ हि॒र॒
 ण्य॒ग॒र्भ॑सू॒क्तं॥ हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः॑स॒म॒व॒र्त॑ता॒ग्रे॒भू॒त॒स्य॒जा॒तः॒प॒ति॒रे॒क॑ऽआ॒सी॒त्॥ स॒दा॒धा॒र॒पृ॒थि॒र्वी॒द्या॒मु॒ते॒मां॒क॒स्मै

देवार्यहविषाविधेम ॥ यऽआत्सदाबलदायस्यविश्वेऽउपासतेप्रशिष्यस्येदेवाः ॥ यस्यच्छायामृत्यु-
 स्यमृत्युःकस्मैदे० ॥ यःप्राणतोनिमिषतोमहित्वैकद्राजाजगतोबभूव ॥ यद्वैशेऽअस्यद्विपदश्रतुषुपदः
 कस्मै० ॥ यस्येमेहिमवतोमहित्वायस्यसमुद्रंसयांसहाहुः ॥ यस्येमाःप्रदिशेयस्यबाहूकस्मै० ॥ ये
 नद्यौरुप्रापृथिवीचटुब्हायेनस्वःस्तमितयेननाकः ॥ योऽअंतरिक्षेरजसोविमानःकस्मै० ॥ १ ॥ यं
 क्रंदसीऽअवसातस्तमानेऽअभ्यैक्षेतामनंसारेजमाने ॥ यत्राधिसूरुदितोविभातिकस्मै० ॥ आपोह
 यद्वहतीर्विश्वमायुन्गर्भदधानाजुनर्थतीरमि ॥ ततोदेवानांसमवर्ततासुरैःकस्मै० ॥ यश्चिदापोमहिना
 पर्यपश्यदक्षंदधानाजुनर्थतीर्यज्ञं ॥ योदेवेष्वधिदेवएकऽआसीत्कस्मै० ॥ मानोहिंसीज्जनितायः
 पृथिव्यायोवादिंवसत्यधर्माजानं ॥ यश्चापश्रंद्रावंहंतीर्जजानकस्मै० ॥ प्रजापतेन० ऋक् ॥ २ ॥
 ॥ अथसौरसूक्तं ॥ उदृत्यजातवेदसंदेवंहंतिकेतवः ॥ दृशेविश्वायसूयं ॥ अपत्येतायवोयथानक्ष
 त्रायंत्यक्तुभिः ॥ सूरायविश्वचक्षसे ॥ अदृश्रमस्यकेतवोविरश्मयोजनोऽअनु ॥ आजंतोऽअग्रयो

रिचावापृथिवीयैतिसद्यः ॥ तत्सूर्यस्यदेवत्वतन्महित्वमध्याकर्तवित्तंतसंज्ञभार ॥ यदेदयुक्तहरितः
 सधस्थादाद्रात्रीवासस्तनुतेसिमस्मै ॥ तन्मित्रस्यवरुणस्याभिचक्षेसूर्योरूपंरुणतेद्योरूपस्थै ॥ अ
 नंतमन्यद्गुशेदस्यपाजःकृष्णमन्यद्वरितःसंभरति ॥ अद्यादेवाउदितसूर्यस्यनिरंहसःपिपृतानिरव
 द्यात् ॥ तन्नोमित्रोवरुणोमामहतामदितिःसिंधुःपृथिवीउतद्यौः ॥ ३ ॥ इंद्रमित्रवरुणमग्निमाहुर
 थोदिव्यःससुपर्णोर्गुरुत्मान् ॥ एकंसद्विप्राबहुधावदंत्यग्निंयमंमानरिश्वानमाहुः ॥ कृष्णंनियानं
 हरयःसुपर्णाऽअपोवसानादिवमुत्पन्तंति ॥ तऽआर्वहत्रन्तसदनाहृतस्यादिद्रुतेनपृथिवीव्युद्यते ॥ हं
 सःशुचिषदसुरंतरिक्षसद्भोतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ॥ नृषद्वरसदृतसद्वथोमसद्वज्रजगोजाकृतजा
 ऽअद्विजाऽकृतं ॥ यस्वासूर्यस्वर्भानुस्तमसार्विध्यदामुरः ॥ अक्षेत्रविद्यथामुग्धोभुवन्नान्यदीधयुः
 ॥ ४ ॥ यद्वयसूर्यंब्रवोनागाउद्यन्मित्रायवरुणायसत्यं ॥ वयदेवत्रादितेस्यामतवप्रियासोऽअर्यमन्
 गुणंतः ॥ उतसूर्योबृहदूर्ध्वंश्रेतुरुविश्वानिममानुषाणां ॥ समोदिवाददृशेरोचमानःकत्वांकू

तः सुकृतः कर्तुमिर्भूत् ॥ ससूर्यप्रतिपुरो न उद्गातुमिः स्तोममिरेत शेषिरेवैः ॥ प्रनोमित्राय वरुणा यवो
चो नांगसोऽअर्यम्णोऽअग्रये च ॥ विनः सहस्रैशुरुधोरदं तृतावा नेवरुणो मित्रोऽअग्निः ॥ यच्छतुचं
द्राऽऽपमं नोऽअर्कमानः कामपूतुस्तवानाः ॥ ५ ॥ उद्धेति सुभगो विश्वचक्षुः सार्धारणः सूर्यो मा
नुषाणां ॥ चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्य देवश्च मेव यः समविष्युक्तमसि ॥ उद्धेति प्रसवीता जनानां महान्केतु
रणवः सूर्यस्य ॥ समानं चक्रं पर्याविष्टं सन्येदं तशो वहति ध्रुवयुक्तः ॥ विभ्राजमान उपसा मुपस्थान्द्रै मे
रुदं त्यनुमुद्यमानः ॥ एष मे देवः स विता चच्छंदयः समानं न प्रमिता तिधाम ॥ दिवोरुक्म उरुचक्षा उदेति
दूरे अर्थस्तरणि भ्राजमानः ॥ नूनं जनाः सूर्येण प्रसूताऽअयन्नर्थानि कृण्वन्नपसि ॥ यत्राचक्रुर्मता
गा तुमस्मै श्वेनो नदी यन्नन्वेति पाथः ॥ ६ ॥ उदुत्यद्दर्शतं वपुर्दिवंति प्रतिवहरे ॥ यदीमाशुर्वहति देव एत
शो विश्वस्मै चक्षुः सेऽअरं ॥ शीर्ष्णः शीर्ष्णो जगत्स्तस्थुषस्पतिं समग्रा विश्वमारजः ॥ सप्तस्वसारः सु
विनाय सूर्यवहति हरितोरथे ॥ तच्चक्षुर्देवहितं शक्रमुच्चरत् ॥ पश्यैमशरदः शतं जीविमशरदः शनं ॥ ब

ॐ हौऽअसि सूर्य बळादित्यमहौऽअसि ॥ महस्ते सतोर्महिमापनस्यते द्वादिवमहौऽअसि ॥ बद्सूर्यश्र
वसामहौऽअसि सत्रादेवमहौऽअसि ॥ मन्हादेवानामसूर्यः पुरोहितो विभुज्योतिरदाभ्यं ॥ ७ ॥ नमो
मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तद्गतं संपर्यत ॥ दुरेदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत ॥
सामांसत्योक्तिः परिपातु विश्वतोद्यावाचय त्रत न न्रहा निच ॥ विश्वमन्यन्निविशते ये देजंति विश्वाहा
पो विश्वाहो देति सूर्यः ॥ नेतेऽअदेवः प्रदिवो निवासते ये देतशेभिः पतरैरथर्यसि ॥ प्राचीनमन्यदनुवर्तते
रजउदन्ये न ज्योतिषायासि सूर्य ॥ येन सूर्यज्योतिषावाधे सेतमोजगच्छ विश्वमुदियर्षिमानुना ॥ तेना
स्मद्विश्वामनिगमनाहुतिमपार्मो वामपदुःष्वप्यसुर्व ॥ विश्वस्य हि प्रेपितोरक्षसि त्रतमहेळ्यन्नुच्चरसि
स्वधाऽअनु ॥ यदद्यत्वा सूर्यो पृज्जवां महतं ने दिवाऽअनुमंसीरतक्रतुं ॥ तं नोद्यावापृथिवी तन्नऽआपुंइ
द्रः शृण्वंतु मरुतो हवंचः ॥ माशने भूमसूर्यस्य सदृशि सद्रंजीवतो जरणामशीमहि ॥ ८ ॥ विश्वाहा
त्वासुभनसः सुचक्षंसः प्रजावतोऽअनमीवाऽअनांगसः ॥ उद्यंतं त्वामित्रमहोदिवे दिवे ज्योगजीवाः प्रानि

पश्येमसूर्य ॥ महिज्योतिर्बिभ्रतं त्वाविचक्षणं भास्वतं च क्षुब्धे च क्षुब्धे मयः ॥ आरोहंतं बृहत्तः पाजं सूर्ये
 रिवयं जीवाः प्रतिपश्येम सूर्य ॥ यस्य ते विश्वा भवन्ति केतुनामचेरि ते निचर्चि विशन्तेऽअक्तुभिः ॥ अ-
 नागास्त्वेन हरिकेशसूयाह्ना नो वस्यंसावस्य सो दिहि ॥ शनो भव चक्षसां शनोऽअह्ना शं भानुना शं हि
 माशं घृणेन ॥ यथाशमध्वं छमसं दुरोणे तत्सं द्युद्रवि ण धेहि चित्रं ॥ अस्माकं देवा उभययजन्मने
 शर्मयच्छत द्विपदे चतुष्पदे ॥ अदत्पि बर्दुर्जर्यमानमाशितं तदस्मेशं योरपो दधातन ॥ यद्वै देवाश्च
 कुमजिह्वया गुरुमनसो वा प्रयुती देवहेळनं ॥ अरावा योनोऽअमिदुच्छुना ये तस्मिन् तदेनो वसवो
 निधेतन ॥ १ ॥ सूर्यो नो दिवस्पातु वानोऽअंतरिक्षात् ॥ अग्निर्नः पार्थिवेभ्यः ॥ जोषास
 वित्त्यस्य ते हरः शतं सवैऽअर्हति ॥ ग्राहि नो दिद्युतः पतंत्याः ॥ चक्षुर्नो देवः स विता चक्षुर्न उत पर्व
 तः ॥ चक्षुर्धाता दधातुनः ॥ चक्षुर्नो धिहि चक्षुषि क्षुर्विख्येत नूभ्यः ॥ संचेदं विच पश्येम ॥
 सुसंदर्शत्वा वयं प्रतिपश्येम सूर्य ॥ विपश्येम नृचक्षंसः ॥ १० ॥ विश्राद्धुहति पबतु सोम्यं म

ध्वायुर्दधद्याज्ञपतावविह्वनं ॥ वातजतूतोयोऽभिरक्षंति तन्नाप्रजाः पुष्यपुरुधा विराजति ॥ विभ्राद्बु
हत्सुभृतं वाजसातमं धर्मन्दिबो धरुणे सत्यमर्पितं ॥ अमित्रहातं त्रहादस्युद्धतं मज्योतिर्जज्ञेऽअमूरहा
संपल्लहा ॥ इदं श्रेष्ठं ज्योतिषं ज्योतिरुत्तमं विश्वजिद्धं न जिदुच्यते बृहत् ॥ विश्वभ्राड्भ्राजो महिसूर्यो ह
शतुरुपमे स हऽओजोऽअच्युतं ॥ विभ्राजन्ज्योतिपास्व१ रगच्छोरोचनं दिवः ॥ येनेमा विश्वाभुवना
न्याभृता विश्वकर्मणा विश्वदेव्यावता ॥ १ ॥ आर्यगैः पृश्निरक्रमीदसं दग्मातरं पुः ॥ पितरं च प्रयन्तस्वः ॥
अंतश्चरतिरोचनास्य प्राणादपानती ॥ व्यत्यन्महिपो दिवं ॥ त्रिशद्धाम विराजति वाक्पतंगायधीयते
प्रतिवस्तोरहद्युभिः ॥ १ २ ॥ ऋतं च सत्यं चाभीहदात्तपसो धर्यजायत ॥ ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽ
अर्णवः ॥ समुद्रादर्णवा दधि संवत्सरोऽअजायत ॥ अहोरात्राणि विदधद्दिश्वस्य मिषतो वशी ॥ सूर्या च
द्रमसौ धाता र्यथा पूर्वमकल्पयत् ॥ दिवं च पृथिवीं चांतरिक्षमथोऽस्वः ॥ सविता पु० ॥ १ ३ ॥ ॥ अथ ब्रह्म
णस्पति सूक्तं ॥ सोमानं स्वरं कृणुद्दिब्रह्मणस्पते ॥ कक्षीवंतं यऽऔशिजः ॥ योरेवान्योऽअमीव हावमु

विपुष्टिवर्धनः॥ सनः सिषक्तुयस्तुरः॥ मानः शंसोऽरंरुषो धूर्तिः प्रणङ्मर्त्यस्य॥ रक्षाणो ब्रह्मणस्पते॥ सघा
 वीरो नरिष्यति यमिन्द्रो ब्रह्मणस्पतिः॥ सोमो हि नोति मर्त्यं॥ त्वं ब्रह्मणस्पते सोम इन्द्रश्च मर्त्यं॥ दक्षिणा
 पात्वं हंसः॥ १ ॥ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयंतस्त्वे गहे॥ उपप्रप्य तु मरुतः सुदानं वृद्धं प्राशू सर्वसचा॥ त्वा
 मिद्धि संहसस्पुत्रमर्त्य उपब्रूते धने हिते॥ सुवीर्यमरुतऽआस्वश्वयं दधीत यो वऽआचके॥ प्रेतु ब्रह्मणस्प
 तिः प्रदेव्येतु सुनृता॥ अच्छां वीरं नर्यं पंक्तिराधं देवाय ज्ञानं धेतु नः॥ यो वायते ददाति स नरं वसुसधत्ते
 अक्षिति श्रवः॥ तस्मा इच्छां सुवीरामाय जा महे सुप्रतूर्ति मने हंसं॥ प्रननं ब्रह्मणस्पतिर्मत्रं वदत्युक्थ्यं॥
 यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रोऽअर्यया देवा ओकांसि चक्रिरे॥ २ ॥ तमिद्धाचे माविदथे पुशं भुवं मंत्रं देवा अ
 ने हंसं॥ इमां च वाचं प्रतिहृथानरो विश्वे द्वा मावोऽअभवत्॥ को देवयंतं मभ्वज्जनं को वृक्तं हिंवं
 प्रमदाश्वान्पुस्त्यामिरस्थितां तृवीवत्क्षयं दधे॥ उपसृजं प्रचीतं हंति राज्ञिर्मथे चित्सुक्षितिं दधे नास्य
 वृत्तिर्नरुतामहाधनेनाभौऽअस्ति वृज्जिणः॥ ३ ॥ गुणानां त्वा० क०॥ १ ॥ देवाश्चित्तेऽअसुर्यं प्रचे

तसो बृहस्पतेयज्ञियं भागमानशुः ॥ उखाईवसूयोज्योतिषामुहो विश्वेषामिज्जनिता ब्रह्मणामसि ॥
 आविवाध्यापरिराप्स्तमांसि च ज्योतिष्मन्तर्यमृतस्य तिष्ठसि ॥ बृहस्पतेभीमममित्रदंभं न रक्षो हणं
 गोत्रमिदं स्वाविदं ॥ सुनीतिभिर्नयसि त्रायसे जनयस्तुभ्यं दाशा ज्ञतमं होऽअश्नवत् ॥ ब्रह्मद्विषस्त
 पेनोमन्युमीरसि बृहस्पते महिततैमहि खनं ॥ न तमं हो न दुर्दितं कुतश्च न नारातयस्ति तिरु न हं या विनः ॥
 विश्वा इदं स्मात्स्वरसो विबाधसे यं गुणो पारक्षसि ब्रह्मणस्पते ॥ ४ ॥ त्वनो गोपाः पथि कर्हं च क्षणस्तवे
 व्रतार्थमतिभिर्जरा महे ॥ बृहस्पते योनोऽअमिह रोदधे स्वातं मर्म तं दुच्छुना हरस्वती ॥ उत वा यो
 नो मर्चया दना गसो राती वामर्तः सानुको वृकः ॥ बृहस्पतेऽअपतं वतं या पथः सुगं नोऽअस्यै देव वीतये क
 थि ॥ त्रातारं त्वा तनूनां हवामहे वस्पर्त रधि वृत्तारं मस्मयु ॥ बृहस्पते देव निदो नि बर्हय मादुरे वा उत्तरं
 सुभ्रमुर्बंशान् ॥ त्वया वयं सुवृधा ब्रह्मणस्पते स्पाही वसुमनुष्या दं दीमहि ॥ यानो दूरे लुब्धितो याऽ
 अगतयो मिसंति जंभया ताऽअनुमसः ॥ त्वया वयं मुत्तमं धीमहे वयो बृहस्पते पथिणा सस्त्रिना युजा ॥

मानोदुःशंसोऽअभिदिप्सुरीशतुमशंतामतिभिस्तारिषीमहि ॥ ५ ॥ अनानुदोदंषभोजगिराहं
 निष्टसाशत्रुपुननासुसासहिः ॥ असिसत्यऽऽर्कणयाब्रह्मणस्पतउग्रस्यचिह्नमितावीकुहर्विणः ॥ अदेवे
 रेवस्यशरतः ॥ मरेषुहव्योनमसोपसद्योगंतावाजेषुसनिताधनैधन ॥ विश्वाइदुर्योअमिदिप्स्वो
 इमृधोबृहस्पतिर्विववह्ररथोऽइव ॥ तेजिष्ठयातपनीरुससंस्तपथेत्वानिदेदधिरेहृष्टवीर्य ॥ आवि
 स्तर्कष्वयदसंस्तउक्थ्य ॥ बृहस्पतेविपरिरापोऽअर्दय ॥ बृहस्पतेअति० ऋक् १ ॥ ६ ॥ मानःस्ते
 नेभ्योयेऽअभिद्रुहस्पदेनिगमिणोरिपवोर्नैषुजागधुः ॥ आदेवानामोहतेविवयोहृदिबृहस्पतेनपुःसा
 स्मोविदुः ॥ विश्वेभ्योहित्वाभुवनेभ्यस्पस्तिवृष्टानत्साम्रःसाम्रःकविः ॥ सऽऽर्कणचिह्नणयाब्रह्मण
 स्पनिद्रुहोहंतामहऽऽकृतस्यथतरि ॥ तर्वश्रियेव्यजिहीतपर्वतोर्गवांनमुदसृजोयदगिरः ॥ इद्रेण
 युजातमसापरीक्षितंबृहस्पतेनिरपामौब्जोऽअर्णव ॥ ब्रह्मणस्पतेत्वमस्ययुतासूक्तस्यवोधितनयंच

जिन्व ॥ विश्वंतद्भद्रं यदवतिदेवाबूहद्वदेमविदथेऽसुतीराः ॥ ७ ॥ सेमामविद्धुडिप्रभृति यद्दशिवेष्यावि
धेमनवयामहागिरा ॥ यथानोमीद्वान्स्तवतेसखातवबृहस्पतेसीषधः सोतनोमति ॥ योनं त्वान्यन
मरुयोजसोतार्दर्मन्युनाशं बराणि वि ॥ प्राच्यावयदच्युताब्रह्मणस्पतिराचाविशदधुमंतं विपर्वतं ॥
तद्देवानां दिवतमायकत्वमश्रं भन्दृब्धहाव्रंदंतवीक्रिता ॥ उद्गाअजिदमिन्द्रह्मणावल्लमगूहत्तमोवयच
क्षयस्त्वः ॥ अश्मांस्यमवतं ब्रह्मणस्पतिर्मधुधारमभियमोजसातृणत् ॥ तमेव विश्वेषपिरेस्वर्दृशो ब
हुसाकंसि सचिरुत्सं मुद्रिणं ॥ सनाताकाचिद्भुवंनामवीत्वा माद्भिः शरद्भिर्दुरौ वरंतवः ॥ अयंतं ताच
रतोऽअन्यदैन्यदिचाचकारं वयुनाब्रह्मणस्पतिः ॥ ८ ॥ अभिनक्षतोऽअभियेतमानशुनिधिप
णीनां परमंगुहाहितं ॥ ते विद्वांसः प्रतिचक्ष्यान्तपुनर्यतेऽआयन्तद्दुदीयुराविशं ॥ ऋतावानः प्रति
चक्ष्यान्तपुनरात्ताऽआतस्थुः क्रवयो महस्पथः ॥ ते बाहुभ्यां धमितमग्निमश्मनिनकिः षोऽअस्यर
णोजद्भुर्हितं ॥ ऋतज्येन क्षिप्रेण ब्रह्मणस्पतिर्धत्तवद्विप्रतदं श्रोति धन्वना ॥ तस्य साध्वीरिषवो या

भिरस्थितिचक्षुःसोदृशयेकर्णयोः ॥ ससंनयःसर्विनयःपुरोहितःससुष्टुतःसयुधिब्रह्मणस्पतिः ॥
 चाक्षमोयद्वाजंभरतेमतीधनादित्सूर्यस्तपतितप्यनुर्ध्या ॥ विभुप्रभुप्रथममेहनवानोबृहस्पतैःसुविद
 त्राणिराध्या ॥ इमासानानिवेन्यस्यवाजिनोयेनजनउभयेभुंजतेविशः ॥ ९ ॥ योर्वरेष्टजनेविश्व
 थाविभुर्मेहामुरण्वःशर्वसावर्क्षिय ॥ सदेवोऽदेवान्प्रातिपप्रथेपृथुविश्वेदुतापरिभूर्ब्रह्मणस्पतिः ॥ विश्व
 सत्यंभयवानायुवोरिदार्पश्चनप्रभिनंतिब्रह्मण ॥ अच्छेदाब्रह्मणस्पतीहविर्नोभ्युजैववाजिनाजिगातं ॥
 उतार्शश्चाऽअनुश्रुण्वंतिवह्नयःसभेयोविप्रोभरतेमतीधना ॥ वीळ्वेष्टाऽअनुवर्शऽऽकृणमादृदिःसहवाजी
 समिथेब्रह्म ॥ ब्रह्मणस्पतेरसवद्यथावृशंसत्योमन्युर्महिकर्मकरिष्यतः ॥ योगाउदाजतसदिवेविचामज
 न्महीवरीतिःशर्वसासरुदृथक् ॥ ब्रह्मणस्पतेसुयमस्यविश्वहारायःस्यामरुध्योदेवयस्वतः ॥ वीरेषुवीरौड
 पृथग्निधनुस्त्वयदीशानोब्रह्मणावेषिमेहव ॥ ब्रह्मणस्पतेत्व ० १ ० ॥ इंधानोऽअग्निर्वनवदनुष्यतःकृतब्रह्मा
 शशुवद्गतहव्यइत् ॥ जातेनजातमतिसमसंस्तयेयंयुजैकृणुतेब्रह्मणस्पतिः ॥ वीरेभिर्वीरान्वनवदनु

व्यतो गोभीरधिपप्रथद्वोधतिमना ॥ लोकं च तस्य तनयं च वर्धते यं यु० ॥ सिं धुर्न क्षोदः शिर्मा वाँ ऽ क
 धाय तो दृषे व वधीरमि वृष्ट चो जसा ॥ अग्नेरिव प्रसितिर्ना हवर्त वेयं यु० ॥ तस्माँ ऽ अर्षति दिव्या अं
 स श्वतः ससर्त्तमिः प्रथमो गोपुंगच्छति ॥ अग्निमृष्टत विषिहृत्यो जसा यं यु० ॥ तस्मा इद्विश्वे धुनयन्तं सिं
 धवोँ च्छिद्रा शर्मदधिरेपु रूणि ॥ देवानाँ सुम्ने सुभगः स रूधते यं यु० ॥ ११ ॥ ऋजुरिच्छं सो व न व ह नु ष्य
 तो दे व यन्नि दे दे व यन्त मभ्यं सत् ॥ सुप्रावीरिद्वे न वत्पटु सुदृष्टं यज्वे दये जयो विमजाति भोजनं ॥ यजं स्व
 वीरुप्रविहिमनाय तो भद्रं मनः कृणुष्व च त्रतूय ॥ हविष्कृणुष्व सुभगो यथा सं सि ब्रह्मण स्पते रवः ऽ आ
 वृणी महे ॥ स इज्जने न स विशास जन्मना स पुत्रैर्वीजं स ते धनानूभिः ॥ देवानां यः पितरं मा विवांस
 ति श्रद्धामना हविषा ब्रह्मण स्पतिं ॥ यो ऽ अस्मै हव्यै र्यत वद्भिरविधत्प्रतं प्राचानयति ब्रह्मण स्पतिः ॥
 उरु ष्यती मंह सो रक्षती रिपोँ ह्योँ श्वि दस्मा उरु च क्रि द्रुतः ॥ १२ ॥ तमुज्येष्ठं नमसा हविभिः सुशेवं
 ब्रह्मण स्पतिं गृणीये ॥ इन्द्रं श्लोको म ह्वि देव्यः सिष कु यो ब्रह्मणो देव कृत स्य राजा ॥ इयं वाँ ब्रह्मण

स्पतेसुवृत्तिर्ब्रह्मद्रागवृज्जिणेऽअकारि ॥ अविष्टं धियो जिगृत्तं पुरंधीर्जस्तमयो वनुषामरातीः ॥
 चत्तोऽतश्च तामुतः सर्वा भूणान्यारूपी ॥ अराय्यं ब्रह्म स्पतेतीक्ष्णं शृंगोद्वपान्निहि ॥ अदोयद्दारु
 हवते सिंधोः पारेऽअं पुरुषं ॥ तदारं सस्वदुर्दणो तेन गच्छ परस्तरं ॥ अश्रियेन विराजति सूर्यो
 येन विराजति ॥ विराड्येन विराजति तेनास्मान् ब्रह्मण स्पते विराज समदंकुरु ॥ १३ ॥ इति ब्रह्म
 णस्पति सूक्तं ॥ अथ देवी सूक्तं ॥ अंहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वेदेवैः ॥ अहं मित्रा
 वरुणो माविमम्यहं भिद्राग्रीऽअहमश्विनो मा ॥ अहं सोमं माह न संविमम्यहं त्वष्टारमुत पयणं भगं ॥
 अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्रान्वयेऽयं जमानाय सुन्वते ॥ अहं राप्तीं संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथ
 मायज्ञियानां ॥ तामादिवाव्यं दधुः पुरुत्रा मा रैस्थान्नां मूर्यविशयती ॥ मया सोऽअर्चनमस्ति
 यो विपश्यति यः प्राणिन्यैर्दृशुणोत्पुक्तं ॥ अमंतवो मांत उपक्षियंति श्रुधि श्रुतं श्रद्धिवं ते वदामि ॥
 अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवैर्मिरुतमानुषेभिः ॥ यं कामयेतंतं मुयं कृणोमि तं ब्रह्माणंतं मया पितं सु

मेधां ॥ १ ॥ अहंरुद्रायधनुरातनोमिब्रह्मद्विपेशवेहंतवाले ॥ अहंजनायसमदंरुणोम्युहंद्यावा
 पृथिवीऽआविवेश ॥ अहंसुवेपितरमस्यमूर्धन्ममयोनैरुप्स्व ॥ ततोवितिष्ठेसुवनानुविश्वो
 तामूच्यावूर्ध्मणोपस्पृशामि ॥ अहमेववर्तद्वप्रवाभ्यारसंभाणाभुवंनानिविश्वांपरोदिवापरएनाष्टि
 व्यैतावतीमहिनासंबभूव ॥ २ ॥ इति.देवी ॥ अथत्रिशदेवाः ॥ नमोमहद्भ्योनमोऽअर्भकेभ्यो
 नमोयुर्वभ्योनमऽआशिनेभ्यः ॥ यजामदेवान्यदिशक्रवाममाज्यायंसःशंसमावृक्षिदेवाः ॥ १ ॥ मम
 तुनःपरिज्मावसहाममत्तुवातोऽअपांघर्षणवान् ॥ शिशोतमिन्द्रापर्वतायुवंनस्तन्नोविश्वेवरिवस्यंतु
 देवाः ॥ २ ॥ कथानैऽअमेशुचर्यंतऽआयोर्ददाशुर्वीजैमिराशुपाणाः ॥ उभेयत्तोकेतनयेदधा
 नाऽकृतस्यसामंन्नणयंतदेवाः ॥ ३ ॥ युज्ञेनयुज्ञ ० ॥ ४ ॥ परांशुआऽअयासोयव्यासोधारण्येव
 मरुतोमिमिधुः ॥ नरोदसीऽअपनुदंतघोरानुषंतवृधंसरव्यायदेवाः ॥ ५ ॥ त्वेरायदंद्रतोशतभाः
 प्रणेतारःकस्यचिद्वनायोः ॥ तेषुणोमरुतोमृळयंतयेस्मापुरागांतयंतविदेवाः ॥ ६ ॥ उमाशंसान

र्यामामविद्यामुत्तमामुतीऽअवसासचेतां ॥ मूर्तिचिदर्थःसुदास्तराश्रेषामदंतदपथेमदेवाः ॥ ७ ॥
 उत्तमैर्मरुतोवृद्धसेनाःस्मद्रोदसीसर्मनसःसदंतु ॥ पृषदश्वासोवनयोनरथारिशदसोमित्रयुजोनदे
 वाः ॥ ८ ॥ तवस्यामपुरुषीरस्यशर्मन्मुरुहं संस्यवरुणप्रणेनः ॥ यूर्ध्वनःपुत्राऽअदितेरदवथाऽअभिक्ष
 मध्वंयुज्यायेदेवाः ॥ ९ ॥ दिवश्चिदातैरुचयंतरोकाउषोर्विमातीरनुमासिपूर्वाः ॥ अपोयदंयउशश्च
 ग्वर्नेषुहोतुर्मद्रस्यपुनर्थतेदेवाः ॥ १० ॥ २ ॥ शंसोमहामिंद्रयस्मिन्विश्वाऽआकृष्टयःसोमपाःकाममव्यन ॥
 यंसुकर्तुधिषणैविश्वतष्टुचुर्नवृत्राणांजनयंतदेवाः ॥ ११ ॥ त्रिरुत्तमादूणशारेचनानित्रयोरानृत्यसुर
 स्यवीराः ॥ ऋतावानइषिरादूळमांसस्त्रिरादिवोविदथैस्तुदेवाः ॥ १२ ॥ नार्पाभूतनवोतीतृषामानिःशस्ता
 ऽऋमवोयज्ञोऽअस्मिन् ॥ सर्भिर्द्रेणमदंयुसंमरुद्भिःसंराजंमीरत्नधेयांयदेवाः ॥ १३ ॥ अग्रतीतो जयति सं
 धनां निप्रतिजन्यान्युतयासजन्या ॥ अवस्यवेयोवरिवःकृणोर्निब्रह्मणेराजातमंवतिदेवाः ॥ १४ ॥ कोव
 खातावसवःकोवहृताद्यावाभूमीऽअदिनेत्रासीथानः ॥ सहीयसोवरुणमित्रमर्तात्कोवोव्वरेवरिवोधाति

मन्युविशैर्दृष्टेमानुपीर्याः प्राहि नो मन्यो तपसा सजोपाः ॥ अमीहि मन्यो तव सस्तर्वायान्तपसा युजा
विजहि शत्रून् ॥ अमित्रहा वत्रहा दस्युहा च विश्वावसु न्याभरा त्वनः ॥ त्वं हि मन्योऽअभिभूयो जाः
स्वयं भूर्भामोऽअभिमातिप्राहः ॥ विश्वचर्षिणिः सङ्हरिः सहावानुस्मास्वोजः घृतनासुधेहि ॥ अभागः
सन्नपपरेतो अस्मितवक्त्रा तविषस्य प्रचेतः ॥ तं त्वां मन्योऽअकतुर्जिह्वा हं स्वातनूर्बल देयाय मेहि ॥
अयं ते अस्म्युपमेह्यर्वाङ्ग्रतीचीनः सङ्घरे विश्वधायः ॥ मन्यो वज्रिन् अभिमावदस्व हनो वदस्यै रूतवो
व्यापेः ॥ अभिमेहि दक्षिणतो भवा मेघा वृत्राणि जघनावभूरि ॥ जुहोमि ते धरुणं मध्वोऽअग्रमुसाउपां
शुभ्रं थमार्पिवाव ॥ १ ॥ त्वया मन्यो सरथं मारुजं तोहर्षमाणसो धृपितामरुतः ॥ त्रिमेषवऽआयुधा
मंशि शानाऽअभिप्रथं तु नरोऽअमि रूपाः ॥ अग्निं वमन्यो त्विषितः स हस्वसेना नीर्नः सङ्घरे हतर्धे ॥
हत्वा यशश्च न्विभजस्व वेदऽओजो मिमानो विमृधो नुदस्व ॥ सहस्व मन्योऽअभिमातिमस्मे रुजन्मणन्प्र
मूणन्मे हि शत्रून् ॥ उग्रं ते पाजो नन्वारु रूध्रे वशीवशनयस एकजत्वं ॥ एको बहूनामसि मन्यवील्लितो वि

शंविशंयुधयेसंशिशायि ॥ अहंतरुक्त्वयायुजावयंयुमंतपोर्षेविजयायंरुणमहे ॥ विजेषकृदिंद्रइवा
 नवब्रवोर्हस्माकमन्योऽअधिपामवेह ॥ प्रियंतेनामसहुरेणीमसि विद्यातमुत्संयतऽआवभूथ ॥ आ
 मृत्यासहजावज्जसायकसहोविसर्घ्यमिमनूत्तरं ॥ कर्त्तानोमन्योसहमेद्येधिमहाधनस्यपुरुहूतसं
 ५अपनिलयंतां ॥ २ ॥ ॥ अथसरस्वनीसूक्तं ॥ मियंदधानाहृदयेषुशत्रवःपराजितासो
 यंदाशुषे ॥ याशश्वंतमाचखादावसंपणितातेदात्राणितविषासंरस्वति ॥ इयमददाद्रसममृणचयुर्तदिवोदासंवधुश्वा
 जत्सानुगिरीणांविषेर्भिरुर्मिभिः ॥ पारावतुघ्नीमवसेसुवृक्तिभिःसरस्वनीमार्बिवासेमघोतिभिः ॥
 सरस्वतिदेवनिद्रोनिर्बह्यप्रजांविश्वस्यबृसंयस्यमायिनः ॥ उतक्षितिभ्योवनीरार्बिदोविषमेभ्योऽअ
 खोवाजिनीवति ॥ प्रणोदेवीसरस्वतीवाजेभिर्वाजिनीवती ॥ धीनामविज्यवतु ॥ यस्त्वादेविसर
 स्वत्युपब्रूतेधनेहिते ॥ इंद्रंनवृत्रतूर्य ॥ १ ॥ त्वदेविसरस्वत्यवाजेषुवाजिनि ॥ रदापुषेवनःसर्नि ॥

॥ तृ० सर० सू० ॥ पावकानः सरस्वतीवाजैः सिर्वाजिनीवती ॥ यज्ञं बहुधिया वसुः ॥ चोदयित्री सु
 नृतानां चेतती सुमतीनां ॥ यज्ञं देधे सरस्वती ॥ महोऽअर्णः सरस्वती प्रवेतयति केतुनां ॥ धियो वि
 श्वा विराजति ॥ १ ॥ अंवि तमे न दीत मे देवित मे सरस्वति ॥ अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्ति मं बनस्क
 धि ॥ त्वे विश्वा सरस्वति श्रिता यैः पि देव्यां शूनहोत्रे पुमस्व प्रजादे विदिदि दिढनः ॥ इमा ब्रह्म सरस्वति जुष
 स्व वाजिनीवति ॥ यत्ने मन्म गृत्स मदाऽऽकृतावरि प्रिया देवेषु जुह्वति ॥ २ ॥ यागुं गूर्याभिनीवालो
 याराकाया सरस्वती ॥ इंद्राणी मंह्व ऊतये वरुणानीं स्वस्वये ॥ ३ ॥ सरस्वती देवयंतो हवन्ते सरस्वती
 मध्वरेतायमानि ॥ सरस्वती सुकृतोऽअव्हयंत सरस्वती दाशुषे वार्थदात् ॥ सरस्वति या सरथं ययार्थस्व
 धाभिर्देवि पितृभिर्मदनी ॥ आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयस्वानमीवा इपऽअर्धे ह्यस्मे ॥ सरस्वतीयां
 पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः ॥ सहस्रार्धमिच्छोऽअत्र मांगरायस्पोषं यजमाने पुधेहि ॥ १ ॥
 चत्वारि वाक्प० ॥ १ ॥ ॥ अथ बृहस्पति सूक्तं ॥ अनुवार्णं हृपमं मद्रिजं बृहस्पतिं वर्धयान व्यमर्कैः ॥

गाथान्यः सुरचो यस्य देवाऽआशु ण्वंति न वं मानस्य मर्ताः ॥ तमुत्विद्या उपवाचः स च ते स गोन यो देव यता
 मसर्जि ॥ बृहस्पतिः स ह्यंजो वरांसि विभ्वा भवत्स मृतं मातरि श्वा ॥ उपस्तुतिं न मस उद्यंति च श्लोकै र्यं स
 त्सविते व प्रबाहू ॥ अस्य कत्वा ह न्योऽयोऽ अस्ति मृगे न भीमोऽ अरुक्षस्तु विष्मान् ॥ अस्य श्लोको द्विवि
 यते ह्यिव्या मत्यो न र्यं स क्षमृ द्वि चैताः ॥ मृगाणां न ह तयो र्यं ति चे मा बृहस्पते रा हि मा यौऽ अभि द्यून् ॥ ये
 त्व दिवोऽस्त्रि कं मन्यमानाः पापा भद्रं मुपजी र्वंति पञ्चाः ॥ न दूढ चे श् अनुद दा सि वा मं ब ह स्प ते च यं स इ ति प
 यारुं ॥ १ ॥ सु ग्रैतुः सूय र्व सो न पंथा दु नि र्थं तुः परि प्री तो न मि त्रः ॥ अ न र्वा णोऽ अभि ये च क्ष ते नो पी ह ता
 ऽ अ पो र्ण वं तो अ स्थुः ॥ सं यं स्तु भो व न यो न र्यं ति स मु द्रं न ह्र व तो रो धं च काः ॥ स वि द्यौ उ भ यं च ह्र ऽ अं त र्ब
 ह स्प ति स्तर आ पं श्रु गृ ध्रः ॥ ए वा म ह स्तु वि जा त स्तु वि ष्मा न् बृ ह स्प ति र्दृ षं मो धा यि दे वः ॥ स नः स्तु तो वी र वं
 द्वा तु गो मं द्वि द्या मं ष ह्र ज नं जी र द नुं ॥ २ ॥ आ दै व्या ह्वा णी म हे र्वां सि बृ ह स्प ति र्ना म ह ऽ आं स वा यः ॥ य था भ वे
 म मी ह्रि षेऽ अ न ग्रा यो नो दा ता र्प रा व तः पि ते व ॥ स ऽ आ नो यो निं स द तु प्र ष्ठो बृ ह स ग ति र्नि वि श्व वा रो यो ऽ आ स्ति ॥

कामोरायः सुवीर्यस्य तं दातुं तर्प्योऽति सत्त्वतोऽरिं द्यान् ॥ तमानोऽर्कममृताय जुष्टं मिमेधासुर
मृतांसः पुराजाः ॥ शुचिकंदं यजतं पस्त्यानां बृहस्पतिं प्रनर्वाणं हुवेम ॥ तं शुगमासोऽअरुषासोऽअ
श्वाबृहस्पतिं सहवाहो वहेति ॥ सहश्चिद्यस्य नीलवत्सधस्थं नभोनरूपमरुषं वसांनाः ॥ सहिशुचिः
ष्टः ॥ देवो देवस्य रोदसी जनित्री बृहस्पतिं वाद्यतुर्महित्वा ॥ दक्षाद्यां यदक्षता सखायः करद्वह्मणे सु
तरासुगाथा ॥ ३ ॥ इमां धिथं सुसशीष्णीं पितानं कुत प्रजातां बृहतीर्मन्त्रिदत् ॥ तुरीयं स्विज्जनय
द्विश्वजन्यो यास्य उक्थमिद्रा यशंसन् ॥ कुतं शंसितऽक्नुजुदीध्याना दिवस्पुत्रासोऽअसुरस्य वीराः ॥
विप्रं पदमंगिरसो दधानाय ज्ञस्य धाम प्रथमं मनंत ॥ इंसै रिव सखिभिर्वा विदद्भिरश्मन्मया निनहं नाव्यस्य
रन्तस्य सेतौ ॥ बृहस्पतिस्तमसि ज्योतिरिच्छन्नुत्साऽआकर्षिहिति सऽआवः ॥ विमिद्या पुरं शय

थेमपाचोनिस्त्रीणि साकममुदधेरकंतत ॥ बृहस्पतिरुपसंसूर्यगामर्कविवेदस्तनयन्निवद्यौः ॥ इंद्रोबलं
 रक्षितारंदुधानां करेणैव विचकतां रेण ॥ स्वेदां जिभिराशिरमिच्छमानो रौदयत्पणिमागाऽअमुष्णात् ॥
 ॥ ४ ॥ सईसत्येभिः स्वखिभिः शुचिद्विर्गोधाय संविधनैः सरददः ॥ ब्रह्मणस्पतिर्दृष्टपमिव राहव्यमस्वेद
 मिर्द्रविणं व्यानद् ॥ ते सत्ये न मनसा गोपतिं गाइयानां स इपणयंत धीमिः ॥ बृहस्पतिर्मिथोऽअवद्यपे
 मिरुदुखियाऽअसृजतस्वयुग्मिः ॥ तंवर्धयंतो मतिमिः शिवाभिः सिद्धमिव नानदतंसधस्थे ॥ बृहस्पतिं
 हृषणं गुरसातौ मरे मरेऽअनुमदे मजिणुं ॥ यदा वाजमसं न द्विश्वरूपमाद्यामरुक्षदुत्तराणि सद्रवृहस्प
 तिं हृषणं वर्धयंतो नानासंतो विभ्रं नो ज्योतिरासा ॥ सत्यामाशिपं कृणुता वयुधैः कीरिचिद्धयवथस्वेभिरे
 वैः ॥ पश्चामृधोऽअपमवंतु विश्वास्तद्रोदसी शृणुतं विश्वमिन्वे ॥ इंद्रोमह्नामह्नतो अर्णवस्य विमूर्धा
 नमभिनदर्बुदस्य ॥ अहन्नहिमरिणात्ससासिंधून् देव्यावापृथिवी प्रावतनः ॥ ५ ॥ उदमु
 लोनवयोरक्षभाणावावदतोऽअश्रियं स्येव घोषाः ॥ गिरिभ्रजो नोर्भयो मदतो बृहस्पतिं भूभ्यः ॥ ३ ॥

नावद् ॥ संगोभिरागिरसो नक्षमाणो भगवद्देवैर्दयमर्णनिनाय ॥ जनैर्मित्रो न दंपती अनक्ति बृहस्पते वा
 जया शूरि वाजौ ॥ साध्वर्याऽअतिथिर्नारिषिराः स्पर्धाः सुवर्णाऽअनवद्यरूपाः ॥ बृहस्पतिः पर्वतेभ्यो
 वितूयानिर्गाऊपेयविवस्थिविभ्यः ॥ आप्रपायन्मधुनञ्जतस्य योनिमवक्षिपन्नर्कउल्काभिबद्योः ॥
 बृहस्पतिरुद्धरक्षमनो गामूय उद्धेव वित्वच विभेद ॥ अपृज्योतिषा तमोऽअंतरिक्षा दुद्रुः शीपालमिबु
 वार्त आजत् ॥ बृहस्पतिरनुमृश्यावलस्य आभिववात् ॥ आचक्र आगाः ॥ यदावलस्य पीयतो जसु मे द्रु
 हस्पतिरयितपोभिरैकैः ॥ वृद्धिर्न जिह्वा परि विट्मादंदा विनिर्धिरैरुक्कणो दुस्त्रियाणां ॥ ६ ॥ बृहस्पतिरमेत
 हित्यदासां नाम स्वरीणां स दने गुहायत् ॥ आं डेव भित्त्वा शकुनस्य गर्भमुदुस्त्रियाः पर्वतस्य त्मना जत् ॥ अ
 श्रापि न हं मधुपर्यपश्यन्मत्स्यं नदीन उदनि क्षियंतं ॥ निष्ठलं भार च मसं न वृक्षा हृहस्पतिर्विवेणा विकृत्य ॥
 सोषामां विदत्सत् १ सोऽअग्नि सो अर्केण विवर्वाधेत मांसि ॥ बृहस्पतिर्गोविषु बोवलस्य निर्मज्जानं प
 र्बणोजमार ॥ हिमेव पर्णामुषिनावना निबृहस्पतिना कपयदुलोगाः ॥ अनानुकृत्य मपुनश्चकार या

त्सुयामासामिथउचरातः ॥ अमिश्यावंनक्षत्रेभिःपितरोद्यामपिशन् ॥ रात्र्यांतमो
 ऽअंधयुज्योतिरहन्नेहस्पतिर्भिनदिद्विदेहाः ॥ इदमकर्मनमोअश्रियायप्रःपूर्वरन्वानोनीतिबृहस्प
 तिःसहिगोभिःसोअश्वैःसवीरेभिःसनुभिर्नोवयोधात् ॥ ७ ॥ अथगोसूक्तं ॥ आगवोअ
 रमभुतमद्रमंकृन्त्सीदंतुगोष्ठेरणयत्वस्मे ॥ प्रजावंतीःपुरुषाण्डहस्पतिर्द्रायपूर्वीरुपसोदुहानाः ॥
 इंद्रोयज्वनेपृणतेचशिश्रुत्यपेदंदातिनस्वमंषायति ॥ सूर्योभूयोरयिमिदस्यवर्धयन्नभिन्नेखिल्येनि
 दंधातिदेव्युं ॥ नतानंशंतिनदंसातितस्करोनासामित्रोवप्रथिरादधर्षति ॥ देवाश्चयामिर्यजतेद
 दातिचज्योगिताभिःसचतेगोपतिःसह ॥ नताअवरिणुकंकाटोऽअश्रुतेनसंस्कृतत्रमुपयंतिताऽअ
 भि ॥ उरुगायमभयंतस्यताऽअनुगावीर्मतस्यविविचरंतियज्वनः ॥ गावोभगोगावंद्रोमेअच्छान्ता
 वःसोमंस्यप्रथमस्यसुक्षः ॥ इमायागावःसजंनासुइंद्रइच्छामीहूदामनसाचिदिंद्रं ॥ यूयंगावोभेद
 यथाकृशंचिदश्रीरंचित्कण्ठथासुप्रतीकं ॥ मद्रंगृहंरुणुथमद्रवाचोबृहद्वोवयउचयतेसमासु ॥ प्रजा

वतीःसुयवसंरिशतीःशुद्धाऽअपःसुप्रपाणेपिवतीः ॥ भावःस्तेनईशतुमावशसैःपरिवोहेतीरुद्रस्यह
 ज्याः ॥ उपेदमुपपर्वनमासुगोषूपृच्यतां ॥ उपकृषमस्यरेतस्युपैद्रतववीर्ये ॥ मातारुद्राणां० ॥
 क. १ ॥ वृचोविदंवाचमुदीरयतींविश्वाभिधीभिरुपतिष्ठमानां ॥ देवीदेवभ्यःपर्ययुर्षीगामामावृक्त
 मर्त्योदभ्रचैताः २ ॥ ॥ इतिगोसूक्तंसमाप्तम् ॥ ॥ अथप्रसवप्रतिबंधनिर्मुक्तिसूक्तं ॥ ॥ वि
 जिहीष्ववनस्पतेयोनिःसृण्वेत्याहव ॥ श्रुतंमेऽअश्विनायुवंदृक्षंसंचविचांचयः ॥ यथावतःपुष्करिणींसमिगय
 युऽकृषेयससर्वधये ॥ मायाभिरश्विनायुवंदृक्षंसंचविचांचयः ॥ यथावतःपुष्करिणींसमिगय
 तिसर्वतः॥ एवातेगर्भएजतुनिरैतुदशमास्यः॥यथावातोयथानयथामुद्रएजति ॥ एवातंदशमास्य
 सहावैहिजरायुणा ॥ दशमासान्छशयानःकुमारोअधिमातरि ॥ निरैतुजीवोऽअक्षतोजीवोजीव
 त्याअधि ॥ प्रमंदिनैपितुमदर्चतावचोयःकृष्णगर्भानिरहन्नुजिश्वा ॥ अवस्यवोवृषणंवज्रदक्षि
 णंमुरुवैतंसुखायार्यहवामहे ॥ १ ॥ ॥ अथदुःस्वप्ननाशनमंत्राः ॥ ॥ अधस्वमस्यनिर्विदेभुंजे

तश्चरेवतः ॥ उभातावस्त्रिनश्यतः ॥ अद्यानादेवसवितः प्रजावत्सावीः सौमंगं ॥ परादुःष्वभ्यंसुव ॥
विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरांसुव ॥ यद्भद्रं तन्नऽआसुव ॥ योभिराजन्युज्योवासत्वावास्वभ्रैभ्यंभी
रवेमह्यमाहं ॥ स्तेनोवायादिप्सन्तिनोवृकोवात्वंतरमाहुरुणपाद्यस्मान् ॥ यच्चगोपुटुःष्वभ्येयच्चास्मे
दुहितर्दिवः ॥ त्रितायतर्दिमावर्याष्यायपरावहनेहसोवउतयःसुउतयोवउतयः ॥ निष्कंवावाकू
णवतेस्त्रजैवादुहितर्दिवः ॥ त्रितेदुःष्वभ्यंसर्वमास्येपरिदक्षस्येनेहसोव ॥ तदन्नायतदपसेतंभाग
मुपसेदुषै ॥ त्रितार्यचद्वितायचोपोदुःष्वभ्यंवहाने ॥ यथाकुलांयथाशफंयथंऋणंसेनयामसि ॥
एवादुःष्वभ्यंसर्वमास्येसंनयामस्यने ॥ अलैष्माद्यांसनामुचाभुमानागसोवयं ॥ उपोयस्मादुःष्व
भ्यादभैष्मापतदुच्छत्वनेहसोव ॥ २ ॥ ॥ रिपुर्गघ्नसूक्तं ॥ ॥ आदित्यानामवसानूतने
नसह्नीमहिशर्मणाशंतेमेन ॥ अनागास्त्वेऽदिति त्वेतुरासंभयंज्ञदधतुश्रोपमाणाः ॥ आदित्या
सोऽअदितिर्मादयंतामित्रोअर्यमावरुणोरजिष्ठाः ॥ अस्माकंसंतुभुवनस्यगोपाःपिवंतुसोभमवसेनो

॥ अथ ॥ आदित्याविश्वे मरुतश्च विश्वे देवाश्च विश्वेऽक्वमवश्च विश्वे ॥ इंद्रोऽअग्निरश्विना तुष्टवाना यु
 धंपा ॥ १ ॥ आदित्यासो अदितयः स्याम पूर्ववत्रावसवो मरुतश्च ॥ सनैम मित्रावरुणा सनैतोम
 जातु मे नो मातर्कर्मवसवो यच्च यव्ये ॥ तुरण्यवो गिरसो नक्षत्रस्तर्देवस्य सवितुरियानाः ॥ मावो भुजे मान्य
 महान्यजत्रो विश्वे देवाः समनसो जुपंत ॥ २ ॥ अथ शंता तीयसूक्तानि ॥ ईळेद्यावापृथि
 वी पूर्वोचितयोश्चिधर्मसुरुचं यामन्निहये ॥ यामि मरेकारमंशय जिन्वथ स्तामिह पुळति भिरश्विना गतं ॥
 युवोर्दानाय सुमेरोऽअसश्च तोरथ मानस्थुर्वच संनमंतवे ॥ यामि धियो वथः कर्म जिह्येतामिह ॥ युवता
 सां दिव्यस्य प्रशासने विशाक्षयथो अमृतस्य मज्जना ॥ यामि धिनुमस्व १ पित्रथो नरतामिह ॥ यामिः प
 रिज्मातनयस्य मज्जना हि मातातुर्वतरणिर्विसूर्यति ॥ यामि हि मंतुरभवद्विचक्षणस्ता ॥ यामि रंमं निवृ
 तंसितमभ्यउदंदनमैरयतं स्वदृशे ॥ यामिः कण्वं प्रसिपा संतु मावतंतामि ॥ १ ॥ यामि रंतं कंजसमानमार

णेमुज्जुंधाभिरव्यथिभिर्जिजिन्वथुः॥यामिःकर्कध्वं चजिन्वथस्ता०॥यामिःशुचार्तेधनुसांसुपंस
 दंतसंधर्ममोभ्यावतमत्रये॥यामिःदृश्रिगुपुरुकुत्समावतता०॥यामिःशर्चीभिर्दृपणापरावृजंमार्धंश्रोणं
 चक्षसएतवेकूथः॥यामिर्वर्तिकांयसिताममुचतता०॥यामिःसंधुमधुमंतमसश्रुतंवसिंदुयाभिरजराव
 जिन्वतं॥यामिःकुत्संश्रुतर्नयमावतता०॥यामिर्विशपलांधनुसार्मथव्यसहसमीळऽआजावजिन्वतं
 ॥यामिर्वशमश्व्यमेणिमावततामिरू०॥यामिःसुदानूऔशिजायवणिजेदीर्घश्रवसेमधुकोशोअक्ष
 रत्न॥कक्षीवंतस्तोतारंयामिरावतता०॥यामिःसांसोदसोन्हःपिपिन्वथुनश्चयासीरथमावतंजिबे॥या
 मिखिशोकडसियाउदाजतता०॥यामिःसूर्यपरियाथःपरावर्तमंधातारंक्षेत्रपत्येष्वावतं॥यामि
 विभ्रंप्रभरद्वाजमावतता०॥यामिर्महार्मतिथिग्वंकशोजुवंदिवोदासंशबरहत्यआवतं॥यामिःप
 भिद्येन्नसदंस्युमावतता०॥यामिर्वृत्रविपिपानमुपस्तुतंकलियाभिवित्तजनिंदुवस्यथः॥यामि
 व्यश्वमुतपृथिमावतता०॥३॥यामिनराशयवेयामिरत्रयेयामिःपुरामनवेगातुमीपथुः॥यामिः

शारीराजंतं स्युर्मरश्मयेता० ॥ याभिः पठंवाजं ठरस्य मुज्मनाग्निर्नादीदेक्षित इहो अज्मन्ना ॥ याभिः
 शर्यातमवथो महाधनेता० ॥ याभिः पत्नीर्विमदाय न्यहृदुराधवायाभिरुणीरक्षितं ॥ याभिः सुदासे ऊहयुः सु
 शूरभिषासमावर्तता० ॥ याभिः शंतातीमवधोददाशुपेभुज्युयाभिरवथोयाभिरिद्विगुं ॥ ओम्यावर्तसुभरामृतस्तु
 मंता० ॥ १४ ॥ याभिः कुशानुमसेन दुवस्यथोजेवेयाभिर्यूनोऽवर्तमावर्तं ॥ मधुप्रियं भरथो यत्स रद्भ्य
 स्ता० ॥ याभिर्निर्गोषु युधं नृपाद्येक्षेत्रस्य सातातनयस्य जिन्वथः ॥ याभीरथोऽवर्तमावर्तता० ॥
 याभिः कुत्समार्जुनेयं शतं क्रतुप्रतुर्वीतिं प्रचदमीतिमावर्तं ॥ याभिर्ध्वंसंति पुरुपंतिमावर्तता० ॥ अमस्वती
 मश्विनावार्चमस्मेकृतं नोदसाह्यपणामनीपां ॥ अद्यत्येव मे निव्हयेवावुधेचनोमवतुवाजं सतौ ॥ द्युभिर
 कुभिः परिपातमस्मानिहोभिरश्विनासौमगेभिः ॥ तन्नो मित्रोव ॥ ५ ॥ ॥ शंता द्वितीयसूक्तं ॥ ॥ इदं
 तन्नमेपांसुं भिक्षेतुमर्थः ॥ आदित्यानामपूज्यं सर्वमनि ॥ अनुवर्णो ह्येपां पंथा आदित्यानां ॥ अदब्धाः

संतिपोयवःसुगेहधः॥तत्सुनःसविताभगोवरुणोमित्रोऽअर्धमा॥ शर्मयच्छतुसप्रथोयदीमहे ॥ देवेभि
 र्देव्यदिनेरिष्टमर्मन्नागहि ॥ स्मत्सुरिभिःपुरुप्रियेसुशर्मभिः ॥ तेहिपुत्रासोऽआदितेविदुर्देवांसियोतवे॥
 अंहोश्चिदुरुचर्कयोनेहसः ॥१॥ अदितिनोदिवापशुमार्दिनिर्नक्तमर्हयाः ॥ अदितिःपातंहसःसदाह
 धा ॥ उतस्यानोदिवामतिरादितिरुत्यागमत् ॥ साशंतातिमयस्करदप्रसिधः॥उतत्यदैव्याभिषजाशंनः
 करतोऽअश्विना ॥ युयुयातामितोरपोऽअपसिधः ॥ शमग्निरग्नि० ऋक् ॥ अपामीवामपसिधमप
 सेधतदुर्मति ॥ आदित्यासोयुयोतनानोऽअंहसः ॥ २ ॥ युयोताशरुमस्मदौआदित्यासउतामर्ति ॥
 ऋधग्द्वेषःऋणतविश्वेदसः ॥ तत्सुनःशर्मयच्छतादित्यायन्मुमोचति॥ एनस्वतंचिदनसःसुदानवः ॥
 योनःकश्चिद्विरिक्षितिरक्षस्त्वेनुमर्त्यः ॥ स्वैःषण्वैरिषीष्टयुर्जनः ॥ समित्तगुवर्मभवदुःशंसमर्त्यरिपुं॥
 योऽअस्मन्नादुर्हणोवाँउपहृयुः ॥ प्राक्त्रास्यनेदेवाहृत्सुजानीथमर्त्य ॥ उपहृयुचाहंयुचवसवः ॥ ३ ॥
 आशर्मपर्वतानामोतापांहणीमहे ॥ द्यावाक्षामारेअस्मद्रपस्कृतं ॥ तेनोमद्रेणशर्मणायुष्माकंनावाव

सर्वः ॥ अतिविश्वानिदुरितापिपत्तन ॥ तुचेतनायतत्सुनोदार्धीयआयुर्जीवसे ॥ आदित्यासःसुमह
सःकृणोत्तन ॥ यज्ञोहीळोवोअंतरआदित्याऽअस्तिमूळत ॥ युष्मेइहोऽअपिपत्तिसजात्ये ॥ बृहद्
रूथंमरुतदिवंत्रातारमश्विन ॥ मित्रमीमहेवरुणस्त्वये ॥ अनेहोमित्रार्यमन्त्रवद्गुरुणशंस्ये ॥ त्रिव
॥४॥ तृतीयसूक्तं ॥ उतदेवाऽअवहितदेवाउन्नयथापुनः ॥ प्रसूतऽआयुर्जीवसेतिरेतन ॥
विमौवातौवातआसिधोरापरावतः ॥ दक्षतेऽअन्यआवातुपरान्योवातुयद्रपः ॥ आवातवाहिभेषजं
विवातवाहियद्रपः ॥ त्वंहिविश्वभेषजोदेवानांदुतईयसे ॥ आत्वांगमंशानांतिभिरथोअरिष्टानांतिभिः ॥
दक्षतेभद्रमाभर्षिपरायधर्मसुवामिते ॥ त्रायतामिहोपस्पृशामसि ॥ ऋक्॥३॥ इतिशतानीयसूक्तं ॥
अथवाऽयश्वसूक्तं ॥ ॥ भद्राअग्नेर्वध्यश्वस्यसंहोवामीप्रणीतिःसुरणाउपेतयः ॥ यदींसुमित्रावि
शोऽअग्रइंधतेघृतेनाहुनोजरतेदविद्युतत् ॥ घृतमग्नेर्वध्यश्वस्यवर्धनंघृतमन्नंघृतम्वस्यमेदनं ॥ घृतेनाहु

तउर्वियाविपप्रथेसूर्यइवरोचतेसर्पिरासुतिः ॥ यत्तेमनुर्यदनीकंसुमित्रःसमीधेअग्नेतदिदंनवीयः ॥ सरे
वच्छोचसगिरोजुषस्वसवान्जदर्षिसइहश्रवोधाः ॥ यत्त्वापूर्वमीळिनोवद्व्यश्वःसमीधेअग्नेसइदंजुपस्वा ॥
सर्नःस्तिपाउतर्भवातनूपादान्रक्षस्वयद्विदतेअस्मे ॥ भवाद्युम्नीवाध्यश्वोतगोपामात्वातारीदभिर्मानि
र्जनानां ॥ शूरइवधृणुश्च्यवनःसुमित्रःप्रनवौचंवाध्यश्वस्यनाम ॥ समज्ज्वापर्वत्याइवसूनिदासावृत्रा
ण्यायाजिगेथा ॥ शूरइवधृणुश्च्यवनोजनानांत्वमग्नेपृतनायूरमिष्याः ॥ १ ॥ दीर्घतर्तुर्बृहदुक्षायमग्निःसह
स्रस्तरिःशतनीथक्रम्वा ॥ द्युमान्द्युमत्सुनृभिर्मुज्यमानःसुमित्रेर्षुदीदयोदेवयत्सु ॥ त्वेधेनुःसुदुर्वाजा
तवेदोसश्चतैवसमनासंबुधुक् ॥ त्वंनृभिर्दक्षिणावद्भिरग्नेसुमित्रेभिरिष्यसेदेवयद्भिः ॥ देवाश्चित्तेअमृता
जातवेदोमहिमान्वाध्यश्वप्रवोचन् ॥ यत्संपृच्छमानुषीर्विशआयन्त्वनृभिरजयस्त्वाद्येभिः ॥ पितेव
पुत्रमबिमरुपस्थेत्वामग्नेवद्व्यश्वःसंपर्यन् ॥ जुषाणोअस्यसमिधयुविष्टोतपूर्वाऽअवनोत्रार्धतश्चित् ॥
शश्वदग्निर्वद्व्यश्वस्यशत्रून्नुमिर्जिगायसुतसोभवद्भिः ॥ समनंचिददहश्चित्रभानोवृत्रार्धतमभिनहुच

श्रित्वा॥ अयमग्निर्वध्यस्यश्वस्यद्वज्रहसंनृकात्प्रेक्षो नर्मसोपवाक्यः॥ स नो अजामीरुतवा विजामी न भित्ति
 श्रुतार्थतो वा द्यश्व ॥२॥ ॥ कपोतसूक्तं ॥ देवाः कपोत इति यद्विच्छन्दुतो निर्वक्त्या इदमजगाम॥
 शकुनो गृहेषु ॥ अग्निर्हि विभोजुपतां हविर्नः परिहेतिः प्रक्षिणी नो हणक्तु ॥ हेतिः प्रक्षिणी नदं मात्युस्मा
 नां द्रव्यां पदं कृणुते अग्निधाने ॥ शंनो गोभ्यश्च पुरुषेभ्यश्चास्तुमानो हिंसीद्विदेवाः कपोतः॥ यदुलूको वद
 तिमो घमेतद्यत्कपोतः पदमग्नौ कृणोति॥ यस्य दतः प्रहित ए प एतत्तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे॥ अचक्र
 पोतं नुदत प्रणोदमिदं मृतः परिमानं यध्वं॥ संयोपयतो दुरिता निविश्वानुर्जं प्रपन्तापतिष्ठः॥१॥
 ॥ अथ वरुणसूक्तं ॥ ॥ नृहितैश्च न्न स हो न मन्यं वयं च नामीपतयंत आपुः॥ नेमा आपो अनिमिपंचरती
 नयेवातस्य प्रमिनंत्यभ्वं ॥ अबुधे राजा वरुणो वनस्योर्ध्वस्तूपददते पतदक्षः ॥ नीचीनां स्थुरुपरिबुध
 एषामस्मे अंतर्निहिताः कृतवः स्युः ॥ उरं हिराजा वरुणश्च कारसूर्या यं पथामन्वेत वा उ ॥ अपदे पादाग्र

ति॒धात॒वेक॒रुता॒पेव॒क्ताह॒दया॒विधि॒श्रित् ॥ श॒त॒तैरा॒जन्मि॒पजः॒सह॒स्र॒मुर्वी॒र्गभी॒रा॒मु॒मति॒ष्टेऽस्तु ॥
 बा॒धस्व॒दूरे॒निर्क॒र्तिप॒राचैः॒कृ॒नं॒चि॒दे॒नः॒प्र॒मु॒मुग्ध॒स्मत् ॥ अ॒नी॒यऽ॒क्र॒क्षा॒नि॒हि॒ता॒स॒उ॒च्चा॒न॒कु॒न्द॒दृ॒श्रे॒कु॒ह
 चि॒द्वैवै॒युः॥अ॒द॒व्या॒नि॒वरु॑ण॒स्य॒व्र॒ता॒नि॒वि॒चा॒र्क॒श॒च॒न्द्र॒मा॒न॒क्तं॒मे॒ति॥१॥त॒स्वा॒यामि॑० ऋ॒क्१॥तदि॒न्न॒क्तं
 तदि॒वाम॒स्य॒माहु॒स्त॒दयं॒केतो॑हृ॒द॒आ॒वि॒च॒टे ॥ शु॒नः॒शे॒पो॒यम॒हं॒द्रु॒भी॒तः॒सोऽ॒र॒मा॒त्रा॒जा॒वरु॑णो॒मु॒मो
 क्तु ॥ शु॒नः॒शे॒पो॒स्य॒हं॒द्रु॒मी॒त॒स्त्रि॒ज्वा॒दि॒त्यं॒द्रु॒प॒दे॒पु॒व॒द्धः ॥ अ॒वै॒न॒रा॒जा॒वरु॑णः॒स॒सृ॒ज्या॒दि॒होऽ॒अ॒द॒व्यो
 वि॒मु॒मो॒क्तु॒पा॒शान् ॥ अ॒व॒ते॒हे॒ळो॑० ऋ॒०॒उ॒दु॒न॒मं॒व॑० ऋ॒०१॥२॥ यच्चि॒द्वि॒ते॒०व॒र्ग॒द्वयं ॥४॥ अ॒तो॒वि॒श्वा
 न्य॒द्भु॒ता॒चि॒क्त्वाँ॑ऽअ॒भि॒प॒श्य॒ति ॥ कृ॒ता॒नि॒या॒च॒क॒र्त्वा ॥ स॒नो॒वि॒श्वा॒हो॑सु॒क्त॒रा॒दि॒त्यः॒सु॒प॒था॑क॒रत् ॥
 प्र॒ण॒आ॒यं॒पि॒ता॒रि॒षत्॥वि॒श्र॒द्वा॒र्पे॒हि॒र॒ण्य॒यं॒वरु॑णो॒व॒स्त॒नि॒र्णि॒जौ॥प॒रि॒स्प॒शो॒नि॒पे॒दिरे॑॥ न॒यं॒दि॒प्सं॒ति॒दि॒प्स
 वो॒न॒द्रु॒ह्वा॒णो॒ज॒ना॒नां॥न॒दे॒व॒म॒मि॒मा॒त॒यः॥उ॒त॒यो॒मा॒नु॒पे॒ष्या॒य॒शं॒श्च॒क्रे॑अ॒स॒म्या॥अ॒स्मा॒कं॒मु॒द॒रे॒ष्व॥५॥
 प॒रा॒मे॒धं॒ति॒धी॒त॒यो॒गा॒वो॒न॒ग॒व्यं॒ती॒र॒नुं ॥ इ॒च्छं॒ती॒रु॒च॒क्ष॒सं ॥ सं॒नु॒वो॑चा॒वै॒हृ॒पु॒न॒र्य॒तो॒मे॒म॒ध्वा॒मृतं ॥ ह॒तं

वक्षदसेप्रियं ॥ दर्शनविश्वदर्शतिदर्शरथमधिक्षमि ॥ एतार्जुषतमेगिरः ॥ इमेमेवरुणश्रुधीह्वम
द्याचमृळ्य ॥ त्वामवस्युराचके ॥ त्वं विश्वस्य मेधिरदिवश्चमश्चराजसि ॥ सयामनिप्रतिश्रुधि ॥ उ
दुत्तमं मुग्धिनो विपार्शमध्यमंचत ॥ अवाधमार्निजीवसे ॥ ६ ॥ द्वितीयंवरुणसूक्तं ॥ इदं कवेरोदि
त्यस्यस्वराजो विश्वानि सांत्यभ्यस्तुमहा ॥ अतियोमंद्रो यजथायदेवः सुकीर्तिमिक्षेवरुणस्यभूरः ॥ उ
तर्वन्नेसुभगांसः स्याम स्वाध्वोवरुणतुष्टुवांसः ॥ उपार्यनउषसांगोमतीनामभ्योनजरमाणा अनुद्य
त्वेतेवयो न पसूरयुयापरिजमन् ॥ प्रसीमादित्योऽअसृजद्विधूर्तं कर्तुं सिधोवरुणस्ययंति ॥ नश्राम्धंतिनविमंचं
द्वियनो धिर्येमामात्राशार्यपसः पुरक्तोः ॥ १ ॥ अपोसुम्यक्षवरुणभियंसंमत्सम्राळतावोनुमाग
माय ॥ दामेववत्सादिमुग्ध्यहेन हित्वदारेनिमिपश्चनेशे ॥ मातोवैध्वरुणयेतइष्टावेनः कृण्वंतम
सुरात्रीणंति ॥ माज्योतिपः प्रवसथानिगन्मविपूस्पर्धः शिश्रथोजीवसेनः ॥ नमः पुरातेवरुणोतनुनमु

तापरंतु विजात ब्रवाम ॥ त्वेहिकं पर्वतेन श्रितान्य प्रच्युतानि दूळमवतानि ॥ परं ऋणासावीरधुमरक्तनानि
 माहं राजन् न्यक्तेन भोजं ॥ अव्युंटा इच्छुमयं सीरुपासऽआनो जीवान् वरुणता सुशाधि ॥ यो मे राज ०
 ऋक् १ ॥ माहं भवो नो वरुण प्रियस्य भूरि दान्नऽआविदंशन मापे ॥ मारा यो राजन् सुयमादवस्थां बृहद् ॥
 ॥ २ ॥ ॥ तृतीयवरुणसूक्तं ॥ प्रसम्राजै बृहद् चार्गसी रं ब्रह्म प्रियं वरुणाय श्रुताग्रं ॥ वियोजवानं श
 मितेव च मापस्तिरपृथिवीसूर्याय ॥ वनेषु व्यै १ त रिक्षं तानवा जमवत्सु पयं उस्त्रियासु ॥ ह्रस्वुक्कुं
 वरुणो अस्व १ भिद्विस्वर्यमदधात्सोमद्रौ ॥ नीचीनवारं वरुणः कवंधं प्रसंसजरोदसीऽअंनरिक्षं ॥ तेन
 विश्वस्य मुवनस्य राजाय वं नवृष्टिर्व्युनत्तिभूमं ॥ उनत्तिभूमिं पृथिवीमुत द्याय ददुग्धं वरुणो वष्टया
 दित् ॥ समभ्रं वसतु पर्वतासस्त विपीयंतः श्रथयंत वीराः ॥ इमाम् ण्वाभुरस्य श्रुतस्य मर्द्दामायां वरु
 णस्य प्रवोचं ॥ मानेनेव तस्थिवाऽअंतरिक्षे वियोम मे पृथिवीसूर्येण ॥ १ ॥ इमाम् नुक्वितं मस्य मायां
 मर्द्ददिवस्य नकिरादधर्षं ॥ एकं यदुद्गानपुणं त्ये नीरासि चं तरिवनयः समुद्रं ॥ अर्यम्भं वरुणमिदं वास

खोयंवासदमिद्भारंवा ॥ वेशंवानित्यंवरुणारंणंवागत्सीमार्गश्चक्रमाशिश्नस्रत् ॥ कित्वासोय
 द्विपुर्नदीवियद्वाधासत्यमुनयभविद्वा ॥ सर्वातिविष्येशिथिरेवदेवाधीतस्यामवरुणप्रियासः ॥ २ ॥
 ॥ चतुर्थवरुणसूक्तं ॥ ॥ धीरात्वंस्यमहिनाजनंषिवियस्तस्वभरोदसीचिदुर्वी ॥ प्रनाकमृष्वन्नुदेवृहंतं द्विता
 दामृष्टीकंसुमनाभिस्रव्यं ॥ उतस्वर्यातन्वाइंसर्वदेतत्कृदन्वै ॥ तर्वरुणेभुवानि ॥ किमेहव्यमह्मणानोजुषेतक्
 श्विदाहुरयंहनुभ्यंवरुणोहृणीते ॥ किमार्गआसवरुणज्येष्ठयस्तोतारंजिघांससिस्वायं ॥ प्रतन्मेवोचोदू
 लमस्वधावोवत्वानेनानमसातुरइयं ॥ अवदुग्धानिपिज्यासृजानोवयावयंचकृमातनूभिः ॥ अवराजन्प
 शूतृपंनतायंसृजावत्संनदाम्नोवसिष्ठं ॥ नसस्वोदक्षोवरुणधृतिः सासुरांमन्युर्विभीदकोअचित्तिः ॥ अ
 स्तिज्यायान्कर्णायसउपारेस्वमश्ननेदनृतस्यप्रयोता ॥ अर्ददासोनमीह्रुषेकराण्यहृदवायभूयिनांगाः ॥ अ
 अर्चेतयदचितोदेवोऽअर्थोगत्संरायेकवितरोजुनाति ॥ अयंसुतुभ्यंवरुणस्वधावोहृदिस्तोमउपश्रित

श्चिदस्तु॥ शंनः क्षेमेशमुयोगेनोऽअस्तुयुं पां० ॥ १ ॥ रदं पथोवरुणः सूर्याय प्राणीसिसमुद्रियानदीनां॥ स
 र्गनसृष्टोऽअर्वतीर्कृताय न्यकारमुद्दीरवनीरहभ्यः ॥ आत्मा ते वा तो रज आनवीनो त्पशुर्न भूणि यव
 से ससवान् ॥ अंतर्मही बृहती रोदसी मे विश्वेति धामवरुणप्रियाणि ॥ परिस्पशोवरुणस्य स्मादिष्टा उ
 मे पश्यंति रोदसी सुमेके ॥ ऋतावनः कवयो यज्ञधीराः प्रचेतसो य इ पयंत मन्म ॥ उवाच मेवरुणो मे
 धिरायत्रिः स सनामा ह्या विभर्ति ॥ विद्वान्पदस्य गुह्यं न बोच द्युगाय विप्र उपराय शिश्नं ॥ तिस्रो द्यावो
 निर्दिताऽअंतरस्मिन्नो भूमीरुपराः षड्विधानाः ॥ गृत्से राजावरुणश्चक्र एतं दिवि प्रेखां हि रण्ययं शुभेकं ॥
 अर्वीसंधुंवरुणो द्यौरिव स्थाद्रप्सो न श्वेतो मृगस्तु विष्मन् ॥ गंभीरं शंसो रजसो विमानः सुपारक्षत्रः स तो
 अस्वराजो यो मृकयाति चक्रुर्षे चिदा गोवयं स्यामवरुणेऽअनागाः ॥ अनुव्रतान्यदिनेर्कं धनोयुं ० ॥ २ ॥
 प्रशंभ्यं ववरुणा य मेष्टां मतिं वसिष्ठमीह्रुर्षे मरस्व ॥ यईमवीचं करते यजंत्रं सहस्रा मयं वृषणं वृहत् ॥
 अधान्वस्य संदृशं जगन्वानभेरनीकं वरुहस्यमंसि ॥ स्वयं दशमं न धिपा उअं धो मिमावपुर्दृशये निनी

यात् ॥ आयद्गुहावरुणश्चनार्वप्रयत्समुद्रमीरयावमर्ध्यं ॥ अधियदपांस्तुभिश्चरावप्रप्रेखईखयाव
 हैशुमेकं ॥ वसिष्ठंवरुणोनाव्याधाद्विचकारस्वपामहोभिः ॥ स्नोतारंविप्रःसुदिनत्वेऽअन्हांयान्नु
 द्यावस्तनन्यादुषासः ॥ क्वं१त्यानिनौसख्यार्बभूवुःसर्चावहेयदवृकंपुराचिन् ॥ बृहंतंमानंवरुणस्व
 धावःससर्गद्वारंजमागृहंतै ॥ यआपिर्नित्योवरुणप्रियःसन्त्वामार्गोसिकृणवत्सखाले ॥ मानएनस्व
 तोयक्षिन्भुजेमयंधिष्णमाविप्रःस्तुवतेवरुणं ॥ भुवासुत्वासुक्षितिषुक्षियंतोव्यं१स्मत्पाशंवरुणोमुमो
 चत्॥अवोवन्वानाऽअदितेरुपस्थाद्यूपं० ॥३॥ मोषुर्वरुणमुन्मर्द्यगृहंराजन्नहंगमं ॥ मूळासुक्षत्रसृ
 क्यं ॥ यदेभिप्रस्फुरन्निवृहतिर्नध्मतोऽअद्रिवः ॥ मूळा०॥ कर्त्तवःसमहदीनतांप्रतीपंजगमाशुचे॥मु
 क्का० ॥ अपांमर्ध्यैतस्थिवांसंतृणांविदज्जारितारं॥मूळा०॥ यत्किंचेदंवरुणदैव्येजनेमिद्रोहंमनुष्याश्च
 श्वरामसि ॥ अचिन्तीयत्तवधर्मायुयोपिममानस्तस्मादेनसोदेवरीरिषः ॥४॥ सुदेवोऽअसिवरुणयस्य
 तेसससिधवः॥अनुक्षरंनिकाकुदंसमर्थंसुषिरामिव ॥५॥ ॥ दुःस्वमघ्नसूक्तं ॥ ॥ अपेहिमनसस्पृते

पंक्रमपुश्चर ॥ पुरोनिर्ऋत्या आचक्ष्व बहुधा जीवतो मनः ॥ भद्रं वै वरं वृणते भद्रं युजंति दक्षिणं ॥ भ
 द्रैव स्वते च क्षुर्विहृत्रा जीवतो मनः ॥ यदा शसति शसो मिशसो पारिमजा प्रतोयस्त्वपंतः ॥ अग्नि
 विश्वान्यपदुष्कृतान्यजुषान्यरे अस्पदधातु ॥ यदि द्रव ह्यणस्पते भिद्रो हं चरामसि ॥ प्रचेतान आंगि
 रसो द्विषतां पातवंहसः ॥ अजैष्वाद्यासनामचाभूमानांगसो वयं ॥ जाग्रत्स्वमः संकल्पः प्रापो यं द्विष्म
 स्तं स संच्छतु यो नो द्दष्टि तमृच्छतु ॥ १ ॥ ॥ भगसूक्तं ॥ ॥ प्रातरग्निं प्रातरिंद्रं देवा महे प्रातर्भिन्नावरुणा
 प्रातरश्विनौ ॥ प्रातर्भगं षण्णं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोमं भूत रुद्रं देवम ॥ प्रातर्जितं भगं मुग्रं देवम वयं पुत्र
 मदिते यो विधुर्ता ॥ आघ्राध्विधं मन्यमानस्तुरश्च द्राजो विधं भगं सक्षीत्याह ॥ भगप्रणेतुर्भगसत्पराधो
 भगे मां धियमुदवा ददन्नः ॥ भगप्रणोजनय गोभिरथैर्भगप्रनृद्विर्वंतः स्याम ॥ उते दानो भगवंतः स्या
 मोत प्रपित्व उत मध्येऽअह्ना ॥ उतो दितामघ वन्तस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥ भग एव भगवो अस्तु दे
 वास्ते न वयं भगवंतः स्याम ॥ तं त्वां भग सर्व इजो हवीति स नो भग पर एताम वेद ॥ समध्वरा यो षसो न

मंतदधिकवैवशुचयेपदाय ॥ अर्वाचीनं वसुविदं भग्नोरथं मिवाश्वावाजिनऽआवहंतु ॥ अश्वावती
 गोमतीर्ननुषासो वीरवतीः सदमुच्छंतु भद्राः ॥ घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीनायये ० ॥ १ ॥ ॥ नदीस्तुति सूक्तं ॥
 आमां मित्रावरुणे हरक्षतं कुलाययि द्विश्वयन्मानु आगन् ॥ अजक्रावं दृष्टुं किं तिरोदधि मामापद्ये नरपसा
 विदत्सक्तं ॥ यद्विजामन्परुषि वंदनं भुवदस्त्री वंतौ परिकुल्फौ च देहत् ॥ अग्निष्टच्छोचन्नपवाधतामितो
 मासां प० ॥ यच्छेल्मलौ भवतियन्नदीषु यदोषधीभ्यः परिजायते विषं ॥ विश्वे देवानि रितस्तत्सु वंतु मा
 मां प० ॥ याः प्रवर्तौ ० ॥ ऋक् ॥ १ ॥ ॥ वामदेव्यसूक्तं ॥ ॥ हविष्यांतं मज्जरस्त्रिं विदिदिविस्पृश्याहुतं जुष्टमग्ना ॥
 तस्य भर्मणे भुवनाय देवा धर्मणे कंस्वधया प्रथंत ॥ गीर्णं भुवनंतं सापगृह्णामाविः स्वरमवज्जातेऽअ
 औ ॥ तस्य देवाः पृथिवी चौरुतापरेण यन्नोपधीः स्रव्येऽअस्य ॥ देवेभिर्निष्पितो यज्ञियैर्भिरभिस्तोपा
 ण्यजरं बृहत् ॥ यो भानुना पृथिवीं द्यामुते मामातु नरोदसीऽअंतरिक्षं ॥ यो होतासीत्पथमो देवजुष्टो
 यंसमां जन्नाज्येनाह्वानाः ॥ सर्पतत्रात्वरं स्थाजगद्यच्छानमग्निरेकणोज्जातवेदाः ॥ यज्जातवेदोऽसु

वनस्यमूर्धन्नातिष्ठोऽअग्रेसहरोचनेन ॥ तंत्वाहिममतिभिर्गोभिर्कवयैःसयज्ञियोऽअभत्रोदसिप्राः
 ॥ १ ॥ मूर्धामुवोमवतिनक्तमग्निस्ततःसूर्याजायतेप्रातरुद्यन् ॥ मायामतयुज्ञियोनाभेतामपोयन्तू
 ॥ १ ॥ मूर्धान्योयोर्महिनासमिद्धोरोचतदिवियोनिर्विभावा॥ तस्मिन्नग्नौसूक्तवाकेनदेवाह
 ॥ १ ॥ निश्चरतिप्रजानन् ॥ दृशेन्योयोर्महिनासमिद्धोरोचतदिविरजनयंतदेवाः॥ स एं पांयज्ञोऽअभवतन्
 निश्चरतिप्रजानन् ॥ सक्तवाकंप्रथममादिदुग्निमादिद्विर्वजनयंतदेवाः॥ स एं पांयज्ञोऽअभवतन्
 विर्विश्व आजुह्वस्तनपाः॥ सक्तवाकंप्रथममादिदुग्निमादिद्विर्वजनयंतदेवाः॥ स एं पांयज्ञोऽअभवतन्
 पास्तंद्योर्वेदतं पृथिवीतमापः॥ यं देवासो जेनयंताग्नेयस्मिन्नाजुह्वमुर्वनानिविश्वाः॥ सोऽअर्चिषा पृथि
 र्वीद्यामुतेनामृजुयमानोऽअतपन्महिता॥ स्तोमेन हि विदेवा सोऽअग्निमजीजनच्छक्तिमीरोदसिप्राः॥
 तमू अकृण्वन्त्रेधा मुवेकंसऽओषधीः पचति विश्वरूपाः॥ २ ॥ यदेदेनमदधुर्द्विर्वा सोऽअग्निं मुर्वनाय देवा वैश्वानरं
 तेयं॥ यदा चरिणू मिथुनावर्मुनामादिद्यापंथ्यमुर्वनानिविश्वाः॥ विश्वंस्माऽअग्निं मुर्वनाय देवा वैश्वानरं
 केतुमन्हांमरुणवन् ॥ आयस्ततानोप सो विमातीरोऽऊर्णो नितमोऽअर्चिषायन्॥ विश्वानरं कवयो यज्ञि
 या सोऽअग्निदेवाऽअजनयन्नजुर्वा॥ नक्षत्रं प्रलमभि न चरिण्युक्षस्याध्यक्षंत विपंबृहन् ॥ विश्वानरं विश्वाह

दीदिवांसंमंत्रैरग्निकविमच्छावदामः ॥ योर्महिम्नापरिब्रम्भोर्वीजतावस्नादुतदेवः परस्तात् ॥ हेब्रुतीऽअ
 शृण्वंपितृणामहं देवानामुत मर्त्यानां ॥ नाभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदंतरापितरं मातरं च ॥ ३ ॥ हेसंमीची
 त्रावर्देतेऽअवरः परं श्रयज्ञान्योः कतरो नौ विवेद ॥ आप्त्यङ्गविश्वामुर्वनानितस्थावप्रयुच्छन्तरणिर्भ्राजमानः ॥ य
 कत्यग्रयः कतिसूर्यासः कत्युपासः कत्युस्विदापः ॥ नोपस्मिजैवः पितरो वदामि पृच्छामि वः कवयो विद्वन्ने
 कं ॥ यावन्मात्रमुपसोनमतीकं सुपुण्योऽवसेते मातरि श्वः ॥ तावद्दधात्युपयज्ञमायन्वाह्यणो होतुस्वरोनि
 षीदन् ॥ ४ ॥ ॥ वामदेव्य (वाहस्पत्य) सूक्तं ॥ ॥ यस्तस्त्वं भूतसहस्रा विजमो अंतान् बृहस्पतिस्त्रिषधस्योर
 येनस्तत्त्वे ॥ पृथंतं सुप्रमदं ब्यमूर्व बृहस्पते रक्षता दस्य योनिं ॥ धुनेतयः सुप्रकेतं मदं ते बृहस्पते अग्नि
 शोनिर्धेदुः ॥ तुभ्यं स्वाता अवंता आर्द्रिगुधामव्वः श्रुतं त्युमिनो विरप्यं ॥ बृहस्पतिः प्रथमं जायमानो

महोज्योतिषः परमेव्योमन् ॥ सप्तास्यस्तु विज्ञानो र्वेण विसतरेश्विरधमत्तमांसि ॥ समुष्टुभासः ऋक्
तागणेन वलं हरो जफलिगं र्वेण ॥ बृहस्पतिरुत्थिराहव्यसूदः कनिक्कदद्वावंशती रुदांजत् ॥ १ ॥ एवा
पित्रे विश्वे देवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसाहविभिः ॥ बृहस्पते सुप्रजावीरवतो वयं स्याम पतयो रयीणां ॥
सहद्राजा प्रतिजन्यानि विश्वाशुभेण तस्यावभिवीर्येण ॥ बृहस्पतियः सुमृतं विमर्ति वलुगयति वंदे
ते पूर्वभार्ज ॥ सदस्सेति सुधित ओकसि स्वतस्मा इळापिन्तने विश्वदानीं ॥ तस्मै विशः स्वय
मेवानमते यस्मिन् ब्रह्माराजं निपूर्वएति ॥ अग्रतीतो ॥ ॥ अथ ध्रुवस्तु तिसूक्तं ॥ आत्वा हार्षमंत
रधि ध्रुवस्तिष्ठा विचाचलिः ॥ विशस्त्वा सर्वा वां छंतु मा त्वद्राष्ट्रमधि भ्रशत् ॥ इह वै धिमा पच्योष्ठाः पर्वत
इवा विचाचलिः ॥ इंद्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठे हराष्ट्रमुधारय ॥ इममिन्द्रो अदीधरद्भुवं ध्रुवेण हविषां ॥ तस्मै सो
मो अर्धि ब्रवत्तस्मा उब्रह्मणस्पतिः ॥ ध्रुवाद्यौ ध्रुवापृ० ॥ ३ ॥ १ ॥ अलक्ष्मी घ्नसूक्तं ॥ अरायिका
णे विकटे गिरिं गच्छ सदान्वे ॥ शिरां विठस्य सत्वं मिसेतो भिष्टा चायामसि ॥ चततोऽनृतं ॥ यद्धमाचो

रजंगतोरोमंडुरधाणिकीः ॥ हताइंद्रस्यशत्रवः सर्वबुद्धयांशवः ॥ परीमेगार्मनेषत्पर्यग्रिमंरुषत ॥
 देवेष्वक्तश्रवः कडमौ आदधर्षति ॥ १ ॥ सपत्नमसूक्तं ॥ ऋषभं मासमासानां सपत्नां नां विषासहिं
 हं तारं शत्रूणां कृधिविराजंगोपतिगवां ॥ अहमस्मि सपत्नहेंद्रवारिहो अक्षतः ॥ अधः सपत्ना मेपदो
 रिमे सर्वे अभिष्टिताः ॥ अत्रैवोपिनह्याम्युभे आत्नी इव ज्यया ॥ वाचस्पते निषेधे मान्यथा मदर्धं
 वदोत् ॥ अभिभूरुहमार्गं विश्वकर्मेण धाम्ना ॥ आवश्चित्तमावो जतमावो हं स भित्तिदो ॥ योगक्षे
 मं व आदाया हिं भूयासमुत्तम आवो मूर्धनमकर्मो ॥ अधस्यदान्म उहदतमंडूका इवोदकान्मंडूका उदका
 दिव ॥ १ ॥ बृहस्पतिस्तू ॥ बृहस्पते जुषस्वनो हव्यानि विश्वेदेव्य ॥ रास्वरत्ना निदाशुषे ॥ शुचिमर्कं बृह
 स्पतिमध्वरेषु नमस्यत ॥ अनुम्योज आचके ॥ वृषभं चर्षणीनां विश्वरूपमदाभ्यं ॥ बृहस्पतिं वैरण्यं ॥ बृ
 हस्पतिं नयतु दुर्गहानिः पुनर्नपदघशं सायमन्म ॥ क्षिपदशस्तिमपदुर्मतिं हन्त्रथां करचर्जमानायशं
 योः ॥ नराशंसो नो वतु प्रयाजेशं नो अस्वनुयाजो हवेषु ॥ क्षिपद ० ॥ तपुर्मूर्धा तपतुरक्षसो धेनव ह्यहि

षःशरवेहंतवाडं॥क्षिप०॥२॥ ॥गोसूक्तं२॥ ॥मयोमूर्वातोअमिवातुस्त्राऊर्जस्वतीरोपध्रीरारिंशता ॥
 पीवस्वतीर्जीवधन्याःपिवंत्ववसार्यपद्वतैरुद्रमृळा॥ याःसरुपाविरूपाएकंरूपायासांमग्निरिष्टयानामानि
 वेद ॥ याअंगिरसस्तपसेहचक्रुस्ताभ्यःपर्जन्यमहिशर्मयच्छा॥यादेवपुनन्व१मैरयंतयासांसोमोविश्वो
 रूपाणिवेद ॥ ताअस्मभ्यंपयसापिन्वमानाःप्रजावतीरिद्रगोष्ठेरिरीहि ॥ प्रजापतिर्मद्यमेतारो
 गोविश्वेदेवैःपितृभिःसंविदानः॥शिवाःसतीरुपनोगोष्ठमाकृस्तासांवयंप्रजयासंसदेम ॥१॥इतिगोसू०
 ॥अथान्विलगसूक्तं॥ आपोयंबःप्रथमंदेवयंतंदद्रूपानमूर्मिमरुणवनेळः॥तंवोवयंशुचिमरिप्रमृद्यतुमु
 ष्मधुमंतवनेम ॥ तमूर्मिमापोमधुमत्तमंवोपांनपादवत्वाशुहेमा ॥ यस्मिन्निद्रोवसुमिर्मादयतेनमे
 श्यामदेवयंतोवोअद्य ॥ शतपवित्राःस्वधयामदतीर्देवीर्देवानामपिद्यंतिपार्थः ॥ ताइंद्रस्यनमिनंतिव्र
 तानिर्सिंधुभ्योह्रव्यंघृतवज्जुहेत ॥ याःसूर्योरशिमिर्गतातानयाभ्यइंद्रोअरदद्वातुमभि ॥ तेसिंध
 वोवर्विधातनानोघूर्यपां०॥१॥ ॥अर्थचर्यासूक्तं॥ ॥वयमुंत्वापथस्पतेरथंनवाजंसातये॥ धियेषू

वन्नयुज्महि॥ अभिनो नर्यवसुवीरं प्रयतदक्षिणं॥ वामंगृहपतिनय॥ आदिस्तंतं चिदाघृणे पूषन्दानाय
 चोदय॥ पूणे श्विदिर्भ्रदामनः॥ विपथो वाजसातये चिनुहि विमृथो जहि॥ सार्धं तामुग्रनो धियः॥ परितुं धि
 रिव किराकं पुणीनां हृदया कवे॥ अर्थे०॥ यां पूषन्ब्रह्मचोदनी मारं विमंथ्य घृणे॥ तयां समस्य हृदयमा
 भ्रसां वाजसामुत॥ द्रवत्कं पुहि वीतये॥ २॥ नद्याधिगमसूक्तं॥ संपूषन्विदुषानयुयो अंजसानुशा
 सति॥ यत्वेदमिति ब्रवत्॥ समपूषणागमे महियोगृहो अग्निशासति॥ इमं एवेति ब्रवत्॥ पूषणश्चक्रं नरि
 पूषागा अन्वेतुनः पृषारं ह्रस्वर्चतः पूषावाजं सनोतुनः॥ १॥ पूषन्नु प्रगाहं हियजमानस्य सुन्वतः॥ अस्माकं
 स्तुवतामुत॥ मार्किर्न शन्मार्कीरे पुन्मार्कीं सारिके वटे॥ अथारिष्टा मिरागं हि॥ शृण्वं न पूषणं त्रय मिर्यमन

छवेदसं ॥ ईशानं राय ईमहे ॥ पूयन्तव ब्रते वधं न रिष्येम कदाचन ॥ स्तोतारं स्त इह स्मसि ॥ परिपूपा परस्ता
 द्भस्त्वेदधातुदक्षिणं ॥ पुनर्नैन ह मारजतु ॥ २ ॥ पंथासूक्तं ॥ संपूय न ध्वेन स्तिरव्यहो विमुचो न पात ॥ सद्वा
 देव प्रणस्पुरः ॥ योनः पूषन्नघो वृकोदुःशेवं आदिदेशति ॥ अपस्मृतं पथो जहि ॥ अपत्यं परिपुंथिनं मुपीवा
 णं हुरश्वित ॥ दूरमधिस्तुरेज ॥ त्वंतस्य हृया विनोषशं सस्य कस्य चित् ॥ पुदाभितितु न पुंषि ॥ आतत्ते
 दस्ममंतुमः पूषन्नघो वृणीमहे ॥ येन पितृ न चोदयः ॥ १ ॥ अथानो विश्वसौमग हिरण्यवाशीमत्तम ॥ ध
 नानि सुषणां कृधि ॥ अतिनः सश्च तोनय सुगानः सुपथां कृणु ॥ पूर्पन्न ह क्रनु विदः ॥ अमिसृय व संनयन
 नं वज्ज्वारो अह्वने ॥ पूर्व ० ॥ शग्धि पूर्धि प्रयं सिच शिशो हि मास्युदरं ॥ पूर्व ० ॥ न पूषणं मेथामसि सूक्तैरभि
 गुणीमसि ॥ वसूनिदस्ममीमहे ॥ २ ॥ मृत्युनाशनसूक्तं ॥ प्रतायार्थुः प्रतरं न वीयः स्थातरेव क्रनु म
 तारथस्य ॥ अधच्यवानुत्तवीत्यर्थं परातरं सुनिर्कृतिर्जिहीतां ॥ सामन्त्रायेर्निधि मन्त्रञ्जं करामहे सु
 पुरुधश्चरवांसि ॥ तानो विश्वा निज रितामं तु परा ० ॥ अमीष्वर्थः पौंसैर्भवेमद्यौर्नसूभिर्गिरयो नाजान्

॥ तानोविशानिजरितार्चिकेतपरा० ॥ मोषुणः सोमस्यवेपरादाः पश्येमुनुसूयमुच्चरंतं ॥ द्युभिर्हितो
 जरिमासनो अस्तुपरा० ॥ असुनीतेमनो अस्मासुंधारयजीवातेवेसुप्रतिरानआयुः ॥ रांरधिनुःसूर्यस्यसं
 नर्नः सोमस्तन्वददातुपुनः पूषापथ्यां द्यास्वस्तिः ॥ शरोदसी सुबंधवेयुह्वी कृतस्यमातरा ॥ भर्तामप्यद्र
 पोद्यौः पृथिविस्समारपोमोपुते किंचिनाममत् ॥ अवद्वके अवत्रिका दिवश्चरंति भेषजा ॥ क्षमाचरिष्णवे
 कंकभरता० ॥ समिद्रेयगामनद्वाहंय आवहदुशीनराण्या अन्नः ॥ भर्तामप्यद्रपोद्यौः पृथिविस्समारपो
 मो० ॥ २ ॥ आशीर्वादमंत्राः ॥ दासपत्नीरहिगोपाऽअतिष्ठन्निर्हृद्वाऽआपः पुणितैवगावः ॥ अपांवि
 लुमपिहितं यदासीद्वृत्रं जघन्वाऽअपतहवार ॥ अश्व्योवारो अभवस्तदिदसुकेयस्वाप्रत्यहदेवर्कः ॥ अ
 ज्योगाऽअर्जयः शूरसोममवांस्रजः सतवेसससिंधून् ॥ नास्मै विद्युन्नतन्यतुः सिपेधनयां मिहमकिरद्वा
 दुर्निच ॥ इन्द्रश्च यद्युधाते अहिश्चोतापरीभ्यो मघवा विजिग्ये ॥ अह्येतां रंक्रमं पश्य इन्द्र हृदियतेज

द्रुषोभीराञ्छत् ॥ नवचयञ्चवतिचस्रवतीःश्वेनोन्मीतोऽअतरोरजासि ॥ इन्द्रोयातोर्वसितस्यरा
 जाशर्मस्यचशृगिणोवज्रबाहुः ॥ सेदुराजाक्षयतिचर्पणीनामराज्जनेभिःपरितावभ्रव ॥ १ ॥ रा
 योबुधःसंगमनोवसूनायज्ञस्यैकेतुर्मन्मसाधनोवेः ॥ अमृतत्वरक्षमाणसएनदेवाऽअग्निधारयन्द्रवि
 णोदां ॥ नृचपराचसदनरयीणांजातस्यचजार्यमानस्यचक्षां ॥ सतश्चगोपांभवतश्चभूरुदेवा ॥
 द्रविणोदाद्र ॥ ऋक्॥ एवानोअग्रेसमिधाद्यनोरेवत्पावकश्चसेविभाहि॥ तन्नोभिन्नोवरुं ॥ १ ॥ अमृ
 दुपारमेतवैपंथाक्नस्यसाधुया ॥ अदर्शिबिस्तुनिर्दिवः ॥ तत्तदिदृश्विनोरेवोजरिताप्रतिमूपति॥ मदे
 सोमस्यपिप्रतोः॥ वावसानाविवस्वतिसोमस्यपीत्यागिरा ॥ मनुष्वच्छंभूअगतं ॥ युवोरुपाअनुश्रियं
 परिज्मनोरुपाचरत् ॥ ऋतावनथोअक्तुभिः ॥ उमापिवतमश्विनोमानुःशर्मयच्छतं॥ अविद्वियाभिहू
 तिभिः ॥ १ ॥ अनुत्वामद्दीपाजंसीअचक्रेद्यावाक्षामामदतामिद्रकर्मन् ॥ त्वंपूत्रमाशयानंसिरासुम
 होवज्ज्रेणसिष्वपोवराहुं ॥ त्वमिन्द्रनर्योयाँअवोनन्तिष्ठावानस्यमुयुजोवहिष्ठान् ॥ यंतैकाव्यउशानामं

दि॒नं॒दा॒हृ॒त्र॒हणं॒पा॒र्य॒त॒त॒क्ष॒वञ्च ॥ त्वं॒सू॒रो॒ह॒रि॒तो॒रा॒म॒यो॒नृ॒न्म॒र॒च्च॒क॒मे॒त॒शो॒ना॒य॒भि॒द्र ॥ प्रा॒स॒य॒पा॒रं॒व॒
 ति॒ना॒व्या॒ना॒म॒पि॒क॒र्त॒म॒व॒र्त॒यो॒य॒ज्य॒न् ॥ त्वं॒नो॒अ॒स्या॒ई॒द्रु॒र्ह॒णा॒याः॒पा॒हि॒व॒ज्जि॒वो॒दु॒रि॒ता॒द॒भी॒के ॥ प्रा॒स॒य॒पा॒रं॒व॒
 वा॒जा॒न्त्र॒थो॒इ॒अ॒श्व॒बु॒ध्या॒नि॒षे॒यि॒धि॒श्र॒व॒से॒स॒न्त॒त॒यै ॥ मा॒सा॒ते॒अ॒स्म॒त्सु॒म॒ति॒वि॒दं॒स॒हा॒ज॒म॒हः॒स॒मि॒
 षो॒व॒र॒न्त ॥ आ॒नो॒भ॒ज॒म॒व॒वृ॒न्गो॒ष्व॒यो॒मि॒हि॒ष्ठा॒स्ते॒स॒ध॒मा॒दः॒स्या॒म ॥ १ ॥ स॒ह॒स्रं॒व्य॒ती॒नां॒यु॒क्त॒ना॒भि॒द्र॒मी॒म॒
 हे ॥ श॒नं॒सो॒म॒स्य॒स्वार्थः ॥ स॒ह॒स्र॒ति॒श॒ता॒व॒यं॒ग॒वा॒मा॒च॒या॒वि॒याम॒सि ॥ अ॒स्म॒न्ना॒रा॒ध॒रु॒नु॒ते ॥ द॒श॒ने॒क॒ल॒शा॒
 ना॒हि॒र॒ण॒या॒ना॒म॒धी॒म॒हि ॥ भू॒रि॒दा॒अ॒सि॒व॒त्र॒ह॒न् ॥ भू॒रि॒दा॒भू॒रि॒दे॒हि॒नो॒मा॒द॒अ॒स्य॒भि॒र ॥ भू॒रि॒षे॒दि॒द्र॒
 दि॒त्स॒सि ॥ भू॒रि॒दा॒त्या॒मि॒श्रु॒तः॒पु॒रु॒षा॒शू॒र॒व॒त्र॒ह॒न् ॥ आ॒नो॒भ॒ज॒स्व॒रा॒ध॒सि ॥ प्र॒ते॒व॒भू॒वि॒च॒क्षण॒शं॒सो॒मि॒
 गो॒प॒णो॒न॒पा॒त् ॥ मा॒भ्यां॒गा॒अ॒नु॒शि॒श्र॒थः ॥ क॒नी॒नु॒के॒व॒वि॒द्वे॒धे॒न॒वे॒द्रु॒प॒दे॒अ॒भी॒के ॥ व॒भ्रू॒या॒मे॒पु॒शो॒मे॒ते॒
 ॥ अ॒रं॒म॒उ॒स्य॒या॒म्णे॒रु॒म॒नु॒स्य॒या॒म्णे ॥ व॒भ्रू॒या॒मे॒ष्व॒स्त्रि॒धा ॥ १ ॥ स॒स्व॒श्चि॒द्वि॒त॒न्वः॒शु॒भ॒मा॒ना॒आ॒हं॒सा॒
 सो॒नी॒ल॒पृ॒ष्ठा॒अ॒प॒स॒न् ॥ वि॒श्व॒श॒र्धो॒अ॒भि॒नो॒मा॒नि॒पे॒द॒न॒रो॒न॒र॒ण॒वाः॒स॒र्व॒ने॒म॒द॒न्तः ॥ यो॒नो॒प॒रु॒तो॒अ॒भि॒दु॒

हृणायुस्तिरश्वितार्निवसवोजिघांसति ॥ इहःपाशान्प्रतिमुञ्चिषुतापिष्ठेनहन्मेनाहंतनातं ॥ सां
 तपनाइंदहविर्मरुतस्तज्जुनुष्टन ॥ युष्माकोतीरिशदसः ॥ गृहमेधासुआगतमरुतोमापंभूतन ॥
 युष्माकोतीसुदानवः ॥ इहेहंवःस्वतवसःकवयुःसूर्यत्वचः ॥ युज्ञंमरुतआवृणो ॥ त्र्यंबकंय० ॥ १ ॥ ऐ
 तपुषारयिर्मगःस्वस्तिसर्वधातमः ॥ उरुध्वोस्वस्तये ॥ अरमंतिरनर्वणोविश्वेदेवस्यमनसा ॥ आ
 दित्यानोमनेहइत् ॥ यथानोमित्रोअर्थमावरुणःसंतिगोपाः ॥ सुगाऽऽकृतस्यपंथाः ॥ अग्निवःपुंर्यगिरा
 देवमीळेवसूनां ॥ सपर्यतःपुरुप्रियंमित्रंनक्षेत्रसाधसां ॥ मक्षूदेववंतोरथःशूरोवापुस्तुकासुचित् ॥ देवानां
 यइन्मनोयजमानइयक्षत्यमीदर्यज्वनोभवत् ॥ नयजमानरिष्यसिनसुन्वाननदेवयो ॥ देवानां० ॥ १ ॥ त्व
 किंछंकर्मणानशन्नप्रयोषन्नयोषति ॥ देवानां० ॥ असदन्नमुवीर्यमुतत्यदाश्वश्वयै ॥ देवानां० ॥ १ ॥ त्व
 मग्नेत्रतपाअसिदेवआमत्यैष्वा ॥ त्वयज्ञेष्वीड्यः ॥ त्वमसिप्रशंस्योविदथेपुसहंत्या ॥ अग्नेरथारिष्वराणां ॥
 सत्तमस्मदपुद्दिषोयुधिजातवेदः ॥ अदेवीरयेअरांतीः ॥ अंनिचित्संतमहंयज्ञंमर्तस्यरिपोः ॥ नोपेवे

पिजातवेदः॥मर्ताअमर्त्यस्यतेभूरिनाममनामहे॥विप्रसोजातवेदसः॥१॥ विप्रंविप्रसोर्वसेदेवंमर्ता
 सजुतये॥आर्धिगीर्भह्वामहे ॥ आतेवत्सोमनोयमत्परमाच्चित्सयस्थात् ॥ अग्नेत्वांकांमयागिरा ॥
 पुरुत्राहिसदृङ्मिविशोविश्वाअनुप्रभुः ॥ समत्सुत्वाह्वामहे ॥ समस्वभिमवसेवाजयतोह्वामहे ॥
 ॥वाजेबुचित्राधसं ॥ प्रत्नोहिकपीडयोअध्वरेषुसनाच्चहोतानव्यश्वसत्सि ॥ स्वांचांश्रेतुन्वपिप्रय
 स्वास्मभ्यंचसौभगभार्यजस्व ॥ २॥ इदंवामास्येहविःप्रियमिन्द्राहस्पती॥उक्थंमदंश्वशस्यते ॥ अ
 यंवांपरिषिच्यतेसोमंइद्राबृहस्पती॥चारुर्मदायपीतये॥आनंइद्राबृहस्पतीगृहमिन्द्रंश्वगच्छतं॥ सोमपा
 सोमपीतये॥अस्मेइद्राबृहस्पतीरधिधत्तंशतन्विनं ॥अश्वावंतंसहस्रिणं ॥ इन्द्राबृहस्पतीवधंसुतेगीर्भि
 ह्वामहे॥ अस्यसोमस्यपीतये॥सोममिन्द्राबृहस्पतीपिबंतद्राशुषोगृहे॥मादयेथांतदोक्सा॥ १ ॥ अ
 पश्यंत्वामनसाचेकितानंतपसोजातंतपसोविभूतं ॥ इहप्रजामिहरिरेरणःप्रजायस्वप्रजयांपुत्रका
 म॥अपश्यंत्वामनसादीर्घ्यानांस्वायांतनूक्तयेनार्धमानां ॥उपमामुच्चायुवतिर्बभूयाःप्रजायस्वप्रजयां

पुत्रकामे ॥ अहंगर्भमदधामोपधीष्वहं विश्वेषु सुवनेष्वन्तः ॥ अहंप्रजाअंजनयं प्रथिव्यामहं जनिभ्यो
 अपरीषु पुत्रान् ॥ १ ॥ अमीवर्तनहविषायेनेद्रोअमिवावृते ॥ तेनास्मान्ब्रह्मणस्पतेभिराह्वार्यवर्तय ॥ अ
 मिष्टयंसपत्नान्मियानोअरातयः ॥ अमिपृतन्यतं तिष्ठामियोनेद्रस्यति ॥ अमित्वदेवः सवितामिसो
 मोअवीचनत् ॥ अमित्राविश्वामृतान्यमीवर्तोयथासंसि ॥ येनेद्रोहविषाकृत्यमवदधुन्मुत्तमः ॥ इदं त
 दं क्रिदेवाअसपत्नः किलासुवं ॥ असपत्नः संपत्नुहामिराष्ट्रोविपासहिः ॥ यथाहमेपां भूतानां विराजानिज
 नस्यच ॥ १ ॥ विश्वदेवसूक्तं ॥ इन्द्रमित्रं वरुणमग्निमतये मारुतं शर्धो अदितिहवामहे ॥ रथं नदुर्गाद्विसवः
 सुदानवो विश्वस्मात्रो अहंसो निष्पत्तन ॥ तआदित्या आगता सर्वतातये सन्त देवा वज्रतूयषुशंभुवः ॥ र
 थं न ॥ अर्वतुनः पितरः सुप्रवाचनाउत देवी देवपुत्रे च कृतावृधा ॥ रथं न ॥ नराशंसवाजिनं वाजयन्निह ह
 यद्दीरं पुषणं सुभ्ररीमहे ॥ रथं न ॥ बृहस्पते सद्मिन्नः सुगंक्षधि शंयो र्यत्ते मनुर्हितं दीमहे ॥ रथं न ॥
 इन्द्रकुत्सो वज्रहणं शचीपतिं कादेनिर्वाब्ध ऋषिरह्वदतये ॥ रथं न ॥ देवैर्नो देव्यदिति निर्निपातु देववृत्ताता

त्रायतामप्रयुच्छन् ॥ तन्नो मित्रो ॥ १ ॥ हि ० सू ० ॥ धृत्वं व्रता आर्दिष्या इर्षिरा आरे मत्कं तं रहसू रिवागः ॥
 शृण्वतो वो वरुण मित्रे देवा भद्रस्य विद्वाँ अर्वि सहुवेवः ॥ द्युयं देवाः प्रमत्तियुयमोजोऽयुयं द्वेषाँ सिसनुतयु
 योत ॥ अभिसुत्तारो अभिचक्षुर्मध्वमद्यार्चनो मळयतापुंरं ॥ किमुनुवः कृणवा मापरेण किं सनेन व
 सव आप्येन ॥ द्युयं नो मित्रावरुणादिते च स्वस्ति मिंद्रामरुतो दधात ॥ ह्ये देवा युयमिदापयः स्थते मृळ
 तनार्धमानायमर्ह्य ॥ मावोरथो मध्यमवाळुते मन्मायुष्मार्वत्स्वापिषुश्रमिष्म ॥ प्रवएको मिमय भूय
 गोयन्मापिते वं कितवं शशास ॥ आरे पाशा आरे अघानि देवामा माधिपुत्रे विमिवग्रमीष्ट ॥ अर्वाचो अद्या
 र्भवता यजत्रा आवो हार्दिभयमानो व्ययेयं ॥ त्राध्वं नो देवानिजुरो हकस्य त्राध्वं कर्नादवपदो यजत्राः ॥
 माहं ० १ ॥ तू ० सू ० ॥ अबुध्रमुत्पयं द्रवंतो अग्रयो ज्योतिर्भरंत उषसो व्युष्टिषु ॥ मही द्यावा पृथिवी चेतता
 मपो द्यादेवाना मव आर्हणी महे ॥ दिवस्पृथिव्योरव आर्हणी महे मातृन्ति सधून्पर्वतान्छर्यणावतः ॥ अना
 गास्त्वं सूर्यमुषांसमी महे मद्रंसोमः सुवानो अद्या कृणोतुनः ॥ द्यावा नो अद्य पृथिवी अनगसो मही त्रायेतां

सुविनायमातरां ॥ उषाउच्छत्यपबाधतामर्चस्वस्त्य १ धिसंमिधानमीमहे ॥ इयंनउत्ताप्रथमासुदेव्यरे
 वत्सनिभ्योरेवतीव्युच्छतु ॥ आरेमन्युदुर्विदत्रस्यधीमहिस्व ० ॥ प्रयाःसिखितेसूर्यस्यरश्मिमिज्योतिर्म
 रैतीरुषसोव्युच्छिषु ॥ मद्रानोअद्यश्रवसेव्युच्छतस्व ० ॥ १ ॥ अनमीवाउषसआचरंतुनउदग्रयोजिहतां
 ज्योतिषाबृहत् ॥ आयुंसातामश्विनातुनंजिरथस्व ० ॥ श्रेष्ठनोअद्यसंवितर्विरेण्यंसागमासुवसहिरंतधा
 असि ॥ रायोजानेत्रीधिषणामुपब्रुवेस्व ० ॥ पिपर्तुमातदृतस्यप्रवाचनंदेवानांयन्मनुष्याइअमन्महि ॥ वि
 श्वाइदुक्ताःस्पलुदेतिसूर्यःस्व ० ॥ अद्देवोअद्यबर्हिषःस्तरीमणिग्राव्णायोगेमन्मनःसार्धइमहे ॥ आदि
 त्यानांशमीणिस्थामुरण्यसिस्व ० ॥ आनोबर्हिःसंधमादेबृहद्विदेवैर्द्वेसादयाससहेतुन् ॥ इंद्रमित्रं
 वरुणंसातयेभगंस्व ० ॥ २ ॥ तआदित्याआगतासर्वतातयेवृधेनोयज्ञमंवतासजोषसः ॥ बृहस्पतिंपूष
 णमश्विनाभगंस्व ० ॥ तन्नोदेवायच्छतसुप्रवाचनंछर्दिशदित्याःसुभरंदृपाथ्यं ॥ पश्वेतोकायुतनयाय
 जीवसेस्व ० ॥ विश्वेअद्यमरुतोविश्वउतीविश्वेमवंत्वग्रयःसमिद्धाः ॥ विश्वेनोदेवाअवसागमंतुविश्वं

मस्तुद्राविणवाजोअस्मे ॥ यंदेवासोवथवाजसातीयंत्रायध्वेयपिपृथात्यंहः ॥ योवोगोपीथेनमयस्य
वेदतेस्यामदेववीतयेतुरासः ॥३॥ च०सू० ॥ उषासानक्ताबृहतीसुपेशसाद्यावाक्षामावरुणोमित्रोअ
र्यमा ॥ इंद्रहुवेमरुतःपर्वतोअपआदित्यान्यावापृथिवीअपःस्वः ॥ द्यौश्चनःपृथिवीचप्रचेतसक्तता
वरीरक्षतामंहसोरिषः ॥ मादुर्विदत्रानिर्ऋतिर्नईशततदेवानामवोअद्यावृणीमहे ॥ विश्वस्मान्नोअ
दितिःपात्वंहसोमातामित्रस्यवरुणस्यरेवतः ॥ सर्व्वज्ज्योतिरष्टकंनशीमहित० ॥ आवावदन्नपरक्षां
सिसेधतुदुःष्वप्न्यंनिर्ऋतिंविश्वमत्रिणं॥ आदित्यंशर्ममरुतामशीमहित०॥एंद्रोवहिःसीदतुपिन्वतामि
च्छाबहस्पतिःसामभिर्ऋक्वोअर्चतु॥सुप्रकृतंजीवसेमन्मधीमहित०॥१॥ दिविस्पृशैयज्ञमस्माकंमश्वि
नाजीराव्वरंकुणतंसुम्नमिह्ये ॥ प्राचीनरश्मिमाहुतंधृतेनत० ॥ उपह्वयेसुहृवंमारुतंगुणंपाविकमुष्वं
सख्यायशंभुवं ॥ रायस्पोषमौश्रवसायधीमहित० ॥ अपोपेरुंजीवर्धन्यंभरामहेदवाव्यंसुहृवम
ध्वरश्रियं ॥ सुरश्मिसोममिन्द्रियंयमीमहित० ॥ सनेमतत्सुसनितासनित्वभिर्वयंजीवाजीवपुत्रा

अनांसः ॥ ब्रह्मद्विपोविष्णुगेनोभेरतत० ॥ येस्थामनोर्यज्ञियास्तेशृणोतनयद्देविवाइमहेतद्दा
 तन ॥ जैत्रंक्रतुरयिमद्वीरवद्यशस्त० ॥ २॥महदृद्यमहतामार्तणीमहेवोदेवानांवृहतामनर्वणां ॥ य
 थावसुवीरजांतनशामहेत० ॥महोअग्नेःसमिधानस्यशर्मण्यनागाभिन्नेवरुणेस्वस्तये ॥ श्रेष्ठस्या
 मसवितुःसर्वोमनित० ॥ येसंवितुःसत्यसंवस्यविश्वेभिन्नस्यव्रतेवरुणस्यदेवाः ॥ नेसौमंगवीरवृद्धो
 मदमोदधातनद्रविणंचिन्नमुस्मे ॥ सविताप० ॥ ३॥ पं०सू० ॥ अग्नेअच्छावदेह्नःप्रत्यङ्मनःसुमनाभव
 प्रनोयच्छविशस्पतेधनुदाअसिनस्त्वं ॥ प्रनोयच्छत्वर्धमाप्रमगुःप्रवृहस्पतिः ॥ प्रदेवाःप्रोतसन्तारायो
 देवीदेदातुनः ॥ सोमराजानमवसेयिगीर्मिह्वामहे ॥ आदित्यान्विण्णंसूर्यब्रह्माणंचवृहस्पतिर्मिंद्रा
 वायुबृहस्पतिमुहवेह्वामहे ॥ यथानःसर्वइज्जनःसंगत्यांसुमनाअसत् ॥ अर्यमणंवृहस्पतिर्मिंद्रा
 नायचोदय ॥ वानंचिण्णंसरस्वतींसवितारंचवाजिनं ॥ त्वनोअग्नेअग्निभिर्ब्रह्मयज्ञंचवर्धय ॥ त्वनोदेव
 तांतयेरायोद्रानायचोदय ॥ १ ॥ द्रविणोदसूक्तं ॥ सप्रतथासहमाजायमानःसद्यःकाव्यानिब

लब्धत्तुविश्वा ॥ आर्पथ्यमित्रं धिषणां च साधन् देवा अग्निधारं यन्द्रविणोदां ॥ सपूर्व्यानि विदां कुव्यतायो
 रिमाः प्रजा अज नयन्मर्तूनां ॥ विवस्वता च र्षसाद्याम पथ्यदे ० ॥ तर्मीळत प्रथमं यज्ञसाधं विशा आरीराहु
 तमृजसानं ॥ ऊर्जः पुत्रं मर्तं सृष्ट्वा नृदे ० ॥ समातृश्वा पुरुवारं पुष्टिर्विदहन्तु तनयाय स्वर्वित् ॥ वि
 शांगो पाजनि तारोदस्योर्दे ० ॥ नक्तोषा सावर्ण्यमा मेम्याने ध्रापयेते शिशुमेकं समीची ॥ द्यावाक्षा मां रुक्मो
 अंतर्विमातिदे ० ॥ १ ॥ रायो बुधः क्र. ४।२ ॥ इंद्रावरुणसूक्तं ॥ इमानि वां मागधेयानि सिस्रत इन्द्रावरु
 णाममहे सुतेषु वां ॥ यज्ञेयं ज्ञेह सर्वनाभुरण्यथो यत्सुन्वते यजमानाय शिक्षथः ॥ निःषिद्धरीरोषधीराप
 आस्तामि द्रावरुणामहिमानमाशत ॥ यासि स्रत रजसः पारे अध्वना येयोः शत्रुर्न किरादेव ओहते ॥ स
 त्यं तं दिद्रावरुणा कृशस्य वां मध्वं ऊर्मिं दुहते ससवाणीः ॥ ताभिर्दृश्वांसं मवतं शुभस्पती यो वामदं ब्यो अ
 सिपति चित्तिभिः ॥ घृतपुषः सौम्या जीरदानवः ससस्वसारः स रदनक्रतस्य ॥ याहं वामि द्रावरुणा घृत
 श्रुतस्तामिर्धत्तं यजमानाय शिक्षतं ॥ १ ॥ अवोचाममहने सौमगाय सत्यत्वे वाभ्यां महिमानं मिद्रियं ॥

अस्मान्स्विद्रावरुणावृतश्रुतखिभिः सासेमिखतं शुभसगती ॥ इंद्रावरुणावृतश्रुतपिभ्यो मनीपांवाचो
 मतिश्रुतमंदत्तमग्रे ॥ यानिस्थानान्यखजंतुधीरायुज्ञंतं नानास्तपसाभ्यर्चयेत् ॥ इंद्रावरुणासौ
 म० ॥ २ ॥ वायुसूक्तं ॥ विहिहोत्राअवीताविपोनरायोअर्घ्यः ॥ वायवाचंद्रेणरथेनयाहिमृतस्य
 पीतये ॥ निर्युवाणोअशस्तीर्नियुत्वौइंद्रसारथिः॥वायवा० ॥ अनुकृण्वेवसुंधितीयेमातेविश्वपेशसा
 वायु० ॥ वहंतुत्वामनोयुजोयुक्तासोनवतिर्नवावायु० ॥ वायोशनंह० ॥ १ ॥ क्षेत्रपालसू० ॥ क्षेत्रस्य५० ॥
 ऋ१ ॥ क्षेत्रस्यपतेमधुमंतमभिधेनुरिवपयोअस्मासुधुक्ष्व ॥ मधुश्रुतं घृतमिवसुपृतमृतस्यनःपतयो
 मृळयंतु॥मधुमतीरोपधीर्घीवआपोमधुमन्त्रोमवत्तं तारिंक्षं॥ क्षेत्रस्यपतिर्मधुमान्नोअस्त्वरिण्यंतोअन्वे
 नंचरेम॥ शुनंवाहाःशुनंनरःशुनंरुक्क्षतुलांगलां॥ शुनंयंत्रावध्यंतांशनमष्टामुदिंगय ॥ शुनासीराविमां
 वार्चजुषेथांयद्विविचक्रथुःपयः ॥ तेनेमामुपसिचतं ॥ अर्वाचीसु० ऋ१ ॥ इंद्रःसीतांनिगृह्णातुतांप
 षानुयच्छतु ॥ सानःपर्यस्वतीदुहामुत्तरामुत्तरांसमां ॥ शुनंनःफालाविक्रयंतुमूर्भिशुनंकीनाराअसि

यंतुवाहैः॥ शुनपुर्जन्योमधुनापयोमिःशुनासीराशुनमस्मामुधत्तं ॥ १ ॥ इंद्रसूक्तं ॥ विश्वजितेधन
जितेस्वजितेसत्राजितेनृजितउर्वराजिते ॥ अश्वजितेगोजितेअब्जितेमरेद्रांयसोमंयजतायहृतं ॥
अमिभुवैमिभंगायवन्वतेषाब्धायसहमानायवेधसे ॥ तुविप्रयेवह्वयेदुष्टरतिवेसत्रासाहेनमइद्रा
यवोचत ॥ सत्रासाहोजनमक्षोजनंसहृश्यवनोयुध्मोअनुजोषमुक्षितः ॥ वृतंचयःसहुरिर्विध्वारितइ
द्रस्यवोचंप्रकृतानिवीर्या ॥ अनानुदोष्टेषभोदोधतोवधोर्गभीरक्कृष्वोअसमष्टकाव्यः ॥ रघुचोदःश्रथ
नोवीक्षितस्पृथुरिंद्रःसुयज्ञउषसःस्वर्जनत॥यज्ञेनगानुमसुरोविविद्विरेधियोहिन्वानाउशिजोमनीषिणः॥
अमिस्वराणिषदागअवस्यवइंद्रेहिन्वानाद्रविणान्याशत॥ इंद्रश्रेष्ठानिद्र० क. १ ॥ १ ॥ द्यावापृथिवी
सू०॥ कतरापूर्याकनरापरायोःकथाजातेकवयःकोविवेद ॥ विश्वंत्मनाविभृतोयद्भूनामविवर्ततेअहंनी
चक्रियेव॥ मूरिद्वेअचरंतीचरंतपहंतंगर्भमपदादधाते॥ नित्यंनसुनंपित्रोरुपस्थेद्यावारक्षंतंपृथिवीनोअ
भ्वात् ॥ अनेहोदात्रमदितेरनुर्वहुवेस्ववद्वंधनमस्वत॥ तद्रोदसीजनयंतंजत्रिद्या० ॥ अतप्यमाने

अवसावती अनुष्यामरोदसीदिवपुत्रे ॥ उभेदेवानामुमयैभिरन्हांद्या ॥ संगच्छमानेयुवतीसभंतेस्वसा
 राजामीपित्रोरुपस्थे ॥ अमिजिघ्रतीमुर्वनस्यनामिद्या ॥ १ ॥ उर्वीसद्वनीवृहतीक्षतेनहुवदेवानामव
 साजनित्री ॥ दधातेयेअमृतंसुप्रतीकेद्या ॥ उर्वीपृथ्वीबहुलेदुर्भतेउपब्रुवेनमसायज्ञेअस्मिन् ॥ दधा
 तेयेसुभगेसुप्रतीद्या ॥ देवान्वायचक्रुमाकच्चिदागःसखायंवासदमिज्जास्वतिवा ॥ इयंधीर्भूयाअव
 यानेभेषांद्या ॥ उमाशसा ० ऋ ॥ १ ॥ ऋतंदिवेतदवोचंपृथिव्याअमिश्रावायप्रथमंमुमेधाः ॥ पाता
 मवद्यादुरितादुभीकैपितामाताचरक्षतामवोमिः ॥ इदंद्यावापृथिवीसत्यमस्तुपितमातर्यदिहोपब्रुवेवां ॥
 भुतंदेवानामवमेअवोमिर्विद्यामेपंवृजनंजीरदानुं ॥ २ ॥ अग्न्यादिसू ॥ ॥ इमंस्तोममहतिजातवैदसेर
 यमिवसंमहेमामनीषया ॥ मद्राहिःप्रमतिरस्यसंसद्यमैसुख्येमारिषामावयंतव ॥ यस्मैत्वमायजसेस
 साधत्यनवोक्षितिदधतेसुवीर्या ॥ सतूतावनैनमश्रोत्यंहतिरग्ने ॥ शुक्रेमंत्वासमिधंसाधयाधियस्त्वेदेवाहवि
 रंत्याहुतं ॥ त्वमादित्या आवहृतान्त्यु १ शमस्यमे ॥ मरमिधमंकृणवांमाहवीपितेचितयंतःपर्वणापर्वणाव

यं॥ जीवातवेप्रतरंसाधयाधियोम्रे० ॥ विशांगोपाअस्यचरंतिजंतवोद्विपच्चयदुतचनुष्पदक्तुभिः॥ चित्रः प्र
 केतैउषसांमहौअस्यम्रे० ॥ १॥ त्वमभ्वर्युरुतहोतासिपुव्यः प्रशास्तापोताजनुपापुरोहितः॥ विश्वाविद्वौआ
 त्विज्याधीरपुष्यस्यम्रेसख्ये० ॥ योविश्वतःमुप्रतीकः सदृहुःसिद्धरेचित्सन्तळिदिवानिरोचसे॥ रात्र्याश्रिदं
 धोअतिदेवपश्यस्यम्रे० ॥ पूर्वोदेवामवतुसुन्वतोरथोस्माकंशंसोअभ्यस्तुदुदृढयः॥ तदाज्जानीनोतपुष्यता
 वचोम्रेसख्येमा० ॥ वधैदुःशंसौअपदुदृढयोजहिदुरेवायेअतिवाकेचिदत्रिणः ॥ अथायज्ञायंगणतेसुगंकु
 द्यम्रेसख्ये० ॥ यदयुक्ताअरुषारोहितारथेवातजूतावृषमस्यैवतेरवः॥ आदिन्वसिवनिनोधूमकेतुनाम्रे० ॥
 ॥ २॥ अधस्वनादुतविभ्युःपतत्रिणोदृप्सायत्तैयवसादोव्यस्थिरन्॥ सुगंतैतावकेभ्योरथेभ्योम्रे० ॥
 अयंभिन्नस्यवरुणस्युधायसेवयातांमरुतांहेळोअद्भुतः॥ मुळासुनोभूर्त्वेषामनःपुनरम्रेस० देवोदेवानांम
 सिमित्रोअद्भुतोवसुर्वसूनामसिचारुध्वरे॥ शर्मन्त्स्यामतर्वसप्रथस्तम्रे० ॥ तत्तेमद्रथस्तमिद्धःस्वेदमेसो
 माहुतोजरसेमृळयत्तमः॥ दधांसिरलंद्रविणंचदाशुयेम्रे० ॥ यस्मैत्वंसुद्रविणोददाशोनागास्तवमदितेसव

ताता॥ यंमद्रेणशर्वराचोदयासिप्रजावताराधसातेस्याम॥ सत्वमग्नेसौमगत्वस्येविद्वानस्माकमायुःप्र
 तिरेद्वेवातन्नोमि०॥३॥ ॥सोमारुद्रसूक्तं॥ ॥सोमारुद्राधार्येथामसुर्थ१प्रवांसिष्टयोरेमश्रुवंतु॥ इमेद
 मेससरत्नादधानांशंनोभूतंह्रिपदेशंचतुष्पदे॥सोमारुद्राविर्बृहंतंविपूचीममीवायानोगयमाविवेश॥आरे
 बधियांनिर्ऋतिंपराचैरस्मेभद्रासौश्रवसानिसंतु॥सोमारुद्रायुवमेतान्यस्मेविश्वातनूपूमेपजानिधत्तं॥अ
 वस्यतंमुंचतुंयन्नोअस्तितनूपूबृद्धंकृतमेनोअस्मत्॥ तिग्मायुधौतिग्महेतीसुशेवौसोमारुद्राविहसुमृळ
 तनः॥प्रनोमुंचतंवर्कणस्युपाशाहोपायतनःसुमनस्यमाना॥१॥ ॥संग्रामसू०॥ ॥जीमूतस्येवभवत्तिप्र
 तीकंयद्वृभीयातिसुमदासुपस्थे॥अनाविद्धयातुन्वाजयुत्वंसत्वावर्मणोमहिमपिपत्तु॥धन्वनागाधन्वना
 जिजयेमधन्वनातीन्वाःसुमदोजयेम॥धनुःशत्रोरपकामंक्लेणोतिधन्वनासर्वाःप्रदिशोजयेम॥ वक्ष्यंतीवे
 दागेनीगंतिकणीप्रियंसखायंपरिषस्वजाना॥योर्वैवर्षाक्तेवितताधिधन्वज्याड्यंसमनेपारयंती॥ तेआ
 चरंतीसमनेवयोषांमातेवपुत्रंविभृतामपस्थे॥ अपशत्रून्विध्यतांसंविदानेआनींइमेविष्णुरंतीअमित्रा

न॥ब॒ह्नीनां॒पि० ॥१॥ रथेतिष्ठन्नयतिवाजिनःपुरोयत्रयत्रकामयतेसुषारथिः ॥ अ॒ग्नी॒शूनांमहि॒मानं
पनाय॒तमनः॒पश्चाद॒नय॒च्छंति॒रश्मयः ॥ ती॒व्रान्धोषा॒न्कृण्व॒तेहृष॑पाणयोश्वारथेभिःसह॒वाजय॑तः ॥
अ॒व॒क्राम॑न्तःप्र॒पदै॒रमित्रा॑न्क्षिणंतिशत्रून्रनपव्ययंतः ॥ रथ॒वाह॑नंह॒विर॑स्यनामयत्रायुर्धुनिहितमस्य॒व
र्म ॥ तत्रारथमु॒पश॑गमंसदेमविश्वाहा॒वयं॑सुमनस्य॒मानाः ॥ स्वा॒दुर्ष॑स० क॒ २ ॥ २ ॥ सु॒पूर्ण॑वस्तेमृ॒गो
अ॒स्यादं॑तो॒गोभिः॑संनद्धापततिप्रसूता ॥ यत्रानरःसंचविचद्रवै॒तितत्रा॑स्मभ्य॒मिष॑वःशर्मयंसन् ॥ क
जी॒तिपरि॑रि॒ष्टाग्धि॒नोश्मा॑भवतुनस्तनूः ॥ सोमोअधि॒ब्रवी॑तुनो॒दितिः॑शर्मयच्छतु ॥ आज॑धं॒तिसान्वे॑षां
ज॒घनौ॑उपजिघ्रते ॥ अ॒श्वाज॑निप्रचैतसो॒श्वान्स॑मत्सुचोदय ॥ अहि॑रि॒वभोगैः॑पर्येतिब्राहु॒ज्याया॑हि
ति॒परि॒बाध॑मानः॥हस्त॒घ्नोवि॒श्वाव॑युनानि॒विद्वान्पु॒मान्पु॒मांस॑परिपातु॒विश्वतः॑ ॥ आ॒लो॒काया॑रुरु॒शीर्ष्य
थो॒यस्या॒अयो॑मुखं ॥ इदं॒पर्जन्य॑रेतस॒इष्वैदे॒व्यबृ॑हन्मनः ॥ २ ॥ अ॒व॒सृष्ट्वा॒परा॑पतशर॒व्येब॒ह्मसं॑शि
ते ॥ गच्छा॒मित्रा॑न्प्रपद्यस्व॒मामी॒पांक॑चनोच्छिपः ॥ यत्र॑बा॒णाःसंप॑तं॒तिकु॒मारा॑वि॒शिखा॑इव ॥

तत्रानोबह्मणस्पतिरदितिः शर्मयच्छतुविश्वाहाशर्मयच्छतु ॥ मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमं स्त्वा
राजामृतेनानुवंस्तां ॥ उरोर्वरीयो वर्कणस्ते कृणोतु जयंत त्वानुदेवामंदंतु ॥ योनः स्वो अ० ऋ० ॥ ३ ॥
॥ मित्रावरुणसूक्तं ॥ ॥ सुषुमाया तमर्दिभिर्गोश्रीतामत्सरा इमे सोमो सोमत्सरा इमे ॥ आरा
जानादिविस्पृशास्मत्रा गंतमुपेनः ॥ इमे वा मित्रावरुणा गवां शिरः सोमाः शुक्रा गवां शिरः ॥ इम आ
या तमिदं देवः सोमोऽसो दध्या शिरः सुता सो दध्या शिरः ॥ उत वा मुषसौ बुधिसाकं सूर्यस्य रश्मिभिः ॥
सुनो मित्रा यवरुणा यपीतये चारुर्क्षता यपीतये ॥ तां वा धेनुं न वासरीं मंशु दुहंत्यर्दिभिः सोमं दुहंत्यर्दि
भिः ॥ अस्मत्रा गंतमुपेनोर्वा चा सोमपीतये ॥ अयं वा मित्रावरुणा चर्द्दिभिः सुतः सोम आपीतये सुतः ॥ १ ॥
॥ पूषसूक्तं ॥ ॥ य एनमा दिदेशाति कं भादिति पूषणं ॥ न तेने देव आदिशे ॥ उत घास रथी तं मः सख्या सत्य नि
र्युजा ॥ इंद्रो वृत्राणि जिघ्रते ॥ उतादः परुषे गविसूरं श्वं कंहिरुण्ययं ॥ न्यैरयद्रथी तं मः ॥ यदद्यत्वा पुरुष्टुज
वां मदत्समं तु मः ॥ तत्सुनो मन्मसा धय ॥ इमं च नो गेवैष णं सातये सीषधे गणं ॥ आरात्पूषन्नसि श्रुतः ॥ आने

स्वस्तिमीमह॒अरेअंघामुपांवि॒सुं॥अ॒द्याच॑सर्व॒तातये॑श्व॒श्र्वसर्व॑ता॒तये ॥१॥मरु॒त्सूक्तं॥ तमु॒न्नंत॑वि॒षी
 भंत॑मेषांस्तु॒षेग॑णं॒मारु॑तं॒नव्य॑सीनां ॥ य॒आश्व॑श्वाअम॑व॒द्धत॒उते॒शिरे॑अमृ॒तस्य॑स्व॒राजः॥ त्वे॒षं ग॑णं॒तव॑स॒
 खादि॑हस्तं॒धुनि॑व्रतं॒मायि॑नं॒दानि॑वारं ॥ म॒योमु॒वोये॑अ॒मिता॑म॒हि॒त्वाव॑दं॒स्ववि॑प्रतु॒विरा॑ध॒सोनु॑न् ॥ आ
 वो॒यंतू॑द॒वाहा॑सो॒अ॒द्य॒द्य॒ष्टि॒येवि॑श्वे॒मरु॑तो॒जुनं॑ति॥ अ॒यंयो॒अ॒ग्नि॑र्मरु॒तःस॑मि॒द्ध॒ए॒नंजु॑ष॒ध्वंक॑व॒योयु॑वानः ॥
 यू॒यंरा॑जान॒मिर्य॑जना॒यवि॑भ्वत॒छंज॑न॒यथा॑यजत्राः ॥ यू॒ष्मदै॑लिमु॒ष्टिहा॑बाहु॒जंतो॑यु॒ष्मत्स॑द॒श्वोम॑रु॒तः
 सु॒वीरः ॥ आ॒रा॒इवे॑द॒चर॑मा॒अहे॑व॒प्रजा॑यंते॒अक॑वाम॒होमिः॥ पृ॒थैःपु॒त्राउ॑प॒मासो॑र॒भि॒ष्टाःस्व॑या॒मत्या॑
 मरु॒तःसं॑मि॒मिक्षुः ॥ य॒त्प्रा॒यासि॑ष्ट॒पृष॑ती॒गिर॑श्चै॒र्वी॒ष्टुप॑वि॒भिर्म॑रु॒तोरथे॑भिः ॥ सो॒दंत॑आ॒पोरि॑ण॒तेव
 ना॒न्यवो॑सि॒योदृ॑ष॒मःक॑द॒तुचौः॥प्रा॒थि॒द्युयाम॑न्य॒थिवी॑चि॒देषां॑भ॒र्तव॑ग॒र्भस्व॑मि॒च्छवो॑धुः ॥ वा॒ता॒न्य॒श्वा
 न्ध॒र्यायु॑ज्ये॒वर्ष॑स्वे॒दच॑किरे॒रुद्रि॑या॒सः ॥ ह॒येन॑रोमरु॒तोमृ॑क॒तान॑स्तु॒वीम॑घा॒सोअ॑मृ॒ता॒कृत॑ज्ञाः॥स॒त्य
 श्रु॒तःक॑र्व॒योयु॑वा॒नोब॑ह॒द्विर॑योवृ॒हदु॑क्ष॒माणाः ॥ १ ॥ ग्र॒हण॑ज॒प्यसू॑क्तं ॥ पुरो॑जितीवोअंध॑सःसु॒ता

यमादयित्वै ॥ अपृश्वानैश्चिष्टनसखायोदीर्घजिह्वयै ॥ योधारयापावकयापरिप्रस्यंदतेभुतः ॥ इंदुर
 श्वोनकृत्यः ॥ तंदुरोषमसीनरः सोमं विश्वाच्याधिया ॥ घृज्ञाहिन्वाद्यार्द्रिभिः ॥ सुतासोमधुमत्तमाः सोमाइं
 द्रायमंदिनः ॥ पवित्रवंतो अक्षरन्देवान्गच्छन्तुवोमदाः ॥ इंदुरिंद्रायपवतु इति दिवासो अब्रुवन् ॥ वाचस्प
 तिर्मखस्यते विश्वस्येशान् ओजसा ॥ १ ॥ सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीख्यः ॥ सोमः पतीरयीणां सखेद्र
 स्य दिवे दिवे ॥ अयंपृषारयिर्मगः सोमः पुनानो अर्षति ॥ पतिर्विश्वस्यमूर्मनो व्यरव्यद्रोदसीउभे ॥ समु
 प्रिया अनूषत गावोमदायुधृष्वयः ॥ सोमांसः कृण्वते पृथः पर्वमानास इंदवः ॥ यओजिष्टस्तमाभंरपर्वमा
 नश्चावाय्यै ॥ यः पंच चर्षणीरमिरयि येन वनामहे ॥ सोमाः पर्वत इंदवोऽस्मभ्यं गातु वित्तमाः ॥ मित्राः सुवाना
 अरेपसं स्वाध्यः स्वविदः ॥ २ ॥ सुष्वाणा सोमो व्यर्द्रि मिश्रिताना गोरधित्वचि ॥ इपमस्मभ्यं मित्रः समस्वर
 न्वसुविदः ॥ एते पुता विपश्चितः सोमांसो दध्याशिरः ॥ सूर्यांसो न दर्शता सो जिगत्सवो ब्रुवाधृते ॥ प्रमुन्वा
 नस्यां धसोमर्तो न हंत तद्वचः ॥ अपश्वानं मराथसंहतामखं नमृगवः ॥ आजामिरत्के अव्यत भुजेन पृत्र

ओण्योः ॥ सरज्जारोनयोषणांवरोनयोनिमासदं ॥ सवीरोदससाधनोवियस्तस्तंभरोदसी ॥ हरिः प्र
वित्रैः अव्यतवेधानयोनिमासदं ॥ अव्योवारेभिः पवते सोमोगव्ये अधित्वचि ॥ कर्निकददृषा हरिरिद्रस्या
भ्येति निष्कृतं ॥ ३ ॥ ॥ ओषधिसूक्तं ॥ ॥ या ओषधीः पू० ऋ१ ॥ शतं वा अंबुधामानि सहस्रेभ्यः
वोरुहः ॥ अधो शतकत्वोयूयमिमं मे अगदं कृतं ॥ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ॥ अश्वोइ
वसजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥ ओषधीरिति मातरस्ते द्वादवीरुपं ब्रुवे ॥ सनेयमश्वं गां वा स आत्मानं
तवंपुरुष ॥ अश्वत्थेवो० ऋ० ॥ १ ॥ यत्रौषधीः समगमंतराजानः समिताविव ॥ विप्रः स उच्यते सि
षयं शोहामीव चार्तनः ॥ अश्ववती सोमावती मूर्जयंती मुदौजसं ॥ आवित्सि सवर्वा ओषधीरस्माऽअ
रिष्टतांतये ॥ उच्छुष्मा ओषधीनां गावो गोष्ठा दिवस्ते ॥ धनं सनिष्पन्ती नामात्मानं तवंपुरुष ॥ इष्कं
तिर्नीभं वोमातार्योयूयं स्थनिष्कन्तीः ॥ सीराः पतत्रिणीः स्थनयदामयति निष्कथ ॥ अतिविश्वोः परि
ष्टाः स्तेन ईव व्रजर्मक्रमुः ॥ ओषधीः प्राचुच्यवुर्यं किंच तन्वो इरुपः ॥ २ ॥ यदि मावाजयन् न ह मोषधीर्ह

स्तं आदधे ॥ आत्मायक्ष्मस्य नश्यति पुरा जीवगृभो यथा ॥ यस्यौपधीः प्रसर्पेथांगमंगुणरुष्परुः ॥ ततो य
 क्ष्मं विबोधन्नुग्रो भक्ष्यमशीरिव ॥ साकं यक्ष्मप्रपतत्चापेण किकिद्दीविना ॥ साकं वातस्य धाज्यासाकं नश्य
 निहाकं यथा ॥ अन्यौवौ अन्यामवत्वन्यान्यस्याउपावता ॥ ताः सर्वाः संविदाना इदमेव प्रावतावचः ॥ याः फलिनी
 ऋ० ॥ १ ॥ २ ॥ मुंचतुं माशपथ्या इदं थोवरुणया दुत ॥ अथो यमस्य पर्दुशात्सर्वस्मादेव किलिपात् ॥ अव
 पतंती खदन्दि आवेपयस्परि ॥ यं जीवमश्रवांमहेन सरिण्याति पूरुपः या ओपधीः सोमराज्ञीर्बन्दीः शतवि
 चक्षणाः ॥ तासां त्वमस्युत्तमारं कामां यशं हृदे ॥ या ओपधीः सोमराज्ञीर्विष्टिताः पृथिवीमनु ॥ बृहस्पतिप्रसू
 ता अस्यैसंदं च वीर्यी ॥ मावोरिष ० ऋ० १ ॥ याश्चेदमुपशृणवंति याश्चैदं परांगताः ॥ सर्वाः संगत्य वीरुधां स्वैसं ०
 ॥ ओषध ० ऋ० १ ॥ त्वमुत्तमास्योपधेत वृक्षाउपस्तयः ॥ उपस्तिरस्तु मोर्धस्मां क्रयो अस्मौ अभिदासंति ४
 इ० ओ० ॥ श्राद्धविघ्नहरसूक्तं ॥ इन्द्राय सामं गायत विप्राय बृहते बृहता ॥ धर्मकृते विपुश्चिन्ते पनस्य वै ॥ त्वमि
 द्रा मिभूरसित्वं मूर्यमरोचयः ॥ विश्वकर्म विश्वदेवो महौ अंसि ॥ विश्राजन्ज्योतिषा स्वर्गच्छोरोचनं

दिवः ॥ देवास्तद्भद्रसख्याययेमिरे ॥ इन्द्रनोगधिप्रियः सत्राजिदगोत्थः ॥ गिरिर्निविश्वतस्पृथुः पतिर्दि-
 वः ॥ अग्निहिंसत्यसोमपाउमेबभूथोर्दसी ॥ इन्द्रासि सुन्वतो वृधः पतिर्दिवः ॥ त्वंहिशश्वतीनामिन्द्र-
 तर्पुरामसि ॥ इन्द्रादस्योर्मनो वृधः प० ॥ १ ॥ अधाहीन्द्रिगिर्वण उपत्वा कामान्महः संसृजमहे ॥ उदे-
 वयंत उदभिः ॥ वारणत्वाय न्यामिर्वर्धति शूरब्रह्माणि ॥ वावृध्वांसंचिदद्विवोदिवेदिवे ॥ युजंति हरी-
 इषि स्य गार्थयो रौरथ उरुयुगे ॥ इन्द्रवाहो वचो युजा ॥ त्वनं दद्राम रौओजो नृम्ण शतक्रतो विचर्षणे ॥
 आवीरं पृतना षहं ॥ त्वंहिनः पितावसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ ॥ अथाति सुम्रमीमहे ॥ त्वां शुष्मि-
 न्पुरुहूतवाजयंतमुपब्रुवेशतक्रतो ॥ सनो रास्व सुवीर्यं ॥ २ ॥ यम (मन आवर्तन) सूक्तं ॥ यत्तैय-
 मवैवस्वतं मनोजगाम दूरकं ॥ तत्त आर्वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ यत्ते दिवं यत्पृथिवी मनो ॥
 तत्त ॥ यत्ते भूमिं चतुर्भुष्टिमनो ॥ तत्त ॥ यत्ते चतस्रः प्रदिशो मनो ॥ तत्त ॥ यत्ते समुद्रमर्णवं म-
 नो ॥ तत्त ॥ यत्ते मरीचीः प्रवतो मनो ॥ तत्त ॥ १ ॥ यत्ते अपो यदोषधीर्मनो ॥ तत्त ॥

[illegible]

॥१॥ चक्षुषः पितामनसा हि धीरो वृत्तमेने अजन च भ्रमाने । यदेदं ता अददहंत पूर्वादिद्यावापृथिवी अप्रथे
तां ॥ विश्वकर्मा विमना आदिहाया धाता विधाता परमो तसं दृक्तेषां सिद्धानि सप्तमिषामंदं त्रियत्रास सक्तृषी
न्य एकं माहुः ॥ योनः पिता जनिता यो विधाता धामा निवेदमुर्वना निविश्वा ॥ यो देवानां नाम धा एकं लवतं सं
प्रभं भुवनार्थं यन्या ॥ त आर्यं जंतद्रविणं समस्मा कर्षयः पूर्वज रितारो न भुना ॥ अमूर्ते सूर्ते रजसि नि
षत्ते यस्मूतानि समरूण्वन्निमानि ॥ पुरो दिवा पर एना पृथिव्या परो देवेभि रसुरै र्यदस्ति ॥ कंस्विद्वर्ग प्रथ
मंदं अत्र आपो यत्र देवाः समर्पश्यंत विश्वे ॥ तमिद्वर्ग प्रथमंदं अत्र आपो यत्र देवाः समगच्छंत विश्वे ॥ अज
स्यनाभावध्येकमपि तं यस्मिन् विश्वानि भुवनानि तस्थुः ॥ न तं विदाथ य इमा जजानान्य द्युष्माकमंतरं
बभूव ॥ नी हरेण प्राहता जल्यया चासु तृपंत उक्थशा संश्वरंति ॥ २ ॥ उषा (प्रातः स्मरण) सूक्तं ॥
द्युष्वा आ वो दि विजा कृते ना विष्कण्वानाम हिमानुमा गोत् ॥ अपद्रुहस्तमं आवर्जुष्टमं गिरस्तमा पथ्या
अजीगः ॥ महेनो अद्य सुविताय बोध्युषो महे सौ भगा यमर्थं धि ॥ चित्रं रायं यशसं ये ह्यस्मे देवि मतेषु

मानुषिश्चवस्युं ॥ एतेत्येभानवोदर्शतायाश्चित्राउपसोअमृतांसआगुः ॥ जनयन्तोदैव्यानिब्रतान्या
पृणंतोअंतरिक्षाव्यस्युः ॥ एपास्यायुजानापरकात्पंचक्षितीःपरिसद्योजिगति ॥ अस्मिपश्यंतीव
युनाजनानांदिबोहुंहिताभुवनस्यपत्नी ॥ वाजिनीवतीसूर्यस्ययोपाचित्राभंधारायईशेवसूनां ॥
ऋषिष्ठुताजुरयंतीमघोन्युषाउच्छतिवह्निमिर्गणाना ॥ प्रतियुतानामरूपासोअश्वाश्चित्राअदृश्रन्नु
षसंवहंतः ॥ यातिशुआविश्वपिशारथेनदधातिरत्नविधतेजनाय ॥ सत्यासत्येभिर्महतीमहद्भिर्देवी
देवेभिर्यजतायजत्रैः ॥ रुजदृब्धहानिददंदुस्त्रियाणांप्रतिगावउपसंवावशंत ॥ नूनोगोमद्वीरवद्धेहिरत्न
मुषोअश्वापत्पुरुभोजोअस्मे ॥ मानोर्वीहिःपुरुषतानिदेकर्यूयपां ॥ १ ॥ ॥ संज्ञानसूक्तं ॥
संमिद्युवसेष्टषत्रग्रेविश्वान्यूर्यआ ॥ इळस्पदेसमिध्यसेसनोवसुन्याभर ॥ संगच्छध्वंसंवदध्वंसवो
मनौसिजानतां ॥ देवाभांगयथापूर्वसंजानानाउपासते ॥ समानोमंत्रःसमितिःसमानीसमानमनःसह
चित्तमैषां ॥ समानमंत्रमिममंत्रयेवःसमानेनैवाहविषाजुहोमि ॥ समानीवआ० ऋक् ॥ परिशिष्टं ॥ सुं

ज्ञानमुशानवदत्संज्ञानवरुणोवदत् ॥ संज्ञानभिद्रश्चाग्निश्चसंज्ञानसंवितावदत् ॥ संज्ञाननःस्वेभ्यः
संज्ञानमरणेभ्यः ॥ संज्ञानमश्विनायुवमिहास्मासुनिर्यच्छतं ॥ यत्कक्षीवासंवननपुत्रोअंगिरसामवे
त् ॥ तेननोद्यविश्वेदेवाःसंप्रियांसमचीचरत् ॥ संवोमनासिजानतांसमाकुंतिर्भनामसि ॥ असौयो
विमनादनस्तंसमावर्तयामसि ॥ २ ॥ नैर्हस्त्यसेनादरणंपरिवर्त्मेवयद्ध्रुविः ॥ तेनामित्राणांबाहून्हु
विषाशोवयामसि ॥ परिवर्त्मान्येषामिद्रःपषानुयच्छतु ॥ तेषांवोअग्निदग्धानामग्निमूहानामिद्रोहंतु
वरंवनं ॥ ऐषुनत्तद्यपजिनंहरिणस्यप्रियंयथा ॥ पराङ्गमित्राँलुषत्वर्वाचीगौरुपेजतु ॥ ३ ॥ प्राध्वं
राणांपतेवसोहोतुर्वरेण्यक्रतो ॥ तुभ्यंगायुत्रमृच्यते ॥ गोर्कामोअन्नकामःप्रजाकामउतकश्यपः ॥
भुतंसविष्यत्प्रस्तौतिमहब्रह्मैकमुक्षरं ॥ यदक्षरंभूतकृतोविश्वेदेवाउपांसते ॥ महर्षिमस्यगोसारंज
मदग्निमकुर्वत ॥ जमदग्निराप्यायनेछंदोमिश्रतुरक्षरः ॥ राज्ञःसोमस्यदक्षेणब्रह्मणावीर्यावता ॥
शिवानःप्रदिशोदिशःसत्यानःप्रदिशोदिशः ॥ ४ ॥ अजोयत्तेजोददृशेशुकंजयोतिःपुरेगुहा ॥ तद्

षिःकथयःस्तौतिसत्यं ब्रह्म चरार्चं घ्रुवं ब्रह्म चरार्चं ॥ त्र्यायुषं जमदग्नेः कथयं पस्य त्र्यायुषं ॥ अग
 स्यस्य त्र्यायुषं यद्देवानां त्र्यायुषं ॥ तर्मे अस्तु त्र्यायुषं शतायुषं बलायुषं ॥ ओं च मे स्वरं श्वमे यज्ञोपच
 तेन मथ ॥ यत्तेन्यूनं तस्मै त उपयत्तेति रिक्तं तस्मै तेन मः ॥ तच्छं योराहणी महं गतं युज्ञायं गतं युज्ञापत
 ये देवी स्वस्ति रस्तु नः स्वस्ति मीनुषेभ्यः ॥ ऊर्ध्वजिगातु भेषजं शनो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ न
 मो ब्रह्मणे न मो अस्त्वग्रथे न मः पृथिव्यैनम ओषधीभ्यः ॥ नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे महते
 करोमि ॥ ५ ॥ ॥ इति ऋग्वेद मंत्र संहितायां सूक्तप्रकरणं समाप्तं ॥ ॥ अथ स्फुट मंत्र प्रकरणं ॥
 ॥ ॐ वातं वातं गुणं गुणं सुशस्ति मिरे मीमं मरुता मोर्ज इमहे ॥ पृषदश्वासो अनवभ्रं राधसो गंतारो
 युज्ञं विदथेषु धीराः ॥ १ ॥ तंवः शर्धरथानां त्वेषं गुणं मारुतं नव्यसीनां ॥ अनुप्रयति वृहयः ॥
 शर्ध शर्धव एषां वातं वातं गुणं गुणं सुशस्ति मिः ॥ अनुक्ता मे मधीनि मिः ॥ अग्ने शर्धतमगुणं पिष्टं
 रुक्मो भिरं जिमिः ॥ विशो अद्य मरुतामवद्वये दिवाश्चिद्रोचनादधि ॥ १ ॥ अयं मातायं पिता

यंजीवातुरागमत् ॥ इदंतवप्रसर्पणंसुबधवेहिनिरिहि ॥ अयमेहस्तोमगवानयमेमगवत्तरः ॥ अ
 यमेविश्वमेषजोयंशिवाभिर्मर्शनः ॥२॥ वयःसुपर्णाउपसेदुरिद्रिप्रियमेधाकर्षयोनार्धमानाः ॥ अपह्वां
 तमूर्णौहिपूधिचक्षुर्ममुग्ध्य ॥ स्मान्निधयेवबुद्धान् ॥ सरस्वतित्वमस्मौअविद्विमुरुत्वतीधृषतीजेषिश
 त्रून् ॥ त्यं चिच्छर्धंततविषीयमाणामिद्रोहंतिदृषमंशंढिकानां ॥ प्रातयंवाणारुथ्येववीराजेवयमावरमास
 चेते ॥ मेनेइवतन्वाइशुंममनिदंपतीवक्रनुविदाजनेषु ॥ ओष्ठाविवमह्वास्त्रेवदंतास्तनाविवपिप्य
 तंजीवसेनः ॥ नासेवनस्तन्वोरक्षिताराकर्णाविवसुश्रुताभूतमस्मे ॥ दुर्गेचिन्नःसुगंक्षधिगृणानइद्रि
 वणः ॥ त्वंचमयवन्वशः ॥ ३॥ मेतेवदंतुप्रवयंवदामग्रावंभ्योवाचैवदतावदद्भ्यः ॥ यदंदयःपर्वताः
 साकमाशवःश्लोकंघोषंभरथेद्रायसोमिनः ॥ बोधमिअस्यवचसोयविष्ठमंहिष्ठस्यप्रभंतस्यस्वधावः ॥ पी
 यतित्वोअनुत्वोगुणातिवंदारुस्तेतुन्वंदेअग्ने ॥ वास्तोष्पतेध्रुवास्थूणांसंत्रसोम्यानां ॥ द्रप्सोभेत्ता
 पुरांशश्वतीनामिद्रोगुनीनांसखा ॥ अस्माकमुत्तमंक्षधिश्त्रवोदेवेषुसूर्य ॥ वर्षिष्ठुधामिवोपरि ॥ य

त्रैलोक्येनस्पतेदेवानांगुह्यानामानि ॥ तत्रहव्यानिगामय ॥ ३ ॥ चंद्रमाअप्स्वंतराष्ट्रपुर्णोधाव
 तेदिवि ॥ नवोदिरण्यनेमयःपदविंदितिविद्युतोवित्तमेअस्यरोदसी ॥ अग्नेयाहिदृत्यमारिपण्यो
 देवाअच्छाबह्मरुणागणेन ॥ सरस्वतीमरुतोअश्विनापोयक्षिदेवानरत्नधेयायविश्वान् ॥ यस्तिग्म
 शृंगोद्यष्टमोनमीमलकःकृद्धीश्रयावयतिप्रविश्वाः ॥ यःशश्वतोअदाशुपोगयस्यप्रयतासिसुष्वित
 रायवेदः ॥ आनोनियुद्धःशुतिनीमिरस्वरसहस्रिणीमिरुपयाहियुहं ॥ वायोअस्मिन्सर्वनेमादय
 स्वयु ॥ आतेसिंचामिकृक्ष्योरनुगात्राविधावतु ॥ गुभायजिन्हयामधु ॥ अस्यप्रजावतीगृहेस
 श्रंतीद्वेदिवे ॥ इळाधेनुमतीदुहे ॥ यादंपतीसमनसासुनतआचधावतः ॥ देवांसोनित्ययाशिरा
 ॥ ५ ॥ तुभ्यंताअगिरस्तमविश्वाःसुक्षितयःपृथक् ॥ अयेकामाययेमिरे ॥ त्वंपवित्रेजसोविध
 मीणिदेवेभ्यःसोमपवमानपूयसे ॥ त्वामुशिजःप्रथमाअगृभ्णततुभ्येमाविश्वाभुवनानियेमिरे ॥ ६ ॥
 आतेअग्रऋचाहविर्हृदातृष्टंभरामसि ॥ तेतेमवतंसृणक्वमासोवशाजत ॥ स्तविष्यामित्वाम

हं विश्वस्यामृतमोजन ॥ अग्नेत्रातारममृतमिषेष्ट्ययजिष्ठं हव्यवाहन ॥ अरित्रं वादिवस्पृथुतीर्थे सिंघं
नारथः ॥ धियायुधुज्जइंदवः ॥ हिमेनाग्निं मंसं मवारयेथां पितुमतीमूर्जमस्माअथत्तं ॥ ऋबीसेअग्नि
मश्विनावनीतमुच्चिन्मथुः सर्वगणं स्वस्ति ॥ ततमेअपस्तदुतायते पुनः स्वादिष्टाधीति रुचथायशस्यते ॥
अयंसंमूद्रुहविश्वेदेव्युः स्वाहा कृतस्य समुतृणुत कभवः ॥ अजो हवीदश्विनातौ गयोवां प्रोळ्हः समु
द्रमव्यथिर्जगन्वान् ॥ निष्ठमूहथुः सुयुजारेथेन मनोजवसावृषणास्वस्ति ॥ पृद्योदिविपृद्योअग्निः
पृथिव्यां पृद्यो विश्वाओपधीराविवेश ॥ वैश्वानरः सहसा पृद्योअग्निः स नो दिवा सरिषः पानुनक्तं ॥ य
सेगात्रादग्निनापच्यमानादग्निशूलं निहतस्यावधावति ॥ मातङ्गम्यामाश्रिषन्मातृणैषु देवेभ्यस्तदु
शम्भ्योरातमस्तु ॥ वयमर्चेद्रस्ये प्रष्टाव्यं श्वोवोचेमहि समर्थे ॥ वयंपुरामहिचनोअनुद्युन्त नक्तं कमुक्षा
नरामनेष्यात् ॥ ८ ॥ यज्ञायज्ञावोअग्रथे गिरागिराचक्षसे ॥ प्रप्रवयममृतं जातैर्वदसं प्रियं मित्रं न
शंसिषं ॥ तवग्निहोत्रं तवपोत्रमृत्वि यंतवनेर्हृत्वमग्निदंतायतः ॥ तवंप्रशास्त्रं तमध्वरीयसि ब्रह्माचा

सिंग्रहपतिश्चनोदमे ॥ सरस्वतीसाधयतीधियनइळादेवीभारतीविश्वतूतिः ॥ तिस्रोदेवीःस्वयया
 बहिरदमच्छिद्रंपांतुशरणंनिषद्य ॥ पिशंगरूपःसुसरोवयोधाःश्रुद्धीवीरोजायतेदेवकामः ॥ प्र
 जातवष्टाविष्यंतुनामिमस्मेअथादेवानामप्येतुपायः ॥ ९ ॥ घृतमिमिक्षेघृतमस्ययोनिघृतेश्रितो
 घृतम्बस्ययाम ॥ अनुष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतं वषभवक्षिहव्यं ॥ योनःसनुत्युतवाजियत्नु
 रभित्यायतंतिगितेनविध्य ॥ बहस्पतआयुधैर्जपिशत्रूंद्गुहरीषंतंपरिधिराजन् ॥ आभारंती
 भारतीमिःसजोषाइळादेवैर्मनुष्यैर्भिरग्निः ॥ सरस्वतीसारस्वतोभिरवाक्कुत्सोदेवीबहिरदंसंदनु ॥
 तन्नस्तुरीपमधपोषयितुदेवत्वष्ट्रविरराणःस्यस्व ॥ यतोवीरःकर्मण्यःसुदक्षोयुक्तग्रावाजायतेदेवानां
 मः ॥ वनस्पतेवष्ट्रजोपेदुवानग्रिहृविःशमितासुदयाति ॥ सेदुहोतासत्यनरोयजातियथादेवानां
 जनिमानिवेदं ॥ आयाह्यग्रेसमिधानोअर्वाङ्घ्रिणदैवैःसरथंतुरेभिः ॥ बर्हिर्नआस्नामादितिःसु
 पुत्रास्वाहदिवाअमृतामादयंतां ॥ १० ॥ सोमांपुषणजननारयीणांजननादिवोजननाद्युथिव्याः॥

जातौ विश्वस्य भुवनस्य गोपौ देवा अं कृण्वन्मृतं स्युर्नामि ॥ अंजंति त्वामं ध्वरे देवयंतो वनस्पते मधु
नदिव्येन ॥ यदूर्ध्वं स्तिष्ठद्भविणे हर्धत्ताद्यद्वाक्षयो मातुरस्या उपस्थे ॥ इंद्राग्नीरोचनादिवः परिवा
जेषु मूषथः ॥ तद्दौचेति प्रवीर्य ॥ नामानितेशतक्रनो विश्वा मिर्गीभिर्गीमहे ॥ इंद्राग्निमातिषा
ह्ये ॥ ११ ॥ ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजायुनज्मिहरी सखाया सधमादं आशू ॥ स्थिरं रथं सुखमिंद्राधिनिष्ठं प्रजान
न्विद्दौ उपेया हि सोमं ॥ सप्तर्षी ररमंति बाधमाना बृहन्मिमाय जमदग्निदत्ता ॥ आसूर्यस्य दुहिता ततानुश्रवो
देवेष्वमृतं मजुर्य ॥ सप्तर्षी ररमत्तयमिभ्यो धि श्रवः पांचजन्या सुकुचिषु ॥ सापक्ष्या ई नव्यमायुर्दधा
नायामि पलस्तिजमदग्रयोददुः ॥ १२ बलं धेहितु नूषु नो बलमिंद्रानल्लुप्तं नः ॥ बलं नो कायतनयाय
जीवसे त्वं हि बलदा असि ॥ त्वं नो अश्वेवरुणस्य विद्वान्देवस्य हेळो वयासि सीष्ठाः ॥ यजिष्ठो वह्नितमः
शोशुचानो विश्वाद्देषांसि प्रमुग्ध्यस्मत् ॥ सत्वं नो अश्वेव मोमवोतीने दिष्टो अस्या उपसो व्युंष्टौ ॥ अ
र्धयक्ष्वनो वरुणं राणो वीहिर्मळीकं सुहवो न एधि ॥ अश्वेतमद्याश्वं न स्तोमैः कनुं न मद्रं दृदिस्पृशं ॥ कृ

ध्यामानुओहैः ॥ १३ ॥ श्रावयेदस्य कर्णावाजयध्वै जुष्टामनुप्रविशं मंदयध्वै ॥ उद्धावृषाणोराधसे
 तुर्विष्मन्करं नृदं द्रुमुतीर्यामयंच ॥ अच्छायोगं तानाधमानमूती इत्थाविप्रं हवमानं गृणंतं ॥ उपुत्सं
 निदधानो धुर्यां शून्सहस्राणि शतानि वज्रबाहुः ॥ १४ ॥ योजागारतमृचः कामयंते योजागारतमु
 सामानियंति ॥ योजागारतमयं सोमं आहृतवाहमस्मि सख्ये न्यौकाः ॥ अग्निर्जागारतमृचः कामयंते अग्नि
 र्जागारतमुसामानियंति ॥ अग्निर्जागारतमयं सोमं आहृतवाहमस्मि सख्ये न्यौकाः ॥ जागर्षित्वं भुव
 ने जातवेदो जागर्षियत्रयजते हविष्मान् ॥ इदं हविः श्रद्धया नोजुहोमि ते नपासि गच्छं नामगोनां ॥ १५ ॥
 अर्चतस्त्वाहवामहे र्चतः समिधीमहि ॥ अग्ने अर्चत ऊतये ॥ अजातशत्रुमजरस्वर्वत्यनुस्वधाभिताद
 स्ममीयते ॥ सुनोतं न पचत ब्रह्मवाहसे पुरुष्टुताय प्रतरंदधातन ॥ समिधा जातवेदसे देवाय देवहूतिभिः ॥
 हविर्भिः शुक्रशोचिषे नमस्वि नो वयं दाशे माग्नेये ॥ देवो वो द्रविणो दाः पूर्णा विवह्यासि चं ॥ उद्धासि च
 ध्वमुपवापुणध्वमादिहो देव ओहेते ॥ सनातातं इन्द्रभोजनानि रातहं व्यायदाशुर्षे सुदासे ॥ वृष्णे ते ह

रीचर्षणायुनजिमव्यंतुब्रह्माणिपुरुशाकवाजं ॥ अग्रआयाहिवीतयेगुणानोहव्यदातये ॥ निहोतांस
त्सिबर्हिषि ॥ १६ ॥ वरुणःप्राविताभुवन्मित्रोविश्वामिह्रुतिभिः ॥ करतांनःसुरार्धसः ॥ निहोता
होतृषदनेविदानस्त्वेषोदीदिवौअसदत्सुदक्षः॥अदब्धवतप्रमतिर्वसिष्ठःसहस्रंमरःशुचिजिह्वोअग्निः ॥
त्वंदूतस्त्वमुनःपरस्यास्त्वंवस्यआवृषमप्रणेता ॥ अर्थेतोकस्यनस्तेननूनामप्रयुच्छन्दीद्यद्वोधिगो
पाः ॥ १७ ॥ भोजंत्वामिन्द्रवयंदुवेमददिष्टुमिन्द्रापांसिवाजान् ॥ अविष्टुद्रिचित्रयानऊती
कृधिचृषन्निद्रवस्यसोनः ॥ येनलोकायतनंयायधान्यंबीजंवहध्वेअक्षितं ॥ अस्मभ्यतद्धत्तन्
यद्वर्द्धमहराधोविश्वायुसौमगं ॥ अश्विनवेहृगच्छतंनासत्यामाविवेनतं ॥ हंसाविषपतनमांसुतौड
पं ॥ सचित्रचित्रंचितयंतमस्मेचित्रक्षत्रचित्रतंमवयोधां ॥ चंद्ररथिपुरुवरैबृहंतंचंद्रचंद्राभिर्गुण
तेयुवस्व ॥ १८ ॥ स्वादुःपवस्वदिव्यायजन्मनेस्वाहुरैद्रायसुहवर्तुनाम्ने ॥ स्वादुर्मित्रायवरुणा
यवायेवहृस्पतयेमधुमाअदाभ्यः ॥ अद्धीदिद्रप्रस्थितेमाहृवीषिचनौदधिष्वपचतोतसोमं ॥ प्रये

स्वंतःप्रतिहर्यामसित्वास्त्याःसंतुयजमानस्यंकामाः ॥ नार्केसुपूर्णमुपयत्पतंतं हृदावेनतो अभ्यंचक्ष
 तत्वा ॥ हिरण्यपक्षंवरुणस्यदूतयमस्ययोनौशकुनंमुरण्युं ॥ सीरायुंजंतिकवयौयुगावितन्वतेपृथ
 क् ॥ धीरदिवेषुमुन्नया ॥ १९ ॥ सस्तुमातासस्तुपितासस्तुश्वामस्तुविशपतिः ॥ ससंतुसंवज्ञा
 तयःसस्त्वयमभितोजनः ॥ शुक्तेअन्यद्यजतंतैअन्यद्विपुरुषेअहनीधौरिवासि ॥ विश्वाहिमा
 याअवसिस्वधावोमद्रातेपूषन्निहरातिरस्तु ॥ विज्योतिषाब्रह्मनामात्यगिराविर्विश्वो निकुणतेमहि
 त्वा ॥ प्रादेवीर्मायाःसहतेदुरेवाःशिशीतेश्रृंगरक्षसेविनिक्षे ॥ विहिंसोतोरसंसृतनेद्रदेवमंसन ॥ यत्रा
 मंदहूषाकंपिर्यःपुच्छेषुमत्सत्वाविश्वस्मादिद्रुउत्तरः ॥ यदातेमारुहतीविशस्तुभ्यभिद्रनियेमिरे ॥ आ
 दित्तेविश्वामुर्वजानियेमिरे ॥ २० ॥ रुवतिमीमोच्छेषमस्तविष्ययाश्रुंगेशिशानोहरिणीविचक्षणः ॥
 आयोनिंसोमसुहृत्तंनिर्षादतिगन्वयीत्वग्भवतिनिर्णिगन्वयी ॥ त्वनःसोमविश्वतोणोपाअदाभ्यो
 भव ॥ सेधराजन्प्रसिधोविवोमदेमानेदुःशंसईशताविवक्षसे ॥ मद्रोमद्रयासचमानाणात्स्वसा

रंजारोअभ्येतिपथात् ॥ सुप्रकृतैद्युभिरग्निवितिष्ठन्नशोद्धिवर्णैरभिराममस्थात् ॥ सरस्वतीसरयुः
 सिंधुर्बुध्निरभिमहोमहीरवसायैतुवक्षणीः ॥ देवीरारोमातरःसुदयित्वोधृतवत्पयोमधुमन्नोअर्चत ॥
 अग्निरिंद्रोवरुणोमित्रोअर्यमावायुःपुषासरस्वतीसजोषसः ॥ आदित्याविष्णुर्मरुतःस्वर्बृहत्सोमोरु
 द्रोआदितिर्ब्रह्मणस्पतिः ॥ २१ ॥ पार्वीरवीतन्यतुरेकपादजोदिवोधत्तार्सिधुरापःसमुद्रि
 यैः ॥ विश्वेदेवासःशृणवद्दत्तांसिमेसरस्वतीसहधीमिःपुरंध्या ॥ प्रशार्थायमारुतायस्वसानवइमां
 वार्चमनजापर्वतच्युतै ॥ घर्मस्तुमैदिवअपृष्टयज्वनेद्युमन्नश्रवसेमहिन्मृगमर्चत ॥ त्वमग्रेगृहपति
 स्त्वंहोतानोअध्वरे ॥ त्वंपोताविश्ववारप्रचेतायक्षिवेर्विचवार्य ॥ कूधिरान्नंयजमानायसुक्नोत्वंहिर
 त्त्वाअसि ॥ आनंक्तेशिशीह्रिविश्वमृत्विजंसुशंसोयश्चदक्षते ॥ २२ ॥ आवर्दिद्वयमुनातत्सवश्च
 प्रात्रभेदंसर्वतातामुषायत् ॥ अजासंश्चशिग्रवोयक्षवश्चबुल्लिशीर्षिणजंभूरश्व्यानि ॥ प्रवोय
 क्षेधुदेवयंतोअर्चन्धावानमोमिःपृथिवीइपध्वै ॥ येषांब्रह्माण्यसमानिविप्राविष्वग्वियंतैवनिनोनशा

स्वाः ॥ अपाः सोमस्तमिद्रप्रथाहिकल्याणीजायासरणंगृहेते ॥ यत्रार्थस्यबृहतोनिधानंविमोचनं
 वाजिनोदक्षिणावत् ॥ हव्यवाळग्निरजरःपितानोविमुर्विमावांसुदृशीकोअस्मे ॥ सुगार्हपत्याःसमि
 षोदिदीत्यस्मद्रचक्षुसंमिमीहिश्रवांसि ॥ २३ ॥ इंद्रमिद्वेवतांतयइंद्रप्रयत्यध्वरे ॥ इंद्रसमीकेवनि
 नोहवामहइंद्रधनस्यसातये ॥ जुषस्वाग्रइळयासजोषायतमानोरशिमसिःसूर्यस्य ॥ जुषस्वनःसमि
 धंजातवेदआचंदेवान्हविरद्याथवक्षि ॥ देवीद्वीरोविश्रयध्वंसुप्रायणानकुतये ॥ प्रप्रयज्ञंपृणीतन ॥
 दुहंतिसैकामुपद्वापंचरुजतः ॥ तीर्थैसंधोरधिस्वरे ॥ काणाशिशुर्महीनांहिन्वन्नुतस्यदीधितिं ॥
 विश्वापरिप्रियासुवदधद्विता ॥ एतेशभीमिःसुशर्माअभूवन्त्येहिन्विरेतन्वःसोमउक्थैः ॥ नृवद्वदन्तु
 पनोमाहिवाजान्दिविश्रवोदधिषेनामवीरः ॥ २४ ॥ स्वाहाग्रयेवरुणायस्वाहेद्रोयमरुद्भ्यः ॥ स्वाहा
 देवेभ्योहविः ॥ बृहस्पतिर्नःपरिपालुपश्चादुतोत्तरस्मादधरादधायोः ॥ इंद्रःपुरस्तादुतमध्यतोःस
 स्वासस्विभ्योवरिवःरुणोतु ॥ शनोमित्रःशंवरुणःशनोभवत्वर्थमा ॥ शनइंद्रोबृहस्पतिःशनोविष्णु

रुरुक्रमः ॥ शनौ भवंतु वाजिनो हवेषु देवतातामितद्रवः स्वर्काः ॥ जंभयंतो हि हंकरांसि संनेम्य
 स्मद्युपवृन्तर्मावाः ॥ २५ ॥ सहस्रशंगो हृषमोयः समुद्रादुदाचरत् ॥ तेनासहस्येनावयं निज
 नान्त्स्वापयामसि ॥ मोष्ठे शयावत्क्षेपयानारीर्यास्तल्पशीबरीः ॥ स्त्रियोयाः पुण्यगंधास्ताः
 सर्वाः स्वापयामसि ॥ इळायास्तत्वापदेवयंनाभापृथिव्या अधि ॥ जातवेदो निर्धातमद्यग्रे हव्या
 यवो ब्रह्मे ॥ अपि पंथांमगन्महिस्वस्तिगामनेहसं ॥ येन विश्वाः परिद्विषो वृणाक्तिर्विदते वसु ॥
 ॥ २६ ॥ अगौरुथायगविषेद्युक्षायदस्म्यंवचः ॥ घृतात्स्वादीयो मधुनश्चवोचत ॥ असंख्यस
 चंपरमेव्यो मन्दक्षस्य जन्मन्नदितेरुपस्थे ॥ अग्निर्हिनः प्रथमजाकृतस्य पूर्वआयुर्निचषभश्चधेनुः ॥
 जीविरुदंति विमयं ते अश्वरेदीर्घामनुप्रसिति दीधियुनरः ॥ वामं पितृभ्यो यद्वदंसं मेरिरिमयः पतिभ्योजनं
 यः परिष्वजे ॥ त्वं ह्यग्रे अभिना विप्रो विप्रेण सन्तुता ॥ सखा सख्यांसमिध्यसे ॥ अत्राह गोरमन्वतना
 मत्सष्टुरपीच्य ॥ इत्थाचंद्रमसोगृहे ॥ २७ ॥ राजा राष्ट्रानां पेशो न दीनामनुत्तमस्मै क्षत्रं विश्वायु ॥

अविद्यो अस्मान्निश्वाप्तुर्विश्वद्युक्कणोतशंसं निनिस्सोः ॥ यदश्वस्य कृविषो मक्षिका शयद्वा स्वरोऽस्वधि
 तौरिमस्ति ॥ यद्वस्तयोः शमितुर्थं त्रलेषु सर्वा नाते अपि देवेष्वस्तु ॥ यद्वा जिनो दामं सदानमर्बतो
 याशीर्षण्यारशानरज्जुरस्य ॥ यद्वा दद्यास्य प्रमृतमास्ये देतृणं सर्वा ॥ निःकर्मणं निषदेनं विवर्तनं यच्च पे
 द्वीशमर्बतः ॥ यच्च पपौ यच्च चासिं जघामसं ॥ २८ ॥ उशिकपावको अरतिः सुमेधामर्बतं विरमृतो नि
 धायि ॥ इयं ति धूममरुषं सरि अदुच्छुक्केण शोचिषा ध्यामि नक्षन् ॥ दृशानोरुक्म उर्वि यावय द्यौ हुर्मर्षमा
 युः श्रियेरुच्चानः ॥ अग्निरमृतो अभवद्दयोऽग्निर्यदेनं द्यौर्जनयत्सुरताः ॥ यस्ते अद्य कृण्वद्भद्रशोचे पप
 देवघृतवतमग्ने ॥ प्रतनय प्रतरं वस्यो अच्छाभि सुम्रे देवमर्कं यविष्ठ ॥ आतमं जसौ श्रवसे ष्वय उक्थते
 कथ आर्भजशस्यमाने ॥ प्रियः सूर्ये प्रियो अग्राभं वा त्युज्जाते न भिनदुज्जनि त्वैः ॥ त्वामग्ने यजमाना
 अनुद्यन् विश्वावसुदधिरेवार्याणि ॥ त्वया सह द्रविणमिच्छमाना जंगो मंतमृशिजो विवदुः ॥ अस्ता
 न्यग्निर्नरां सुशेवै विश्वानरकृषिभिः सोमगोपाः ॥ अद्भेषद्यावापृथिवी हुवे मदेवा धत्तरयिमस्मे सुवीर ॥ १ ॥

पवित्रं ० १॥ तपोष्यवित्रं ० १॥ अरुरुचदुषसः पृश्निरग्रियउक्षाबिसर्तिभुवनानिवाजयुः ॥
 मायाविनोममिरअस्यमाययोनुचक्षसः पितरोगर्भमादधुः ॥ गंधर्वइत्थापदमंस्यरक्षसिपातिदेवानां ज
 निमान्यद्भुतः ॥ गृभ्णातिरिपुंनिधयानिधापतिः सुकृत्तमामधुनोमक्षमांशत ॥ हविर्हविष्मोमहिसद्र
 दैव्यं नमोवसानः परियास्यध्वरं ॥ राजांपवित्ररथोवाजमारुहः सहस्रं भृष्टिर्जयसि श्रवोबृहत् ॥ २ ॥
 मातेगेदन्निरामरार्धसंद्रमातेगृहामहि ॥ इच्छाचिद्वर्यः प्रमृशाभ्यामंरुतेतामानं आदभे ॥ इंद्रो
 वावेदिर्यन्मधंसंस्वतीवासुमगाददिवसु ॥ त्वं वाचिन्नदाशुषे ॥ चित्रइद्राजाराजकाइदन्यकेयुकेसरस्व
 तीमनु ॥ पर्जन्यइवततनद्विबृष्ट्यासहस्रं मयुताददत् ॥ ३ ॥ वातआवांतुमेषजं शंसुमयोभुनोह
 दे ॥ प्रणआर्युषितारिषत् ॥ उत्तवांतपितार्सिनउतआतोतनः सखा ॥ सनो जीवातवेक्षधि ॥ यददो
 वाततेगृहेऽमृतस्यनिधिर्हितः ॥ ततो नोदेहिजीवसे ॥ ४ ॥ प्रनूनंजातवैदसमश्वं हिनोतवाजिनं ॥
 इदं नोबर्हि रासदे ॥ अस्यप्रजातवैदसो विप्रवीरस्यमीळुषः ॥ महीमियमिसुष्टुति ॥ यारुचो जात

वेदसोदेवत्राहव्यवाहनीः ॥ तामिनोयज्ञमिन्वतु ॥ ५ ॥ अग्नीषोमाहविषःप्रस्थितस्यवीतंहर्यतंह
 वणजुषेथां ॥ सुशर्माणास्ववसाहिमतमथाधत्तयजमानायशयोः ॥ योअग्नीषोमाहविषासपुर्या
 देवद्रीचामनेसायोधृतेन ॥ तस्यव्रतंरक्षतंपातमंहसोविशेजनायमहिशर्मयच्छतं ॥ अग्नीषोमासवेद
 सासहूतीवनतंगिरः ॥ सदेवत्राबभूवथुः ॥ अग्नीषोमावनेनवांयोवांघृतेनदाशति ॥ तस्मदीदयतंबु
 हत् ॥ अग्नीषोमाविमानिनोयुवंहव्याजुजोषतं ॥ आयातमुपनःसचा ॥ अग्नीषोमापिपुतमवतोनु
 आप्यायंतामुस्त्रियाहव्यसुदः ॥ अस्मेबलानिमघवत्सुधत्तंरुणतनोअध्वरंश्रुष्टिमंतं ॥ ६ ॥ येत्रिश
 तित्रयंस्पोदेवासोबर्हिरासदन् ॥ विदन्नहं द्वितासेनन् ॥ वरुणोमित्रोअर्यमास्मद्रातिषाचोअभयः ॥
 पत्नीवंतोवषट्कृताः ॥ तेनोगोपाअप्राच्यास्तउदृक्कइत्थान्यक् ॥ पुरस्तात्सर्वयाविशा ॥ यथावशंतिदे
 वास्तथेदसत्तदेषानंकिरामिनत् ॥ अरांवाचुनमर्त्यः ॥ सप्तानांससक्कृष्टयमसद्युम्नान्येषां ॥ सप्तोअग्निश्चि
 योधिरे ॥ ७ ॥ इमंनोअग्रउपयज्ञमेहिपंचयामंत्रिच्छतंससतंतु ॥ असोहव्यवाळुतनःपुरोगाज्योगेवदीर्घतम

आशयिष्ठाः ॥ अदेवाद्देवः प्रचतागुहायन्प्रपश्यमानोऽमृतत्वमेमि ॥ शिवं यत्संतमर्शिवोजहामि स्वा
त्सव्यादरेणीनाभिमेमि ॥ पश्यन्नन्यस्या अतिथिवयायां ऋतस्य धाम विमिमे पुरुषाणि ॥ शंसा मिपित्रे असु
राय शेषं मयद्भियाद्यज्ञि यैसागमेमि ॥ बन्धीः समा अकरमंतरं स्मिन्निद्रं वृणानः पितरं जहामि ॥ अ
भिः सोमो वरुणस्ते च्यवंते पर्यावद्रोद्धृतं दं वाम्यायन् ॥ निर्माया उत्ये अमुरा अभूवन्त्वं मा वरुणका
मयासे ॥ ऋतेन राजन्नृतं विविचन्मम राट्टस्याधिपत्यमेहि ॥ ८ ॥ प्रातारत्नं प्रातृत्वा द
धाति तं चिकित्वा न्यतिगुह्यानि धत्ते ॥ तेन प्रजां वर्धयमान आर्युरायस्योषेण स च ते सुवीरः ॥
सुगुरसत्सु हिरण्यः स्वर्श्वो बृहदस्मै वयं द्रो दधाति ॥ यस्त्वायं तं वसुना प्रातृत्वा मुक्षीजये वपदि मु
त्सिनानि ॥ आर्यमद्य सुकृतं प्रातृत्वा रिच्छन्निष्ठेः पुत्रं वसुमतारथेन ॥ अंशोः सुतं पायय मत्सरस्य क्षयदी
रं वर्धय सुनृताभिः ॥ उपक्षरं तिसिंधवो मयो सुवर्इजानं च यक्ष्यमाणं च घेनवः ॥ घृणं तं च पपुरि च श्रव
स्य वौघृतस्य धारा उपयंति विश्वतः ॥ नाकस्य पुष्टे अधितिष्ठति श्रितो यः पुणानि सह देवेषु गच्छति ॥ त

स्माओपोवृतमर्षतिर्षिध्वस्तस्माद्विधं दक्षिणापिन्वते सदा ॥ दक्षिणावेत्ता ० ॥ मापुणंतेदुरिति मेनुआर
 न्माजारिषुः सरयः सुव्रतासः ॥ अन्यस्तेषां परिधिरस्तु कश्चिदपुणं तमभिसंयंतु शोकाः ॥ ९ ॥ अच्छा
 वो अग्निमयसे देवंगासि सनो वसुः ॥ रासत्पुत्रचंषणा मृतावापर्पति द्विषः ॥ सहिसत्यो यं पूर्वचिद्वेवासंश्चि
 द्यमीधिरे ॥ होतां रंमंद्रजिह्वमि त्सुदीतिभिर्विभावेसु ॥ सनो धीतीवरिष्ठया श्रेष्ठया च सुमत्या ॥ अग्ने
 रायो दिदीहि नः सुहृत्किर्भवेरण्य ॥ अग्निर्देवेषु राजत्यग्निर्मतेष्वा विशन् ॥ अग्निर्नो हव्यवाह नो मिथी
 मिः संपर्यत ॥ अग्निस्तु ० क ० २ ॥ यद्वा हिंष्टु तदग्रये बृहदर्चविमावसो ॥ महिषीवत्तद्वयिस्त्वद्वाजा
 उदीरते ॥ तव द्युमंतो अर्चयो ग्रावे वोच्यते बृहत् ॥ उतो ते तन्यतु र्यथा स्वानो अर्तमना दिवः ॥ एवाँ अ
 भिर्वसूयवः सहस्रानं वंदिम ॥ सनो विश्वा अति द्विषः पर्षन्नावेव सुक्नुः ॥ १० ॥ इविणो दाद्रविणसो
 ग्राव हस्तासो अघ्वरे ॥ युद्धेषु देवमीळने ॥ इविणो दादं दानु नो वसूनि यानि शृण्वरे ॥ देवेषु तावनाम
 रे ॥ इविणो दाः पिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत ॥ नेष्ट्रा हनुमि रण्यत ॥ यस्वांतुरीय मनुमिर्द्रविणो दोयजा

महे ॥ अधस्मानोददिर्भव ॥ आश्वनापिर्बतंमधुदीर्घग्रीशुचित्रता ॥ ऋतुनायज्ञवाहसा ॥ गार्हपत्येनसं
त्यऋतुनायज्ञनीरसि ॥ देवान्देवयुतेयजा ॥ १ ॥ तेनौरायो ० ऋ ० १ ॥ तेनौरायो ० ऋ ० १ ॥ तेनौरायो ० ऋ ० १ ॥ तेनौरायो ० ऋ ० १ ॥
तोविष्णुर्मळंतुवायुः ॥ ऋभक्षावाजोदित्योविधातापर्जन्यावातापिष्यतामिषनः ॥ उतस्यदेवः सविताभगो
नोपांनपादवतुदानुपतिः ॥ त्वष्टदेवेभिर्जनिभिः सजोषाद्यौर्देवेभिः पृथिवीसमुद्रैः ॥ उतनोहिबुध्न्यः श्रु
णोत्वजस्कंपात्यृथिवीसमुद्रः ॥ विश्वेदेवाकृताद्यौहुवानाः स्तुतामंत्राः कविशस्ताअवंतु ॥ एवानपानो
ममतस्यधीभिर्भरद्वाजा अभ्यर्च्यत्यर्कैः ॥ ग्राहृतासोवसवोधृष्टा विश्वेस्तुतासोभूतायजत्राः ॥ १ २ ॥ द्यौ ३
ष्पितः पृथिविमातरश्चग्रेभ्रातर्वसवोमृळतानः ॥ विश्वं आदित्या अदिते सजोषा अस्मभ्यं शर्मबहुलं वि
यंत ॥ जराबोधतद्विविद्धिविशेषेयज्ञियाय ॥ स्तोमं रुद्राय दृशीकं ॥ योनौ दातासनः पितामहा ३ ग्रह
शानकृत् ॥ अयामन्त्रोमधवापुरुवसुर्गौरश्वंस्यप्रदातुनः ॥ रुद्राणामेतिप्रदिशा विचक्षुणोरुद्रेभिर्योषात
नुतेपुथुञ्जयः ॥ इंद्रमनीषा अभ्यर्च्यति श्रुतं मरुतं संख्याय हवामहे ॥ पार्वीरवीकन्या चित्रायुः सर

स्वतीवीरपत्नीधियंघात् ॥ आभिरच्छिद्रंशरणंसजोषादुराधर्षगणतेशर्मयंसत् ॥ कद्विणयासुहृधसा
 नोऽभ्येकदातोयप्रतंवसेशुभंये ॥ परिज्मनेनासेत्यायक्षेबवःकदयेरुद्रायनृमे ॥ कथामहेरुद्रियायब्र
 वामकद्रायेधिकितुषेसर्गाय ॥ आपओषधीरुतनोवतुद्यौर्वनागिरयोवृक्षकेशाः ॥ ससमेससशाकि
 नृकमेकाशनाददुः ॥ यमुनायामधिश्रुतमुद्राधोगव्यमृजेनिराधोमृजे ॥ रथीतमंकपार्दिन
 मीशानंराधेसोमहः ॥ रायःसखायमीमहे ॥ रुद्रस्ययेमीद्विषःसतिपुत्रायांश्चोनुदाधुविर्मरुधै ॥ वि
 देहिमातामहोमहीषासेत्युश्रिःसुभ्वेऽगर्ममाधात् ॥ अगस्त्यःखनमानःखनित्रैःप्रजामपत्यंबलमिच्छ
 मोनः ॥ उभौवर्णाद्यैरुग्रःपुंपोषसत्यादेवेष्वशिषोजगाम ॥ यदुद्यकच्चत्रहृद्भुदगाभ्रमिसूर्य ॥
 सर्वतदिद्रेतेवशे ॥ १ ॥ ननंराजानावदितेकुतश्चननाहोअश्रोतिदुरितंनकिर्मयं ॥ यमश्विनासुह
 वारुद्रवर्तनीपुरोरथंक्रणुथःपत्न्यांसह ॥ रोहिच्छयावासुमदैशुल्लामीद्युक्षारायक्ज्जाश्वस्य ॥ हृष
 ण्वंतंविअंतीधुर्षुरथंमद्राचिकेतनाहुंषीषुविशु ॥ यपन्नस्काउतयेगुपवाहाश्चषालंयेअश्वयूपायतक्षे

ति ॥ ये चार्चते पर्वचनं संसृत्युतो ते तेषां ममिर्गतिर्न इन्वतु ॥ सदा पृणो यज नो विदिषो वधी द्वाद्वुक्ताः श्रुत-
 वित्तया विसर्चा ॥ उमा सवराप्रत्येति माति चयदीगणं मजने सुप्रयावमिः ॥ एभिर्द्युभिः सुमना एभिरे-
 दुभिर्निरुधानो अमंति गोभिरश्विना ॥ इंद्रेण दस्युदर्यै तद्दुमिर्युतद्वेषसः समिषारभेमहि ॥ स्वर्मानो-
 रथयदिंद्रमाया अवोदिवो वर्तमाना अवाहन् ॥ गूळहंसूर्युतमसापमतेन तुरीयेण ब्रह्मणा विददत्रिः ॥ २ ॥
 दूराच्चिदावसतो अस्य कर्णो घोषोर्दिद्रस्य तन्यति ब्रुवाणः ॥ एयमेनं देव हूतिर्वद्यत्यान्मद्रचं १ मिद्रमिय-
 मृच्यमाना ॥ तं वो धिया परमया पुराजामजरमिद्रमभ्यनूष्यकैः ॥ ब्रह्मा च गिरो दधिरे समस्मिन्महा-
 श्वस्तो मो अधिवर्धेदिदे ॥ इंद्रमृळमर्त्यं जीवातुमिच्छ चोदय धियमयसो न धारां ॥ यत्किंचाहं त्वायु-
 रिदं वदामि तज्जुषस्व कृधिमदिवर्तं ॥ एवाजं ज्ञानं सहसे असां विवावृधानं राधसे च श्रुताय ॥ महामु-
 ग्रमवसे विप्रननुभा विवासे मवृत्रतूर्येषु ॥ समिद्रमसि मिधां गिरा गेने शुचिं पावकपुरो अंघ्वेरधुवं ॥ वि-
 प्रं होतारि पुरुवारं मद्रुहं कार्ष्णसुसैरीमहे जातवैदसं ॥ यस्मिन्वयं दधिमाशंसमिंद्रेयः शिश्रायं मघवा कामं म-

स्मे ॥ आराद्धिस्तन्मयतामस्यशत्रुर्न्यस्यैद्युस्माजन्यनिमतां ॥ तेअज्येष्टाअकनिष्ठासउद्भिदोम
 व्यमासोमहंसाविवाद्युः ॥ सजातासोजनुषाद्युश्चिमातरोदिवोमयीआनोअच्छाजिगातन ॥ ३ ॥
 यदुत्तमेमरुतोमध्यमेवायहवमेसुमगासोदिविष्ट ॥ अतोनोरुद्राउतवान्वस्यामेवित्ताह्विविषोयद्य
 जाम ॥ यदिन्विद्रपृथिवीदशमुजिरहानिविश्वातनैतकृष्टयः ॥ अत्राहतेमधवन्विश्रुतंसहोद्याम
 नुशर्वसाबुर्हणामुवत् ॥ त्वमस्यपारेरजसोव्योमनःस्वभूत्योजाअवसेधृषमनः ॥ चेकृषेसूभिंम
 तिमानुमोजसोपःस्वःपरिभूरेष्यादिवं ॥ सहिद्वरोद्वरिषुवजऊधनिचंद्रबुधोमदंवृद्धोमनीविभिः ॥
 इंद्रतमहेस्वपस्ययाध्रियाभंहिष्ठरानिसहिपमिरंधसः ॥ एवानःसोमपरिषित्यमानोवयोदधंश्चित्रत
 मंपवस्व ॥ अद्वेषेद्यावापृथिवीद्वेवमदेवाधत्तरयिमस्मेसुवीरं ॥ ४ ॥ इंद्रापर्वताबृंहतारथेनवामी
 रिषंआवेहतंसुवीराः ॥ वीतंहन्यान्यध्वरेषुदेवावधंथांगीभिरिळ्यामदंता ॥ स्थिरौगावौमवृतांवी
 कुरुसोमेषाविर्वहिमायुगंविशारि ॥ इंद्रःपातल्येदंदृतांशरीतोरिष्टनेमेअभिर्नःसचस्व ॥ वनस्पतेवी

द्वैगोहिभूया अस्मत्सखाग्रतरणः सुवीरः ॥ गोमिः संनद्धो असि वीक्ष्य स्वास्था तत जयतु जेत्वानि ॥ ५ ॥
 अयमस्मान्वनस्पतिर्माचहा माचरीरिषत् ॥ स्वस्त्यागृहेभ्य आवसा आविमोचनात् ॥ इन्द्रोति
 मिर्बहुलाभिर्नो अद्ययाच्छेष्टाभिर्मववन्दूरजिन्व ॥ योनो द्वेष्ट धरः सस्पदीष्टयमुहिष्मस्तमप्राणो
 जेहानु ॥ प्रवोयव्वं पुंरूणां विशादैवयतीनां ॥ अग्निमुक्तेभिर्वचोभिरीमहेयंसीमिदन्यईळते ॥
 न्यःषुवाचं प्रमहेर्मरा महेगिरि इन्द्राय सदेने विवस्वतः ॥ नूचिन्द्रिरत्नैः ससतामिवा विदुर्भदुष्टतिद्रविणोदे
 षुशस्यते ॥ दुरो अश्वस्यदुरैर्दुर्गोरसिदुरोयवस्यवसुनङ्नस्पतिः ॥ शिक्षानुरः प्रदिवो अकांमकर्शनः
 सखासखिभ्यस्तमिदं गुणीमसि ॥ ६ ॥ आर्या हि शश्वदशताय ग्राथेन्द्रमहामर्नसा सोमपेयं ॥ उपुज
 ह्याणि शृणु वडमानोथाति यज्ञस्तन्वे भवयोधात् ॥ यद्विद्रदिविपाथेय दृधयद्वास्वे सदेने यज्ञवासि अतो
 नो यज्ञमवसेनियुत्वान्तसजोषाः पाहि गिर्वणो मरुद्भिः ॥ यदीसुतेभिर्दुभिः सोमैभिः प्रतिभूषंथ ॥ वे
 दा विश्वस्य मेधिराघृषत्तं तमिदेषते ॥ द्यावो नस्तुमिभ्यितयं तखादिनोव्यः ॥ अत्रियानद्युतयं तवृष्टयः ॥ रुद्रो

यद्द्वैमरुतोरुक्मवक्षसोद्यषाजनिपृथग्भ्याःशुक्रऊर्ध्वनि ॥ चित्रतद्द्वैमरुतोयामचेकितेपृथग्यायदूधरप्याप
 योदुहः ॥ यद्द्वानिदेनवर्मानस्यरुद्रियास्त्रितंजरायजुरतामंदाभ्याः ॥ ७ ॥ अग्निस्मिजन्मनाजा
 तवेदायुतमेचक्षुरेष्टतमंआसन् ॥ अर्कस्त्रिधातुरजसोविमानोजस्रोद्युर्मोहविरस्मिनाम ॥ सुगोहि
 वोअर्यमन्मित्रपथाअनृक्षरोवैरुणसाधुरस्ति ॥ तेनादित्याअधिबोचतानोयच्छतानोदुष्परिहंतुश
 र्म ॥ पिपर्तुनोअदितीराजंपुत्रातिह्वेषांस्यर्यमासुगोभिः॥बृहन्मित्रस्यवरुणस्यशर्मोपस्यामपुरुवीराअ
 रिष्टाः॥तिषोभूमूर्धारियन्त्रीरुतद्यन्त्रीणिब्रताविदथेअंतरेषां॥ऋतेनादित्यामहिबोमहित्वंतदर्यमन्व
 रुणमित्रचारु ॥ त्रीरोचुनादिव्याधारयंतहिरण्ययाःशुचंयोधारंपूताः ॥ अस्वमजोअनिमिषा
 अदब्धाउरुशंसोऋजवेमर्त्याय ॥ त्वंविश्वेषांवरुणामिराजायेचेदेवाअसुरयेचमर्ताः ॥ शतंनो
 रास्वशरदौविचक्षेश्यामाधूषिसुधितानिपूर्वा ॥ ८ ॥ प्रातर्युजाविबोधयाश्वनावेहगच्छनां ॥
 अस्यसोमस्यपीतये ॥ आराच्छत्रुमपवाधस्वदूरमुग्रोयःशंभःपुरुहूततेन ॥ अस्मेधैहियवमद्रोम

दिन्द्रकृधीधियंजरित्रेवाजर्त्तां॥विश्वेदेवाःशास्तनमायथेहहोतावृतोमनैवयन्निषद्यं॥ प्रमेब्रूतमागधे
 यंयथावोयेनपथाहव्यमावोवहानि॥ पंचजनममहोत्रंजुषतांगोजाताउनयेयुज्ञियांसः॥ पृथिवीनःपा
 थिवात्पात्वंहंसोतरिक्षंदिव्यात्पात्वस्मान्॥ प्रीणीताश्वान्हितंजयाथस्वस्तिवाहंरथमित्कण्ड्वं॥द्रोणां
 हावमवतमश्मचक्रमंसत्रकोशंसंचतानुपाणं॥आवोधिर्ययुज्ञियावतंऊतयेदेवादिर्वीर्यजतांयुज्ञियामि
 ह॥सानोदुहीयद्यवसेवगत्वीसहस्रधारापयसामहोगैः॥९॥ मुनयोवार्तरशनाःपिशंगावसतेमलां॥
 वातस्यानुध्रांजियंतियद्देवासोअर्विक्षत॥ सवितायुत्रैःपृथिवीमंरम्णादस्कंसनेसविताद्यामदंहत्॥
 अश्वमिवाधुक्षुद्धिर्मंतरिक्षमतूर्तबद्धंसंवितासंमुद्रं॥ आत्मादेवानांभुवनस्यगर्भोयथावशंचरतिदे
 वलुषः॥ घोपाइदंस्यशृण्विरेनरूपंतस्मैवातायहविषाविधेम॥ चतुर्दशान्येमहिमानोअस्यतंघीरावा
 चाप्रणयंतिसस॥ आर्मानतीर्थकइहप्रवोचद्येनपथाप्रपिबंतिसुतस्य॥ तामदसानामनंपोदुरोणआ
 धृत्तरिधिसहर्विरचस्यवे॥ कुतंतीर्थमुप्रपाणंशुसस्पतीस्थाणुपथेष्टामपदुर्मतिहंतं॥ अथायिधीलि

रससुग्रमंशास्तीर्थेनदस्ममुपयंत्युमाः ॥ अभ्यानश्मसुवितस्यशङ्खनवेदसोअमृतानामभूम ॥ १० ॥
 उतर्नरुनापव्यापवस्वाधिश्रुतेश्रवाध्यस्यतीर्थं ॥ षष्ठिसहस्रानैगुतोवसूनिवृक्षंनपकंधूनवद्रणांय ॥
 आदित्याअवहिव्यताधिकूलादिवस्पर्शः ॥ सुतीर्थमर्वतोयथानुनेनेषथासुगमनेहसोवकुतयःसुकुत
 योवकुतयः ॥ यज्ञोद्दिग्मेद्रंकाश्चद्वंधंजुहुराणश्चिन्मनंसापरियन् ॥ तीर्थेनाच्छातातृषाणभोकोदीर्घो
 नसिध्ममार्कणोत्यध्वा ॥ प्रतिप्रयाह्रिद्रमीळुपोनुम्हःपार्थिवेसदेनेयतस्व ॥ अग्रयेदेषांपृथुब्राम्हासुर
 तास्तीर्थेनार्यःपौंस्योनिस्तथुः ॥ ११ ॥ योनोअग्नेअरिर्वौअघायुररातीवामर्चयतिह्वयेन ॥ मंत्रो
 गुरुःपुनरस्तुसोअस्माअनुमृक्षीद्यतन्वदुरुक्तैः ॥ वयमुत्वागृहपतेजनानामग्नेअकर्मसमिधाबुद्धंतं ॥ अ
 स्थरिणोगार्हपत्यानिस्तुतिर्मेनस्तेजसांसंशिक्षाधि ॥ अग्नेमृळ्महौअसियईमादेवयुजनं ॥ इयेथ
 बार्हिरासदं ॥ युवंहगर्मजगतीषुत्तथोयुवंविशेषुभुवनेष्वंतः ॥ युवमाग्नेचक्षणावपश्चवन्स्पतरिंशिव
 नान्वैरयेथां ॥ युवंहस्थोभिषजाभिषजेभिरथोहस्थोरथ्याश्मिरेभ्यः ॥ अथोहस्रत्रमधित्यतउग्रायो

बौहविष्मान्मनसाददाश ॥ १२ ॥ नयस्यद्यावापृथिवीअनूव्यचोनसिंधवोरजसोअंतमानशुः ॥ नो
 तस्वद्योद्धिमदैअस्ययुध्यतएकोअन्यच्चकषेविश्वमानुषक् ॥ श्रीणामुदारोधरुणोरथीणामनीषाणांप्रा
 र्पणःसोमगोपाः ॥ वसुःसुनुःसहसोअपसुराजाविमात्यग्रउषसोमिधानः ॥ संमानमुत्यंपुरुहूतमुक्थ्य
 १२थंत्रिचक्रंसर्वनागनिगमतं ॥ परिजमानंविद्वथ्यसुवक्तिभिर्विष्यन्मुद्याउषसोहवामहे ॥ मांधुरिंद्रनामं
 देवतादिवश्चमश्वापांचजंतवः ॥ अंहहरीचर्षणाविर्वतारधूअहंवज्रंशवसेघुष्णवाददे ॥ १३ ॥ मह
 त्तदुल्लंस्थविरंतदासीद्येनाविष्ठितःप्रविवेशिथापः ॥ विश्वाअपश्यद्बहुधातैअग्नेजातवेदस्तन्वोदिवए
 कः ॥ तांसुतेकीर्तिमंघवन्महित्वायत्वाभीतेरोदसीअह्नयेतां ॥ प्रार्वोदेवौआतिरोदासुमोजःप्रजायैत्व
 स्यैयदशिक्षइंद्र ॥ देवानापत्नीरुशतीरंवंतुनःप्रार्वंतुनस्तुजयेवाजसातये ॥ याःपार्थिवासोयाअपाम
 पिब्रतेतानोदेवीःसुहवाःशर्मयच्छत ॥ येचपूर्वकषयोयेचनूलाइंद्रब्रह्माणिज्जनयंतविप्राः ॥ अस्मेते
 संतुसख्याशिवािनियूयं ॥ यदिमेरारणःसुतउक्थेवादधसेचनः ॥ आरादुपस्वधागहि ॥ चित्तिम

चित्तिचिनवद्विविद्वान्पुष्टेर्ववीताहजिनाचमर्तान् ॥ रायेचनःस्वपत्यायदेवदित्तिचरास्वादितिमु-
 ष्यं ॥ नमइदुग्रंनमआर्विवासेनमोदाधारपृथिवीमुतद्यां ॥ नमोदेवेभ्योनर्मईशरुपांकुतंचिदेनोनमसा
 विवासे ॥ १४ ॥ इपुदादिवेन्मुमुचानः॥स्विन्नःस्नात्वीमलादिव ॥ पुतंपवित्रेणेवाज्यमापःशुंधंतुमैन
 सः ॥ ममनामप्रथमंजातवेदःपितामाताचदधतुर्यदग्रे ॥ तत्स्वविमृहिपुनराममैतोस्त्ववाहंनामबिभ
 राण्यग्रे ॥ यवेसूर्यस्वर्मानुस्तमसाविष्यदासुरः ॥ अत्रयस्तमन्वविदन्नृत्यग्नयेअशंक्नुवन् ॥ १५ ॥
 ॥ अथ श्रीसूक्तशेषः ॥ ॥ पद्माननेपद्मिनिपद्मपत्रेपद्मप्रियेपद्मदलायताक्षि ॥ विश्वप्रियेविश्वमनो
 नुकुलेत्वत्पादपद्मंत्वादिसंनिधस्त्व ॥ पद्माननेपद्मऊरुपद्माक्षीपद्मसंभवे ॥ तन्मेभजसिपद्माक्षियेन
 सौख्यंलभाम्यहं ॥ अश्वदायैगोदायैधनदायैमहाधने ॥ धनंभेजुर्बतादेवीसर्वकांमांश्चदेहिमे ॥ पुत्र
 पौत्रधनंधान्यंहस्त्यश्वादिगवैरथं ॥ प्रजानांभर्वसिमाताआयुष्मंतं करोतुमे ॥ धनमग्निर्धनंवायुर्धनंसू-
 र्यधनंवसुः ॥ धनमिन्द्रोबृहस्पतिर्वरुणंधनमश्रुते ॥ वैनतेयसोमंपिबसोमंपिबतुष्ट्रहा ॥ सोमंधन

स्यसोमिनोमद्यंददांतुसोमिनः ॥ नक्रोधोचमात्सर्यनलोभोनाशुभामतिः ॥ भवतिष्ठतपुण्यानां
सक्तानांश्रीसूक्तजपकारिणां॥सरसिजैनिलयेसरोजहस्तेधवलतरांशुकगंधमाल्यशोभे॥भगवतिहरिव
ह्ममेमनोहोत्रिभुवनभूतिकरिप्रसीदमर्त्यं ॥ विष्णुपत्नीक्षमादेवीमाधवप्रियां ॥ विष्णोःप्रि
यसखीदेवीनमाम्यच्युतवल्लभां ॥ श्रीर्वचस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानंमहीयते ॥ धा
न्यंघनंपशुंबहुपुत्रलाभंशतसंवत्सरदीर्घमायुः ॥ १६ ॥ मनोजवाअयमानआयसीमंतरत्पुरं ॥
दिवंसुपूर्णगुत्वायुसोमंवज्जिणआमरत् ॥ अधिहयोरदधाउक्थ्यं१वचोयतस्तुचाविथुनायासपयतः ॥
असंयत्तोव्रतेतैक्षेतिपुण्यतिमद्राशक्तिर्यजमानायसुन्वते॥तामुजिह्वाउपह्वयेहोतारादेव्याकवी ॥ यज्ञं
नोयक्षतागिमं॥इच्छासरस्वतीमहानिखोदेवीर्मयोभुवः॥ब्रहिं.सीदंत्वस्त्रिधः॥१७॥ (प०-त्रिःसप्तसखा
नद्योमहोरूपोवनस्पतीन्पर्वनांअग्निमतये॥कशानुमस्तन्तिष्ठयंसधस्थआरुंद्रुद्रेषुलुद्रियंहवामहे॥१॥)
॥ अथ श्राद्धमंत्राः ॥ पुर्विर्चतेवितंतब्रह्मणस्पतेप्रभुगर्गात्रिणिपर्वेतिविश्वतः ॥ अतंसतनूर्नतदामो

अंशुर्तेशुतासइहहंतुस्तत्समाशत ॥ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदेशोचंतो अस्य तंतवोर्व्यस्थित् ॥
 अर्बत्यस्य पवीतारं माशवो दिवस्पृष्टमधि तिष्ठति चेत्तसा ॥ पवित्रवंतः परिवाचमासते पितृपां प्रतो अ
 मिरक्षति त्रतं ॥ महः संमुद्रं वरुणस्तिरो देधे राइच्छे कुर्ध्रुणे न्वारमै ॥ शरासः कुशरा सोदमांसः सैर्या
 उत ॥ मौजा अट्टा विरिणाः सर्वसाकं न्यलिप्सत ॥ मार्काकं बीरमुद्दुहो वनस्पतिमशस्ती विहिनी
 नशः ॥ मोलसूरो अहं एवाचन ग्रीवा आदधते वेः ॥ यवो सिधान्यराजस्वं वारुणो मधुसंयुतः ॥ निर्णोदः
 सर्वपापानां पवित्रमृषिभिः स्मृतं ॥ तिलोसि सोमदेवत्यो गोसवे देवनिर्मितः ॥ प्रत्नवद्भिः प्रत्तः स्वधया
 पितृनिर्माहो कान्प्रीणया हिनः स्वधानमः ॥ आर्यै तु नः पितरः सोम्या सो गृष्वात्ताः पृथिभिर्देवयानैः ॥
 अस्मि न्यज्ञे स्वधया मदं त्वधिब्रुवन्तु नैवं त्वस्मान् ॥ धूरि सिधूर्वधूर्वतं धूर्वतं योस्मान् धूर्वतितं धूर्वयं बंधूवा
 मः ॥ उदीच्य ० ॥ प्रत्यग्ने हरं साहरः शृणीहि विश्वतः प्रति ॥ यातु धानं स्य रक्ष सो बलं विरुजवीर्यं ॥ अ
 पहता असुरारक्षां सिपिशाचा ॥ येष्यंति पृथिवीमनु ॥ अन्यत्रेतो गच्छंतु यत्रैतेषां गतं मनः ॥ विश्वे

देवासआगतशृणुतामङ्गमहवँ ॥ एदंबहिर्निषदिता ॥ विश्वेदेवाः शृणुतेमहवँ मेये अंतरिक्षे यउपद्यविष्ट ॥
ये अग्निजिह्वाउतवायजत्रा आसद्यास्मिन्बहिषिमादयध्वं ॥ यादिव्या आपः पृथिविसंबभूयु अंतरि
क्ष्याउतपार्थिवीर्याः ॥ हिरण्यवर्णायज्ञियास्तान आपः शंस्योनामवंतु ॥ २ ॥ उशंतं स्त्वानिधीमद्युशंतः स
मिधीमहि ॥ उशन्नुशत आवह पितृन् हविषे अत्तवे ॥ आमासु पक्कमैरय आसूर्यरोहयोदिवि ॥ धर्मनसामन्त
पतासु वृत्तिभिर्जुष्टुं गिर्वणसेवृहत् ॥ सोमो धेनु सोमो अवतमाशु सोमो वीरं कर्मण्यददाति ॥ सादन्धं विद
ध्वं समेधं पितृश्रवणं यो ददांशदस्मै ॥ ३ ॥ ॥ अत्रस्तुतिसूक्तं ॥ उपह्वये सु० क० ॥ २ ॥ इंद्रदृत्तया
मकोशा अंभूवन्यज्ञाय शिंक्षगुणे सखिभ्यः ॥ दुर्मायवोदुरेवामर्त्या सो निषंगिणो रिपवो हत्वा सः ॥
वाशीमंतकृष्टि मंतो मनीषिणः सुधन्वान् इषु मंतो निषंगिणः ॥ स्वश्वाः स्थसुरथाः पृथिश्चमातरः स्वायुधाम
रुतो याथनाशुभं ॥ १ ॥ स इषु० ॥ चतुष्कपदायुवतिः सुपेशा धृतमतीकावयुना निवस्ते ॥ न
स्यां सुपुर्णा हर्षणा निषेदतुयत्र देवा दधिरेभांगधेयं ॥ एकः सुपुर्णः ससंमुद्रमा विवेश मइदं विश्वं सुवन्तं वि

चंष्टे ॥ तं पाके नुमनसा पश्यन्ति तस्मात्तरे ब्रह्मसरे ब्रह्ममातरं ॥ सुपर्णविभ्राः कवयो वचो भिरैकं स
 तैर्बहुधा कल्पयन्ति ॥ छंदोऽसि च दधतो अध्वरेषु ग्रहान्तो मस्य भिमते द्वादश ॥ २ ॥ पितुं नुस्तोषं महो
 धर्माणं तविर्षी ॥ यस्य त्रितो व्योजसा वृत्रं विपर्वमर्दयत् ॥ स्वादोऽपितो मधोऽपितो वयं त्वा वष्टमहे ॥ अ
 स्माकं भवितामव ॥ उपनः पितु वाचरः शिवः शिवा भिरुतिभिः ॥ मयो मुरद्विषेण्यः सखा सुशेवो अहं
 याः ॥ तवत्येऽपितो रसार्जास्य नुविद्धिताः ॥ दिवि वाता इव श्रिताः ॥ तवत्येऽपितो ददतस्तव स्वादिष्ट
 तेऽपितो ॥ प्रस्त्राद्वानो रसानां तु विग्रीवा इवेरते ॥ ३ ॥ त्वेऽपितो महानां दिवानां मनो हितं ॥ अकारि
 चारुके तु नातवाहिमवसावधीत् ॥ यददोऽपितो अजगन् विवस्वपर्वतानां ॥ अत्राचिनो मधोऽपितो रससाय
 गम्याः ॥ यदुपामोषधीनां परिशमारिषामहे ॥ वातापि पीव इद्धव ॥ यत्ते सोमगवा शिरो यवा शिरो म
 जा महे ॥ वाता ० ॥ कर्भोऽपि मेषवपीवैवूक उदारथिः ॥ वाता ० ॥ तं त्वा वयं पितो वचो भिरैवो
 न हन्या सुषूदिम ॥ देवेभ्यस्त्वासधमादं मस्मभ्यं त्वासधमादं ॥ कथानं ० ॥ १ ॥ कस्त्वांस

त्योमदानांमहिष्ठोमत्सदंधसः ॥ दृढाचिद्वारुजेवसु ॥ अमीषुणःसर्वानामविताजरितृणां ॥
 शनंमवास्यतिभिः ॥ ४ ॥ नवाउदेवाःक्षुभ्रमिद्वधंदुरुताशितमुपगच्छंतिमृत्यवः ॥ उतोरयिःपृ
 णनोनोपदस्यत्युतार्धणन्मर्दितारुनविंदते ॥ यआधायचकमानार्थपित्वोन्नवान्सन्नक्रितायोपज
 ग्मुषे ॥ स्थिरंमनःकणुतेसेवतेपुरोतोचित्समर्दितारुनविंदते ॥ सहस्रोजोयोगृहवेददात्यन्नकामायच
 रतेकृशार्थ ॥ अरंमस्मैभवतियामहूताउतापूरीषुकणुतेसर्वाय ॥ नससखायोनददातिसरव्येसचा
 भुवेसचमानायपित्वः ॥ अपास्मात्प्रेयान्तदोकोअस्तिपृणंतमन्यमरणंचिदिच्छेत् ॥ पूणीयादि
 आधमानायतव्यान्द्राधीयांसमनुपश्येतपंथां ॥ ओहिवंतैरथेवचक्रान्यमन्यमुपतिष्ठतरायः ॥ १ ॥
 मोघमन्नविंदतेअप्रचेताःसत्यंब्रवीमिवथइत्तस्य ॥ नार्थमणंपुष्यतिनोसर्वायकेवलवोभवति
 केवलादी ॥ कृषन्निफलुआशितंकणोति्यन्नध्वानमपहृङ्क्वैरित्रैः ॥ वदन्ब्रह्मावदतोवर्नाया
 न्पुन्रापिरर्धणंतममिष्यात् ॥ एकंपाद्वयोद्विपदोविचंक्रमेद्विपात्रिपादंभ्येतिपश्चात् ॥ चतु

ष्यादेति द्विपदामभिस्वरे संपश्यन् पङ्क्तिरूपतिष्ठमानः ॥ समौ चिद्धस्तौ न समं विविधः संमतरा चिन्नसमं
 दुहाते ॥ यमयोश्चिन्नसमावीर्याणि ज्ञाती चित्संतौ न समं पृणीतः ॥ २ ॥ जगद्भाते दक्षिणमिन्द्रहस्तं
 वसूवो वसुपते वसूनां ॥ विद्मार्हि त्वा गोपतिं शूरगोनामस्मभ्यं चित्रं च षण्णरं रयिदाः ॥ अक्षन्नभीमदंत
 त्ववप्रिया अधूषत ॥ अस्तौ षतस्वभानवो विप्रान विष्टयामती योजान्विद्रते हरी ॥ नमो वः पितरद्वेषेन
 मो वः पितर ऊर्जे नमो वः पितरः शुष्माय नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरो रसाय ॥
 स्वधा वः पितरो नमो वः पितरो नमस्तुतायुष्माकं पितर इमा अस्माकं जीवावो जीवंत इह संतः स्थाम ॥ म
 नो न्वाहु वामहे नारांसे न सोमेन ॥ पितॄणां च मम मित्रिः ॥ आते एतु मनः पुनः कत्वे दक्षाय जीवसे ॥ ज्यो
 क्त्वसूर्यदृशे ॥ पुनर्नः पितरो मनो ददातु देव्यो जनः ॥ जीवं ज्ञातं स चे महि ॥ परेत न पितरः सोम्या सोमं
 मीरेभिः पृथिभिः पूर्व्विणेभिः ॥ दत्वा यास्मभ्यं द्रविणे ह्यमद्रं रयि च नः सर्ववीरं नियच्छत ॥ यज्ञतत्परं मं
 पुदं विष्णोर्लोकिर्महीयते ॥ द्वैवः सुकृतं कर्म मिस्तत्र माममृतं कुर्याद्रयिदो परित्वव ॥ यज्ञतत्परं मादृग्भूतानां

मधिपतिः ॥ भावभाविचयोर्गीश्वतत्रमाममृतैकधीद्राये ॥ यत्रगंगाचयमुनाचयत्रमाचीसरस्वती ॥
 यत्रसोमेश्वरोदेवस्तत्रमाममृ० ॥ १ ॥ वाजेवाजेववाजिनोर्धनेषुविप्राअमृताकृतज्ञाः ॥ अस्य
 मध्वःपिबतमादयध्वंतुसायातपृथिभिर्देवयानैः ॥ आमावाजस्यप्रसवोजगम्यादाद्यावापृथिवीविश्व
 शैभू ॥ आमागंगापितरामातराचामासोमोअमृतत्वार्यगम्यात् ॥ दातारोनोभिवर्धतांवेदाःसंततिरेव
 नः ॥ श्रद्धाचनोमाव्यगमद्वहुदेयंचनोस्तु ॥ अन्नंचनोबहुमवेदतिथीश्वलभेमहि ॥ याचि
 तारश्चनःसंतुमाचयाचिष्मकंचन ॥ १ ॥ दातारोवोभिवर्धतांवेदाःसंततिरेववः ॥ श्रद्धाचवोमा
 व्यगमद्वहुदेयंचवोस्तु ॥ अन्नंचवोबहुमवेदतिथीश्वलमध्वं ॥ याचितारश्चवःसंतुमाचयाचिष्मकंचन ॥
 स्वादुषंसदःपितरोवयोधाःकंच्छेऽश्रितःशक्तीवंतोगभीराः ॥ चित्रेसैनाइषुबलाअमृधाःसतोर्वीरा
 उरवोऽजातसाहाः ॥ ब्राह्मणासःपितरःसोम्यासःशिवेनोद्यावापृथिवीअनेहसा ॥ पूषानःपातुदुरिता
 दृतावृधोरक्षामाकिर्नोअघशंसदशत ॥ इहैवस्तमाविष्यौष्टंविश्वमायुव्यश्रुतं ॥ कीळंतोपुत्रेनसृभिर्नो

दमानौस्वेगृहे ॥ वसिष्ठासःपितृवद्वाचमक्तदेवैर्द्विच्छानाकपिवस्वस्तये ॥ प्रीताह्वज्ज्ञानयःकाममे
 त्यास्मेदेवासोवधनुतावसु॥देवान्वसिंष्टोअमृतान्वदेयेविश्वामुर्वनाभिप्रतस्थुः॥ तेनोरासंतामुरुगाय
 मध्यययंपातस्व० ॥ ३ ॥ अथ पिंडपितृयज्ञादिभंत्राः ॥ धेरूपाणिप्रतिमुंचमानाअसुराःसंतः
 स्वधयाचरंति ॥ परापुरोनिपुरोयेभरत्यग्निष्टौल्लोकात्प्रणुदात्वस्मात् ॥ अपहृताअसुरारक्षांसिवेदिष
 दः ॥ वीरंमेदत्तपितरः ॥ ३ ॥ यदंतरिक्षं पृथिवीमुतद्यायन्मातरं पितरं वाजिहिंसिम ॥ अग्निर्मात
 र्मादेनसोगार्हपत्यः प्रमुंचतुक्रोतुमामेनेनसं ॥ आधत्तपितरोगर्भकुमारंपुंष्करस्त्रजं ॥ यथायमंरूपा
 असत् ॥ ग्रीष्मोहंमंतच्छतवःशिवानोवर्षाःशिवाअंमयाःशुभ्रः ॥ संवत्सरोधिपतिःप्राणदोनोहोरा
 नेकृणतांदीर्घमायुः ॥ आपोमरीचीःप्रवहंतुनोधिथोधातांसमुद्रोवहंतुपापं ॥ भूतंसंविष्यदभयंविश्व
 मस्तुमेब्रह्माधिगुप्तःस्वाराक्षराणि ॥ विश्वंआदित्यावसंवश्चदेवारुद्रागोसरोमरुतःसदंतु ॥ ऊर्जप्र
 जाममृर्तुपिन्वमानःप्रजापतिर्भयपरमेष्ठीदंधातु॥१॥ इति पिंडपि०॥ (अत्रपितरोमादयध्वं यथाभाग
 मावृषायध्वंअमीमदंतपितरोयथाभागमावृषायीषत । एतद्धःपितरोवासोमानोन्यत्पितरोयुगध्वम्॥)

॥ अथाभिश्रवणसूक्तानि ॥

तत्रादौ देवसूक्तानि ॥ ॥ सहस्रं शीर्षां वर्गाः ३ ॥ अग्निमीळे व० २ ॥ ममाग्नेवचो वि
वह्वेष्व० व० २ ॥ ॥ नासं दासी चोसं दासी तदार्जुनासी द्रजो नो न्यो मा पुरो यत् ॥ किमावरीवः
कुहकस्य शर्म अंमः किमासी ह्वहं नगभीरं ॥ नमस्त्युरासी दमृतं नतर्हि नरा न्या अहं आसीत्युक्तेतः ॥ आनी
दवानं स्वधया न देकं तस्माद्धान्यं न परः किंच नासं ॥ तमं आसीत्तमं सागळ्ढमग्रे प्रकृतं संल्लिखं सर्वमाहुदं ॥ तु
च्छयेनाभ्वर्षिहितं यदासीत्तर्पसस्तन्मेहिना जायते कैकामस्तदग्रे समवर्तताधि मनसो रतः प्रथमं यदासी
त् ॥ सतो बंधुमसंति निरं विदन्द्दुदिप्रतीष्या क्वयो मनीषाति रश्चीनो विततो रश्मिरेषामुधः स्विदासी ३
दुपरिस्विदासी ३त् ॥ ॥ स्तोधा आसन्महिमानं आसन्स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात् ॥ को अ
द्धो वै द्रुक इह प्रवोचत्कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः ॥ अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथा को वै द्यत
आबुभूव ॥ इयं विसृष्टिर्यत आबुभूव यद्विवाद्देयदिवान ॥ यो अस्या ह्यक्षः परमेव्यो मुन्तसो

अंगवेदयादिवानवेद ॥ १ ॥ योयज्ञोविश्वतस्तनुमिस्ततएकशतदेवकुर्मभिरार्यतः ॥ इमेवयंतिपि-
 तरोयआथयुःप्रव्यापव्येत्यासतेतने ॥ पुमौएनंतैनुतउरुणुत्तिपुमान्वितन्नेअधिनकैअस्मिन् ॥
 इमेमयूखाउपसेदुखसदःसामानिचकुस्तसराणयोतवे ॥ कासीत्प्रमामतिमाकिनिदानमाज्यंकिमासी-
 तपरिधिःकआसीत् ॥ छंदःकिमासीत्प्रउंगंकिमुक्थयद्देवादेवमयंजंतविश्वे ॥ अग्नेर्गायत्र्यभवत्सयु-
 ग्वोष्णिहयासवित्तसंभूव ॥ अनुष्टुप्सोमोमउक्थैर्महस्वान्वृहस्पतैर्बृहतीवाचंभावत् ॥ विराणिमत्राव-
 रुणयोरसि श्रीरिद्रस्यत्रिष्टुबिहसागोअह्नः ॥ विश्वान्देवान्जगत्यार्विवेशतेनचाक्लृप्रऋषयोमनुष्याः ॥
 चाक्लृप्रेतेनऋषयोमनुष्यायज्ञेजातेपितरौनःपुराणे ॥ पश्यन्मन्येमनसाचक्षसातान्यइमंयुज्ञमयंजंत-
 पूर्वे ॥ सहस्त्रोमाः० ऋक् १ ॥ सूक्तं ॥ २ ॥ नतद्विवानपृथिव्यानुमन्येनयज्ञेननोतशमीभिरासिः ॥
 उबजंतुतंसुभ्वः१ पर्वतासोनिहीयतामेतियाजस्ययष्टा ॥ अतिवायोमस्तोमन्यतेनोब्रह्मवायःक्रियमा-
 णंनिनिस्तात् ॥ तपूषितस्मैवजिनानिसंतुब्रह्मद्विषममितंशौचतुधौः ॥ किमंगत्वाब्रह्मणःसोमगोपां

किमंगत्वाद्दुरभिशस्तिपानः ॥ किमंगनः पश्यसि निन्दमानान्ब्रह्मद्विषेतपुषिहेतिमस्य ॥ अवंतुमामु
षसोजायमाना अवंतुमासिर्धवः पिन्वमानाः ॥ अवंतुमापर्वतासो ध्रुवासो वंतुमापितरो देवहूतौ ॥ वि
श्वदानीं सुमनेसः स्यामपश्येन्नुसूर्यमुच्चरंतं ॥ तथाकरद्वसुपतिर्वसूनां देवाँ ओहानो वसागमिष्ठः ॥ १ ॥
इंद्रो नेदिष्ठमवसागमिष्ठः सरस्वतीसिंधुभिः पिन्वमाना ॥ पर्जन्यो न ओषधीभिर्मयो भुरग्निः सुशंसः सुहवः
पितेवा ॥ विश्वे देवास आ० ऋ. १ ॥ यो वो देवा घृतस्त्रुना हव्येन प्रतिभूषति ॥ तं विश्व उपगच्छथा ॥ उपनः सुन
वोगिरिः शृण्वंस्त्वमृतस्य ये ॥ सुमळीका भवंतुनः ॥ विश्वे देवा ऋतावधं क्रतुभिर्हवनश्रुतः ॥ जुषंतां युज्यं
पर्यः ॥ २ ॥ स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्गणस्त्वष्टमान्मित्रो अर्यमा ॥ इमा हव्या जुषंतनः ॥ इमं नो अग्रे अहव
रं हते र्वयु न शो र्यज ॥ चिकित्वा न्दैव्यं जनं ॥ विश्वे देवाः शृ० ऋ० १ ॥ विश्वे देवा मभं शृण्वंतु यज्ञिया
उमरो दसी अपां न पाचमन्म ॥ मा वो वचां सिपरि चक्ष्याणि वो चं सुग्रेष्विद्वो अंतं मामदेम ॥ ये के च जमा०
ऋ. १ ॥ अग्नी पर्जन्या वरतं धियर्मे स्मिन्हवै सुहवासुष्टुतिनः ॥ इकां मन्यो जनयद्गर्ममन्यः प्रजावती

रिष॒आ॒र्ध॒त्त॒म॒स्मे ॥ स्त्री॒र्णे॒ब॒र्हि॒र्षि॒स॒मि॒धा॒ने॒अ॒ग्नौ॒सू॒क्ते॒न॒म॒हा॒न॒म॒सा॒र्वि॒वा॒से ॥ अ॒स्मि॒न्म॒त्रो॒अ॒द्य॒वि॒द॒थे
 य॒ज॒त्रा॒वि॒श्वे॒वा॒ह॒वि॒र्षि॒मा॒द॒य॒ध्वं ॥ २ ॥ सू० ३ ॥ अ॒स्तु॒श्रौ॒ष॒ट्पु॒रो॒अ॒ग्नि॒धिया॒द॒ध॒आ॒नु॒त॒च्छ॒धो॒दि
 व्यं॒ष्ट॒णी॒म॒ह॒दं॒द्र॒वा॒यू॒ष्ट॒णी॒म॒हे ॥ य॒ज्ञ॒क्रा॒णा॒वि॒व॒स्व॒ति॒ना॒मा॒सं॒दा॒यि॒न॒व्य॒सी ॥ अ॒ध॒प्र॒म॒न॒उ॒प॒य॒न्तु॒धी॒त
 यो॒दे॒वो॒ऽअ॒च्छा॒न॒धी॒त॒यः ॥ य॒ज्ञ॒त्य॒न्मि॒त्रा॒वरु॒णा॒वृ॒ता॒द॒ध्या॒ट॒दा॒थे॒अ॒नृ॒तं॒त्वे॒न॒म॒न्यु॒ना॒द॒क्ष॒स्य॒स्वे॒न॒म॒न्यु
 नां ॥ यु॒वो॒रि॒त्या॒धि॒स॒द्म॒स्व॒प॒श्या॒म॒हि॒र॒ण्य॒यं ॥ धी॒मि॒श्र॒न॒म॒न॒सा॒स्वे॒भि॒र्क्ष॒मि॒ःसो॒म॒स्य॒स्वे॒भि॒र्क्ष॒मि॒ः ॥
 यु॒वां॒स्तो॒मे॒भि॒र्दे॒व्य॒न्तो॒अ॒श्वि॒ना॒श्रा॒व॒य॑न्त॒इ॒व॒श्लो॒कं॒मा॒य॒वो॒यु॒वा॒ह॒व्या॒भ्या॒श्च॒वः ॥ यु॒वो॒र्वि॒श्व॒अ॒धि॒श्रि
 यः॒पृ॒क्ष॒श्च॒वि॒श्वे॒द॒सा ॥ मु॒षा॒य॑न्ते॒वा॒प॒व॒यो॒हि॒र॒ण्य॒ये॒रथे॒द॒त्वा॒हि॒र॒ण्य॒ये ॥ अ॒चै॒ति॒द॒त्ता॒न्यु॒ना॒कं॒मृ॒ण॒व
 थो॒यु॒ज॑न्ते॒वा॒र॒थ्यु॒जो॒दि॒वि॒ष्टि॒ष्व॒ध्व॒स्मानो॒दि॒र्वि॒ष्टि॒षु॥ अ॒धि॒वा॒स्था॒म॒वं॒ध॒रे॒थे॒द॒त्वा॒हि॒र॒ण्य॒ये ॥ प॒थे॒व॒यं
 तो॒व॒नु॒शा॒स॒न्त॒र॒जो॒ज॒सा॒शा॒स॒न्त॒र॒जः ॥ श॒ची॒र्भि॒र्नः॒श॒ची॒व॒स॒दि॒वा॒न॒क्तं॒द॒श॒स्य॒तं ॥ मा॒वा॒रा॒ति॒रु॒प॒द॒स
 त्क॒दा॒चि॒ना॒स्म॒द्रा॒तिः॒क॒दा॒च॒न ॥ १ ॥ व॒र्ष॒न्मि॒द्र॒वृ॒ष॒पा॒णा॒सं॒दं॒व॒इ॒मे॒सु॒ता॒अ॒द्रि॒षु॒ता॒स॒उ॒द्भि॒द॒स्तु॒भ्य॑सु

तासंउद्धिदः॥तेत्वाभंदंतुदावनेमहेचित्रायराधसे॥गीर्भिर्गिर्वाहःस्नवमानआर्गहेसुमृळीकोनआर्गहि ।
 ओषूणोअग्नेशृणुहित्वमीकितोदेवेभ्योब्रवसियद्विथेभ्योराजभ्योयद्विथेभ्यः ॥ यद्धृत्याभंगिरोभ्यो
 धेनुंदेवाअदत्तन ॥ वितानुहेअर्यमाकर्तरीसर्चाऽएषतावेदमेसचा ॥ मोषुर्वोअस्मदमितामिनि
 पौस्यासनाभूवन्द्युम्नानिमोतजारिषुरस्मत्पुरोतजारिषुः ॥ यद्वश्रित्रयुगेयुगेनव्यंघोषादमर्थं ॥
 अस्मासुतन्मरुतोयच्चदुष्टरंदिधृतोयच्चदुष्टरं ॥ दध्यद्वहमेजनुषंपूर्वोऽअंगिराःप्रियमैधःकणवोअत्रि
 मनुर्विदुस्तेमपूर्वमनुर्विदुः ॥ तेषांदिवेव्वायतिरस्माकंतेषुनामयः ॥ तेषांपदेनमत्थानंमेगिरैर्द्राग्नीआ
 नमेगिरा॥होतायक्षद्वनिनोवतवार्यबृहस्पतिर्यजतिवेनउक्षभिःपुरुवरैर्मिरुक्षभिः॥जगृभ्मादूरआदिशं
 श्र्लोकंमद्रेरधृतमना॥अंधोरयदुररेदानिसुक्रतुःपुरुसद्भानिसुक्रतुः ॥ येदेवासोदिव्येकादशस्थपृथिव्या
 मध्येकादशस्थ ॥ अप्सुक्षितोमहिर्नैकादशस्थतेदेवासोयज्ञमिमंजुषध्वं ॥२॥सू०४॥ यज्ञोदेवानां
 प्रत्येतिसुश्रमादित्यासोभवंतामृकथंतः ॥ आवोर्वाचीसुमतिर्ववृत्यादंहोश्चिद्यावैरिवित्तरासंत॥उप

नोदेवावसागं भवं गिरसां सामभिः स्तूयमानाः । इन्द्रं द्विधैर्मरुतो मरुद्भिरादित्यैर्नो अदितिः शर्मयंसत् ॥
 तन्न इन्द्रस्तद्वरुणस्तदग्निस्तदर्यमा तत्संविता च नो धातुः । तन्नो मित्रो ० ॥ १ ॥ ॥ अथ राक्षोघ्नसू ० ॥ कृणु
 स्वपाजः प्रसिर्तिनपृथ्वीया हिराजेषामवैदमेना तुष्णीमनु प्रसिर्तिद्रूणा नो स्नासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठः ॥
 तवं भ्रमासं आशुयापंत्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः ॥ तपूष्यमेजुह्वीपतंगानसंदिनो विमृज विष्वगुल्काः
 ॥ प्रतिस्पशो विमृजतू णितमो भवापायुर्विशो अस्या अदब्धः ॥ योनोदूरे अघशंसो यो अंत्ये भेमा किं
 धेव्यथिरादं वर्षीत् ॥ उदं मे तिष्ठ प्रत्यातनुं ष्वन्यं मित्राँऽओषता सिग्महेते ॥ योनो अरांति स मिधा
 न चक्रे नीचानंधक्ष्यत संनशुष्कं । ऊर्ध्वीमं वप्रति विध्या ह्यस्मदा विष्कणुष्वैदव्यान्यमे ॥ अवस्थिरांतनु
 हियातु जूनां जा मिमजामि प्रमृणीहि शत्रून् ॥ १ ॥ स ते जानाति सुमति य विष्टय इव ते ब्रह्मणे गानु मे
 रत् ॥ विश्वान्यस्मै सुदिना निराद्युन्मन्यो विदुरो अमिधौत् ॥ सेंदमे अस्तु सुभगः सुदानु यस्वा
 नित्ये न ह विषाय उक्थैः ॥ पिप्रिषति स्वआयुं पिदुरोणे विशेदं स्मै सुदिना सासं दिष्टिः ॥ अर्चामि ते सु

मतिघोष्यर्वाक्सनेवावाताजरातामियंगीः ॥ स्वर्वास्त्वासुरथामर्जयेमास्मैक्षत्राणिधारयेरनुद्युत् ॥
 इहत्वाभूर्यीचैरदुपत्तन्दोषावस्तदीदिवांसमनद्युत् ॥ क्रीळितस्त्वासुमनसःसपेमाभिद्युम्नातस्थिवां
 सोजनानां ॥ यस्त्वास्वर्षःसुहिरण्योअग्रउपयातिवसुमतारथेन ॥ तस्यत्राताभवसितस्यसखा
 यस्तैआतिथ्यमानुषगुजुजोषत् ॥ २ ॥ महोरुजाभिबुधुतावचोभिस्तन्मापितुर्गौतमादन्विषाय ॥
 त्वनोअस्यवर्चसश्चिद्विहोतर्यविष्टसुक्रनोदमूनाः ॥ अस्वमजस्तरणयःसुशेवाअतद्रासोवृकाअ
 श्रमिष्ठाः ॥ तेषायवःसुध्यचोनिषद्याभेतवनःपांत्वमूर ॥ येषायवोभामतेयतेअश्रेयश्वतोअंधु
 रितादरक्षन् ॥ रक्षतान्तसुक्रतोविश्ववैदादिप्संतइद्रिपवोनाहदेभुः ॥ त्वयावयंसंधन्य १ स्त्वोता
 स्तवप्रणीत्यश्यामवार्जान् ॥ उमाशंसोसूदयसत्यतातेनुष्टुयाकणुह्यन्हयाण ॥ अयातेअश्रेसमिधा
 विधेमप्रतिस्तोमंशस्यमानंगमाय ॥ दहाशसोरक्षसःपाख्य १ स्मान्द्रुहोनिहोमित्रमहोअवद्यात् ॥ ३ ॥
 सू०२ ॥ अग्नेहंसिन्य १ त्रिणंदीद्यन्मर्त्येष्व ॥ स्वेक्षयेथुचित्रत ॥ उत्तिष्ठमिस्वाहुताधृतानिप्र

निमोदसे॥ यत्वास्तुचः समस्तिरन् ॥ स आहुतो विरोचते शिरो केन्योगिरा ॥ सुचाप्रतीकमज्यते ॥ घृतेना
शिशुः समज्यते मधुप्रतीक आहुतः ॥ रोचमानो विभावसुः ॥ जरमाणः समिधमसे देवभ्यो हव्यवाहन ॥ तृतेना
हवन्तु मर्त्याः ॥ १ ॥ तं मर्ता अमर्त्यं घृतेनाग्निं संपर्यता ॥ अदाभ्यंगहर्पति ॥ अदाभ्येन शोचिषा श्रेहस्तदह ॥
गोपाश्रुतस्य दीदिहि ॥ सत्वमग्ने प्रतीकेन प्रत्योषया तु धान्यः ॥ उरुक्षयेषु दीद्यत् ॥ तंवांगीभि रुरु
धिष्ठमुपया मिशर्म ॥ शिशानो अग्निः कर्तुमिः समिद्धः स नो दिवा सरिषः पातु नक्तं ॥ अयो दंष्ट्रो अर्चि
षाया तु धानानुपस्पृश जातवेदः समिद्धः ॥ आजिह्वयामूदेवाचमस्व क्रव्यादो वृक्त्वयि पथस्वासन् ॥
उभो भयं विन्नुपधेहि दंष्ट्रां हिंस्रः शिशानो वरं परं च ॥ उता तं रिभे परि या हिराजन्जमैः सधेद्यभियां तु धा
नान् ॥ यज्ञैरिषूः संनममानो अग्ने वाचा शल्यौ अशनमिदिहानः ॥ तामि विध्य हृदये या तु धानान् प्रती
चो ब्राह्मन् प्रतिभंग्वेषाम् ॥ अग्ने त्वर्चं या तु धानस्य मिधि ह्वाशनिर्हरसाहृत्वेन ॥ प्रपर्वाणि जातवेदः

शृणीहि क्वयाकृविष्णुर्विचिनोतु हृक्कणं ॥ १ ॥ यत्रेदानीं पश्यसि जानवेदस्ति ह्येतमग्रउतवाचरंतं ॥
यद्वांतरिक्षे पृथग्भिः पतंतं तमस्ताविध्य शर्वाशिशानः ॥ उतालं धंसृणु हि जातवेद आलेभाना दृष्टिभि
र्यानुधानात् ॥ अग्नेपूर्वा निजहि शोशुंचान आमादः क्षिक्वास्तमदं त्वेनीः ॥ इह प्रब्रूहि यतमः सो अग्ने
यो यां तु धानो य इदं कृणोति ॥ तमारभस्व समिधा यविष्ठ नृचक्षसश्चक्षुषे रधै न ॥ तीक्ष्णे नाग्निचक्षुषार
क्षयज्ञं प्रांचं वसुभ्यः प्रणय प्रचेतः ॥ हिंस्व रक्षांस्यति शोशुंचानं मात्वा दमन्यानुधानां नृचक्षः ॥ नृच
क्षारक्षः परिपश्य विक्षुतस्य त्रीणि प्रतिशृणीत्यग्रां ॥ तस्याग्नेपृष्ठीर्हरसाशृणी हि त्रेधा मूल्यानुधानस्य
हृश्च ॥ २ ॥ त्रिर्यानुधानः प्रसितित एतत्तयो अग्ने अनृने नृहति ॥ तमर्चिषां स्फूर्जयन् जातवेदः सम
क्षमेनं गुणते निहृदि ॥ तदग्ने चक्षुः प्रतिवेद हि रे मे शफारुजं येन पश्यसि यानुधानं ॥ अथर्ववज्ज्योतिषा
देव्येन सत्यं धूर्वतमचित् न्योप ॥ यदग्ने अद्य मिथुनाशपातो यद्वाचस्तु हं जनयंत रे माः ॥ मन्योर्मनसः
शरव्या इजा रये ते यातया विध्य तद्देये यातुधानान् ॥ पराशृणी हितये सा यातुधानान् पराग्ने रक्षो हरे सा शृणी

हि ॥ पराचिषामूदेवान्छुणीहि परासुतुपोऽमिशोऽशुचानः ॥ पराद्यदेवाहं जिनं शृणु प्रत्यगेनं शपथा
 यंतु तृष्ठाः ॥ वाचास्तेनं शर्वं चच्छंतु मर्मन्विश्वस्यैतु प्रसितिया तु धानः ॥ ३ ॥ यः पौरुषेयेण कविर्वासमङ्के
 योऽश्वेन पशुना यातु धानः ॥ योऽभ्रया यामरं निक्षीरमग्नेतेषां शीर्षाणि हरसापि हृश्च ॥ संवत्सरीणं पय
 उखिया यास्तस्य माशीं द्यातु धानो नृचक्षः ॥ पीयूषमग्ने यतमस्ति तृप्सा तं प्रत्यं च मर्चिषा विव्यमर्भन् ॥ वि
 षंगवां यातु धानाः पिबंत्वा हं श्रयंता मदितये दुरेवाः ॥ परैरान्देवः स विता दंदा तु परां मागमो षधीनां जयंतां ॥
 सनादग्ने मृणसिया तु धाना चत्वारक्षीं सिपुतं नासु जिग्युः ॥ अनुदहस हूरा नृकव्यादो माते हेत्या मुक्ष
 तदिव्यायाः ॥ त्वनोऽग्ने अथरादुदं क्ता त्वं पश्चादुतरं क्षापुरस्तात् ॥ मति ते ते अजरो सस्तपि द्या अवशंसं
 शोशुचतो दहंतु ॥ ४ ॥ पश्चात्पुरस्तादथरादुदं क्ता क्विः काव्येन परिपाहिराजन् ॥ सखे सखा धमज
 रोजरि म्णे अग्ने मर्ता अमर्त्यस्त्वं नः ॥ परिताग्ने पुरं वयं विभ्रं सहस्यधीमहि ॥ ध्रुषदं णं दिवो देवे हंतारं भंगुरा वंतां ॥
 विवेर्णं भंगुरा वतः प्रतिष्मरक्षसो दह ॥ अग्ने ति मे न शोचि धानपुरा मिर्क्ष्मिभिः ॥ प्रत्यग्ने मिथुना दह

यातुथानाकिमीदिना ॥ संत्वाशिशामिजागृत्यदब्धविप्रमन्मभिः ॥ प्रत्यग्रे० ऋ० १॥५॥सू० ४॥ ब्रह्म
णाग्निःसंविदानोरक्षोहाबाधतामितः ॥ अर्भीवायस्तेगर्भदुर्णामायोनिमाशये ॥ यस्तेगर्भमर्मीवादुर्णा
मायोनिमाशये ॥ अग्निष्टंब्रह्मणासहनिष्कव्यादमनीनशत् ॥ यस्तेहंतिपुत्रयंतनिषत्सुंयःसरीसृपं ॥
जातंयस्तेजिघांसतितमितोनाशयामसि ॥ यस्तंऊरुविहरंत्यतरादंपतीशये ॥ योनिंयोअंतरारेच्छितमि
तो० ॥ यस्त्वाभ्रातापतिर्भूत्वाजारोभूत्वा निपद्यते ॥ प्रजांयस्तेजिघांसतित० ॥ यस्त्वास्वमेनतमसामोह
यित्वा निप० ॥ प्रजांयस्तेजिघांसतितमितो० ॥ १॥ अथसोमसूक्तानि ॥ ॥ त्वंसोमप्रचिकितोमनीषात्वं
रजिष्ठमनुनेषिपंथां ॥ तवप्रणीतीपितरोनइंदोदेवेषुरत्नमभजंतधीराः ॥ त्वंसोमकृतुभिःसुक्तुर्भूस्त्वंद
क्षैःसुदक्षोविश्ववेदाः ॥ त्वंष्टषावृषत्वैभिर्महित्वाद्युग्मेभिर्द्युमवोनृचक्षाः ॥ राज्ञोनृतेवरुणस्यव्रता
निबृहद्भिरंतवसोमधामं ॥ शुचिष्टमसिप्रियोनमित्रोदक्षार्थ्योअर्थमेवासिसोम ॥ यातेधामानिदिवि
यार्थेथिव्यांयापवर्तेष्वोषधीष्वप्सु ॥ तेभिर्नोविश्वैःसुमनाअहेळ्व्राजन्त्सोमप्रतिहव्यागुंभाय ॥ त्वं

सौमसिस्त्यतिस्त्वं राजो तद्वज्रहा ॥ त्वं भद्रो असि क्रतुः ॥ १ ॥ त्वंच सोमनोवशोजीवातुं न मरामहे ॥
प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः ॥ त्वं सोममहे भगं त्यूनं कृतायते ॥ दक्षं दधासि जीवसे ॥ त्वं नः सोम विश्वनोर
मं युज्ञा मिदं वचो जुषाण उपगच्छि ॥ सोम त्वं नो वृधे भव ॥ २ ॥ सोमं गीमिष्वा वयं वर्धयामो विचो विदः ॥ सुमृ
ळीको न आविश ॥ गयस्फानो अमी वृहा वसुवित्पुष्टि वर्धनः ॥ सुमित्रः सोमनो भव ॥ सोमं रंधिनो त्वृदि
गावो नय वसेष्वा ॥ मय इव स्वओक्थे ॥ यः सोमसस्ये त्वं वरारण देवमर्त्यः ॥ तं दक्षः स च ते कृविः ॥ उरु
ष्याणो अभिशस्तेः सोम निपाद्यं हसः ॥ सखां मुशे वं रंधिनः ॥ ३ ॥ आप्याय ० क्र० १ ॥ आप्याय
स्वमदिन्तमसोम विश्वेभिर्भुभिः ॥ सर्वानः सुश्रवंस्तमः सखा वृधे ॥ संते पर्यासि समुं तुवाजाः संह
विषाय र्जं निताते विश्वा परिभूरस्तु यज्ञं ॥ गयस्फानः प्रतरणः सुवीरो वीरहा प्रचरा सोमदुर्यान् ॥ सोमो

धे० ऋक् १ ॥ ४ ॥ अर्षाळ्वंयुत्सुपृतनासुपर्षिस्वर्षामृषां वृजनस्यगोपां ॥ भरेषुजांस्तुष्टिर्निसुश्र
 वंसंजयंतत्वामनुमदेमसोम ॥ त्वमिमाओर्षधीः सोमविश्वास्त्वमपोअजनयस्त्वंगाः ॥ त्वमातंतथोर्वि
 तर्हिस्तंज्योतिषावितमोववर्थ ॥ देवेननोमनसादेवसोमरायोभागंसहसावन्नभियुह्य ॥ मात्वातन
 दीशिषेवीर्यस्योमयेभ्यः प्रचिकित्सागर्विहो ॥ ५ ॥ सूक्तं २ ॥ स्वादिष्टया० वर्ग २ ॥ सू० ३ ॥
 स्वादोरसस्त्रिवर्यसः सुमेधाः स्वाद्यैर्वरिवोचितरस्य ॥ विश्वेयंदेवाउतमर्त्यासोमधुब्रुवंतोअभिसंचरंति ॥
 अंतश्चप्रागाअर्दितिर्भवास्यवयाताहुरसोदैव्यस्य ॥ इदर्विद्रस्यसरुषं जुषाणः श्रौष्टीवधुधुरमनुरायकं
 ह्याः ॥ अपामसोममृताअभूमागन्मज्ज्योतिरिविदामदेवान् ॥ किन्नमस्मान्कणवदरातिः किमुधु
 तिरिमृतमर्त्यस्य ॥ शनोभवत्तदआपीतइदोपितेर्वसोमसूनवेसुशेवः ॥ सखेवसख्यउरुशंसधीरः प्रण
 आयुर्जीवसेसोमतारीः ॥ इमेमापीतायशंसउरुष्यवोरथंनगावः समेनाहर्षसु ॥ तेमारक्षंतुविस्रसंश्चरि
 त्रादुतमात्रामाद्यवयंत्विदवः ॥ १ ॥ अग्निनामार्थितंसंदिदीपः प्रचक्षयकृणुहिवस्येसोनः ॥ अथाहि

तेमदुआसोममन्थेरेवाँइवप्रचरापुष्टिमच्छ ॥ इषिरेणितेमनसासुतस्यमक्षीमहिपिच्यस्वरायः ॥ स
 मराजन्प्रणआयूषितारीरहानीवसूयवासराणि ॥ सोमराजन्मूळयानःस्वस्तितवस्मसिन्नत्त्रांस्तस्य
 विद्धि ॥ अलर्तिदक्षतमन्युरिदोमानोअर्योअनुकामंपरादाः ॥ त्वंहिनस्नन्वःसोमगोपागात्रेगात्रे
 निषसत्थानुचक्षाः ॥ यत्तेवयंप्रेमिनामंत्रतानिसनोमूळसुपुखादेववस्यः ॥ ऋदुदरेण० ऋ १ ॥ २ ॥
 अपत्याअंस्थु० ऋ० १ ॥ योनुइंदुःपितरोत्तुत्सुपीतोमर्त्योमर्त्याआविवेशं॥ तस्मैसोमांयहविषाविधेममृ
 छीकेअस्यसुमतौस्याम ॥ त्वंसोमपितृभिःसंविदानोनुद्यावापृथिवीआतंतंय॥ तस्मैतइंदोहविषाविधे
 मवयंस्यामपतयोरथीणां ॥ ज्ञातारोदेवाअधिवोचतानोमानोनिद्राईशतमोजल्पः ॥ वयंसोमस्य
 विश्वहृप्रियासःसुवीरांसोविदथमावदेम ॥ त्वनःसोमविश्वतोवयोधास्वस्वविदविशानुचक्षाः ॥
 त्वनइंदुक्तिभिःसजोषाःपाहिपश्वातांदुतवांपुरस्तात् ॥ ३ ॥ सू० ४ ॥ इंद्रांसोमातपंतरक्षउज
 तन्यपयतंवृषणातमोदधः ॥ परांश्रुणीतमचिनोन्योषतंहतनुदेयांनिशिशीतमन्त्रिणः ॥ इंद्रांसोमास

मघशंसमभ्य१धंनपुर्थयस्तुचरुरग्निराँइव ॥ ब्रह्मद्विषेऽक्रव्यादेवोरचक्षसेद्देवोधत्तमनवायंकिंभीदिने ॥
 इंद्रासोमादुष्कृतोवेत्रेअंतरनारंमणेतमसिप्रविध्यतं ॥ यथानातःपुनरेकंश्चनोदयत्तद्दामंस्तुसहसे
 मन्युमच्छवः ॥ इंद्रासोमावर्तयंतदिवोवृधंसंयुथिव्याअघशंसायतर्हणं ॥ उत्तक्षतंस्वर्ध१पर्वतेभ्योयेन
 रक्षोवावृधानंनिजूर्वथः ॥ इंद्रासोमावर्तयंतदिवस्पर्यग्नितसेभिर्धुवमशमहन्मभिः ॥ तपुर्वेधमिरजरे
 भिरत्रिणोनिपर्शनेविध्यतंयंतुनिस्वरं ॥ १ ॥ इंद्रासोमापरिवांभतुविश्वतइयंमतिःकक्ष्याश्वेववा
 जिनां ॥ यावांहोत्रोपरिहिनोभिमेधयेमाब्रह्माणिनूपतीवजिन्वतं ॥ प्रतिस्मरेथांतुजयंद्भिरेवैर्हंतद्रु
 होरक्षसोमंगुरावतः ॥ इंद्रासोमादुष्कृतेमासुगंमद्योनःकदाचिदभिदासंतिद्रुहा ॥ योमापाकेनमने
 साचरंतममिचष्टेअनृतेभिर्वचोभिः ॥ आपइवकाशिनसंगंभीताअसन्नस्त्वासंतइन्द्रवृक्ता ॥ येषां क
 शंसंविहृतैरुर्वैवाभद्रंदूषयंतिस्वधाभिः ॥ अह्येवातान्प्रददानुसोमआवांदधातुनिर्कृतेरुपस्थे ॥
 योनोरसंदिप्सतिपित्वोअग्नेयोअश्वानांयोगवायस्तनूनां ॥ रिपुःस्तेनःस्तेयकृद्भ्रमेतुनिषहीयतांत

न्वादेतनां च ॥ २ ॥ पुरःसोऽस्तु तन्वादेतनां च तिस्रः धृतिवीर्योऽस्तु विश्वाः ॥ प्रतिशुष्यतु
 यशोऽस्य देवा यो नो दिवा दिप्सति यश्च नक्तं ॥ सुविज्ञानं च किनुपेजनाय सच्चाराच्च वचसीपस्पृधाने ॥ त
 यो र्यत्सत्यं यत्नरुद्वर्जं यस्तदित्सो मो वति हं त्यासता न वा उ सो मो दृजिनं हि नो तिनस त्रियं मिथुयाधार्यनं ॥
 हंति रक्षो हं त्यासद्वदंत मुभा विद्रस्य मसितौ शयाते ॥ यदि वा ह मनृत देव आस मो धं वा देवा अप्युहे अग्ने ॥ कि
 मस्मभ्यं जात वेदो हूणी पेद्रो घवाचं स्ते निर्ऋथं संचतां ॥ अद्या मरीयय दियानुधानो अस्मि यद्विवायुस्तत
 पपूरुषस्य ॥ अथा स वीरिदं शमि विर्यया यो मामो धं यतु धाने त्याहं ॥ यो मायां तुं यतु धाने त्याह यो वार्षाः
 शुचिरस्मीत्याहं ॥ इन्द्रस्तं हंतुमहता वधेन विश्वस्य जंतो रैधमस्पदीष्टा ॥ प्रयाजि गोतिखर्गलेव नक्तमपं द्रुहा
 तन्व १ गूहमाना ॥ वज्रौ अनंतौ अवुसाप दीष्ट्या वा णो घ्नंतुरक्षसं उपब्धैः ॥ वितिष्ठ ध्वं मरुतो विक्षिं १ च्छ
 तं गृन्माय नरक्षसः संपिनघ्न ॥ वयो ये मत्स्वीपतयं तिनक्तमि र्ये वारिपो दधिरे देवे अंघ्वरे ॥ प्रवर्तय दि
 वो अश्मान मिद्रु सोमं शितं मघवन्तं शिशाधि ॥ प्राक्ता दपां क्ता दधुरा दुदक्ता दमि जं हिरक्षसः पर्वतेन ॥

एतत्तयेपतयंतिश्वर्यातवद्वंद्विप्संतिदिप्सवोदाभ्यं ॥ शिर्षातिशक्रःपिशुनेभ्योवधनुंनखदशानिया
तुमद्भ्यः ॥ ४ ॥ इंद्रोयातुनामभवत्पराशरोहविर्मथानामभ्याईविवांस्तां ॥ अभीदुशक्रःपरशुर्यथाव
नंपात्रैवसिंदन्सतर्गतिरक्षसः ॥ उलूकयातुं० क्र० १ ॥ मानोरक्षोअग्निनडयातुमावंतामपौच्छ
तुमिथुनायाकिमीदिना ॥ पृथिवीनःपार्थिवात्पातवंहसोतर्क्षिदिव्यात्पात्वस्मान् ॥ इंद्रजहिपुमां
संयातुधानंमुतस्त्रियंमाययाशाशदानां ॥ विग्रीवासोमूर्देवाक्रदंतुमातेदृशन्त्सूर्यमुच्चरंतं ॥ प्रतिच
क्षु० क्र० १ ॥ ५ ॥ सू० ५ ॥ सोमएकैभ्यःपवनेपुतमेकउपासते ॥ येभ्योमधुप्रधावंतितां
श्चिदेवापिगच्छतात् ॥ तपसायेअनाधुष्यास्तपसायेस्वर्ययुः ॥ तपोयेचक्रिरेमहस्तांश्चि० ॥ येयु
द्वयैतेप्रधनेषुशूरांसोयेतन्तुयजंः ॥ येवासंहस्रदक्षिणास्तांश्चि० ॥ येचित्पूर्वकृतसापंकृतावानक
तादृधः ॥ पितृन्तपस्वतोयगुतांश्चि० ॥ सहस्रंणीथाःकवयोयोगोपायंतिसूर्य ॥ कृषीन्तपस्वतोयम
तपोजाँअपिगच्छतात् ॥ १ ॥ अद्भ्याग्निःसमिध्यतेअद्भ्याहूयतेहविः ॥ श्रद्धांसंगस्थमु

धनिवचसावैदयामसि॥प्रियंश्रद्धेददतःप्रियंश्रद्धेदिदासतः॥प्रियंभोजेपुष्यज्जस्विदंमउदितंक्वधि॥य
 थादेवाअसुरेषुश्रद्धामग्रेषुचक्रिरे॥एवंभोजेपुष्यज्जस्वमाकंमुदितंक्वधि॥श्रद्धादेवायजमानावायुगो
 पाउपासते॥श्रद्धांस्तुदय्य१याकृत्याश्रद्धयाविदेवसु॥श्रद्धांमार्तह्वामहेश्रद्धांमध्यदिनंपरि॥श्रद्धां
 सूर्यस्यनिशुचिश्रद्धेश्रद्धापयेहनः॥१॥हविर्धानिसूक्तं॥युजेवांब्रह्मपठ्यन्नमोभिर्विश्लोकंएतुपथ्येश
 रेः॥शृण्वंतुविश्वेअमृतस्यपुत्राआयेधामानिदिव्यानितस्थुः॥यमेद्वयतमानेयदैतंप्रवाभरन्मानुपादे
 वयंतः॥आसीदत्स्वमुलोकंविदनिस्वासस्येभवतमिदवेनः॥पंचपदानिरुपोअन्वरोहंचतुष्पदीमन्वेमि
 ब्रूतेन॥अक्षरेणप्रतिमिमएतामृतस्यनाभावधिसंपुनामि॥देवेभ्यःकर्मवृणीतमृत्युप्रजायैकममृतंनाव
 णीत॥बृहस्पतियज्ञमकृण्वतुक्विंप्रियायमस्तन्व१प्रारिरेचीत्॥सप्तक्षरंतिशिशिविमरुत्वतेपित्रेपुत्रासो
 अप्यवीवतन्मृतं॥उमेइदस्योमर्थस्यराजतउमेयतेतेउमर्थस्यपुण्यतः॥१॥पितृसूक्तं॥उदीरतामव
 रउत्परोसउन्मध्यमाःपितरःसोम्यासः॥असुंयईयुरेवृकाऽकृतज्ञास्तेनोवंतुपितरोहवेषु॥इदंपि

तृभ्योनमोअस्त्वद्ययेपूर्वासोयउपरासईयुः ॥ येषाधिबेरजस्यानिषत्तायेवानुनंसुवृजनासुविश्वंआहं
 पितृन्सुविदंत्राँऽअवित्सिनपातंचविक्रमणंचविष्णोः ॥ बर्हिषदोयेस्वधयासुतस्यमजंतपितृत्वस्तइहा
 गमिष्ठाः ॥ बर्हिषदःपितरुक्त्यं१र्वागिमावोहव्याचकृमाजुषध्वं ॥ तआगतावंसाशंतमेनाथानःशंयो
 ररपोदंथात ॥ उपहूताःपितरःसोम्यासोबर्हिष्येषुनिधिषुप्रियेषु ॥ तआगमंतुतइहश्रवंत्वधिब्रुवंतुतैवंत्व
 स्मान् ॥ १ ॥ आच्याजानुदक्षिणतोनिषद्येमंयज्ञगमिगणीतविश्वे ॥ माहिँसिष्टपितरःकेनचिन्नो
 यद्वआगःपुरुषनाकराम ॥ आसीनासोअरुणीनामुपस्थैरुयधत्तदाशुबेमर्त्याय ॥ पुत्रेभ्यःपितरस्तस्य
 वस्वःप्रयच्छततइहोजीदधात ॥ येनःपूर्वपितरःसोम्यासोनहिरसोमपीथवसिष्ठाः ॥ तेभिर्यमःसैर
 राणोहूर्वाण्युशन्नुशान्निःप्रतिकाममंतु ॥ येतानुषुदवन्नाजेहमानाहोत्राविदःस्तोमंतद्यासोअकैः ॥
 आग्नेयाहिसुविदत्रैमिरवाइसत्यैःकन्यैःपितृभिर्धर्मसद्भिः ॥ येसत्यासोहविरदोहविष्याइंदेणदेवैःसर
 थंदधानाः ॥ आग्नेयाहिसहस्रदेववंदैःपरैःपूर्वैःपितृभिर्धर्मसद्भिः ॥ २ ॥ अधिष्वात्ताःपितरुहगच्छ

तसदःसदःसदतसुप्रणीतयः ॥ अत्ताहर्वोपिपयंतानिब्रह्मिण्यथार्येसर्ववीरंदधातन ॥ त्वमग्रइच्छितो
जतवेदोवाहुव्यानिस्तुरभीणिक्कृत्यी ॥ प्रादाःपितृभ्यःस्वधयुतेअसन्नद्धित्वंदेवप्रयत्नाह्वयोपि ॥ येचे
हपितरोयेचेनेहयांश्चविद्वयौवचनमविद्य ॥ त्वंदेत्ययतितेजानेभदःस्वधार्मिर्युजंसुक्रंनजुपस्व ॥ येअ
ग्निदग्धायेअनसिदग्धामधेदिवःस्वधयोमादयते ॥ तेभिस्वराळमृनीतिमेतांयथावशंतन्वैकल्पय
स्व ॥ ३ ॥ अथदेवसूक्तं ॥ विश्वेदेवाःशास्तनमाययेहहोनावृतोमनवैयन्निपद्य ॥ प्रभेव्रतमागधेयं
यथावोयेनपुथाहव्यमावोवहानि ॥ अहंहोतान्यसीदंयर्जीयान्विश्वेदेवामरुतोमाजुनंति ॥ अहंरहर
श्विनाच्चर्ववंवाब्रह्मासमिद्धंवनिसाहुतिर्वा ॥ अयंयोहोताकिरुसयमस्यकमप्यूहेयत्संभुंजंतिदेवाः ॥
अहंरहर्जायेतेमासिमास्यथादेवादधिरेहव्यवाहं ॥ मांदेवादधिरेहव्यवाहमपम्लुकंतुहुहुकुच्छाचरं
तं ॥ अमिर्विद्वान्युजंनःकल्पयानिपंचयामंत्रिद्वतंससतनुं ॥ आवापक्ष्यमृतंतंसुवीरंयथावो
देवावरिवःकराणि ॥ आत्राहोर्ध्वजमिंद्रयधेयामथेमाविश्वःपृतनाजयाति ॥ त्रीणिगतात्रीस

हृत्प्राण्यग्निं त्रिशच्च देवानवचासपर्यन् ॥ औक्षन्धृतैरस्तृणन्बृहिरस्मा आदिद्वोतारन्यसादयन्त ॥ १ ॥
 ॥ अथ यत्याराधनमंत्राः ॥ ॥ नानानवाउनो धियो विव्रतानि जनानां ॥ तक्षारिष्टं कृतं मिषगृह्णामुन्वंतमि
 च्छतीन्द्रायेदोपरिखव ॥ जरतीभिरोषधीभिः पुर्णेभिः शकुनानां कामारो अश्मभिर्द्युभिर्हिरण्यवंतमि ॥
 कारुरहंततो मिषगुं पलप्रक्षिणी नना ॥ नानाधियो वसुवो नुगाईव तस्थिर्मेद्रा ॥ अश्वो वोळ्हा सुखं र
 थं हसनामुपमंत्रिणः ॥ शेपो रोमण्वंतौ भेदौ वारिन्मंडूकं इच्छ ॥ १ ॥ शर्यणावतिसोममिद्रः पिबतु
 वृत्रहा ॥ बलुंदधान आत्मनिकरिष्यन्वीर्यमृहादि ॥ आपवस्वदिशांपत आर्जीकात्सोममीदुः ॥
 ऋतवाकेन सत्येन श्रद्धया तपसा सुतइद्रा ॥ पुर्जन्य वृद्धं महिपंतं सूर्यस्य दुहिताभरत ॥ तंगंधर्वाः प्रत्येगृभ्ण
 न्तं सोमेरसमादधुरि ॥ ऋतंवदं नृतधुम्रसत्यं वदन्त सत्यकर्मन् ॥ श्रद्धां वदन्त सोमराजन्धात्रा सोमपरि
 ष्कृतइ ॥ सत्यमुग्रस्य बृहतः संखवंति संखवाः ॥ संयतिरसिनोरसाः पुनानो ब्रह्मणा हृइ ॥ २ ॥ यत्र
 ब्रह्मापवमानच्छंदस्यां ईवाचं वदन् ॥ ग्राव्णा सोमे महो यते सोमे नानंदं जनयन्निद्रा ॥ यत्र ज्योतिरजसं य

स्मिँहोकेस्वीहितं ॥ तस्मिन्माधेहिपवमानामृतैल्लोकेअक्षितइंद्रां० ॥ यत्रराजावैवस्वतोयत्रावरोधं
 नंदिवः ॥ यत्रामूर्यहृतीरापस्तत्रमामृतैकृधोद्रायेदो० ॥ यत्रानुकामंचरणंत्रिनाकेत्रिदिवेदिवः ॥
 लोकायत्रज्योतिष्मंतस्तत्र० ॥ यत्रकामानिकामाश्रयत्रंब्रह्मस्थविष्टपं ॥ स्वधाचयत्रतृप्तिश्चतत्र
 माममृतैकृ० ॥ यत्रानंदश्चमोदाश्चमुदःप्रमुदआसते॥ कामंस्ययत्रासाःकामास्तत्रमाममृतैकृ० ॥३॥
 यइंदोःपवंमानस्यानुधामान्यकंमीत ॥ तमाहुःसुप्रजाइतिघस्तेसोमाविघन्मनइंद्रां० ॥ कृषमंत्रक
 तां० ॥ ऋ०१॥ सप्तदिशोनानासूर्याःसप्तहोतारऋत्विजः ॥ देवाआदित्यायेससतेभिःसोमाभिर
 क्षनइंद्रां० ॥ यत्तैराजन्तु० ॥ ऋ०१॥४॥ चरणंपुवित्रं वितंतपुराणं॥ येनपुतस्तरतिदुष्कृतानि॥ तेन
 पुवित्रेणशुद्धेनपूताः॥ अतिपाप्मानमरातिरेमा॥ लोकस्यद्वारमर्चिमतपवित्रं॥ ज्योतिष्मद्भ्राजमानं
 महस्वत्॥ अमृतंस्यधारबहुधादोहमानं ॥ चरणंनोलोकेसुधितांदधानु ॥१॥ अग्रिमधूसुवः॥ अनु
 नोद्यानुमतिरन्विदनुमतेत्वां॥ हव्यवाहश्चिष्टं॥ अतद्ब्रह्म ॥ अतद्वायुः॥ अतदात्मा॥ अतत्सत्यं॥

ॐ तत्सर्वं ॥ ॐ तत्पुनर्नमः ॥ अतश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु ॥ त्वं यज्ञस्त्वं षड्कारस्त्वभिद्रस्त्वं रुद्र
 स्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः ॥ त्वं तदाप आपो ज्योतीरसो मृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरो म् ॥ १ ॥ लोकः सरस्व
 त्यायां तेषु वै देवयानः पंथास्तमेवान्वा रोहं त्याकोशं तोयां त्यवंति मेवान्यस्मिन्पतिषज्यमतिष्ठांगच्छंति
 यदादशं शतं कुर्वत्यैकं मृत्यायुः पुरुषः शतैर्द्विषु आयुष्ये वै द्विषमति तिष्ठंति यदाशतं सहस्रं कुर्व
 त्यैकं मृत्यायुः सहस्रं समितो वा असौ लोको ममेव लोकमभिजयंति यदैषां प्रमीयेत यदावाजो यैरन्नैकं
 मृत्यायुः तद्वितीर्थं ॥ १ ॥ श्रीपास्माद्वर्तः पवते ॥ श्रीषोडंति सूर्यः ॥ श्रीपास्मादग्निश्चेदंश्व ॥ मृत्युर्वावति पंच
 महति ॥ सिद्धानंदस्य भीमाः सा भवति ॥ युवास्यात्साधुषु वाध्यायकः ॥ आशिष्ठो दृढिष्ठो बलिष्ठः ॥ तस्येयं पृ
 थिवी सर्वावित्तस्य पूर्णा स्यात् ॥ स एको मानुष आनंदः ॥ ते ये शतं मानुषा आनंदः ॥ स एको मनुष्यगंधर्वा
 णां मानंदः ॥ श्रीत्रियस्य चाकामं हतस्य ॥ ते ये शतं मनुष्यगंधर्वाणां मानंदः ॥ स एको देवगंधर्वाणां मानं
 दः ॥ श्रीत्रियस्य चाकामं हतस्य ॥ ते ये शतं मनुष्यगंधर्वाणां मानंदः ॥ स एको देवगंधर्वाणां मानंदः ॥ श्री०
 ॥ ते ये शतं देवगंधर्वाणां मानंदः ॥ स एकः पितृणां चिरलोको कानां मानंदः ॥ श्री० ॥ ते ये शतं पितृणां चिर

लोकलोकानामानुदाः॥सएकआजानजानादेवानामानुदः॥ श्रो० ॥ तेयेशतमाजानजानादेवानामा
 नुदाः॥सएकःकर्मदेवानांमानुदः॥येकर्मणादेवानपियुति॥श्रो० ॥ तेयेशतंकर्मदेवानादेवानामा
 नुदाः ॥ सएकोदेवानामानुदः ॥ श्रोत्रियस्य० ॥ तेयेशतदेवानामानुदाः ॥ सएकइंद्रस्यानुदः ॥
 श्रो० ॥ तेयेशतामिंद्रस्यानुदः॥सएकोवृहस्पतेरानुदः॥श्रो० ॥ तेयेशतंवृहस्पतेरानुदाः॥सएकःप्रजापते
 रानुदः॥श्रो० ॥ तेयेशतंप्रजापतेरानुदाः॥ सएकोब्रह्मणंआनुदः॥ श्रो० ॥ सयश्चायंपुरुषे॥ यश्चासावा
 दित्ये॥ सएकः॥ सयएवंविन् ॥ अस्माहोकात्तेत्य॥ एतमन्नमयमात्मानमुपसंक्रामति ॥ एतंप्राण
 मयमात्मान० ॥ एतमनोमय० ॥ एतंविज्ञानमय० ॥ एतमानंदमय० ॥ तदप्येषऽल्लोकोभवति ॥ १ ॥
 यतोवाचोनिवर्तते ॥ अप्राप्यमनसासह ॥ आनंदंब्रह्मणोविद्वान् ॥ नविमेतिकुतश्चनेति ॥ एत
 ऽह्वार्वनतपति ॥ किमहःसाधुनाकंवं ॥ किमहंपापमकरवृमिति ॥ सयएवंविद्वानेनेआ
 त्मानंस्पृणुते ॥ उमेत्यैवपणुतेआत्मानंस्पृणुते ॥ यएवंवेदं ॥ इत्युपनिषत् ॥ २ ॥

अथोपनिषन्मंत्राः ॥ ॥ विदामधवन्विदागानुमनुशंसिषोदिशः ॥ शिक्षाशचीनांपतेपूर्वीणांपुरुष-
सो ॥ आभिष्टुमसिद्धिभिः प्रचेतनप्रचेतय ॥ इंद्रद्युम्नायनइषएवाहिशक्रः ॥ रायेवाजायवज्रिवः
शविष्ठवज्रिन्मृजसे ॥ मंहिष्ठवज्रिन्मृजसआयाहिपिबमत्स्व ॥ विदारायः सुवीर्यमुवोवाजानांपतिर्व
शौअनु ॥ मंहिष्ठवज्रिन्मृजसेयः शविष्ठः शूराणां ॥ योमंहिष्ठोमघोनांचिकित्वोअभिनोनय ॥ इंद्रो
विदेतमुस्तुषेवशीहिशक्रः ॥ तमूतयेहवामहेजेतारमपराजितं ॥ सनः पर्षदतिहिषः क्रतुश्छंदक्रतंबृह-
त् ॥ इंद्रं धनस्य सातयेहवामहेजेतारमपराजितं ॥ सनः पर्षदतिहिषः सनः पर्षदतिस्त्रिधः ॥ पूर्वस्ययं
तेअद्रिवः सुम्रआघेहि नोवसो ॥ पूर्तिः शविष्ठशस्यतर्इशोहिशक्रः ॥ नूनंतन्नव्यंसन्यसेप्रभोजनस्य
वृत्रहन् ॥ समन्येषु ब्रवामहैशूरोयोगेषु गच्छतिसवासुशेवोअंद्रयाः ॥ एवात्यैवैवात्यग्राइइ ॥ एवा-
त्यैवैवार्होद्राइम् ॥ एवात्यैवैवाहिविण्णाइउ ॥ एवात्यैवैवाहिपूषाइन् ॥ एवात्यैवैवाहिदेवाः ३ ॥ ए-
वाहिशक्रोवशीहिशक्रोवशौअनु ॥ आयोमन्यायमन्यवउपोमन्यायमन्यवे ॥ उपेहि विश्वथ ॥ वि

दामघवन्विदोम् ॥१॥ कोयमात्मेतिवयमुपास्महेकतरःसआत्मायेनवापश्यतियेनवाशृणोतियेनवागं
 धानाजिघ्रतियेनवावाचंव्याकरोतियेनवास्वादुचास्वादुचविजानातियेदेतद्दृढयंमनश्चैतत्संज्ञानमाज्ञा
 नंविज्ञानंप्रज्ञानंमेधादृष्टिर्धृतिर्मतिर्मनीषाजूतिःसृतिःसंकल्पःऋतुरसुःकामोवशइतिंसर्वाण्येवैतानिप्र
 ज्ञानस्यनामधेयानिंसंवत्येपब्रह्मैषंद्रएपप्रजापतिरेतेसर्वेदेवाइमानिचंपचमहामूतानिपृथिवीवायुरा
 काशंआपोज्योतीर्ग्येतैतानीमानिचंक्षुद्रमिश्राणीवत्रीजानीतराणिचेतराणिचांडजानिचजारजानि
 चंस्वेदजानिचोद्भिजानिचाश्वागावःपुरुषाहस्तिनोर्यात्कचेदंप्राणिजंगमंचपतत्रिचयच्चस्थावरंसर्वतत्
 प्रज्ञानेत्रंप्रज्ञानेप्रतिष्ठितंप्रज्ञानेत्रोलोकःप्रज्ञाप्रतिष्ठाप्रज्ञानंब्रह्मासएतेनप्रज्ञेनात्मनास्माहोकादुत्क्र
 म्यामुष्मिन्स्वर्गलोकेसर्वान्कामानात्वामृतःसमसवरसमभवत् ॥२॥ ॥ अथांत्येष्टि मंत्राः ॥ परे
 थिर्वासप्रवर्तोमहीर्नुबहुभ्यःपंथामनुपस्पशानं॥ वैवस्वतंसंगमंनुजनानांयमंरजानंहविषदुवस्वा॥ य
 मोनोर्गातुंप्रथमोर्विवेदनैपागव्युतिरपंभर्तुवाडे॥ यत्रानुःपूर्वपितरःपर्युरेनाजंज्ञानाःपृथ्याइअनुस्वाः ॥

मातली कुर्व्यैर्मोअंगिरोमिबृहस्पतिर्ऋकभिर्वावृधानः ॥ यांश्चेद्वावावृधुर्थेचेद्वान्त्स्वाहान्येस्वधया
 न्येयदति ॥ इमंयमप्रस्तरमाहितीदांगिरोमिःपितृभिःसंविदानः ॥ आत्वाभन्त्राःकविशस्तोर्वहत्वेनाराज
 न्हविषामादयस्व ॥ अंगिरोमिरागहियज्ञियैमियैर्वैरुहमादयस्व ॥ विवस्वतंद्रुवेयःपितातेस्मि
 न्यज्ञेवर्हिष्यानिषद्य ॥ १ ॥ अंगिरसोनःपितरोनवग्वाअर्थवाणोभृगवःसोम्यासः ॥ तेषांवयंसुमनोय
 ज्ञियानामर्षिभद्रसौमनसेस्याम ॥ मेहिमेहिपथिसिःपुर्वैभिर्यत्रानुःपूर्वपितरःपरेयुः ॥ उभाराजो
 नास्वधयामदैतायमपश्यासिवरुणंचदेवं ॥ संगच्छस्वपितृभिःसंयमेनैष्टापूर्तेनपरमेव्योमन् ॥ हित्वा
 यावद्यंपुनरस्तमेहिसंगच्छस्वतन्वासुवर्चाः ॥ अपेतवीतुविचसर्पतातोस्माएतंपितरोलोकमक्रन् ॥
 अहोभिरद्भिरक्तुमिर्व्यक्तंयमोददात्यवसानमस्मै ॥ अतिद्रवसारमेयोश्वानौचतुरक्षौशबलौसाधुनाप
 था ॥ अथापितन्स्तुविदत्रौउपेहियमेनयेसंधमादंमदति ॥ २ ॥ यौतेश्वानौग्रमरक्षितारौचतुरक्षौप
 थिरक्षीनुचक्षसौ ॥ ताम्यमिमनंपरिदेहिराजन्स्वस्तिचास्माअनमीवंचधेहि ॥ उरुणसार्कसुतंपाउदु

बलौयमस्यंदूतौचरतोजनौअनु ॥ तावस्मभ्यंदृशयेसूययिपुनर्दातामसुभद्येहभद्रं ॥ यमाय० क०
 १ ॥ यमायधृतवंद्विजुहोतप्रचतिष्ठत ॥ सनोदेवष्वायमद्दीर्घमायुःप्रजीवसे ॥ यमायमधुमत्तमं
 रंज्ञौहव्यंजुहोतन ॥ इदंनमऋषिभ्यःपूर्वजैभ्यःपूर्वभ्यःपथिकृद्भ्यः ॥ त्रिकंद्रुकेभिःपततिषळ्वीरेक
 मिद्वृहत् ॥ त्रिष्टुब्गायत्रीछिंदौसिसर्वात्तायमआहिता ॥ ३ ॥ उदीरता० वर्ग ३ ॥ मेनमग्रेविदंहो
 माभिःशौचोमास्यत्वचंचिक्षिपोमाशरीरं ॥ यदाशृतंकृणवोजातवेदोथेमेनंप्रदिणुतात्पितृभ्यः ॥ शु
 तंयदाकरसिजानवेदोथेमेनंपरिदत्तात्पितृभ्यः ॥ यदागच्छात्यसुनीतिमेतामथदिवानांवशनीर्भवा
 ति ॥ सूर्यचक्षुर्गच्छतुवातंमात्माद्यांचगच्छपृथिवीचिधर्मणा ॥ अपोर्वागच्छयदितत्रतेहित
 मोषधीषुप्रतिनिष्ठाशरीरैः ॥ अजोऽग्नागस्तपसातंतपस्वतर्तेशोचिस्तपनुतंतैअर्चिः ॥ यास्ते
 शिवास्तुन्वोजातवेदस्तामिर्विद्वन्सुकृतांमुलेकं ॥ अवंष्टजपुनरग्रेपितृभ्योयस्तुआहुतश्चरतित्स्व
 धामिः ॥ आयुर्वसानुपवेतुशेषःसंगच्छतांतन्वोजातवेदः ॥ ४ ॥ यत्तेकृणःशंकुनआनुतोदपिपीलः

सर्पुतवाश्वापदः ॥ अग्निष्टद्विश्वादेगदं कणोतु सोमं श्रयो ब्राह्मणो आविवेशे ॥ अग्नेर्वर्मपरिणो
 मिर्व्ययस्वसंप्रोणुष्वपीवसामेदसाच ॥ नेत्वा धृष्णुर्हरसाजर्हपाणो दधृग्विषधयन्पर्यखयति ॥
 इममग्ने चमसं माविजिह्वरः प्रियो देवानां मुत सोम्यानां ॥ एषयश्चमसो देवपानस्तस्मिन्देवा अमतामाद
 यन्ते ॥ कव्यादं मग्निप्रहिणो मिदूर्यमराज्ञोगच्छतुरिप्रवाहः ॥ इहैवायमितीरो ज्ञाने वेदादेवेभ्यो हव्यं व
 हतुप्रजानन् ॥ यो अग्निः कव्यात्प्रविवेशे वो गृहमिमं पश्यन्मितीरं ज्ञाने वेदसं ॥ तंदराभिपितृयज्ञाय देवं
 सधर्ममिन्वात्परमेसुधस्थे ॥ ५ ॥ यो अग्निः कव्युवाह नः पितृन्यक्षदत्तावुधः ॥ मेदुहव्यानि वो चतिदेवे
 भ्यश्च पितृभ्य आ ॥ उशनंस्त्वा ० ऋ० १ ॥ यं त्वमग्ने समदहस्तमुनिर्वापया पुनः ॥ क्रियां बन्त्रो ह
 तुपाकदूर्वाव्यल्कशा ॥ शीतिकेशीति कावतिल्हादिके क्लादिकावनि ॥ मंडुक्या इ सुसंगम इमं स्वर्गमि
 हर्षय ॥ ६ ॥ त्वष्टा दुहित्रेर्वहंतु कणोतीतीदं विश्वं भुवनं संमैतियमस्य माता पयुत्यमाना महोजाया विव
 स्वतो ननाश ॥ अपागृहन्मृतं मर्यभ्यः कृत्वी सर्वर्णमददुर्विवस्वते ॥ उता शिवना वमर्द्यत्तदासीद ज

हादुद्दामिथुनासरण्युः ॥ पपात्वेतश्चावयतुप्रविद्धाननष्टपशुर्मुवनस्यगोपाः ॥ सत्वेतेभ्यःपरिददत्पि
 तुभ्योग्रिदेवेभ्यःसुविदन्नियेभ्यः ॥ आयुर्विश्वायुःपरिपासतित्वापूपात्वापातुप्रपथेपुरस्तात् ॥ यत्रासं
 तेसुकृतोयत्रतेययुस्तत्रत्वादेवःसंवितादधानु ॥ पूपेमाआशाअनुवेदसर्वाःसोअस्माअसंयतमेनने
 प्रपथेपृथिव्याः ॥ उभेअभिप्रियतमेसधस्येआचपराचरतिप्रजानन् ॥ ७ ॥ प्रपथेपथामजनिष्टपूपाप्रपथेदिवः
 स्वतीमध्वरेतायमानि ॥ सरस्वतीसुकृतोअह्वयंतसरस्वतीदाशुषेवार्थदात् ॥ सरस्वतीदेवयंतोहवन्तेसर
 स्वधामिर्देविवितृभिर्मदती ॥ आसद्यास्मिन्वर्हिर्हिमादयस्वानमीवाइषाअर्धेत्त्यस्मे ॥ सरस्वतीया
 पितरोहवन्तेदक्षिणायज्ञमग्निनक्षमाणाः ॥ सहस्रार्धमिच्छोअत्रमांगरायस्योप्यजमानेपुथेहि ॥ आपो
 अस्मान् ० ऋ० १ ॥ द्रप्सश्चस्कंदप्रथमौअनुद्युनिमंचयोनिमनुयश्चपूर्वः ॥ समानंयोनिमनुंसंचरंतद्रप्संजु
 होम्यनुससहोत्राः ॥ यस्तेद्रप्सःस्कंदतियस्तेअंशुर्वाहुच्युतोधिषणायाउपस्थात् ॥ अध्वर्योर्वापरि

वायःपवित्रात्तैजुहोमिमनसावषट्कृतं॥ यस्तेद्रूपसःस्कन्धोयस्तेअंशुरवश्चयःपुरःस्त्रचा॥ अयंदेवोबृह
 स्पतिःसंतंस्त्रिचतुरार्धसो॥ पर्यस्वतीरोषधयःपर्यस्वन्मामकंवचः॥ अपांपयस्वद्विपयस्तेनमासहशुधत ॥
 ॥९॥ परंमृत्योअनुपरैहिपंथांयस्तेस्वइतरोदेवयानात्॥ चक्षुष्मतेशृण्वतेनैब्रवीमिमानःप्रजंशिरिषोमोत
 वीरान्॥ मृत्योःपदयोपयंतोयदैतद्रावीयआयुःप्रतरंदधानाः॥ आप्यार्यमानाःप्रजयार्धेनशुद्धाःपुता
 मंवतयज्ञियासः॥ इमेजीवाविमृतेरावंचत्रभ्रमूद्रद्रादेवहूतिर्नोअद्या॥ प्रांचोअगामनृतयेहसायद्राधीय
 आयुःप्रतरंदधानाः॥ इमंजीवेश्वरःपरिधिंदधामिमेषानुगादपरोअर्थमेतं॥ शतंजीवंतुशरदःपुरुचीरंतम
 त्पुंदधतांपर्वतेन॥ यथाहान्यनुपूर्वमर्वनियथंक्तवंचक्रतुभिर्यतिंसाधु॥ यथानपूर्वमपरोजहात्येवाधांतरा
 येषिकल्पयेयां॥ १०॥ आरोहतायुर्जसैष्टणानाअनुपूर्वयतमानायतिष्ठ॥ इहत्वष्टासुजनिमासजोषादी
 र्धमायुःकरतिजीवेश्वरः॥ इमानारिविद्यवाःसुपत्नीरांजेनसर्पिषासंविशंतु ॥ अनश्रवोनमीवाःसुरत्ना
 आरोहंतुजनयोनिमये॥ उदीर्ष्वनार्यमिर्जीवलोकंगतासुमेतमुपशेषएहि॥ हस्तग्रासस्येदिधिषोस्तवे

दंपत्युर्जनित्वमसि संवत्सरा ॥ धनुर्हस्तादाददानो मृतस्यास्मै क्षत्राय वचसे वलाया ॥ अत्रैव त्वमिह वयं सुवी
 रा विश्वाः स्पृधो अस्मि मां तीर्जयेम ॥ उपसर्पमानं भूमिमेतामुख्यचं संपृथिवीं सुशेवां ॥ ऊर्णमदायुव
 तिर्दीक्षणावतलुषात्वा पातु निर्ऋतेरुपस्थात् ॥ उच्छ्वचस्वपृथिविमानि वाधायाः सूपायनास्मै भवसूपवं
 चना ॥ मातापुत्रं यथासि चाभ्येनं भूम ऊर्णुहि ॥ उच्छ्वचं मानापृथिवी सुतिष्ठतु सहस्रं मित उपहि श्रयं
 तां ॥ नेगृह्णासौ घृतश्रुतौ सवंतु विश्वाहां स्मै शरणाः संत्वन्नं ॥ उत्तैस्तत्राभिपृथिवी त्वत्परीमं लो गं निदध
 न्मो अहं रिषं ॥ एतां स्थूणां पितरो धारयंतु ते त्रायमः सदनाने भिनोतु ॥ प्रतीची नेमा महनीष्वाः पूर्णमि
 वादधुः ॥ प्रतीची जग्रमावाचमश्वं शनया यथा ॥ १२ ॥ (गर्भे नु सन्नैवामवेदमहं देवानां जनमा
 नि विश्वा ॥ शतं मा पुर आरयसी रक्षत्रधं श्ये नोजवसा निरदीयं ॥ १॥ अतिरिक्तं न्यूने जुहोमिन्यूनमति
 रिक्ते जुहोमि ॥ समं स मे जुहोमि स्वाहा कुताहुतिरेतु देवान्) सूक्तं ॥ निर्वर्तध्वं मानु गानास्मान्तिषक्त्तरे
 वतीः ॥ अशीषो मा पुनर्वसू अस्मे धारयतं रयि ॥ पुनरेना निर्वर्तय पुनरेना न्याकुरु ॥ इंद्र एणा निर्वचच्छ

त्वग्निरेनाउपाजन्तु ॥ पुनरेतानिर्वर्ततामस्मिन्पुन्यंतुगोपनौ ॥ इहेवाग्नेनिधारयेहतिष्ठतुयारयिः ॥ यन्नि
 यान्न्ययनंसंज्ञानंयत्पारयणं ॥ आवर्तनंनिर्वर्तनंयोगोपाऽअपितंहुवे ॥ यउदानइव्ययनंयउदानइप
 रायणं ॥ आवर्तनंनिर्वर्तनमपिगोपानिर्वर्ततां ॥ १ ॥ आनिर्वर्तनिर्वर्तयपुनर्नइद्रगादेहि ॥ जीवाभि
 र्भुनजामहे ॥ परिवोविश्वतोदधऊर्जाघृतेनपयसा ॥ येदेवाःकेचयज्ञियास्तेरथ्यासंसृजंतुनः ॥ आ
 निर्वर्तनवर्तयनिनिर्वर्तनवर्तय ॥ मूम्याश्चतस्रःप्रदिशस्ताभ्यर्चनानिर्वर्तय ॥ मद्रंनोअपिवातयमनः
 ॥ २ ॥ उ॒शांतिःशांतिःशांतिः ॥ ॥ इतिमंत्रसंहितासमाप्ता ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥



३ पुस्तक

गजानन चिंतामण शास्त्रीदेव बुकसंस्तर यांनीं
सुंदरित "गणपत कृष्णाजी" यांचे छापाखान्यांत छापविलें. शके १८२६

किंमत. साऱ्या कागदाची मूल १॥ रुपये. उत्तम बोटीच सकेन कागदाची मूल २॥ रुपये.

॥ इति ऋग्वेदी मंत्रसंहिता समाप्त ॥

